INDEX

इतिहास GK 1-106

- **प्राचीन भारत का इतिहास**

  प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत, प्रागैतिहासिक काल, सिन्धु (हड़प्पा) सभ्यता, वैदिक काल, धार्मिक आन्दोलन, महाजनपद काल, मगध का उत्कर्ष, भारत पर प्रथम विदेशी आक्रमण, मौर्य साम्राज्य, मौर्योत्तर काल

- **मध्यकालीन भारत का इतिहास**

  संगम काल, गुप्त काल, गुप्तोत्तर काल, उत्तर भारत, दक्षिण भारत (800 – 1200 ई.), भारत पर अरबों का आक्रमण, दिल्ली सल्तनत, विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य, स्वतंत्र प्रान्तीय राजवंश, सूफी एवं भक्ति आन्दोलन, मुगल साम्राज्य, मराठा साम्राज्य

- **आधुनिक भारत का इतिहास**

  मुगलों का पतन, प्रान्तीय स्वायत्त राज्य, भारत में यूरोपियों का आगमन, गवर्नर, गवर्नर जनरल एवं वायसराय तथा उनके कार्यकाल की घटनाएँ, प्रमुख कृषक आन्दोलन, 18 वीं शताब्दी में हुए जन–आन्दोलन, 19 वीं सदी में धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आंदोलन, भारतीय शिक्षा का विकास, ब्रिटिश शासन का आर्थिक प्रभाव, 1857 की क्रांति, राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन, प्रमुख समाचार–पत्र, ब्रिटिशकालीन आयोग एवं समितियां, कांग्रेस अधिवेशन (1885–1950 ई.), भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नारे, प्रमुख उपाधियाँ

- **विश्व इतिहास**

  मिस्र की सभ्यता, मेसोपोटामिया की सभ्यता, चीन की सभ्यता, यूनान की सभ्यता, रोम की सभ्यता, पुनर्जागरण, अमेरिका का स्वतंत्रता–संग्राम, फ्रांस की राज्यक्रांति, इटली का एकीकरण, जर्मनी का एकीकरण, रूसी क्रांति, इंगलैंड की क्रांति, प्रथम विश्वयुद्ध, चीनी क्रांति, तुर्की, इटली में फासिस्टों का उदय, जर्मनी में नाजीवाद का उदय, जापानी साम्राज्यवाद, द्वितीय विश्वयुद्ध

itsum

इतिहास

प्राचीन भारत

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

- 32,87,263 वर्ग किमी में विस्तृत भारत को पुराणों एवं महाकाव्यों में **भारतवर्ष** कहा गया है। इसे यूनानियों ने **इंडिया**, मुस्लिम इतिहासकारों ने **हिन्दुस्तान** तथा जैनियों ने **जम्बूद्वीप** कहा। ऐसा माना जाता है कि राजा दुष्यंत के पुत्र 'भरत' के नाम पर इसका नाम भारत पड़ा।
- प्राचीन भारत के इतिहास को जानने के लिए मुख्य रूप से तीन स्रोत हैं - (i) साहित्यिक साक्ष्य, (ii) पुरातात्विक साक्ष्य तथा (iii) विदेशी यात्रियों के विवरण।

(i) **साहित्यिक स्रोत**

- साहित्यिक साक्ष्य दो प्रकार के हैं - धार्मिक साहित्य एवं धर्मनिरपेक्ष (लौकिक) साहित्य।

धार्मिक साहित्य

- धार्मिक साहित्य के अंतर्गत ब्राह्मण एवं ब्राह्मणेत्तर ग्रंथ आते हैं। वेद, पुराण, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, स्मृति ग्रंथ इत्यादि ब्राह्मण साहित्य के अंतर्गत तथा जैन एवं बौद्ध रचनाएं ब्राह्मणेत्तर साहित्य के अंतर्गत आती हैं।
- **वेद** भारत के प्राचीनतम ग्रंथ हैं, जिनका संकलन महर्षि वेदव्यास ने किया है। इनकी संख्या चार है – ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद।
- ऋग्वेद में 10 मण्डल, 8 अष्टक, 10, 462 मंत्र तथा 1028 सूक्त हैं। इसकी रचना 1500 - 1000 ई. पू. के दौरान हुई। इसका **दूसरा** एवं **सातवां** मण्डल सबसे प्राचीन है तथा **पहले** एवं **दसवें** मण्डलों को बाद में जोड़ा गया।
- ऋग्वेद के नौवें मण्डल में **सोमरस** की चर्चा है तथा दसवें मण्डल के पुरुष सूक्त में पहली बार वर्ण व्यवस्था का उल्लेख मिलता है। प्रसिद्ध **गायत्री मंत्र** तथा **वामनावतार** का उल्लेख इसी वेद में आया है।
- **सामवेद**, भारतीय संगीत का जनक है। इसकी कुल **1549** श्लोकों (ऋचाओं) में से मात्र 75 ही नए हैं, शेष ऋग्वेद से ही लिए गए हैं। इसमें यज्ञों के अवसर पर गाए जाने वालें मंत्रों का संग्रह है।
- **यजुर्वेद** एकमात्र ऐसा वेद है जो पद्य एवं गद्य दोनों में है। इसमें यज्ञों के नियमों एवं विधि – विधानों का वर्णन मिलता है। यह वेद दो भागों में है – **कृष्ण यजुर्वेद** और **शुक्ल यजुर्वेद।** शुक्ल **यजुर्वेद** के रचयिता वाजसनेयी के पुत्र याज्ञवल्क्य हैं, अतः इसे वाजसनेयी संहिता भी कहा जाता है।
- अथर्ववेद में 20 मण्डल, 731 ऋचाएँ तथा 5987 मंत्र हैं। इसका मुख्य विषय तंत्र-मंत्र, जादू- टोना, रोग निवारण, प्रेम, विवाह, राजकर्म इत्यादि है।
- **ब्राह्मण**– सभी वेदों के अलग-अलग ब्राह्मण हैं जो वेदों की सरल तथा गद्यात्मक व्याख्या हैं। ऋषियों द्वारा रचित ये ब्राह्मण कर्मकाण्ड की पद्धति का उल्लेख करते हैं।
- **वेदांग**– वेदों का अर्थ ठीक से समझने के लिए वेदांगों की रचना हुई। वेदांग छः हैं- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द तथा ज्योतिष।
- **अरण्यक**– जंगलों में लिखे जाने के कारण इन्हें अरण्यक कहा जाता है। इनका विषय-वस्तु आध्यात्मिक एवं दार्शनिक चिन्तन है। इनकी रचना ब्राह्मण ग्रंथों के बाद हुई।
- **उपनिषद्**– ये वैदिक ग्रंथों के अंतिम भाग हैं, जिनमें आध्यात्मक तथा दर्शन के गूढ़ रहस्यों का विवेचन हुआ है। वेदों के अंतिम भाग होने के कारण इन्हें **वेदांत** भी कहा जाता है। इनकी संख्या 108 है।
- **सूत्र साहित्य**– इनमें मनुष्यों के कर्त्तव्यों, वर्णाश्रम व्यवस्था एवं सामाजिक नियमों का उल्लेख किया गया है। इनकी संख्या तीन है- **श्रोत, गृह** तथा **धर्म सूत्र।**
- **स्मृतियाँ**– इनकी रचना सूत्रों के बाद हुई। मनुष्य के पूरे जीवनकाल से संबंधित विभिन्न क्रियाकलापों की जानकारी मिलती है। इन्हें **धर्मशास्त्र** भी कहा जाता है।
- मनुस्मृति के प्रमुख भाष्यकार मेघातिथि, कुल्लूकभट्ट और गोविन्दराज तथा याज्ञवल्क्य समृति के टीकाकार विज्ञानेश्वर, विश्वरूप, अपरार्क आदि हैं।

- मनुस्मृति तथा याज्ञवल्क्य स्मृति सबसे प्राचीन हैं।
- **महाकाव्य-** महर्षि वाल्मीकि ने संस्कृत में पहली-दूसरी सदी के दौरान रामायण की रचना की थी। प्रारंभ में इसमें 600 श्लोक थे जो कालांतर में 1200 और फिर 2400 हो गए। 24,000 श्लोक होने के कारण इसे **चतुर्विंशसहस्री संहिता** भी कहा जाता है।
- रामायण 7 काण्डों में विभाजित है- बालकाण्ड, अरण्य काण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड (लंकाकाण्ड) एवं उत्तरकाण्ड।
- महाभारत की रचना चौथी सदी में महर्षि व्यास ने की थी। प्रारंभ में इसमें 8800 श्लोक थे, जिसे **जय संहिता** कहा जाता था। श्लोकों की संख्या 24000 होने पर इसे **भारत** कहा जाने लगा तथा गुप्तकाल में श्लोकों की संख्या एक लाख होने पर इसे **महाभारत** कहा जाने लगा।
- महाभारत 18पर्वों में विभाजित है- आदि, सभा, वन, विराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शान्ति, अनुशासन, अश्वमेध, आश्रमवासी, मौसल, महाप्रास्थनिक, स्वर्गारोहण।
- महाभारत का प्रारंभिक उल्लेख **आश्वलायन गृहसूत्र** में मिलता है।
- **पुराण-** पुराणों की रचना पाँचवी सदी ई.पू. से चौथी सदी ई. के मध्य हुई थी। सर्वाधिक प्राचीन **मत्स्य पुराण** है तथा विष्णु, मत्स्य, वायु, ब्रह्मांड एवं भागवत पुराण ऐतिहासिक महत्त्व के हैं, जिनमें राजाओं की वंशावलियां मिलती हैं।
- मत्स्य पुराण से **सातवाहन,** विष्णु पुराण से **मौर्य** तथा वायु पुरण से गुप्त वंश की जानकारी मिलती है। मार्कण्डेय पुराण दुर्गा सप्तशती से तथा अग्नि पुराण **तांत्रिक पद्धति** से संबंधित हैं। गणेश पूजा का प्रथम उल्लेख **अग्नि पुराण** में मिलता है।
- पुराणों की संख्या 18 है - ब्रह्म, पद्म, विष्णु, शिव, भागवत, नारद, मार्कण्डेय, अग्नि, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लिंग, वराह, स्कन्द, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरुड़ और बह्माण्ड पुराण।

बौद्ध साहित्य

- **जातक** तथा **पिटक** बौद्ध साहित्य के प्रमुख भाग हैं। जातक में गौतम बुद्ध के पूर्वजन्म से संबंधित लगभग 550 कहानियाँ हैं, जिनसे ईसा पूर्व 5वीं सदी से दूसरी सदी तक की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का पता चलता है।
- त्रिपिटक सबसे प्राचीन बौद्ध ग्रंथ हैं, जिनकी रचना बुद्ध के निर्वाण प्राप्ति के बाद हुई। पिटक तीन हैं– **सूत पिटक, विनय पिटक** और **अभिधम्म पिटक**। त्रिपिटकों से ईसा पूर्व शताब्दियों के भारत के सामाजिक-धार्मिक स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।

जैन साहित्य

- प्राचीनतम जैन ग्रंथों को **पूर्व** कहा जाता है। इसमें महावीर के सिद्धांत संगृहीत हैं। इनकी रचना प्राकृत भाषा में हुई है।
- जैन ग्रंथों का अंतिम रूप से संकलन ईसा की छठी सदी में वल्लभी (गुजरात) में किया गया था। भगवती सूत्र, आचारांग सूत्र, परिशिष्टपर्वन, आवश्यकचूर्णि, भद्रबाहुचरित इत्यादि महत्त्वपूर्ण जैन ग्रंथ है।
- जैन साहित्य में पुराणों का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है, जिन्हें **चरित** कहा जाता है।

धर्मेत्तर साहित्य

- कौटिल्य के अर्थशास्त्र से मौर्य शासन के आदर्श और पद्धति तथा विशाखदत्त के मुद्राराक्षस, क्षेमेन्द्र की वृहत्कथामंजरी, सोमदेव के कथासरित्सागर से मौर्यकालीन घटनाओं का पता चलता है।
- पाणिनी के अष्टाध्यायी (व्याकरण ग्रंथ) से पाँचवीं सदी ई. पू. के सामाजिक जीवन पर प्रकाश पड़ता है।
- पतंजलि के महाभाष्य और कालिदास के मालविकाग्निमित्र से **शुंग वंश** की जानकारी मिलती है।
- शूद्रक के मृच्छकटिकम् तथा दण्डी के दशकुमारचरित में गुप्तकालीन समाज का चित्रण प्राप्त होता है।
- कालिदास के रघुवंशम् से समुद्रगुप्त की दिग्विजय तथा क्षेमेन्द्र की वृहत्कथामंजरी एवं सोमवेद के कथासरित्सागर से विक्रमादित्य की परम्पराओं का पता चलता है।
- **हर्षचरित** (वाणभट्ट कृत) से हर्ष की उपलब्धियों का, **गौड़वाहो** (वाक्पति कृत) से कन्नौज शासक यशोवर्मन का तथा विल्हण के **विक्रमांकदेवचरित** से कल्याणी के चालुक्य शासक विक्रमादित्य षष्ठ की उपलब्धियों की जानकारी मिलती है।
- जयानक के **पृथ्वीराज विजय** से पृथ्वीराज चौहान की उपलब्धियों का पता चलता है।
- कल्हण की **राजतरंगिणी** भारतीय इतिहास का पहला प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रंथ है, जिसे 12वीं सदी में लिखा गया। इसे आठ तरंगों में विभाजित किया गया है।
- संगम साहित्य से दक्षिण भारत के शासकों- चोल, चेर तथा पाण्ड्य के समय के समाज, अर्थव्यवस्था तथा संस्कृति का विवरण प्राप्त होता है।

प्राचीनकाल की महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

कुषाणकाल – बुद्धचरित (अश्वघोष), सौन्दरानन्द (अश्वघोष), महाविभाषा-शास्त्र (वसुमित्र) सत्सहसारिका सूत्र (नागार्जुन)।

गुप्तकाल – कामसूत्र (वात्स्यायन), स्वप्नवासवदत्तम् (भास), मेघदूतम्,विक्रमोर्वशीयम् (कालिदास), नाट्यशास्त्र (भरतमुनि), सूर्यसिद्धांत (आर्यभट्ट), देवीचंद्रगुप्तम् (विशाखदत्त), पंचतंत्र (विष्णु शर्मा), वृहत्संहिता (वराहमिहिर), कथासारिसागर (सोमदेव), अभिधम्मकोश (वसुबंधु)।

5वीं सदी – रावणवध (भट्टि)।

7वीं सदी – कादम्बरी (वाणभट्ट), किरातार्जुनीयम (भारवि), वासवदत्ता (सुबन्धु), नागानन्द, रत्नावली, प्रियदर्शिका (हर्षवर्द्धन)।

8वीं सदी – मालतीमाधव, कर्पूरमंजरी (राजशेखर)।

11वीं सदी – शब्दानुशासन (राजा भोज), कुमारपालचरित (हेमचन्द्र), नैषधचरितम् (श्री हर्ष)।

12वीं सदी – गीतगोविंद (जयदेव), रसमाला (सोमेश्वर), शिशुपाल वध (माघ), पृथ्वीराजरासो (चंदबरदाई)।

पुरातात्त्विक स्रोत

- इसे, प्राचीन भारत को जानने का सर्वाधिक विश्वसनीय साधन माना जाता है। इसके अंतर्गत अभिलेख सिक्के, स्मारक, मूर्तियाँ, चित्रकला इत्यादि आते हैं।

अभिलेख

- अभिलेखों के अध्ययन को पुरालेखशास्त्र तथा इनकी और दूसरे पुराने दस्तावेजों की प्राचीन लिपि के अध्ययन को **पुरालिपिशास्त्र** (Palaeography) कहा जाता है।
- ये अभिलेख; मुहरों, प्रस्तर स्तंभों, स्तूपों, ताम्रपत्रों, मूर्तियों, मंदिर की दीवारों आदि पर प्राप्त होते हैं। इनकी भाषा, प्राकृत, पालि, संस्कृत तथा दक्षिण भाषाएँ हैं। कुछ अभिलेखों की भाषाएँ द्विभाषी तथा विदेशी भी हैं।
- भारत में सबसे पुराने अभिलेख हड़प्पा सभ्यता की मुहरों से प्राप्त हैं जो लगभग 2500 ई. पू. के हैं, किंतु इन्हें अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।
- भारत से बाहर सर्वाधिक प्राचीनतम अभिलेख एशिया माइनर के **बोगजकोई** नामक स्थान से प्राप्त हुए हैं, जिनका समय 1400 ई. पू. है तथा जिन पर **इंद्र, मित्र, वरुण** तथा **नासत्य** आदि वैदिक देवताओं के नाम मिलते हैं।
- ईरान से प्राप्त **नक्श-ए-रुस्तम** अभिलेख से प्राचीन भारत के पश्चिम एशिया से संबंधों की जानकारी मिलती है।
- सीरिया से प्राप्त मितन्नी अभिलेख तथा ईरान से प्राप्त कस्साइट अभिलेख में आर्य नामों का उल्लेख मिलता है।
- सर्वप्रथम **जेम्स प्रिंसेप** को 1837 में, ब्राह्मी लिपि में लिखित मौर्य शासक अशोक के अभिलेखों को पढ़ने में सफलता प्राप्त हुई।

प्रमुख अभिलेख और शासक

अभिलेख		शासक
➢ हाथीगुम्फा अभिलेख	–	खारवेल
➢ जूनागढ़ अभिलेख	–	रूद्रदामन (शक क्षत्रप)
➢ नासिक गुहालेख	–	गौतमीपुत्र शातकर्णी (सातवाहन)
➢ प्रयाग स्तंभ लेख	–	समुद्रगुप्त
➢ भीतरी तथा जूनागढ़ अभिलेख	–	स्कन्दगुप्त
➢ मंदसौर अभिलेख	–	यशोवर्मन
➢ ऐहोल अभिलेख	–	पुलकेशिन द्वितीय
➢ ग्वालियर अभिलेख	–	भोज (प्रतिहार)
➢ देवपाड़ा अभिलेख	–	विजयसेन

- आरंभिक अभिलेख प्राकृत भाषा में हैं। अभिलेखों में **संस्कृत** भाषा का प्रयोग ईसा की दूसरी सदी से मिलने लगता है।
- रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख, जो 150 ई. का है, संस्कृत में लिखा पहला अभिलेख है।

सिक्के

- मुद्राशास्त्र के अंतर्गत सिक्कों का अध्ययन किया जाता है। प्राचीनतम सिक्के सोना, चांदी, तांबा, कांसा, सीसा और पोटिन के प्राप्त होते हैं।
- प्राचीनतम सिक्कों पर कोई लेख नहीं है, केवल चिह्न अंकित हैं जो **आहत** या **पंचमार्क्ड** सिक्के कहलाते हैं। ये ईसा पू. पाँचवीं सदी के हैं।
- आहत सिक्कों की सबसे बड़ी निधियाँ पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा मगध से प्राप्त हुई हैं।

अन्य पुरातात्विक साधन

- स्मारकों को दो भागों में बाँटा जा सकता है– देशी तथा विदेशी। हड़प्पा-मोहनजोदड़ो, नालंदा, हस्तिनापुर आदि देशी स्मारक हैं, जबकि जावा का बोरोबुदूर मंदिर, कम्बोडिया का अंकोरवाट मंदिर, बाली से प्राप्त मूर्तियाँ विदेशी स्मारक हैं।
- बोर्नियो के मकरान से प्राप्त मूर्तियों पर अंकित तिथियाँ, कालक्रम निर्धारण से विशिष्ट योगदान देती हैं।
- गांधार तथा मथुरा कला, मूर्तिकला की प्रमुख शैलियाँ थीं। भरहुत, सारनाथ, बोधगया एवं अमरावती मूर्तिकला के प्रमुख केंद्र थे।
- भीमबेटका का गुफाचित्र एक प्रमुख पुरातात्विक स्रोत है, जिससे पूर्व ऐतिहासिक काल की सांस्कृतिक विविधता पर प्रकाश पड़ता है।
- बाघ तथा अजंता के उन्नत गुफाचित्रों से गुप्तकाल की उन्नत सांस्कृतिक दशा का पता चलता है।

(iii) विदेशी यात्रियों के विवरण

यूनानी एवं रोमन लेखक

- **हेरोडोडस :** इसने अपनी पुस्तक हिस्टोरिका में 5वीं सदी ई. पू. के भारत-फारस संबंधों का वर्णन किया है। इसका विवरण अनुश्रुतियों पर आधारित है। इसे **'इतिहास का पिता'** कहा जाता है।
- **टीसियस :** यह ईरान का राजवैद्य था। इसका विवरण आश्चर्यजनक कहानियों से परिपूर्ण होने के कारण अविश्वसनीय है। नियार्कस, एनिसिक्रटस एवं आरिस्टोबुलस के विवरण प्रामाणिक एवं विश्वसनीय हैं। ये सभी सिकंदर के साथ भारत आए थे।
- **मेगास्थनीज :** यह सेल्युकस का राजदूत था तथा चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में आया था। अपनी पुस्तक **इण्डिका** में इसने मौर्ययुगीन समाज एवं संस्कृति के विषय में लिखा है।
- **डायनोसियस:** यह मिस्र नरेश **टॉलमी फिलाडेल्फस** का राजदूत था जो अशोक के राजदरबार में आया था।
- **डायमेकस :** यह सीरिया के नरेश **एन्टियोकस** का राजदूत था जो बिन्दुसार के राजरबार में आया था।
- **टॉलेमी :** इसने दूसरी सदी में **'ज्योग्राफी'** की रचना की।
- **प्लिनी :** इसने **नेचुरल स्टोरिका** लिखी, जिसमें भारतीय खनिज पदार्थों, पशुओं, पेड़-पौधों आदि के बारे में विवरण प्राप्त होता है।
- **पेरीप्लस ऑफ दि इरिथ्रियन सी :** इस पुस्तक के लेखक के बारे में जानकारी प्राप्त नहीं है। यह लेखक 80 ई. में हिन्द महासागर की यात्रा पर आया था। इसने भारतीय बंदरगाहों तथा वाणिज्यिक गतिविधियों के बारे में लिखा।

चीनी लेखक

- **फाहियान :** यह चन्द्रगुप्त द्वितीय (गुप्त) के दरबार में आया था। इसकी रचना **'फो-क्यो-की'** में गुप्तकाल के भारतीय समाज, राजनीति, संस्कृति तथा बौद्ध धर्म की स्थिति का विवरण प्राप्त होता है।
- **सुंगयुन :** यह 518 ई. में भारत की यात्रा पर आया। इसने अपने तीन वर्षों की यात्रा के दौरान बौद्ध धर्म की प्रतियाँ एकत्रित कीं।
- **ह्वेनसांग :** हर्ष के शासनकाल में आए ह्वेनसांग के यात्रा वृत्तांत **'सी-यू-की'** में तत्कालीन भारत की सामाजिक-धार्मिक स्थिति का विवरण मिलता है। वह सर्वप्रथम भारत के **कपिशा** राज्य पहुँचा। वह 15 वर्षों तक भारत में रहा तथा 645 ई. में चीन लौट गया।
- **ह्वेनसांग** नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन करने तथा भारत से बौद्ध ग्रंथों को एकत्र कर ले जाने के लिए आया था। इसके यात्रा वृत्तांत **'सी-यू-की'** में 138 देशों का विवरण प्राप्त होता है। इसके अनुसार सिंध का राजा शूद्र था।

- **इत्सिंग :** यह 7वीं सदी के अंत में भारत आया। इसने अपने विवरण में नालंदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथा अपने समय के भारत का वर्णन किया है।
- **मत्वालिन** ने हर्ष के पूर्वी अभियान तथा **चाऊ-जू-कुआ** ने चोल कालीन इतिहास पर प्रकाश डाला है।

अरबी लेखक

- **अलबरूनी :** यह महमूद गजनवी के साथ भारत आया था। इसने **किताब-उल-हिन्द** या **तहकीक-ए-हिन्द** कृति की रचना की। इसमें राजपूतकालीन समाज, धर्म, रीति-रिवाज, राजनीति इत्यादि के बारे में जानकारी मिलती है।
- **सुलेमान :** इसने **पाल** एवं **प्रतिहार** राजाओं के विषय में लिखा। यह 9वीं सदी के मध्य में भारत आया था।
- **अलमसूदी :** इसने **राष्ट्रकूट** राजाओं की महत्ता का वर्णन किया है।

अन्य लेखक

- तिब्बत के लेखक लामा तारानाथ की रचनाओं **केंग्युर** तथा **तंग्यूर** में प्राचीन भारतीय इतिहास का विवरण प्राप्त होता है।

प्रागैतिहासिक काल

- जिस काल के इतिहास का लिखित साक्ष्य मौजूद नहीं है, उसे 'प्रागैतिहासिक काल' कहा जाता है। इसमें पाषाण कालीन इतिहास शामिल है।
- प्रागैतिहासिक काल को तीन भागों में बाँटा गया है- पुरापाषाण काल मध्य पाषाण काल तथा उत्तर (नव) पाषाण काल। पाषाणकालीन सभ्यता का सर्वप्रथम अन्वेषण 1863 ई. में **ब्रूस फ्रुट** ने किया।

आद्य एवं ऐतिहासिक काल

जिस काल के लिखित साक्ष्य तो उपलब्ध हैं, किन्तु उन्हें अभी तक पढ़ा नहीं जा सकता है, उसे **आद्य ऐतिहासिक काल** कहते हैं। भारत में 'सिंधु घाटी सभ्यता' और 'वैदिक सभ्यता' इसके अंतर्गत आते हैं।

जिस काल के लिखित साक्ष्य का अर्थ स्पष्ट है, उसे 'ऐतिहासिक काल' कहा जाता है। भारत में यह 6 सदी ई.पू. (महाजनपद काल) से शुरू होता है।

पुरापाषाण काल (250000 - 10000 ई. पू.)

- पुरापाषाण काल को तीन भागों में बाँटा गया है - (i) निम्न पुरापाषाण काल (250000 - 100000 ई.पू.) (ii) मध्य पुरापाषाण काल (100000-40000 ई.पू.) (iii) उच्च पुरापाषाण काल (40000-10000 ई. पू.)।
- निम्न पुरापाषाण काल के स्थल **महाराष्ट्र** और **सोहन घाटी** में पाए गए। हस्तकुठार या कुल्हाड़ी (Hand - axe), विदारिणी और खण्डक इस काल की विशेषताएं थीं।
- भारत में सबसे पुराना हस्तकुठार सोहन घाटी से प्राप्त हुआ है।
- मध्य पुरापाषाण काल के औजार मुख्य रूप से शल्क के बने थे। यह नियान्डरथल मानव का काल था। फलक, वेधनी, खुरचनी, तक्षणी, वेधक इस काल के औजार थे। इसे **फलक संस्कृति** भी कहा जाता है।
- उच्च पुरापाषाण काल में अस्थि उपकरणों का प्रचलन था। इस काल के बाघ, हाथी, गैड़े, भैंसे, सूअर इत्यादि के चित्र प्राप्त होते हैं।
- **आग का आविष्कार** पुरापाषाण काल की देन है। भीमबेटका गुफा की खोज बी. एस. बाकणकर ने 1958 ई. में की थी।

पुरापाषाणकालीन संस्कृतियां

काल	विशेषताएँ
निम्न पुरापाषाण	हस्तकुठार, विदारिणी
मध्य पुरापाषाण	शल्क (Flake) के बने औजार
उच्च पुरापाषाण	शल्कों एवं फलकों (ब्लेड़) के औजार

- **निम्न (पूर्व) पुरापाषाण काल के स्थल-** वेलनघाटी (इलाहाबाद), पहलागाम (कश्मीर), भीमबेटका एवं आदमगढ़ (होशंगाबाद म. प्र.), 16 आर और सिंगी तालाब (नागौर), नेवासा (अहमदनगर-महाराष्ट्र) हुसंगी (गुलबर्गा कर्नाटक), अट्टिरामपक्कम (तमिलनाडु)।
- **मध्य पुरापाषाणकाल के स्थल-** भीमबेटका, नेवासा, पुष्कर, ऊपरी सिंध की रोहिरी पहाड़ियाँ, नर्मदा के किनारे स्थित समानापुर।

मध्य पाषाणकाल (10000-6000 ई. पू.)

- इस काल के लोग शिकार और मछली पकड़कर अपना पेट भरते थे। इस काल में पाषाण(पत्थर) के लघु अश्म (उपकरण) बनाए जाते थे। इस काल में तीर- कमान का प्रचलन प्रारंभ हुआ।
- भारत में सर्वप्रथम लघु अश्भ 1867 में **सी. एल. कार्लाइल** द्वारा खोजा गया। फलक, वेधनी प्रमुख उपकरण थे।
- **मध्य पाषाण काल के स्थल** - बागौर (राजस्थान); लंघनाज (गुजरात); सरायनाहर, चोपनीमाण्डो, महगड़ा एवं दमदमा (उत्तर प्रदेश), भीमबेटका, आदमगड़ (मध्य प्रदेश)।

नवपाषाण काल (6000-1000 ई. पू.)

- **आग की खोज** और कुत्ते को पालतू बनाना इस काल की प्रमुख विशेषता है।
- इस काल के लोग पॉलिशदार पत्थर के औजारों का प्रयोग करते थे।
- कृषि का आरंभ, गर्त आवास (बुर्जहोम से प्राप्त), अस्थि के औजार, पोत निर्माण, स्थायी जीवन और समाज का निर्माण मानव शव के साथ कुत्ते को दफनाना इत्यादि इस काल की महत्वपूर्ण विशेषताएं थीं।

ताम्रपाषाण एवं लौह काल (3500 - 1200 ई. पू. एवं 1000-600 ई. पू.)

- ताम्रपाषाण मुख्यतः ग्रामीण संस्कृति थी। यह एक कृषक, पशुचारक और क्षेत्रीय संस्कृति थी। इस काल में तांबे और पत्थर के औजारों का साथ-साथ प्रयोग हुआ।
- **भारत में ताम्र**- पाषाण अवस्था के मुख्य क्षेत्र द. पूर्व राजस्थान, म. प्रदेश के पश्चिमी भाग, पश्चिमी महाराष्ट्र तथा दक्षिण - पूर्वी भारत हैं।
- द.पू. राजस्थान में स्थित **बनास घाटी** के सूखे क्षेत्रों में **आहार** एवं **गिलुंद** स्थलों की खुदायी की गयी है। इसे **आहार संस्कृति** कहा जाता है। आहार का प्राचीन नाम **तांबवती** था।
- **नवादाटोली, एरण** एवं **नागदा** मालवा संस्कृति के मुख्य स्थल हैं। मालवा से प्राप्त मृद्भाण्ड ताम्रकालीन अन्य मृद्भाण्डों में सर्वोत्तम हैं।
- महाराष्ट्र एवं मध्य प्रदेश से **सूत** एवं **रेशम** तथा कायथा से **मनके के हार** प्राप्त हुए हैं। मालवा से मिट्टी की **वृषभ मूर्ति** तथा इनामगांव से **मातृदेवी की मूर्ति** प्राप्त हुई है।
- ताम्रकाल के लोग मातृदेवी की पूजा करते थे तथा वृषभ धार्मिक सम्प्रदाय का प्रतीक था। लाल मृद्भांड का प्रयोग होता था तथा **अग्नि पूजा** का प्रचलन था। शव संस्कार के अंतर्गत शवों को घरों के भीतर ही दफना दिया जाता था।
- भारत में सर्वप्रथम ताम्र धातु का प्रयोग किया गया।
- उत्तर भारत में लौह काल के साथ-साथ चित्रित धूसर मृद्भाण्ड (PGW) संस्कृति का विकास हुआ। लोहे का प्रयोग प्रायः 1000 - 600 ई. पूर्व से मिलने लगता है।

ताम्रपाषाणिक संस्कृतियां	
संस्कृति	**काल**
अहार	1700-1500 ई.पू.
कायथा	2000-1800 ई. पू.
मालवा	1500-1200 ई.पू.
सावलदा	2300-2200 ई.पू.
जोर्वे	1400-700 ई.पू.
प्रभास	1800-1200 ई.पू.

सिन्धु (हड़प्पा) सभ्यता

- हड़प्पा सभ्यता का विस्तार त्रिभुजाकार था तथा उसका क्षेत्रफल 12,99,600 वर्ग किमी था। रेडियों कार्बन (C^{14}) के आधार पर इस सभ्यता का काल 2350 - 1750 ई. पू. निर्धारित किया गया है।
- 'सिंधु सभ्यता' शब्द का पहली बार प्रयोग पुरातत्वविद् सर जॉन मार्शल द्वारा किया गया, जिन्होंने 1921 ई. में इसकी खोज की।
- इस सभ्यता के मूल निवासी **द्रविड़** एवं **भूमध्यसागरीय** थे। यह **कांस्ययुगीन** सभ्यता थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक पूर्वी स्थल **आलमगीरपुर** (मेरठ, उ. प्रदेश), पश्चिमी स्थल **सुत्कांगेंडोर** (बलूचिस्तान), उत्तरी स्थल **मांदा** (जम्मू - कश्मीर) तथा दक्षिणी स्थल **दायमाबाद** (अहमदनगर, महाराष्ट्र) है।

काल निर्धारण	
विद्वान	**निर्धारित काल**
जॉन मार्शल	3250–2750 ई. पू.
माधोस्वरूप वत्स	3500–2700 ई. पू.
मार्टिमर ह्वीलर	2500–1500 ई. पू.
अर्नेस्ट मैके	2800–2500 ई. पू.
फेयर सर्विस	2000–1500 ई. पू.
सी. जे. गैड	2350–1700 ई. पू.
कार्बन –14 (C^{14})	2350–1750 ई. पू.

- सिंधु सभ्यता के 6 स्थलों को नगर माना गया है- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल, कालीबंगान, धौलावीरा और चन्हूदड़ों।
- इस सभ्यता की लिपि भावचित्रात्मक थी जो दायीं से बायीं और फिर बायीं से दायीं और लिखी जाती थी, जिसे **बस्ट्रों फेडन लिपि** कहा जाता है।
- इस लिपि में 64 मूल अक्षर (चिह्न) हैं तथा 250 – 400 चित्राक्षर हैं, जिनका अंकन **सेलखड़ी** की आयताकार मुहरों पर हुआ है। इस लिपि में सबसे अधिक 'U' आकार का प्रयोग हुआ है तथा सबसे प्रचलित चिह्न **मछली** का है। लिपि का सबसे पुराना नमूना 1853 में मिला था तथा पूरी लिपि 1923 तक प्रकाश में आ गयी थी। इस लिपि को अभी तक पढ़ा नहीं जा सकता है। लोगों ने घरों एवं नगरों के विन्यास के लिए **ग्रिड पद्धति** अपनायी थी। घरों के दरवाजे और खिड़कियाँ घरों के पीछे खुलती थीं, केवल **लोथल** में दरवाजे एवं खिड़कियाँ मुख्य सड़क की ओर खुलती थीं।
- **गेहूँ** और **जौ** मुख्य फसलें थीं। **शहद** का प्रयोग होता था। लोथल और रंगपुर से चावल के दाने प्राप्त हुए हैं।
- तौल की इकाई 16 के अनुपात में थी। मोहनजोदड़ो से प्राप्त अन्नागार सैंधव सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत है।
- मोहनजोदड़ो से एक वृहद् स्नानागार प्राप्त हुआ है, जिसका स्नानकुण्ड 11.88 मीटर लम्बा, 7.01 मीटर चौड़ा तथा 2.43 मीटर गहरा है।
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक सील पर तीन मुख्य वाले देवता (पशुपति नाथ) की मूर्ति मिली है, जिसके चारों ओर **हाथी, गैंडा, चीता** एवं **भैंसा** विराजमान हैं।

प्रमुख स्थल, नदी, स्थिति, उत्खननकर्त्ता, वर्ष एवं प्राप्त साक्ष्य					
प्रमुख स्थल	**नदी**	**स्थिति**	**उत्खननकर्त्ता**	**वर्ष**	**प्राप्त साक्ष्य**
हड़प्पा	रावी के बाएँ किनारे पर	मोण्टगोमरी (पकिस्तान)	दयाराम साहनी	1921	मुहरों पर एक शृंगी पशु, काँसे की इक्कागाड़ी, अन्नागार, कब्रिस्तान 37,16 भट्ठियां, श्रमिक निवास
मोहनजोदड़ो	सिंधु के दाहिने किनारे पर	लरकाना (पकिस्तान)	राखालदास बनर्जी	1922	तीन मुख वाले देवता (पशुपति), नर्तकी की काँस्य मूर्ति, विशाल अन्नागार व स्नानागार, सूती वस्त्र, कुम्हार के 6 भठ्ठे
चन्हूइड़ो	सिन्धु	सिन्ध (पकिस्तान)	एन. जी. मजूमदार	1931	मनके बनाने के कारखाने, दवात, मुहर निर्माण, लिपस्टिक
कालीबंगा	घग्घर (सरस्वती)	श्रीगंगानगर (राजस्थान)	अमलानन्द घोष	1953	जुते हुए खेत, नक्काशीदार ईंट, अग्निवेदिका, पकी मिट्टी का हल
कोटदीजी	सिन्धु	खैरपुर (पकिस्तान)	फजल अहमद	1953	पत्थर के बाणाग्र

रंगपुर	मादर	काठियावाड़ (गुजरात)	रंगनाथ राव	1953–54	धान की भूसी, गेहूँ की खेती
रोपड़	सतलज	रोपड़ (पंजाब)	यज्ञदत्त शर्मा	1953–56	मानव के साथ कुत्ते दफनाने का साक्ष्य
लोथल	भोगवा	अहमदाबाद (गुजरात)	रंगनाथ राव	1957	बन्दरगाह (डॉकयार्ड), हाथीदाँत का पैमाना, युग्म शवाधान, चावल के दाने, खिलौना
बनावली	सरस्वती नदी	हिसार (हरियाणा)	रवीन्द्र सिंह विष्ट	1974	मिट्टी से बना हल का खिलौना, जौ
धौलावीरा	खादिर बेत	कच्छ (गुजरात)	बी. बी. लाल एवं विष्ट	1959, 1990–91	खेल का मैदान, पत्थर के नेवले की मूर्ति, स्टेडियम, जलाशय

- हड़प्पा की मुहरों पर सबसे अधिक एकश्रृंगी पशु का अंकन मिलता है। लोथल से मेसोपोटामिया की बेलनाकार मुहर प्राप्त हुई है।
- मेसोपोटामिया के अभिलेखों में वर्णित **मेलुहा** से तात्पर्य सिन्धु सभ्यता है।
- सिन्धु सभ्यता का शासन संभवतः वणिक वर्ग के हाथों में था। **पिग्गट महोदय** ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को विस्तृत साम्राज्य की जुड़वा राजधानी कहा है।
- इस सभ्यता में **मातृदेवी** की उपासना सर्वाधिक प्रचलित थी। **कुबड़वाला सांड** विशेष पूजनीय था। धरती को **उर्वरता की देवी** माना जाता था। स्त्री मृण्यमूर्तियाँ अधिक मिलने से ऐसा प्रतीत होता है कि सैंधव समाज **मातृसत्तात्मक** था। **स्वास्तिक चिह्न** हड़प्पा सभ्यता की देन है।
- समाज चार वर्गों में विभक्त था– पुरोहित (विद्वान), योद्धा, व्यापारी एवं श्रमिक। **पर्दा प्रथा** तथा **वेश्यावृत्ति** का प्रचलन था। मंदिर का कोई अवशेष नहीं मिला है। मछली पकड़ना और शिकार करना दैनिक कार्यकलाप था। शतरंज खेल कर प्रचलन था।
- गेहूँ और जौ के अतिरिक्त तिल, दालें, खजूर, मांस खाने में प्रयुक्त होते थे। कुत्ता, हाथी, खरगोश, कछुआ, चीता, मुर्गा, उल्लू इत्यादि से लोग परिचित थे।
- स्वतंत्रता के बाद सर्वाधिक सैंधव स्थल **गुजरात** से मिले हैं। शवों का जलाने और दफनाने की दोनों पद्धतियां प्रचलित थीं।
- मुहरें अधिकांशतः **सेलखड़ी** की बनी होती थीं। आग में पकाई हुई मिट्टी को **टेराकोटा** कहा जाता है। मृण्मूर्तियाँ इसी की बनी होती थीं।
- हड़प्पा सभ्यता के स्थल से प्राप्त नगरीय अवशेष प्रायः दो भागों में विभाजित हैं– ऊपरी एवं निम्न भाग। ऊपरी भाग दुर्गकृत है। प्रायः सभी भवनों में स्नानागार बनाए जाते थे। भवनों का निर्माण पक्की ईंटों से हुआ है।
- हड़प्पा सभ्यता में **लाल मृद्भांड** का प्रयोग होता था।

सिंधु सभ्यता के स्थल एवं संबद्ध क्षेत्र

क्षेत्र	**संबद्ध स्थल**
अफगानिस्तान	शोर्तुघई, मुण्डीगाक
बलूचिस्तान	सुत्कांगेंडोर, सुंक्काकोह बालाकोट, मेहरगढ़, रानाघुण्डई, कुल्ली डाबरकोट, दबसादात
पश्चिमी पंजाब (पकिस्तान)	हड़प्पा, रहमानढेरी, डेरा ईस्माइलखान, जलीलपुर
सिंध	मोहनजोदड़ो, कोटदीजी, आमरी, अलीमुराद, चन्हुदडों, जुदेड़जोदड़ों

गुजरात	धौलावीरा, सुरकोटदा, देशलपुर, लोथल, रंगपुर, रोजदी, भगतराव, मालवन
राजस्थान	कालीबंगा
जम्मू-कश्मीर	माण्डा
पंजाब (भारत)	रोपड़
हरियाणा	बनावली, राखीगढ़ी, मीताथल, सिसवल, दौलतपुर
उत्तर प्रदेश	आलमगीरपुर, हुलास एवं बड़ागाँव

प्रमुख आयतित वस्तुएँ एवं प्राप्ति स्थल

आयतित वस्तुएँ	**प्राप्ति स्थल**
चांदी	ईरान, मेसोपोटामिया, अफगानिस्तान
सोना	अफगानिस्तान, फारस, कर्नाटक
तांबा	खेतड़ी (राजस्थान), बलूचिस्तान
टिन	अफगानिस्तान, ईरान
हरितमणि	दक्षिण भारत
सेलखड़ी	राजस्थान, गुजरात, बलूचिस्तान
शंख एवं कौड़ियां	सौराष्ट्र (गुजरात), द. भारत
शिलाजीत	हिमालय क्षेत्र
नील रत्न	बदख्शां
लाजवर्द	मेसोपोटामिया, बदख्शाँ
फिरोजा	ईरान
गोमेद	सौराष्ट्र (गुजरात)
सीसा	ईरान, अफगनिस्तान, द. भारत
स्लेट	कागंड़ा (हिमाचल प्रदेश)
स्फटिक	दक्कन पठार, उड़ीसा, बिहार
स्टेटाइट	ईरान

- इस सभ्यता के लोग बाह्य व्यापार करते थे।
- तांबा और टिन मिलकार **कांस्य** बनाया जाता था। लोग माप के **दशमलव प्रणाली** से परिचित थे।

पतन के कारण	
प्रतिपादक	**कारण**
फेयर सर्विस	पारिस्थितिक असंतुलन
सूद एवं अग्रवाल	नदी की शुष्कता
मार्शल, मैके, एस. आर. राव	भीषण बाढ़
के. यू. आर. केनेडी	प्राकृतिक आपदा
चाइल्ड, पिग्गाट	बाह्य आक्रमण
ह्वीलर	आर्य आक्रमण

वैदिक काल

- वैदिक काल को दो भागों में बाँटा गया है- **ऋग्वेद काल** (1500-1000 ई. पू.) एवं **उत्तरवैदिक काल** (1000-600 ई. पू.)।

ऋग्वैदिक काल

- वैदिक संस्कृति का निर्माण आर्यों द्वारा किया गया। आर्य भारत के जिन क्षेत्रों में सर्वप्रथम बसे, उस क्षेत्र को **सप्त सैंधव् प्रदेश** कहा गया। यह नाम उस क्षेत्र की सात नदियों की अवस्थिति के कारण पड़ा। ये नदियां हैं- **सिन्धु, सतलज, रावी, चिनाब, व्यास, झेलम** तथा **सरस्वती**।
- ऋग्वेद में इस क्षेत्र को **ब्रह्मावर्त** भी कहा गया है।
- मैक्समूलर ने आर्यों का मूल निवास स्थान **मध्य एशिया** को माना है।

- आर्यों की भाषा **संस्कृत** थी, समाज **पितृप्रधान** था तथा प्रशासन 5 इकाइयों में बँटा था- कुल, ग्राम, विश, जन और राष्ट्र।
- राजनीतिक संरचना की सबसे छोटी इकाई **कुल** या परिवार होती थी, जिसके प्रधान को **कुलप** कहा जाता था। गांवों के मुखिया को **ग्रामणी**, कई गांवों के समूह 'विश' के प्रधान को **विशपति** तथा अनके विशों के समूह 'जन' के मुखिया (प्रधान) को **जनपति** या **राजा** (राजन्) कहा जाता था।
- सूत, रथकार, कम्मादि अधिकारी **रत्निन** कहे जाते थे, इनकी संख्या 12 होती थी।
- शतपथ ब्राह्मण में रत्निन की संख्या 12 है, जो इस प्रकार है-

(i) पुरोहित (ii) सेनानी (iii) युवराज (iv) महिषि (रानी) (v) सूत (राजा का सारथी)
(vi) ग्रामीण (गाँव का मुखिया)
(vii) प्रतिहारी या क्षेत्र (द्वारपाल)
(viii) संगृहित्री (कोषाध्यक्ष)
(ix) भागदुध (कर संग्रहकर्ता)
(x) अक्षवाप (पासे के खेल में राजा का सहयोगी)
(xi) पालागल (संदेशवाहक)
(xii) गोविकर्तन (शिकार में राजा की सहायता करने वाला)।

- राज्याधिकारियों में **पुरोहित** और **सेनानी** प्रमुख थे। **उग्र** अपराधियों को पकड़ने का काम करता था। **पुरप** दुर्गपति तथा **स्पश** जनता की गतिविधियों को देखने वाले गुप्तचर होते थे।
- राजा को सलाह देने के लिए **सभा** एवं **समिति** होती थी। सभा श्रेष्ठ एवं संभ्रांत लोगों संस्था थी तथा समिति एक केन्द्रीय राजनीतिक संस्था थी। समिति राजा को नियंत्रित करती थी। समिति के सभापति को **ईशान** कहा जाता है।
- आर्यों की सर्वाधिक प्राचीन संस्था **विद्थ** थी, यह **जनसभा** थी। ऋग्वैदिक काल में महिलाएं भी सभा एवं विदथ में भाग लेती थीं।
- ऋग्वेद के **सातवें** मंडल में **दशराज्ञ युद्ध** का वर्णन आया है, जिसमें भरत वंश के राजा **सुदास** एवं दस राजाओं के संघ (5 आर्य एवं 5 अनार्य) के मध्य **पुरुष्णी** (रावी) नदी के तट पर युद्ध हुआ था।
- इस युद्ध में सुदास विजयी हुए। भरत जन के मुख्य पुरोहित **वशिष्ठ** तथा दस राजाओं के संघ के पुरोहित **विश्वामित्र** थे।
- इस युद्ध में 5 आर्य - **अनु, द्रह्मयु, यदु, पुरू, तुर्वश** तथा 5 अनार्य - **अकिन, पक्य, भलानस, शिव, विषाणिन** थे।
- ऋग्वेद में युद्ध के लिए **गविष्टि, गवेषण** (गाय की खोज) आदि शब्द आए हैं।
- ऋग्वेद में इन्द्र का उल्लेख 250 बार, अग्नि का 200, जन का 275, विश का 171, वरुण का 200, सोम का 144, गंगा का 1, यमुना का 3, गण का 10, राष्ट्र का 10, पृथ्वी का 1 बार उल्लेख आया है।
- **ऋग्वैदिक नदियां**- कुभा (काबुल), सुवास्तु (स्वात), क्रुमु (कुर्रम), गोमती (गोमल), वितस्ता (झेलम), अस्क्नी (चिनाब), पुरुष्णी (रावी), शुतुद्री (सतलज), विपाशा (व्यास), सदानीरा (गण्डक), दृषद्वती (घग्घर), मरुद्वृद्धा (मरूवर्मन), सुषामा (सोहन)।
- ऋग्वेद में कुल 42 नदियों का उल्लेख है जो अफगानिस्तान से लेकर यमुना तक फैली हैं। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण और पवित्र नदी **सरस्वती** को माना गया है तथा इसे **नदीतमा** कहा गया है।

ऋग्वैदिक देवता	
इन्द्र	युद्ध एवं वर्षा के देवता
मरुत	आंधी-तूफान के देवता
सरस्वती	नदी देवी
अरण्यानी	जंगल की देवी
पूषन	पशुओं के देवता
यम	मृत्यु के देवता
मित्र	शपथ एवं प्रतिज्ञा के देवता
आश्विन	चिकित्सा के देवता
सोम	वनस्पति के देवता
सूर्य	जीवन देनेवाला (भुवनचक्षु)
त्वष्टा	धातुओं के देवता
आर्ष	विवाह एवं संधि के देवता
विवस्वान	देवताओं के जनक
अग्नि	मनुष्यों एवं देवताओं के लिए मध्यस्थता

- ऋग्वैदिक काल के सबसे महत्त्वपूर्ण देवता **इन्द्र** थे। देवियां नगण्य थीं, किन्तु **ऊषा, अदिति, सविता** इत्यादि का उल्लेख आया है। गायत्री

मंत्र सविता (सूर्य) को समर्पित है। 'असतो मा सद्गमय' ऋग्वेद से लिया गया है।

- **अग्नि** दूसरे तथा **वरुण** तीसरे महत्त्वपूर्ण देवता थे।
- वरुण को **ऋतस्यगोपा** कहा गया है तथा उसे नैतिक व्यवस्था बनाए रखने वाला देवता माना गया है।
- सम्पति की गणना **रचिय** अर्थात् मवेशियों के रूप में होती थी।
- जुते हुए खेत को **उर्वरा**, पशुचारण भूमि को **खिल्य**, हल को **सीर**, हंसिया को **सृणि**, गोबर की खाद के लिए **करीष**, हल से बनी नालियों के लिए **सीता** शब्द का प्रयोग हुआ है।
- ऋग्वेद में **यव** तथा **धान** की चर्चा है। अर्थव्यवस्था निर्वाह पर आधारित थी। **वस्तु-विनिमय** प्रणाली प्रचलित थी।
- **गोत्र** सामाजिक संगठन का आधार था। बाल विवाह और पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था। स्त्रियाँ यज्ञ कार्यों में अपने पति के साथ भाग लेती थीं।
- नियोग प्रथा (विधवा का देवर से विवाह) प्रचलित था।
- स्त्रियां शिक्षा ग्रहण करती थीं। ऋग्वेद में **लोपामुद्रा, घोषा, अपाला, विश्वारा, सिकता** जैसी विदुषी स्त्रियों का वर्णन है।
- ऋग्वैदिक समाज एक कबिलाई समाज था। ऋग्वेद के 10वें मण्डल के पुरुषसूक्त में चार वर्णो - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र का वर्ण आया है (पहली बार)।
- ऋग्वेद में गाय को **अधन्या** (न मारने योग्य) कहा गया है।
- ऋग्वेद में, दस्यु की चर्चा **अदेवयु** (देवताओं में श्रद्धा नहीं रखने वाले), **अब्रह्मान** (वेदों को न माननेवाले) तथा **अयज्वन** (यज्ञ नहीं करनेवाले) के रूप में की गयी है।
- स्त्री तथा पुरुष दोनों आभूषणों के शौकीन थे। परिधान के तीन प्रकार थे- वास (शरीर के ऊपर का वस्त्र), **अधिवास** (कमर के नीवे का वस्त्र), उष्णीय (पगड़ी)। अधोवस्त्र को **नीवी** कहा जाता था।
- अविवाहित स्त्रियों को **अमाजू** कहा जाता था। कन्या के विदाई के समय दिए गए उपहार को **वहतु** कहा जाता था।
- कृषि एवं पशुपालन मुख्य व्यवसाय था। कृषि के संबंध में उल्लेख ऋग्वेद के **चौथे मण्डल** में मिलता है।
- अतिथि को **गोहन्ता** कहा जाता था। ऋण देकर ब्याज लेने वाले व्यक्ति को **वेकनॉट** (सूदखोर) कहा जाता था।
- **ऋग्वेद के मण्डलों के रचना कार - प्रथम मण्डल** - मधुच्छन्दा, दीर्घतमस, अंगीरा; **द्वितीय मण्डल** - गृत्समद, भार्गव; **तृतीय मण्डल** - विश्वामित्र; **चतुर्थ मण्डल** - वामदेव; **पंचम मण्डल** - अत्रि; **षष्ठ मण्डल** - भारद्वाज; **सप्तम मण्डल** - वशिष्ठ; **अष्टम मण्डल** - कण्व; **नवम् मण्डल** - पवमान अंगिरस; **दशम् मण्डल** - महासूक्तीय, क्षद्रसूक्तीय।

उत्तर वैदिक काल

- इस काल में आर्यों का विस्तार पूर्व तथा दक्षिण - पूर्व की ओर हुआ और वे **गंगा-यमुना दोआब** (पंजाब से कुरूक्षेत्र) तक फैल गए। उनका जीवन स्थायी हो गया तथा पशुपालन की जगह कृषि को अधिक महत्त्व मिलने लगा। आर्यों के निवास स्थान को **आर्यावर्त** कहा गया।
- राजा का पद वंशानुगत होने लगा। ऋग्वैदिक कबीलों ने **जनपद** का स्थान ले लिया। राजा अधिक शक्ति-सम्पन्न होने लगे। उनपर सभा एवं समिति जैसी संस्थाओं का नियंत्रण कम हो गया। **विदथ** पूर्णत: नष्ट हो गयी।
- सभा में स्त्रियों का प्रवेश वर्जित हो गया।
- इस काल में **राष्ट्र** शब्द का प्रयोग मिलने लगता है। **बलि** के अतिरिक्त **भाग** तथा शुल्क जैसे करों की चर्चा मिलने लगती है। आय का 16 वाँ भाग कर (भाग) के रूप में लिया जाता था।
- कर्मकाण्डों के विधानों; जैसे - राजसूय, अश्वमेध, वाजपेय आदि यज्ञों ने राजा की प्रतिष्ठा को बढ़ाया।
- उत्तर वैदिक काल में अनेक दार्शनिक राजा हुए - विदेह के **जनक**, कैकेय के **अश्वपति**, काशी के **अजातशत्रु** और पांचाल के **प्रवाहण जाबालि।**
- इस काल में **संगृहीत, भागदूध, सूत गोविकर्तन** जैसे अधिकारी अस्तित्व में आए।
- इस काल में ऋग्वैदिक देवताओं का महत्त्व घट गया तथा नए देवताओं को प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। इन्द्र, वरुण आदि का स्थान **प्रजापति, विष्णु** और **रुद्र - शिव** ने ले लिया।
- ऋग्वैदिक काल में 7 पुरोहित थे, इस काल में उनकी संख्या 17 हो गयी। यज्ञ एवं कर्मकाण्ड खर्चीले एवं जटिल हो गए।

- **पूषण** ऋग्वैदिक काल में पशुओ के देवता थे, इस काल में शूद्रों के देवता हो गए।
- समाज में स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आयी। इस काल के ग्रंथों में पुत्री के जन्म को अच्छा नहीं माना गया है।

पंच महायज्ञ (गृहस्थ आश्रम)	
ब्रह्म या ऋषि यज्ञ	प्राचीन ऋषियों के प्रति कृतज्ञता
देवयज्ञ	देवताओं के प्रति कृतज्ञता
पितृ या नृयज्ञ	पितरों का तर्पण
मनुष्य यज्ञ	अतिथि सत्कार
भूत यज्ञ	समस्त जीवों के प्रति कृतज्ञता

- उत्तर वैदिक काल के ग्रंथ **छान्दोग्य उपनिषद्** में केवल तीन आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ) की चर्चा की गयी है। चारों आश्रमों (संन्यास शमिल) का उल्लेख सर्वप्रथम **जाबालोपनिषद्** में आया है।
- उत्तर वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था कर्म पर आधारित न होकर **जन्म पर आधारित** हो गयी।

चार धार्मिक पुरोहित	
होतृ	ऋग्वेद की प्रार्थना करने वाले पुरोहित, जिन्होंने ऋक् संहिता का पुनर्सृजन किया।
उद्गाता	सामवेद का गायन करनेवाले पुराहित।
अध्वर्यु	यजुर्वेद का मंत्रोच्चारण करनेवाले पुरोहित, ये पशुबलि में हस्तकार्य भी सम्पन्न करते थे।
ब्रह्मा	ये इस बात की जांच करते थे कि यज्ञ विधिपूर्वक किया जा रहा है तथा मंत्रोच्चारण शुद्ध हो रहा है या नहीं। इनका संबंध अथर्ववेद से था।
ऋत्विज	मुख्य पुरोहित के रूप में सभी यज्ञों का पर्यवेक्षण करता था।

तीन ऋण (गुहस्थ आश्रम)	
देवऋण	यज्ञ आदि करवाना
पितृ ऋण	धर्मानुसार संतान की उत्पत्ति करना
ऋषि ऋण	विधिपूर्वक वैदिक ग्रंथों का अध्ययन करना।

- इस काल में **निष्क** एवं **शतमान** नामक मुद्राएँ प्रचलन में थीं। वणिक संघों - **गण** तथा **श्रेष्ठिन** का अस्तित्व था। **कृष्णल** बाट की मूलभूत इकाई था।
- **विभिन्न यज्ञ**- (i) राजसूय - राज्याभिषेक के समय किया जाता था। इसमें 'सोम रस' ग्रहण किया जाता था तथा राजा रत्निनों के घर जाता था (ii) **अश्वमेध**- शक्ति का द्योतक था (iii) **वाजपेय** - राजा अपनी शक्ति के प्रदर्शन हेतु रथदौड़ का आयोजन करता था (iv) **आग्निष्टोम**- इसमें अग्नि को पशुबलि दी जाती थी।
- **देवताओं का वर्गीकरण** - (i) **आकाश के देवता** - सूर्य, मित्र, द्यौस, विष्णु, ऊषा, सविता (ii) **अंतरिक्ष के देवता** - इन्द्र, रुद्र, मरुत, वायु (iii) **पृथ्वी के देवता** - अग्नि, पृथ्वी, सोम, बृहस्पति, सरस्वती।
- यजुर्वेद में 40 मण्डल तथा 200 ऋचाएँ हैं। रत्नियों की चर्चा इसी वेद में है।

वेदों की शरीर रचना	
छन्द	वेद के पैर
कल्प	वेद के हाथ
ज्योतिष	वेद की आँखें
निरुक्त	वेद के कान
शिक्षा	वेद की नासिका
व्याकरण	वेद के मुख

वेदांग एवं सम्बन्धित विषय	
शिक्षा	शुद्ध उच्चारण
कल्प	यज्ञों का सम्पादन
व्याकरण	व्याकरणिक नियम

निरुक्त	शब्दों की व्युत्पत्ति
छन्द	छन्दों का प्रयोग
ज्योतिष	खगोलविज्ञान

प्रमुख दर्शन एवं उनके प्रवर्तक	
दर्शन	**प्रवर्तक**
चार्वाक (भौतिकवादी)	चार्वाक
योग	पतञ्जलि
सांख्य	कपिल
न्याय	गौतम
पूर्वमीमांसा	जैमिनी
उत्तरमीमांसा	बादरायण
वैशेषिक	कणाद या उलूक

वेद, उनके ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् एवं उपवेद

वेद	ब्राह्मण	आरण्यक	उपनिषद्	उपवेद
ऋग्वेद	ऐतरेय, कौषितकी	ऐतरेय, कौषितकी	ऐतरेय, कौषितकी	आयुर्वेद
सामवेद	पंचविश, छांदोग्य, षड्विश, जैमिनीय	छांदोग्य, जैमिनीय	छांदोग्य, केन	गंधर्व वेद
यजुर्वेद	तैत्तरीय, शतपथ	वृहदारण्यक, तैत्तरीय	श्वेताश्वर, ईश, वृहदारयण्क, मैत्रायणी, कंठ तैत्तरीय	धनुर्वेद
अथर्ववेद	गोपथ	–	मुण्डक, प्रश्न, माण्डुक्य	शिल्पवेद

धार्मिक आन्दोलन

- भारत में वैदिक धर्म में पशुबलि, कर्मकाण्डों की जटिलता तथा खर्चीलेपन की प्रतिक्रिया स्वरूप 6वीं सदी ई. पू. में अनेक धार्मिक सम्प्रदायों का प्रादुर्भाव हुआ, जिनमें जैन एवं बौद्ध धर्मों ने प्रमुखता प्राप्त की। इन्होंने ब्राह्मणवादी व्यवस्था एवं श्रेष्ठता को चुनौती दी।

जैन धर्म

- सम्राट भरत के पिता **ऋषभदेव** (तीर्थंकर) पहले को जैन का संस्थापक माना जाता है। **अरिवाटनेमि** एवं **ऋषभदेव** का उल्लेख ऋग्वेद में है। अरिष्टनेमी, कृष्ण के संबंधी थे। 19वाँ तीर्थंकर **मल्लिनाथ** स्त्री थी।
- पार्श्वनाथ 23वें तीर्थंकर थे। ये काशी के इक्ष्वाकु वंशीय राजा अश्वसेन के पुत्र थे। इन्होंने 4 महाव्रतों का प्रतिपादन किया – (i) अहिंसा (ii) सत्य (iii) अपरिग्रह (iv) अस्तेय। पार्श्वनाथ के अनुयायियों को **निग्रंथ** कहा जाता था।
- महावीर जैन धर्म के 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर हुए। इनका जन्म 540 ई. पू. में वैशाली के **कुण्डग्राम** में हुआ था। इनके पिता **सिद्धार्थ** ज्ञातृक क्षत्रियों के संघ के प्रधान थे तथा माता **त्रिशला (विदेहदत्ता)** लिच्छवी राजा **चेटक** की बहन थी।
- महावीर का एक नाम **निगंथनाथ पुत्त** भी था। महावीर को 12 वर्षों की कठिन तपस्या के बाद **जृम्भिक गांव** के पास **ऋजुपालिका** नदी के तट पर **साल वृक्ष** के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ और वे **जिन** (विजेता), **अर्हत** (पूज्य) तथा **निग्रंथ** (बंधनमुक्त) कहलाए।
- महावीर का विवाह कौण्डिन्य गोत्र की कन्या **यशोदा** के साथ हुआ। उनकी पुत्री का नाम **अर्णोज्जा** या **प्रियदर्शिनी** था।
- महावीर के दामाद **जामालि** ने जैन धर्म में विद्रोह कर **बहुरतवाद** संप्रदाय की स्थापना की। यह महावीर का प्रथम अनुयायी था।
- महावीर ने अपने शिष्यों को 11 गणधरों में विभाजित किया। महावीर ने अपना उपदेश **प्राकृत (अर्द्धमागधी)** भाषा में दिया।
- प्रथम जैन भिक्षुणी दधिवाहन की पुत्री **चम्पा** थी।
- महावीर ने पार्श्वनाथ के महाव्रत में 5वाँ **ब्रह्मचर्य** को जोड़ दिया। गृहस्थों के लिए भी यही विधान थे, किन्तु उनमें थोड़ी नरमी के साथ लागू किया गया, इसलिए वे **अणुव्रत** कहलाए।
- जैन धर्म ईश्वर और **वेद** को नहीं मानता है, किन्तु **आत्मा** और **पुनर्जन्म** में विश्वास करता है।

- 30 वर्षों तक धर्मप्रचार के उपरांत 468 ई. पू. में 72 वर्ष की आयु में **पावा** (राजगृह के पास) में मल्लराजा **सृस्तिपाल** के राजमहल में महावीर को निर्वाण (मृत्यु) प्राप्त हुआ।
- जैन धर्म ने आध्यात्मिक विचारों को **सांख्य दर्शन** से ग्रहण किया।

जैन तीर्थंकर एवं उनके प्रतीक

तीर्थंकर		प्रतीक
1.	ऋषभदेव	वृषभ
2.	अजितनाथ	गज
3.	सम्भवनाथ	अश्व
4.	अभिनंदननाथ	कपि
5.	सुमतिनाथ	क्रौंच
6.	पद्मप्रभु	पद्म (लाल कमल)
7.	सुपार्श्वनाथ	स्वास्तिक
8.	चन्द्रप्रभु	चन्द्र
9.	सुविधिनाथ	मकर
10.	शीतलनाथ	वृक्ष
11.	श्रेयांसनाथ	गैण्डा
12.	पूज्यनाथ	महिष
13.	विमलनाथ	वराह
14.	अनन्तनाथ	श्येन (बाज)
15.	धर्मनाथ	वज्र
16.	शंतिनाथ (हस्तिनापुर नरेश)	मृग
17.	कुन्थुनाथ	अज
18.	अरनाथ	मीन
19.	मल्लिनाथ (मिथिला नरेश की पुत्री)	कलश
20.	सुव्रतनाथ	कूर्म
21.	नेमिनाथ	नीलकमल
22.	अरिष्टनेमि	शंख
23.	पार्श्वनाथ	सर्पफण
24.	महावीर	सिंह

- चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में मगध में अकाल पड़ा, जिसके कारण **भद्रबाहु** के नेतृत्व में कुछ भिक्षु कर्नाटक चले गए तथा कुछ **स्थूलभद्र** के नेतृत्व में मगध में ही रह गए।
- कालांतर में जैन धर्म **श्वेताम्बर** (सफेद वस्त्र धारण करने वाले) और **दिगम्बर** (नग्न रहनेवाले) में विभक्त हो गया।
- मौर्योत्तर काल में **मथुरा** जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र बना। उद्यन, चन्द्रगुप्त मौर्य, खारवेल (कलिंग नरेश), अमोघवर्ष (राष्ट्रकूट) एवं चंदेल शासकों ने इस धर्म को अपनाया।

जैन संगीतियां

संगीति (सम्मेलन)	समय	स्थान	अध्यक्ष	कार्य
प्रथम	322–298 ई. पू.	पाटलिपुत्र	स्थूलभद्र	12 अंगों का संकलन, धर्म दो शाखओं–श्वेताम्बर एवं दिगम्बर में विभक्त।
द्वितीय	512 ई.	वल्लभी	देवर्धि क्षमाश्रमण	11 अंग लिपिबद्ध, 12 उपांगों का संकलन।

- कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में **चामुण्डराय** ने बाहुबली **गोमतेश्वर** की विशाल मूर्ति का निर्माण करवाया। खजुराहो के जैन मंदिरों का निर्माण **चंदेल** शासकों द्वारा किया गया।

प्रमुख जैन ग्रंथ

ग्रंथ	रचनाकार
कुवलयमाला	उद्योतन सूरी
थेरावली	मेरुतुंग
पद्म पुराण	विमल सूरी
समराइच्चकहा	हरिभद्र
लोक विभंग	सर्वनंदी
प्रबंध चिन्तामणि	मेरुतुंग
कल्प सूत्र	भद्रबाहु
हरिवंश पुराण	जिनसेन

- कर्मफल को समाप्त करने अर्थात् जीवन-मृत्यु से मुक्ति के लिए महावीर ने त्रिरत्न का सिद्धांत दिया। ये त्रिरत्न थे – (i) सम्यक् ज्ञान (ii) सम्यक् दर्शन तथा (iii) सम्यक् चरित्र।
- जैन धर्म के सप्तभंगी ज्ञान के अन्य नाम है – **स्यादवाद** एवं **एकान्तवाद**।
- जैन धर्म में उपवास द्वारा प्राण त्यागने को **सल्लेखन** कहा जाता है।

बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध (बचपन का नाम सिद्धार्थ) का जन्म 563 ई. पू. में कपिलवस्तु के पास **लुम्बिनी वन** में हुआ था। पिता **शुद्धोधन** कपिलवस्तु के शाक्यगण के प्रधान थे तथा माता **मायादेवी** कोलीय गणराज्य की कन्या थी।
- जन्म के 7वें दिन उनकी माता की मृत्यु के बाद उनका लालन-पालन उनकी मौसी **प्रजापति गौतमी** ने किया।
- 16 वर्ष की आयु में सिद्धार्थ का विवाह **यशोधरा** (गोपा, बिम्बा, भदकच्छना) के साथ हुआ, जिससे **राहुल** नामक पुत्र पैदा हुआ।
- **चन्ना** (सारथी) के साथ सैर करते हुए सिद्धार्थ ने क्रमशः बुढ़े व्यक्ति, रोगी, मृत शरीर और सन्यासी को देखा। वे संन्यासी से प्रभावित हुए और सांसारिक दुःखों से व्यथित होकर 29 वर्ष की आयु में गृहत्याग दिया, जिसे **महाभिनिष्क्रमण** कहा जाता है।
- गृहत्याग के बाद सिद्धार्थ ने आलार कलाम से सांख्य दर्शन की शिक्षा ली। उरवेला में उन्हें **कौणिडन्य, वप्पा, भादिया, महानामा** और **अस्सागी** नामक 5 साधक मिले।
- सिद्धार्थ को 35 वर्ष की आयु में, बिना अन्न-जल ग्रहण किए 6 वर्ष की कठिन तपस्या के पश्चात् **गया** में **फल्गु** (निरंजना) नदी के तट पर **पीपल** के वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ, जिससे वे बुद्ध कहलाए।
- ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् सर्वप्रथम बुद्ध ने सारनाथ (ऋषिपतनम) में अपना प्रथम उपदेश (उरबेला में छोड़े गए पांच साधकों को) दिया, जिसे **धर्मचक्र प्रवर्तन** कहा गया है।
- बुद्ध ने अपने उपदेश **पाली** भाषा में दिए। उन्होंने सर्वाधिक उपदेश **श्रावस्ती** में दिए।
- संघ में प्रवेश पानेवाली पहली महिला **प्रजापति गौतमी** थी। महात्मा बुद्ध ने **आनन्द** (शिष्य) के कहने पर महिलाओं को संघ में प्रवेश की अनुमति दी थी।
- महात्मा बुद्ध ने **मध्यम प्रतिपद** (मध्यम मार्ग) का उपदेश दिया।
- **चार आर्य सत्य :** (i) संसार दुःखों का घर है, (ii) तृष्णा (इच्छा) दुःखों का कारण है, (iii) इच्छाओं के त्याग से ही दुःखों से छुटकारा पाया जा सकता है तथा (iv) इच्छा को अष्टमार्ग पर चलकर समाप्त किया जा सकता है।
- **आष्टांगिक मार्ग :** (i) सम्यक् दृष्टि (ii) सम्यक् संकल्प (iii) सम्यक् वचन (iv) सम्यक् कर्म (v) सम्यक् आजीविका (vi) सम्यक् प्रयत्न (vii) सम्यक् विचार (viii) सम्यक् समाधि (अध्ययन)।
- **त्रिरत्न एवं शील के नियम :** बौद्ध धर्म के त्रिरत्न हैं – **बुद्ध, संघ** एवं **धम्म**। बौद्ध भिक्षुओं के लिए 10 शील के नियम अनिवार्य हैं, जिनमें प्रथम पाँच उपासकों के लिए भी अनिवार्य हैं।
- दस शील के नियम जो नैतिक जीवन का आधार हैं – (i) अंहिसा (ii) सत्य (iii) अस्तेय (चोरी न करना) (iv) व्यभिचार न करना (v) मद्य का सेवन न करना (vi) असमय भोजन न करना (vii) सुखप्रद बिस्तर पर न सोना (viii) सुगंधित वस्तुओं का सेवन नहीं करना (ix) धन संचय न करना (x) स्त्रियों का संसर्ग न करना।
- बौद्ध धर्म **ईश्वर, आत्मा** एवं **वेद की सत्ता** को अस्वीकार करता है, किंतु मोक्ष को स्वीकार करता है। बुद्ध ने कर्मकाण्डों का खण्डन किया तथा हत्या को अधार्मिक बताया।
- बौद्ध संघ की सदस्यता सभी जातियों के लिए सुलभ थी। संघ की सदस्यता के लिए 15 वर्ष या उससे अधिक उम्र अनिवार्य थी। बौद्ध संघ में चोर, हत्यारों, ऋणी व्यक्तियों, राजा के सेवक, दास तथा रोगियों का प्रवेश वर्जित था।

बुद्ध से संबंधित प्रतीक	
जन्म	कमल एवं सांड
गृहत्याग	घोड़ा
ज्ञान	पीपल वृक्ष
निर्वाण	पद चिह्न
मृत्यु	स्तूप

- **बिम्बिसार, प्रसेनजित** तथा **उदयन बुद्ध** के प्रमुख अनुयायी थे।

- महात्मा बुद्ध का महापरिनिर्वाण (मृत्यु) 483 ई. पू. में 80 वर्ष की अवस्था में उत्तर प्रदेश में देवरिया के **कुशीनारा** में उनके शिष्य **चुन्द** द्वारा दिए गए भोजन (सूअर मांस) ग्रहण करने के पश्चात् हुआ।
- **मल्लों** ने सम्मानपूर्वक बुद्ध का अन्त्येष्टि संस्कार किया। अन्त्येष्टि के पश्चात् अवशेषों को आठ भागों में बाँटकर उनपर स्तूप का निर्माण कराया गया।
- **वैशाख पूर्णिमा** बौद्धों का सबसे पवित्र त्योहार है। भारत में पूजित पहली मानव प्रतिमा बुद्ध की थी, जो मथुरा शैली में बनी थी।

बौद्ध संगीतियाँ

	काल	स्थान	अध्यक्षता	शासक	कार्य
प्रथम	483 ई. पू.	राजगृह (सप्तपर्णी गुफा)	महाकस्सप	अजातशत्रु	सुत्त एवं विनय पिटक का संग्रहण
द्वितीय	383 ई. पू.	वैशाली	सुबुकामी	कालाशोक	बौद्धसंघ स्थविर एवं महासंधिक में बँटा।
तृतीय	251 ई. पू.	पाटलिपुत्र	मोग्लीपुत्ततिस्य	अशोक	अभिधम्म पिटक का संकलन कर कत्थावथु को जोड़ा गया।
चतुर्थ	102 ई.पू.	कश्मीर (कुण्डलवन)	वसुमित्र (अश्वघोष – उपाध्यक्ष)	कनिष्क	बौद्ध धर्म हीनयान एवं महायान में बँटा तथा विभाषाशास्त्र का संकलन किया गया।

- बौद्धों के प्रस्ताव पाठ को **अनुसावन**, प्रत्यक्ष मतदान को **विवतक**, बौद्ध संघ में प्रविष्ट होने को **उपसम्पदा** कहा जाता था। बौद्ध धर्म में संन्यासी जीवन व्यतीत करने वाले **भिक्षुक** तथा गृहस्थ आश्रम व्यतीत करते हुए बौद्ध धर्म अपनानेवाले **उपासक** कहलाए।
- **जातक** में बुद्ध के पूर्व जन्म की 500 से अधिक कथाएँ हैं। **बुद्धघोष** बौद्ध धर्मग्रंथ के महान् टीकाकार थे। **सतुपिटक** को बौद्ध धर्म का **इनसाइक्लोपीडिया** कहा जाता है।
- कनिष्क के काल में बौद्ध धर्म दो सम्प्रदायों में बँट गया **हीनयान** तथा **महायान**। महायान के संस्थापक **नागार्जुन** थे। महायानी बुद्ध को ईश्वर का अवतार मानते हैं। महायान तिब्बत, जापान, चीन, कोरिया, मंगोलिया में फैला है।
- महायान **शून्यवाद** एवं **विज्ञानवाद** में विभाजित हुआ। शून्यवाद के प्रवर्तक **नागार्जुन** एवं विज्ञानवाद के प्रवर्तक **मैत्रेयनाथ** थे।
- हीनयान एक व्यक्तिवादी मार्ग है जो केवल भिक्षुओं के लिए ही संभव है। ये परिवर्तन या सुधार विरोधी थे। हीनयान के सभी ग्रंथ **पालीभाषा** में लिखे गए।
- हीनयान सम्प्रदाय श्रीलंका, जावा, वर्मा (म्यांमार) में फैला है। हीनयानी बुद्ध को केवल एक **महापुरुष** ही मानते थे, ईश्वरीय अवतार नहीं।

बौद्धग्रंथ एवं उनके लेखक

रचनाकार	कृतियाँ
नागार्जुन	प्रज्ञापारमिता, सहस्त्रिका, चतुष्टिका, आर्यदेव
अश्वघोष	बुद्धचरित, सौन्दरानंद, सारिपुत्र प्रकरण, सूत्रालंकार, वज्रसूची
असंग	महायान सूत्रालंकार
वसुबंधु	अभिधर्म कोष
आर्यदेव	चतुः शतिका
दिग्नांग	प्रमाण समुच्चय
शंति देव	शिक्षा समुच्चय, सूत्र समुच्चय

- हीनयान **वैभाषिक** एवं **सौतांत्रिक** में विभाजित हुआ। वैभाषिक की उत्पत्ति कश्मीर में हुई।

EBD_7243

- **वज्रयान** तंत्र-मंत्र से संबंधित सम्प्रदाय था। इसका वर्णन **मंजुश्रीमूलकल्प** में मिलता है।
- बुद्ध के जन्म एवं मृत्यु की तिथि को चीनी परम्परा के **कैण्टोन अभिलेख** के आधार पर निश्चित की गयी है।

प्रमुख सम्प्रदाय एवं उनके प्रणेता	
आजीविक/भाग्यवादी	मक्खलि गोशाल
घोर अक्रियावादी	पूरन कश्यप
उच्छेदवादी	अजित केसकम्बलिन
नित्यवादी	पकुध कच्चायन
अनिश्चयवादी	संजय वेलट्ठपुत्र
लोकायत (भौतिकवादी)	चार्वाक एवं बृहस्पति

भागवत् धर्म (वैष्णव धर्म)

- इस धर्म के प्रवर्तक **वासुदेव कृष्ण** माने जाते हैं, जिसका प्रथम उल्लेख **छांदोग्य उपनिषद्** में मिलता है। यह पहला संप्रदाय था, जिसने ब्राह्मण धर्म की बुराइयों में सुधारात्मक रुख प्रदर्शित किया।
- छांदोग्य उपनिषद में कृष्ण को **घोर अंगीरस** का शिष्य एवं **देवकी पुत्र** कहा गया है।
- **पाँच वृष्णि वीर** - (i) **वासुदेव कृष्ण** - वासुदेव एवं देवकी से उत्पन्न पुत्र (ii) **संकर्षण** - वासुदेव एवं रोहिणी से उत्पन्न पुत्र (iii) **प्रद्युम्न** - कृष्ण एवं रुक्मिणी के पुत्र (iv) **साम्ब** - कृष्ण एवं जाम्बवंती के पुत्र (v) **अनिरुद्ध** - प्रद्युम्न के पुत्र।
- **चतुर्व्यूह** की कल्पना ईसा पूर्व दूसरी सदी की है। मथुरा के समीप से प्रथम सदी के प्राप्त शिलालेख में **तोषा** नामक महिला द्वारा एक मंदिर में पाँच वृष्णि वीरों की मूर्तियाँ स्थापित किए जाने का संदर्भ मिलता है।
- दूसरी सदी ई. पू. में **हेलियोडोरस** द्वारा भागवत (वासुदेव) की पूजा के लिए गरूड़ध्वज निर्माण करने का उल्लेख मिलता है।
- भागवत सम्प्रदाय का वैष्णव धर्म में रूपांतरण में अवतारवाद के सिद्धांत की प्रमुख भूमिका रही है, जिसका सर्वप्रथम स्पष्ट उल्लेख भगवद्गीता में मिलता है। जब कृष्ण, विष्णु का तादात्म्य नारायण से स्थापित हुआ तो वैष्णव धर्म **पाञ्चरात्र धर्म** कहलाने लगा।
- पाञ्चरात्र व्यूह के प्रमुख देवता थे- **वासुदेव, लक्ष्मी, संकर्षण, प्रद्युम्न** एवं **अनिरूद्ध**। नारायण का प्रथम उल्लेख **शतपथ ब्राह्मण** में मिलता है। मेगस्थनीज ने कृष्ण को **हेराक्लीज** कहा है। **'लक्ष्मी एवं श्री'** की अवधारणा गुप्तकाल की है।
- तमिल प्रदेश में वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार **अलवार संतों** द्वारा किया गया। इनकी संख्या 12 थी। इनका आविर्भाव 7-9वीं सदी के मध्य हुआ। प्रमुख अलवार संत हैं : पोयगई, पूडम, पेय, तिरूमंगई, तिरूमलिशई, नाम्मालवार, मधुर कवि, आण्डाल (एकमात्र महिला)।

शैव धर्म

- यूनानी राजदूत मेगस्थनीज **डायनोसस** के नाम से शिव पूजा का उल्लेख करता है। कौटिल्य ने नगर के मध्य में शिवसदन स्थापित करने को कहा है। लिंग के रूप में शिव पूजा का प्रसार गुप्तकाल में हुआ।
- ह्वेनसांग के अनुसार वाराणसी शैव धर्म का प्रमुख केंद्र था।
- पल्लव काल में शैव धर्म का प्रचार-प्रसार **नयनार संतों** द्वारा किया गया। इनकी संख्या 63 थी। अप्पार, तिरुज्ञान, समबंदर, सुंदरमूर्ति आदि प्रमुख नयनार संत थे।
- **पाशुपथ :** शैव धर्म के इस सबसे प्राचीन सम्प्रदाय के प्रवर्तक **लकुलीश** थे। इसका उदय दूसरी सदी ईसा पूर्व में गुजरात में हुआ। इस सम्प्रदाय के लोग लगुण्ड या दंड धारण करते थे। पति (स्वामी), पशु (आत्मा) तथा पाश (बंधन) इसके तीन अंग हैं।
- **कापालिक :** इसके मुख्य आराध्य भैरव थे, जो शिव के अवतार माने जाते हैं। ये शरीर पर श्मशान की भस्म लगाते हैं तथा नरमुण्ड धारण करते हैं। **श्रीशैल** इनका प्रमुख केंद्र था।
- **लिंगायत :** इसके उपासक **जंगम** कहलाते थे। इसका प्रसार दक्षिण में हुआ। इसके प्रवर्तक **अल्लप्रभु** तथा उनके शिष्य **वासव** थे।
- **कालामुख :** इसका उदय कर्नाटक में हुआ। शिवपुराण में इसके अनुयायियों को **महाव्रतधर** कहा जाता है।
- **कश्मीरी शैव :** यह शुद्ध रूप से दार्शनिक एवं ज्ञानमार्गी सम्प्रदाय था। इसके संस्थापक **वसुगुप्त** थे। इसमें शिव को अद्वैत शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है।
- **नाथ संप्रदाय :** इसका उदय 10वीं सदी में हुआ। इसके प्रवर्तक **मच्छेन्द्रनाथ** थे। शिव को आदिनाथ मानते हुए नौ नाथों के दिव्य पुरुष के रूप में

कल्पना की गयी है। 10-11वीं सदी में इसका प्रचार-प्रसार गोरखनाथ ने किया।

इस्लाम धर्म

- इस्लाम धर्म के संस्थापक हजरत मुहम्मद साहब थे।
- पैगंबर मुहम्मद साहब ने कुरान की शिक्षाओं का उपदेश दिया था।
- हजरत मुहम्मद साहब की मृत्यु के उपरान्त इस्लाम धर्म शिया तथा सुन्नी नामक दो पंथों में विभाजित हो गया।
- इब्न ईशाक ने सर्वप्रथम पैगम्बर मुहम्मद साहब का जीवन-चरित लिखा।
- पैगंबर मुहम्मद साहब के जन्म-दिन पर **ईद-ए-मिलाद-उन-नबी** मनाया जाता है।
- कुरान इस्लाम धर्म का पवित्र ग्रंथ है।
- हजरत मुहम्मद साहब को 610 ई. में मक्का के पास हीरा नामक गुफा में ज्ञान प्राप्त हुआ।
- मान्यता है कि देवदूत जिब्रियल ने मुहम्मद साहब को कुरान अरबी भाषा में भेजा था।

ईसाई धर्म

- ईसाई धर्म के संस्थापक ईसा मसीह हैं।
- ईसाई धर्म का प्रमुख धार्मिक ग्रंथ **बाइबिल** है।
- रोमन गवर्नर पोंटियस ने ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाया था।
- ईसा मसीह का जन्म-दिवस 'क्रिसमस' के रूप में मनाया जाता है।
- ईसा मसीह की माता का नाम **'मैरी'** एवं पिता का नाम **'जोसेफ'** था।
- ईसाई धर्म का सबसे पवित्र चिह्न **'क्रॉस'** है।
- ईसा मसीह ने अपने जीवन के प्रथम 30 वर्ष एक बढ़ई के रूप में बैथलेहम के निकट नाजरेथ में व्यतीत किए।

पारसी धर्म

- पारसी धर्म के अनुयायी एक ईश्वर **अहुर** को मानते हैं। इस धर्म में **अग्निपूजा** का विशेष महत्त्व है।
- इस धर्म की शिक्षा के तीन आधार हैं - सद् विचार, सद् वचन एवं सद् कार्य।
- पारसी धर्म का मूल ग्रंथ **जेंदअवेस्ता** है। **जरथुस्ट** पारसी धर्म के पैगम्बर थे।

महाजनपद काल

- **महावस्तु, अंगुत्तर निकाय** तथा **जैन ग्रंथ भगवती सूत्र** में महाजनपद का उल्लेख मिलता है। महाजनपदों की कुल संख्या 16 थी, जिनमें **मगध, कोसल, वत्स** तथा **अवन्ति** अधिक शक्तिशाली थे।
- वस्तुत: इस कालखंड में दो प्रकार के राज्य थे- **राजतंत्रात्मक** तथा **गणतन्त्रात्मक**। राजतंत्रात्मक राज्यों में अंग, काशी, मगध, चेदि, वत्स, कुरु, पांचाल, मत्स्य, अश्मक, सूरसेन, अवन्ति, कंबोज तथा गांधार शमिल थे।
- गणतंत्रात्मक राज्य थे- शाक्य (कपिलवस्तु), मल्ल (पावा), भग (सुमसुमगिरि), मल्ल, (कुशीनारा), बुलि (अलकप्प), मोरिय (पिप्पलवन), कलाम (केशपुत्र), विदेह (मिथिला), कोलिय (रामग्राम), लिच्छवी (वैशली)।
- 16 जनपदों में अश्मक एकमात्र जनपद था, जो नर्मदा के दक्षिण में स्थित था।
- मगध के बिम्बिसार, अजातशत्रु; शिशुनाग; अवन्ति के चण्डप्रद्योत; काशी के वानर एवं अश्वसेन; कोसल के प्रसेनजित; वत्स के उदयन; मत्स्य के विराट; सूरसेन के अवन्तिपुत्र; गांधार के चन्द्रवर्मन एवं सुदक्षिण; कुरु के कोरव्य; अंग के ब्रह्मदत्त; चेदि के उपचापर; महाजनपदों के प्रमुख शासक थे।

महाजनपद एवं उनकी राजधानी

	महाजपद	राजधानी	वर्तमान क्षेत्र
1.	मगध	राजगृह (गिरिव्रज)	पटना, गया, शाहाबाद
2.	कोसल	श्रावस्ती	फैजाबाद, गोंडा, बहराइच
3.	वत्स	कौशाम्बी	इलाहाबाद, मिर्जापुर
4.	अवन्ति	उज्जयिनी एवं महिष्मति	मालवा
5.	कुरु	हस्तिनापुर (इंद्रप्रस्थ)	दिल्ली, हरियाणा

6.	वज्जि	वैशाली	वैशाली एवं उत्तरी बिहार के जिले
7.	मत्स्य	विराटनगर	अलवर, भरतपुर, जयपुर
8.	पांचाल	अहिक्षत्र एवं काम्पिल्य	पश्चिमी उत्तर प्रदेश का क्षेत्र
9.	काशी	वाराणसी	वाराणसी
10.	सूरसेन	मथुरा	ब्रजमंडल का क्षेत्र
11.	अंग	चम्पा	भागलपुर एवं मुंगेर
12.	गांधार	तक्षशिला	पाकिस्तान का पूर्वी क्षेत्र एवं अफगानिस्तान का पूर्वी क्षेत्र
13.	मल्ल	कुशीनारा (पावा)	देवरिया, गोरखपुर, कुशीनगर
14.	कम्बोज	राजपुरा (हाटक)	पाकिस्तान का हजारा जिला
15.	चेदि	सोथीवती (शक्तिमति)	बुन्देलखण्ड
16.	अश्मक	पोतन	नर्मदा व गोदावरी का मध्य क्षेत्र

मगध का उत्कर्ष

- मगध ने सबसे शक्तिशाली जनपदों कोशल, वत्स और अवन्ति को अपने साम्राज्य में मिला लिया। विस्तृत उपजाऊ मैदान, प्राकृतिक सुरक्षा, खनिज संसाधनों (लोहा) की प्राप्ति, नदी एवं स्थलीय व्यापार, कृषि में लोहे का प्रयोग, पास के जंगलों से हाथी की उपलब्धता, धान की रोपाई पद्धति का विकास, सामाजिक खुलापन, कृषि में दासों का प्रयोग आदि उत्कर्ष के कारण थे।

बृहद्रथ वंश

- महाभारत तथा पुराणों के अनुसार मगध के आरंभिक राज्य की स्थापना वसु के पुत्र और जरासंध के पिता बृहद्रथ ने की थी।
- सम्भवत: इस वंश का अंत छठी शताब्दी ईसा पूर्व में हुआ। बौद्ध ग्रंथों में इस वंश का कोई उल्लेख नहीं मिलता है।

हर्यंक वंश (544 ई. पू.-412 ई. पू.)

- हर्यंक वंश का सबसे प्रतापी शासक बिम्बिसार (544-492 ई. पू) था। जैन साहित्य में इसे **श्रेणिक** कहा गया है। उसने वैशाली, कोसल आदि राजपरिवारों से वैवाहिक संबंध स्थापित किए तथा अपने राज्य को कुशल प्रशासन दिए।
- बिम्बिसार ने राजगृह को मगध की राजधानी बनाया तथा विजय और विस्तार नीति अपनाते हुए अंग पर अधिकार कर लिया। उस समय ब्रह्मदत्त अंग का शासक था। इसने कोसल नरेश प्रसेनजीत की बहन **महाकोसला** से विवाह किया तथा एक लाख की वार्षिक आय वाला **काशी** प्रान्त प्राप्त किया।
- बिम्बिसार की दूसरी पत्नी लिच्छवी राजकुमारी **चेल्लना** तथा तीसरी पत्नी पंजाब के मद्रकुल के प्रधान की पुत्री **क्षेमा** थी। इसने पीलिया रोग से ग्रस्त अवन्ति राजा चण्डप्रद्योत के ईलाज हेतु अपने राजवैद्य **जीवक** को भेजा।
- बुद्ध से मिलने के बाद उनसे बौद्ध धर्म अपना लिया तथा **वेलुवन** नामक उद्यान बौद्धों को दान में दिया। बुद्धघोष के अनुसार उसके साम्राज्य में 80,000 गांव थे। बिम्बिसार के पुत्र अजातशत्रु ने उसकी हत्या का राज्य हथिया लिया।
- **अजातशत्रु** (492-460 ई. पू.) को कुणिक भी कहा जाता था। घोर साम्राज्यवादी इस शासक ने कोसल, काशी और वज्जि संघ पर विजय प्राप्त की। वैशाली के लिच्छवियों के साथ हुए युद्ध में इसने **महाशिलाकण्टक** तथा **रथमूसल** जैसे हथियारों का इस्तेमाल किया।
- **अजातशत्रु** अवन्ति (शासक-प्रद्योत) पर विजय नहीं प्राप्त कर सका। उसने राजधानी में मजबूत दुर्ग तथा बुद्ध के अवशेषों को लेकर एक स्तूप (राजगृह में) का निर्माण करवाया।
- उसके शासन के 8वें वर्ष में बुद्ध को निर्वाण प्राप्त हुआ। उसने राजगृह के **सप्तपर्णि गुफा** में 483 ई. पू. में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन करवाया। उसके पुत्र उदयिन ने उसकी हत्या कर

शासन पर अधिकार कर लिया।

- उद्यिन (460-444 ई. पू.) ने, **वायुपुराण** तथा **गार्गी** संहिता के अनुसार, गंगा एवं सोन के संगम पर **पाटलिपुत्र** के नामक नगर की स्थापना की तथा उसे राजधानी बनाया। उदयिन (उदयभद्र) के बाद अनिरुद्ध, मुण्ड तथा दर्शक ने शासन किया।

शिशुनाग वंश (412 ई. पू. -344 ई. पू.)

- लंका के बौद्ध ग्रंथ महावंश के अनुसार, राज्य में असंतोष व्याप्त हो जाने के कारण जनता ने बनारस के उपराजा **शिशुनाग** (412 ई. पू.-394 ई. पू.) को (नागदशक या दर्शक को निष्कासित कर) गद्दी पर बैठाया।
- शिशुनाग ने अवन्ति तथा वत्स को मगध साम्राज्य का भाग बना लिया। वज्जि पर नियंत्रण स्थापित करने हेतु उसने वैशाली को दूसरी राजधानी बनाया।
- **कालाशोक** (394-366) ने वैशाली के स्थान पर पाटलिपुत्र को राजधानी बनाया। दिव्यावदान एवं पुराणों में इसका नाम **काकवर्ण** मिलता है। इसके काल में 383 ईसापूर्व में दूसरी बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया। इस वंश का अंतिम शासक नंदिवर्द्धन था।
- **नन्द वंश (344 ई. पू.-324 ई. पू.)**
- शिशुनाग वंश के अंतिम शासक नंदिवर्द्धन या महानंदिन की हत्या कर महापद्मनन्द ने नन्द वंश की नींव डाली। महाबोधिवंश में उसे 'उग्रसेन' तथा पुराणों में सर्वक्षत्रान्तक (क्षत्रियों का नाश करनेवाले), **एकच्छत्र** (पृथ्वी का राजा), **अनुलंघित शासक** (भार्गव या परशुराम के समान) आदि कहा गया है। खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख में उसकी कलिंग विजय का उल्लेख है।
- महापद्म नन्द के आठ पुत्रों में अंतिम पुत्र उसका उत्तराधिकारी बना, जो सिकंदर का समकालीन था। ग्रीक लेखकों ने धनानन्द को **अग्रमीज** एवं **जैन्द्रमीज** कहा है। चंद्रगुप्त ने इसकी हत्या कर मौर्य वंश की स्थापना की।

भारत पर प्रथम विदेशी आक्रमण

ईरानी आक्रमण (हखमनी वंश)

- हखमनी वंश के राजाओं द्वारा भारत पर विदेशी आक्रमण का पहला उदाहरण है। इस वंश के राजा साइरस ने (558-530 ई. पू.) भारत पर आक्रमण का असफल प्रयास किया था।
- दारयवहु या दारा प्रथम (522-480 ई. पू.) को आक्रमण में प्रथम सफलता प्राप्त हुई। इसके तीन शिलालेख **बहिस्तून** (520-485 ई. पू.) **पर्सिपोलिस** (518-515 ई. पू.) तथा **नक्शेरुस्तम** से स्पष्ट होता है कि उसने गांधार तथा पंजाब को अपने साम्राज्य का अंग बना लिया था।
- हेरोडोटस के अनुसार दारा प्रथम के 20 प्रान्तों में से अंतिम प्रान्त भारत था तथा उसे भारतीय राज्य से 360 टैलेण्ड सोना प्राप्त होता था।
- सिकंदर द्वारा 321 ई. पूर्व में **अरवेला के युद्ध** में दारा तृतीय को पराजित कर दिए जाने के बाद भारत से ईरानी अधिकार समाप्त हो गया।
- ईरानी आक्रमण के परिणामस्वरूप समुद्रीमार्ग की खोज तथा विदेशी व्यापार को प्रोत्साहन मिला, खरोष्ठी तथा अरमाइक लिपि का प्रचार-प्रसार हुआ, अभिलेख उत्कीर्ण करने की प्रथा प्रारंभ हुई तथा क्षत्रप प्रणाली का विकास हुआ।

यूनानी आक्रमण

- डेरियस या दारा तृतीय को परास्त कर मकदूनियाई शासक सिकंदर ने भारत पर आक्रमण किया और 326 ई. पू. में पश्चिमोत्तर भारत में प्रवेश किया। सिकंदर का गुरु **अरस्तू** था।
- सिकंदर ने सर्वप्रथम अस्पोसिओई (अश्वजाति) निशा एवं अश्मक राज्यों को जीता। उसके तक्षशिला पहुँचते ही वहाँ के शासक **आम्भि** ने आत्मसर्मपण कर दिया।
- उसने झेलम के तट पर हाइडेस्पेस (झेलम) के युद्ध में पोरस को पराजित किया। पोरस का राज्य झेलम एवं चिनाब नदियों के बीच में पड़ता था।
- शशिगुप्त, आम्भि, संजय आदि भारतीय शासक थे, जिन्होंने सिकंदर की सहायता की थी। सिकंदर की सेना ने व्यास नदी से आगे बढ़ने से इंकार कर दिया था। अत: उसे वापस लौटना पड़ा।
- वापस लौटते समय सिकंदर ने **अग्रसेनी, सिबोई, मालव, क्षुद्रक, अम्बष्ठ, कठ** और **मूसिकनोई** राज्यों को जीता। भारत के जीते हुए सिंधु के पश्चिम हिस्से को उसने तीन भागों में बाँट दिया तथा तीन यूनानी गवर्नरों **बेठन, निकेनर** और **फिलिप्स** के अधीन कर दिया तथा पूर्वी भाग

को **पोरस, आम्भि** तथा **अभिसार** के राजा को दे दिया।

- सिंकदर ने दो नगर बसाए- **बुकाफेला** (अपने घोड़े की स्मृति में) तथा **निकाइया** पोरस पर विजय की स्मृति में। लौटते समय सिकंदर की सेना नियार्कस के नेतृत्व में जल मार्ग द्वारा तथा क्रेटेरस के नेतृत्व में स्थलमार्ग द्वारा गयी। भारत में सिकंदर की अंतिम विजय पाटल राज्य के विरुद्ध थी।
- भारत में लगभग 19 महीने रहने के पश्चात् वापस लौटते हुए 323 ई. पू. में बेबीलोन में सिकंदर की मृत्यु हो गयी।
- सिकंदर के आक्रमण के परिणामस्वरूप भारत और यूरोप को निकट आने का अवसर मिला, भारत और यूनान के मध्य विभिन्न क्षेत्रों में प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित हुआ, पश्चिमोत्तर भारत के छोटे-छोटे राज्यों का एकीकरण हुआ, सिकंदर के साथ आए इतिहासकारों से महत्त्वपूर्ण भौगोलिक और ऐतिहासिक जानकारी मिली तथा मुद्रा निर्माण की कला सीखने को मिली।

मौर्य साम्राज्य

चन्द्रगुप्त मौर्य (322-297 ई. पू.)

- अपने गुरु **चाणक्य** (कौटिल्य) की सहायता से चन्द्रगुप्त मौर्य ने नन्दवंश के शासक **धनानन्द** को अपदस्थ कर मौर्य साम्राज्य की (322 ई. पू. में) स्थापना की। इस अभियान में कश्मीर के शासक **पर्वतक** ने चन्द्रगुप्त की सहायता की।
- चन्द्रगुप्त 322 ई. पू. में मगध का शासक बना तथा चाणक्य को अपना प्रधानमंत्री बनाया। **विष्णुगुप्त** (चाणक्य) ने राजनीति पर अर्थशास्त्र नामक पुस्तक की रचना की।
- 305 ई. पू. में चन्द्रगुप्त का संघर्ष **सेल्यूकस निकेटर** से हुआ, जिसमें सेल्यूकस की हार हुई। सेल्यूकस ने अपनी पुत्री **कार्नेलिया** का विवाह चन्द्रगुप्त से कर दी और युद्ध संधि शर्तों के तहत् उसने चार प्रान्त - **काबुल, कंधार, हेरात** एवं **मकरान** चन्द्रगुप्त को दिए।
- सेल्यूकस ने **मेगस्थनीज** को अपने दूत के रूप में चन्द्रगुप्त के दरबार में नियुक्त किया। मेगस्थनीज ने **इंडिका** नामक पुस्तक की रचना की।
- चन्द्रगुप्त मौर्य और सेल्यूकस के मध्य युद्ध का वर्णन **एप्पियस** ने किया है। प्लूटार्क के अनुसार चन्द्रगुप्त ने सेल्यूकस को 500 हाथी उपहार में दिए।
- **स्ट्रैबो** तथा **जस्टिन** ने चन्द्रगुप्त को **सेन्ड्रोकटस** कहा है तथा **एरियन** और **प्लूटार्क** ने **एण्ड्रोकोटस** कहा है। सर्वप्रथम **विलियम जोंस** ने सेन्ड्रोकोटस की पहचान चन्द्रगुप्त के रूप में की।
- विशाखदत्त के **मुद्राराक्षस** में चन्द्रगुप्त को **वृषल** तथा **कुलहीन** तथा **महावंश** एवं **अर्थशास्त्र** में क्षत्रिय कहा गया है।
- प्लूटार्क के अनुसार चन्द्रगुप्त ने 6 लाख सेनाओं के साथ पुरे भारत को रौंद डाला।
- चन्द्रगुप्त ने जैन गुरु **भद्रबाहु** से दीक्षा ली तथा शासन के अंतिम दिनों में श्रवणबेलगोला के चन्द्रगिरि पहाड़ी पर उपवास कर प्राण त्याग दिए। तमिलग्रंथ **अहनानुरू** तथा **पुरनानुरू** में चन्द्रगुप्त द्वारा दक्षिण भारत की विजय का वर्णन है।

बिन्दुसार (297-273 ई. पू.)

- बिन्दुसार, चन्द्रगुप्त का पुत्र और उत्तराधिकरी था जो 297 ई. पू. में मगध का राजा बना। इसकी माता **दुर्धरा** थी। बिन्दुसार के अन्य नाम हैं - **अमित्रघात, भद्रसार** (वारिसार), वायुपुराण के अनुसार, **अमित्रोकेड्स** (यूनानियों के अनुसार), **बिन्दुपाल** (चीनी ग्रंथों के अनुसार), **सिंहसेन** (जैन ग्रंथों के अनुसार)।
- बिन्दुसार **आजीवक सम्प्रदाय** का अनुयायी था। स्ट्रैबो के अनुसार, यूनानी शासक **एण्टियोकस** ने बिन्दुसार के दरबार में **डाइमेकस** नामक राजदुत भेजा था, जिसे मेगस्थनीज का उत्तराधिकारी माना जाता है।
- प्लिनी के अनुसार, मिस्र का राजा **फिलाडेल्फस** (टॉलमी II) ने पाटलिपुत्र में **डायनोसियस** नामक राजदूत को भेजा।
- बिन्दुसार के शासनकाल में तक्षशिला में दो बार विद्रोह हुए। पहली बार **अशोक** ने तथा दूसरी बार **सुसीम** ने उक्त विद्रोह का दमन किया।
- बौद्ध ग्रंथ **दिव्यावदान** के अनुसार **बिन्दुसार** की मंत्रिपरिषद् में 500 मंत्री थे। तिब्बती विद्वान **तारानाथ** ने बिन्दुसार को 16 राज्यों का विजेता बताया है।

- **एथेनियस** के अनुसार बिन्दुसार ने सीरिया के शासक एण्टियोकस प्रथम से **मदिरा, सूखे अंजीर** तथा **एक दार्शनिक** भेजने कर प्रार्थना की थी, किन्तु सीरियाई नरेश ने दार्शनिक नहीं भेजा।

अशोक (273-232 ई. पू.)

- अशोक महान्, बिन्दुसार का उत्तराधिकारी बना जो 4 वर्षों तक गृह युद्ध में फंसे रहने के कारण 269 ई. पू. में राजगद्दी पर बैठा। राजा बनने से पूर्व वह **अवन्ति** का राज्यपाल था।
- पुराणों में उसे **अशोकवर्द्धन** कहा गया है तथा **गुजर्रा, मास्की, नेतूर** एवं **उद्‌गोलम** अभिलेख में उसका नाम 'अशोक' मिलता है।
- अशोक ने अपने राज्याभिषेक के **आठवें** वर्ष 261 ई. पू. में कलिंग पर आक्रमण कर उसकी राजधानी **तोसली** पर अधिकार कर लिया।
- सिंहली स्रोत के अनुसार अशोक ने अपने 99 भाइयों की हत्या कर सिंहासन प्राप्त किया। बिन्दुसार के (101) पुत्रों में **सुसीम** (सुमन) सबसे बड़ा तथा **तिष्य** सबसे छोटा था।
- अशोक की माता का नाम **सुभद्रांगी** था। अशोक की पत्नी महादेवी (विदिशा का शाक्य राजकुमारी) से **महेन्द्र** और **संघमित्रा** नामक दो संतानें हुईं। इन्हें बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए **श्रीलंका** भेजा गया।
- **कारुवाकी** और **तिस्सरक्खा** अशोक की दो महारानियाँ थी। **चारुमती** और **संघमित्रा** अशोक की दो पुत्रियाँ थीं। अशोक ने चारुमती के लिए नेपाल में **देवपत्तन** नामक नगर बसाया।
- बौद्ध भिक्षु **उपगुप्त** ने अशोक को बौद्ध धर्म की दीक्षा दी।
- भारत में सर्वप्रथम शिलालेख का प्रचलन अशोक ने करवाया। उसके अभिलेखों में **ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक एवं अरमाइक** लिपि का प्रयोग मिलता है।
- ग्रीक एवं अरमाइक लिपि के अभिलेख **अफगानिस्तान** से, खरोष्ठी लिपि के अभिलेख **उत्तर-पश्चिम पाकिस्तान** से तथा ब्राह्मी लिपि के अभिलेख शेष भारत से मिले हैं।

अशोक के 14 वृहद् शिलालेख एवं उनके विषय
पहला - पशुबलि की निन्दा, समाज में उत्सव का निषेध, सभी मनुष्य मेरी संतान की तरह हैं।
दूसरा - मनुष्यों एवं पशुओं हेतु चिकित्सा प्रबंध, लोक- कल्याणकारी कार्य; चेर (केरलपुत्र), चोल, पाण्ड्य, सतियपुत्र तथा ताम्रपर्णी (श्रीलंका) का उल्लेख।
तीसरा - धम्म संबंधी नियम; युक्त, रज्जुक, प्रादेशिक की नियुक्ति तथा प्रति पाँचवें वर्ष दौरे का आदेश।
चौथा - भेरी घोष की जगह धम्मघोष की घोषणा।
पाँचवां - धम्म महामात्रों की नियुक्ति के बारे में जानकारी।
छठा - प्रतिवेदक की चर्चा, आत्मसंयम की शिक्षा।
सातवाँ - सभी सम्प्रदायों के लिए सहिष्णुता का उल्लेख।
आठवाँ - अशोक की धम्मयात्राओं का उल्लेख, बोधिवृक्ष के भ्रमण का उल्लेख।
नौवाँ - विभिन्न प्रकार के समारोहों की निन्दा, सच्ची भेंट व सच्चे शिष्टाचार की व्याख्या।
दसवाँ - ख्याति एवं गौरव की निन्दा, धम्म नीति की श्रेष्ठता पर बल, राज कर्मचारियों को प्रजा के हितों की चिंता करने का आदेश।
ग्यारहवाँ - धम्म की विशेषता।
बारहवाँ - सर्वधर्म समभाव, स्त्री महामात्र की चर्चा।
तेरहवाँ - कलिंग युद्ध, पाँच सीमांत यूनानी राजाओं के नाम, पड़ोसी राज्यों तथा अपराध करनेवाली आटविक जातियों का उल्लेख।
चौदहवाँ - लोगों को धार्मिक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा।

- आशोक ने आजीवकों हेतु बराबर की पहाड़ियों में **सुदामा, चोपार, विश्व झोपड़ी** तथा **कर्ण** नामक चार गुफाओं का निर्माण करवाया।
- राजतरंगिणी के अनुसार अशोक शैव था। अशोक का व्यक्तिगत धर्म बौद्ध था (भाबू शिलालेख)।
- **बृहद्रथ** मौर्य वंश का अंतिम शासक था।
- **अशोक के 7 स्तंभ लेख - ये 6 स्थानों से प्राप्त हुए हैं।**

1. **प्रयाग स्तंभ लेख-** अकबर ने इसे इलाहाबाद किला में स्थापित करवाया। पहले यह **कौशाम्बी** में था।
2. **दिल्ली-टोपरा** - फिरोजशाह तुगलक ने इसे टोपरा से दिल्ली मंगवाया।
3. **दिल्ली- मेरठ** - इसे फिरोजशाह तुगलक द्वारा मेरठ से दिल्ली मंगवाया गया।
4. **रामपुरवा** - यह बिहार के चम्पारण में अवस्थित है। इसकी खोज **कारलायल** ने 1872 में की थी।
5. **लौरिया अरेराज** - बिहार के चम्पारण में अवस्थित है।
6. **लौरिया नंदनगढ़** - बिहार के चम्पारण में अवस्थित है। इसपर **मोर** का चित्र अंकित है।

- कौशाम्बी के अभिलेख को **रानी का अभिलेख** कहा जाता है।
- रुम्मिनदेई अभिलेख सबसे छोटा है तथा इसमें अशोक के लुम्बिनी धम्म यात्रा के दौरान वहाँ भूराजस्व दर घटाने की घोषणा की गयी है। इस शिलालेख की खोज **फीहरर** ने की थी।
- प्रथम पृथक् शिलालेख में घोषणा की गयी है कि सभी मनुष्य मेरी संतान हैं। अशोक का 7वाँ अभिलेख सबसे लम्बा है। **शर-ए-कुना** (कंधार) अभिलेख **ग्रीक** एवं **अरमाइक** लिपि में अंकित है।
- अशोक के अभिलेखों (शिलालेखों) की खोज 1750 में **पी. फेंथेलर** ने की तथा उन्हें पढ़ने में पहली सफलता 1837 में **जेम्स प्रिंसेप** को प्राप्त हुई।

मौर्य प्रशासन

- सम्राट की सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद् होती थी, जिसकी संख्या 12, 16 या 20 होती थी। मंत्रियों एवं पुरोहित की नियुक्ति से पूर्व उनकी जांच-परख होती थी, जिसे **उपधा-परीक्षण** कहा जाता था।
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में उच्च अधिकारियों को **तीर्थ** कहा गया है, जिनकी संख्या 18 थी। उन्हें **महामात्र** भी कहा जाता था।

अर्थशास्त्र में उल्लिखित18 तीर्थ
1. पुरोहित - प्रधानमंत्री, प्रमुख धर्माधिकारी
2. सेनापति - युद्ध विभाग
3. युवराज - राजा का उत्तराधिकारी
4. समाहर्त्ता - राजस्व विभाग का प्रमुख
5. सन्निधाता - राजकीय कोषाध्यक्ष
6. प्रदेष्टा - फौजदारी (कण्टकशोधन) न्यायालय का न्यायाधीश
7. व्यावहारिक - दीवानी (धर्मस्थीय) न्यायालय का न्यायाधीश
8. नायक - सेना का नेतृत्व, संचालक
9. कर्मान्तिक - उद्योग-धन्धों का प्रधान निरीक्षक
10. मंत्रिपरिषदाध्यक्ष - मंत्रिपरिषद् का अध्यक्ष
11. दण्डपाल - सेना की सामग्रियों को जुटानेवाले प्रधान अधिकारी
12. अन्तपाल - सीमावर्ती दुर्गों का रक्षक
13. दुर्गपाल - आंतरिक दुर्गों का रक्षक
14. नगरक - नगर का प्रमुख अधिकारी

15. प्रशास्ता - राजकीय कागजातों को सुरक्षित व राजकीय आज्ञाओं को लिपिबद्ध करने वाला अधिकारी
16. दौवारिक - राजमहलों की देख-रेख करने वाला प्रधान अधिकारी
17. आटविक - वन विभाग का प्रधान अधिकारी
18. अन्तर्वंशिक - सम्राट की अंगरक्षक सेना का प्रधान

- अशोक के शासन काल में प्रांतों की संख्या 5 थी।
- प्रान्तों के प्रशासक **कुमार, आर्यपुत्र** या **राष्ट्रिक** कहलाते थे।
- प्रान्तों को **विषय** में विभाजित किया गया था, जिनके प्रशासक **विषयपति** कहलाते थे।
- **ग्राम** प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी, जिसका मुखिया **ग्रामीक** कहलाता था।
- दस गांवों के समूह को **गोप** नामक अधिकारी संभालता था।
- मेगस्थनीज के अनुसार पाटलिपुत्र नगर का प्रशासन 30 सदस्यों का एक मंडल संभालता था, जो 6 समितियों में बंटा था। प्रत्येक समिति में 5 सदस्य होते थे।

नगर प्रशासनिक समितियां
1. प्रथम - उद्योग, शिल्प का निरीक्षण
2. द्वितीय - विदेशियों की देख-रेख
3. तृतीय - जन्म- मृत्यु का विवरण रखना
4. चतुर्थ - व्यापार-वाणिज्य की देखभाल
5. पंचम - निर्मित वस्तुओं के विक्रय का निरीक्षण
6. षष्ठम - बिक्री कर वसूल करना

मौर्य साम्राज्य के प्रान्त		
	प्रान्त	**राजधानी**
1.	उत्तरापथ	तक्षशिला
2.	दक्षिणापथ	सुवर्णगिरी
3.	प्राशी (पूर्वी)	पाटलिपुत्र
4.	अवन्ति	उज्जयिनी
5.	कलिंग	तोसली

- बिक्री- कर के रूप में मूल्य (कीमत) का 10वाँ भाग वसूल किया जाता था, इससे बचने वालों को मृत्युदण्ड निर्धारित था।
- मेगस्थनीज के अनुसार मार्ग निर्माण का अधिकारी **एग्रोनोमोई** कहलाता था।
- युद्ध क्षेत्र का नेतृत्व **नायक** करता था। **सेनापति** सैन्य विभाग का सर्वोच्च अधिकारी होता था। गुप्तचर विभाग **महामात्य सर्प** नामक अधिकारी के अधीन था।
- मेगस्थनीज के अनुसार मौर्य सेना का रख-रखाव 6 समितियां करती थीं। प्रत्येक समिति में 5 सदस्य होते थे।

सैन्य समितियां
1. प्रथम - जलसेना की व्यवस्था
2. द्वितीय - यातायात एवं रसद की व्यवस्था
3. तृतीय - पैदल सैनिकों की देखरेख
4. चतुर्थ - अश्वारोही सेना की देखभाल
5. पंचम - हाथियों की देखरेख
6. षष्ठम - रथ सेना की देख-रेख

- अर्थशास्त्र में गुप्तचर को **गूढ़ पुरुष** कहा गया है, जिसें **स्ट्रैबों** ने **'ओवरसियर्स'** कहा है।
- एक स्थान पर रहकर कार्य करने वाले गुप्तचर को **संस्था** तथा भ्रमण कर कार्य करने वाले गुप्तचर को **संचार** कहा जाता था।
- न्यायालय दो प्रकार के थे - **धर्मस्थीय** एवं **कण्टक** शोधन। धर्मस्थीय का न्यायाधीश **व्यावहारिक**, कण्टकशोधन का **प्रदेष्ट्रि** तथा जनपद न्यायालय का न्यायाधीश **राजुक** कहलाता था।
- सर्वप्रथम कौटिल्य ने राजा के सप्तांग सिद्धांत की व्याख्या की। इसमें शमिल थे- **राजा, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड, मित्र**।

मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था एवं समाज

- सरकारी भूमि को **सीता** कहा जाता था तथा बिना वर्षा के अच्छी फसल देनेवाली भूमि को **अदेवमातृक** कहा जाता था।
- नकद लिए जानेवाले कर को **हिरण्य** कहा जाता था। **बलि** एक धार्मिक कर था। भूमिकर उपज का **छठा भाग** (1/6) लिया जाता था। **स्थानिक** तथा **गोप** प्रांतों से राजस्व एकत्रित करते थे।

EBD_7243

➢ मेगस्थनीज ने भारतीय समाज को 7 वर्गों में विभाजित किया है – 1. दार्शनिक, 2. किसान, 3. अहीर, 4. कारीगर, 5. सैनिक, 6. निरीक्षक, 7. सभासद।
➢ मेगस्थनीज के अनुसार भारत में दास नहीं थे, किन्तु कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में 9 प्रकार के दासों का उल्लेख किया है।
➢ अर्थशास्त्र में शूद्रों को **आर्य** कहा गया है तथा **वार्ता** उनका वर्णधर्म बताया गया है।
➢ स्वतंत्र रूप से वेश्यावृत्ति अपनाने वाली वाली स्त्री **रूपाजीवा** कहलाती थी।
➢ **फाह्यान** ने मौर्य राजप्रासाद को देव निर्मित बताया है।
➢ मुद्रा राक्षस में चन्द्रगुन्त के महल को सुभांग कहा गया है।
➢ **वस्त्र उद्योग** मौर्यकाल का प्रमुख उद्योग था। टकसाल का अधिकारी **लक्षणाध्यक्ष** कहलाता था।

प्रमुख कर
1. भाग – कृषि उत्पादन का हिस्सा
2. परिघ – एकाधिकार कर
3. प्रतिकर – उत्पाद के रूप में देय
4. विष्टि – बेगार
5. प्रवेश्य – आयात कर
6. सेतु – फल – फूल पर लिया जानेवाला कर

अशोक के उत्तराधिकारी		
1.	दशरथ	232 (ई.पू.) से 224 (ई. पू.)
2.	सम्प्रति	224 (ई.पू.) से 215 (ई. पू.)
3.	सलिसुक	215 (ई.पू.) से 202 (ई.पू)
4.	देववर्मन	202 (ई.पू) से 195 (ई.पू.)
5.	सत्तधनवन	195 (ई.पू.) से 187 (ई.पू.)
6.	वृहद्रथ	187 (ई.पू.) से 185 (ई. पू.)

मौर्योत्तर काल

शुंग वंश

➢ पुष्यमित्र शुंग मौर्य सेनापति था, जिसने मौर्य शासक **वृहद्रथ** की हत्या कर 184 ई. पू. में शुंग वंश की स्थापना की।
➢ शुंगों की राजधानी विदिशा थी। महाभाष्य के रचनाकार **पतंजलि** पुष्यमित्र के पुरोहित थे। अयोध्या शिलालेख के अनुसार पुष्यमित्र शुंग ने पंतजलि के नेतृत्व में **दो अश्वमेध यज्ञ** किए।
➢ भारहुत स्तूप का निर्माण पुष्यमित्र शुंग ने करवाया। पुष्यमित्र ने यवन शासक **डेमेट्रियस** से युद्ध किया।
➢ **अग्निमित्र** पुष्यमित्र का उत्तराधिकारी था। उसने विदर्भ के राजा के विरुद्ध युद्ध किया।
➢ कालिदास की रचना 'मालविकाग्निमित्रम्' अग्निमित्र के जीवन पर आधारित नाट्य रचना है।
➢ अग्निमित्र के पुत्र वसुमित्र ने यवन सेनापति **मिनाण्डर** को पराजित किया। शुंग वंश के 9वें शासक **भागभद्र** (भागवत) के शासन काल में यवन राजदूत **हेलियोडोरस** ने भागवत धर्म ग्रहण किया तथा विदिशा के **वेसनगर** में गरुड़ ध्वज की स्थापना की।
➢ देवभूति शुंग वंश का अंतिम शासक था।
➢ शुंग काल में **मनुस्मृति**, **विष्णु स्मृति** तथा **याज्ञवल्क्य** स्मृति की रचना हुई तथा पतंजलि ने अष्टाध्यायी पर टीका **महाभाष्य** की रचना की।

कण्व वंश

➢ शुंग शासक देवभूति की 73 ई.पू. में हत्या कर उसके सेनापति **वासुदेव** ने कण्व वंश की स्थापना की।
➢ इस वंश के चार शासक हुए – वसुदेव, भूमिमित्र, नारायण तथा सुशर्मन।
➢ पुराणों के अनुसार कण्वों ने 75 वर्षो तक शासन किया।
➢ सुशर्मा को सातवाहन शासक **सिमुक** ने पराजित किया।

आन्ध्र सातवाहन वंश

➢ सिमुक (सिन्धुव, शिपक) ने सातवाहन साम्राज्य की स्थापना की। पहली सदी ई. पू. में स्थापित इस साम्राज्य की राजधानी **पैठान** (प्रतिष्ठान) थी। इन्हें आंध्रभृत्य भी कहा जाता है।
➢ वायु पुराण में 19 सातवाहन शासकों का उल्लेख है। शातकर्णी-I इस वंश का प्रथम शक्तिशाली शासक था। इसने दो अश्वमेध तथा एक राजसूय यज्ञ किया तथा **अप्रतिहतचक्र** तथा **दक्षिणाधिपति** की उपाधि धारण की।
➢ गौतमी पुत्र शातकर्णी ने शक तथा पर्थियनों को पराजित किया तथा सातवाहन शक्ति को गुजरात तथा राजपुताना तक विस्तृत किया।

- वाशिष्ठीपुत्र पुलमावि के सिक्के पर **'दो पतवार वाले जहाज** तथा यज्ञश्री शातकर्णी के सिक्के पर **'नाव'** का चित्रण है।
- **हाल** प्रकृत भाषा का कवि था। उसने **गाथासप्तशती** की रचना की। गुणाढ्य भी प्रसिद्ध साहित्यकार था।
- सातवाहन शासकों ने **चांदी, ताँबे, कांसे, पोटीन** तथा **सीसे** के सिक्के जारी किए।
- सातवाहनों की भाषा **प्राकृत** तथा लिपि **ब्राह्मी** थी। समाज मातृसतात्मक था। **भूमि-अनुदान** की प्रथा सातवाहनों ने ही शुरू की।
- कार्ले का चैत्य, अजंता एवं एलोरा की गुफाओं का निर्माण तथा अमरावती कला का विकास सातवाहनों के काल में हुआ।

हिन्द-यवन (इण्डो-ग्रीक/ बैक्ट्रियन) राज्य

- मौयोत्तर काल में प्रथम विदेशी आक्रांता हिन्द-यवन थे। इसके बाद क्रमशः शक, पहलव तथा कुषाणों ने भारत में अपना आधिपत्य जमाया।
- प्रथम यूनानी **डेमेट्रियस प्रथम** था, जिसके सेनापति **अपोलोडोडस** तथा **मिनाण्डर** थे। डेमेट्रियस ने पंजाब, अफगानिस्तान तथा सिंधु के बड़े भूभाग पर अधिकार कर **सियालकोट** (साकल) को अपनी राजधानी बनायी।
- हिन्द-यूनानी शासकों में सबसे विख्यात **मिनाण्डर** (165-145 ई.पू.) हुआ। इसने **नागसेन** से बौद्ध धर्म की दीक्षा ली जो **मिलिन्दपन्हो** ग्रंथ में संकलित है।
- यूक्रेटाइडिस ने **तक्षशिला** को अपनी राजधानी बनायी।
- हेलियोडोरस द्वारा वेसनगर में गरुड़ ध्वज की स्थापना के समय इण्डो-ग्रीक राज्य का शासक एण्टियाल किडास था।
- यवन शासकों ने पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त में प्राचीन यूनानी कला **हेलेनेस्टिक आर्ट** चलाई। भारत में 'गांधार कला' इसका उदाहरण है।
- भारतीय संस्कृत नाटकों में प्रयुक्त शब्द **यवनिका** (पर्दा) यूनानी भाषा का शब्द है।
- सिक्कों पर सर्वप्रथम लेख यूनानियों ने ही अंकित करवाए तथा पहली बार स्वर्ण मुद्राएँ उनके द्वारा ही जारी की गयी।

शक (सिथियन)

- **'पर्सिपोलिस** तथा **नक्शेरुस्तम'** अभिलेखों से ज्ञात होता है कि शक, डेरियस के विजित प्रदेशों में रहते थे। पंतजलि के महाभाष्य से पता चलता है कि शक, यवनों के साथ आर्यावर्त की सीमाओं से बाहर रहते थे।
- शकों की कुल पाँच शाखाएँ थीं, जिसमें एक शाखा अफगानिस्तान में बस गयी। भारत में शकों की शाखाएँ **तक्षशिला, मथुरा, महाराष्ट्र** तथा **उज्जैन** में स्थापित हुईं।
- मग्ग या माओज तक्षशिला का प्रथम और प्रमुख शासक था। इसके बाद **एजेज** और **एजिलिसिज** शासक बने। एजेज ने कुछ सिक्के एजिलिसिज के साथ भी चलाए। एजिलिसिज ने कुछ सिक्कों पर **'लक्ष्मी'** अंकित हैं।
- 57 ई.पू. में मालवा में विक्रमादित्य नामक शासक ने शकों को पराजित किया, जिससे वे भागकर मथुरा चले गए। इस शाखा (मथुरा) का प्रथम शासक राजुल था। इसके बाद शोडाश शासक बना। इसके बाद मथुरा पर कुषाणों का शासन स्थापित हो गया।
- महाराष्ट्र के पश्चिमी **क्षत्रप** का वंश **क्षहरात्र** था, जिसके प्रसिद्ध शासक **भूमक** और **नहपान** थे। नहपान ने महाराष्ट्र के एक बड़े भूभाग को सातवाहनों से छीना था। नहपान को गौतमीपुत्र शातकर्णी ने पराजित किया था।
- उज्जैन के पश्चिमी क्षत्रप का वंश **कार्दमक** कहलाता था। इस वंश का पहला शासक **'चष्टण'** था। **रुद्रदामन** (130 -150 ई.) इस वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक था। इसके संस्कृत में अंकित जनागढ़ अभिलेख से पता चलता है कि उस समय वहाँ का राज्यपाल **सुविशाख** था, जिसने **सुदर्शन झील** का निर्माण करवाया।
- **रुद्रदामन** व्याकरण, राजनीति, तर्कशास्त्र तथा संगीत का विद्वान था। इसने 'महाक्षत्रप' की उपाधि धारण की। रुद्रसिंह तृतीय इस शाखा का अंतिम शासक था, जिसे गुप्त शासक विक्रमादित द्वितीय ने 338 ई. में पराजित किया।

पह्लव (पार्थियन)

- ये मध्य एशिया के ईरान से आए थे। भारत में इस वंश का संस्थापक **मिथ्रेडेट्स प्रथम** (171-130 ई.पू.) था। **गोन्डोफर्निस** (20-41 ई.) इस वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक था। इसने **देवव्रत** की उपाधि धारण की थी।

- पहलवों के शासनकाल का सबसे महत्त्वपूर्ण अभिलेख **तख्ते-बाही** है, जिसमें 103 ई. की तिथि अंकित है। गोंडोफर्निस के शासन काल में प्रथम ईसाई धर्म प्रचारक **'सेण्ट थॉमस'** भारत आया था, जिसकी मद्रास के समीप क्यालपुर में हत्या कर दी गयी।

कुषाण (यू-ची) वंश

- पह्लव के बाद कुषाण आए, जिन्हें **यू-ची** एवं **तोखरी** भी कहा जाता था। यू-ची कबीला कुल पाँच कुलों में बँट गया था। उन्हीं में से एक कुल कुषाण थे।
- **कुजुल कडफिसस** ने 15 ई. में कुषाण वंश की स्थापना की। **विम कडफिसस** उसका उत्तराधिकारी था, यह शैव था तथा इसने भारत में सर्वप्रथम सोने के सिक्के जारी किए।
- कनिष्क 78 ई. में शासक बना। उसने **पुरुषपुर** पेशावर को राजधानी बनाया तथा राज्यारोहण के वर्ष से **शक संवत्** (78 ई.) चलाया, जिसे भारत सरकार द्वारा प्रयोग में लाया जाता है।
- इसके काल में चौथी बौद्ध संगीति आयोजित हुई। कनिष्क नें **कनिष्कपुर** नामक नगर बसाया। **मथुरा** कुषाणों की द्वितीय राजधानी थी।
- **नागार्जुन, पार्श्व, वसुमित्र** कनिष्क के दरबार की विभूति थे। राजवैद्य और आयुर्वेद के विख्यात विद्वान **चरक** ने 'चरकसंहिता' की रचना की।
- वसुमित्र ने विभाषाशास्त्र की रचना की, जिसे बौद्ध धर्म का 'विश्वकोष' कहा जाता था। **नागार्जुन** को 'भारत का आइंस्टीन' कहा जाता है। इनकी पुस्तक **माध्यमिक सूत्र** (सापेक्षता का सिद्धान्त) है।
- भारत में पहली बार **द्वैध शासन** की प्रथा कुषाणों ने शुरू की। इन्होंने रेशम मार्ग पर नियंत्रण रखा।
- कनिष्क 'महायान' बौद्ध का अनुयायी था। उसके काल में गांधार कला एवं मथुरा कला का विकास हुआ।
- कनिष्क ने चीन से दो बार युद्ध किए। पहली बार वह हार गया, किन्तु दूसरी बार विजयी हुआ। उसने पाटलिपुत्र पर आक्रमण कर **'बुद्ध का भिक्षापात्र'** तथा विद्वान **अश्वघोष** को अपने साथ ले आया।
- कुषाण शासक कनिष्क एवं हुविष्क (बौद्ध), विम (शैव) तथा वासुदेव (वैष्णव या शैव) था।
- कुषाण शासक हुविष्क के सिक्कों पर **शिव, स्कन्द**, विष्णु इत्यादि देवताओं की आकृतियां अंकित हैं।
- कुषाण काल में रोम को कालीमिर्च, रेशम, मलमल, रत्न, सूती वस्त्र इत्यादि का निर्यात किया जाता था, जिसके बदले भारी मात्रा में सोना भारत आता था, जिस पर प्लिनी ने दुःख व्यक्त किया है।
- **वात्स्यायन** ने **कामसूत्र** की रचना इसी काल में की। **बैरीगाजा** (भड़ौच) पश्चिमी तट का प्रमुख बंदरगाह था।

वाकाटक

- महाराष्ट्र और विदर्भ (बरार) में सातवाहनों के स्थान पर एक स्थानीय शक्ति वकाटकों ने प्रभुत्व स्थापित किया। इस वंश का संस्थापक **विंध्यशक्ति** था, जिसका मूल स्थान बरार था।
- विंध्यशक्ति का उत्तराधिकारी **प्रवरसेन प्रथम** था, जिसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की तथा **चार अश्वमेध यज्ञ** और **एक वाजपेय यज्ञ** किया।
- बाद में इस वंश का विभाजन बरार और नागपुर शाखा में हो गया। नागपुर शाखा के शासक रुद्रसेन द्वितीय का गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती का विवाह हुआ।
- प्रवरसेन द्वितीय ने **'सेतुबन्ध'** नामक कृति की रचना की, जिसमें राम की लंका विजय का वर्णन है। प्रवरसेन द्वितीय ने कदम्बों से वैवाहिक संबंध स्थापित किए।
- प्रवरसेन द्वितीय के बाद हरिषेण शासक बना। इसके बाद वाकाटक साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया।
- अजन्ता की गुफा 16, 17 और चैत्यगुफा 19 वकाटक काल की है।
- वाकाटक काल में ही कालिदास ने प्रवरसेन द्वितीय के संरक्षण में **मेघदूत** की रचना की। सर्वसेन ने प्राकृत भाषा में **हरिविजय** काव्य की रचना की।
- **आभीर वंश**- संस्थापक ईश्वरचन्द्र (248-49 ई. में कल्चुरि चेदि संवत् की स्थापना की।)
- **इक्ष्वाकु वंश**- श्रीशान्त मूल।

संगम काल

- संगम काल में मुख्य रूप से तीन राजवंश **चोल, चेर** (केरलपुत्र) और **पाण्ड्य** आते हैं। अशोक अभिलेख में चोल, चेर, पाण्ड्य और सतियपुत्र का उल्लेख आया है।
- संगम तमिल कवियों का एक संघ था। इन संघ या परिषदों का आयोजन पांड्य शासकों के संरक्षण में किया गया।
- राजकीय संरक्षण के कारण विशाल साहित्य की रचना हुई। इस काल में 473 कवियों द्वारा 2289 रचनाएँ की गयीं। इन साहित्यों की रचना 300 ई. पू. से 300 ई. तक की गयी।

चोल वंश

- चोलों के बारे में पहली जानकारी पाणिनी की **अष्टाध्यायी** में मिलती है। चोलों की राजधानी **उरैयुर** एवं **उत्तरी मनलूर** में थी, जिसे बाद में **पुहार** या **कावेरीपत्तनम** में स्थानांतरित कर दिया गया। चोलों का राजकीय चिह्न **बाघ** था।
- **करिकल** (जले हुए पैरों वाला) इस वंश का महत्त्वपूर्ण शासक था। उसने कावेरी के तट पर **पुहार** नगर की स्थापना की। उसने **वेण्णि** के युद्ध में विजय प्राप्त की।
- **पत्तुपात्तु** कविता में कावेरीपत्तनम (पुहार) की चर्चा है। करिकाल ने **पट्टिनप्पालै** के रचनाकार को 16 लाख सोने की मुद्राएं प्रदान की थीं।
- **शिलप्पादिकारम** और **मणिमेखलै** को संगम काल का महाकाव्य कहा जाता है। शिलप्पादिकारम में कोलवन और कण्णगी की कथा है जो नूपुर के चारों ओर घूमती है।
- राजा के सर्वोच्च न्यायालय को **मनरम्** तथा प्रतिनिधि परिषद् को **पंचवरम्** कहा जाता था।
- **तोण्डी, मुशिरी** तथा **पुहार** प्रमुख व्यापारिक केन्द्र थे। **उरैयुर** सूती वस्त्र उत्पादन का केन्द्र था।

चेर राज्य

- इसका विस्तार केरल पर था। इसके बारे में पहली जानकारी **ऐतरेय ब्राह्मण** में मिलती है। इसकी राजधानी **वेजि** या **वंजिपुरम** (करूर) थी तथा इसका राजकीय चिह्न **धनुष** था।
- इस वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक **शेनगुट्टवन** था, जिसे **लाल चेर** भी कहा जाता था। **वंजिपुरम** से बड़ी संख्या में **रोमन सिक्के** प्राप्त हुए हैं।
- प्रथम चेर शासक **उदयिन जेरल** था, जिसने कुरूक्षेत्र के युद्ध में भाग लिया था। इसकी प्रशंसा **परणर** कवि ने की है।
- शेनगुट्टुवन (लाल चेर) ने **पत्तिनी** या **कण्णगी पूजा** को प्रारंभ करवाया।
- **आदिगइमान** (नडुमान अंजी) ने दक्षिण भारत में **गन्ने की खेती** शुरू कारवायी। **मांदरजेरल इंरपोरई** को 'हाथी की आंखवाला शेय' कहा गया है।

पांड्य राज्य

- पाण्ड्यों की राजधानी **मदुरा (तटीय राजधानी – कोरकई)** थी तथा प्रतीक चिह्न **मछली** था। पाण्ड्यों का उल्लेख सर्वप्रथम **मेगस्थनीज** ने किया है। यह राज्य **मोतियों** के लिए प्रसिद्ध था।
- मुडुकुडुमी ने यज्ञशालाओं का निर्माण करवाया और **पलशालै** की उपाधि धारण की।
- नेदुंजेलियन प्रसिद्ध पाण्ड्य शासक था, जिसने **तलैयालंगानम** का युद्ध जीता था। **नेंडियोन** ने **समुद्र पूजा** की प्रथा शुरू की।
- नेदुंजेलियन ने निर्दोष **कोलवन** को हार चुराने के आरोप में मृत्युदण्ड दिया, किन्तु सच्चाई का पता चलने पर उसने आत्महत्या कर ली।

महत्त्वपूर्ण शब्द
पेरुनल – राजा का जन्मदिन
पेरुर – बड़े गाँव
सिरुर – छोटे गाँव
मुडूर – पुराने गाँव
पन्तिनम – तटीय कस्बा
इराकू – जबरन लिए गए उपहार
इरवै – जबरन वसूला जाने वाला कर
करई – भू राजस्व
इरई – दुश्मनों से कर
बरियम – कर का क्षेत्र
वरियार – कर वसूल करने वाले
अवनम – बाजार की जगह
एनियर – शिकारियों की जाति
परादावर – मछुआरे
उलावार – हलवाहा

EBD_7243

पुल्लैयन	रस्सी बनाने वाली जाति
कडैसियस	निम्न जाति के लोग जो कृषि कार्य करते थे
नलवै	राजा की सभा
एनाडि	सेनानायक
उलगू	सीमा शुल्क
औरर	गुप्तचर
कोल्लम	लोहर
तच्छन	बढ़ई

सामाजिक स्थिति

- संगम साहित्य के अनुसार समाज चार भागों में बँटा था – ब्राह्मण, अरसर (शासक वर्ग), वल्लाल (बड़े कृषक), वेल्लार (मजदूर कृषक वर्ग)।

प्रमुख पुस्तक एवं लेखक	
पुस्तक	**लेखक**
शिल्पादिकारम	इलंगो आदिगल
मणिमेखलै	सीतलै सत्तनार (बौद्ध व्यापारी)
जीवक चिंतामणि	तिरूक्तदेवर
तिरुमुरुगात्रुप्पदै	नक्कीरर
तोलकाप्पियम (व्याकरण)	तोलकाप्पियर

तमिल संगम		
संगम	**स्थान**	**अध्यक्ष**
प्रथम	मदुरै	अगस्त्य ऋषि
द्वितीय	कपाटपुरम (अलवै)	तोलकाप्पियर (संस्थापक-अगस्त्य)
तृतीय	मदुरै	नक्कीरर

- वल्लालों की नियुक्ति सेना में उच्च पदों पर की जाती थी। चोल सेना में इस वर्ग को **अरशु** एवं **वेल** पाण्ड्य सेना में **कविदि** कहा जाता था। इस वर्ग का राजपरिवार से वैवाहिक संबंध होता था।
- दासप्रथा नहीं थी, किन्तु सती प्रथा का प्रचलन था। **कडैसियस** निम्न जाति के लोग थे। **पुल्लैयन** रस्सी बनानेवाली एक जाति थी।
- **मुरूगन** प्रमुख स्थानीय देवता थे, जिन्हें आरंभिक मध्यकाल में **सुब्रह्मण्यम** या **कार्तिक** कहा जाने लगा।
- संगम काल **गोलमिर्च, मोती, हाथी दांत, रत्न, मलमल रेशम** आदि के लिए प्रसिद्ध था।
- सभी उपलब्ध तमिल ग्रंथ तृतीय संगम से संबंधित हैं।

संगम काल की क्षेत्रीय विशिष्टताएँ					
क्र. सं.	**तिनई (क्षेत्र)**	**अगम (प्रेम)**	**पुरम (युद्ध)**	**निवासी**	**देवतागण**
1.	कुरिंजी (पहाड़ियाँ)	विवाह-पूर्व प्रेम	पशुओं की लूट	कुरुवर (शिकारी)	मुरुगन, सुब्रह्मण्यम्, स्कंद, कार्तिकेय, सेयन
2.	पलाई (शुष्क भूमि)	प्रेमियों का दीर्घकालीन विरह	अग्निदहन, विध्वंस	मरवर (योद्धा)	कोर्रावै, दुर्गा
3.	मुल्लै	संक्षिप्त विरह काल (वन प्रदेश)	छापामार अभियान	कुरुम्बर	कृष्ण (गड़ेरिए), तिरूमल, मेयन
4.	मरुदम (मैदानी इलाके)	विवाहेत्तर प्रेम	घेराबंदी	उलवर (कृषक)	सेनन, इंद्र
5.	नेडल (तटीय इलाकें)	मछुआरों के पत्नियों का अलग होना	स्थायी पारंपरिक युद्ध	पटदावर	वरुण, काड़लण (मछुआरे)

गुप्त काल

- **श्रीगुप्त**, गुप्त साम्राज्य का संथापक था। समुद्रगुप्त ने स्वयं को प्रयाग प्रशस्ति में श्रीगुप्त का प्रपौत्र कहा है। श्रीगुप्त के बाद घटोत्कच गुप्त शासक हुआ। इसकी उपाधि महाराज थी।

चन्द्रगुप्त प्रथम (319-324 ई.) -

- घटोत्कच के बाद उसका पुत्र चन्द्रगुप्त प्रथम गुप्तवंश का शासक हुआ। इसने महारजधिराज की पदवी धारणा की। चन्द्रगुप्त ने एक सम्वत्(319-20) चलाया, जो गुप्त सम्वत् के नाम से प्रसिद्ध है।

समुद्रगुप्त (325 ई.-375 ई.)

- चन्द्रगुप्त प्रथम के पश्चात् उसका पुत्र समुद्रगुप्त शासक बना, वह लिच्छवी राजकुमारी 'कुमार देवी' से उत्पन्न हुआ था।
- समुद्रगुप्त के विषय में यद्यपि अनेक शिलालेखों, स्तम्भलेखों, मुद्राओं व साहित्यिक ग्रंथों से व्यापक जानकारी प्राप्त होती है, परन्तु समुद्रगुप्त पर प्रकाश डालने वाली अत्यन्त प्रामाणिक सामग्री **'प्रयाग प्रशस्ति'** के रूप में उपलब्ध है।
- राजसिंहासन पर आसीन होने के पश्चात् समुद्रगुप्त ने दिग्विजय की योजना बनाई। 'प्रयाग-प्रशस्ति' के अनुसार इस योजना का ध्येय **'धरणि-बन्ध'** (भूमण्डल को बांधना) था।
- समुद्रगुप्त वंश का एक महान योद्धा तथा कुशल सेनापति था, इसी कारण उसे **भारत का नेपोलियन** कहा जाता है।
- समुद्रगुप्त का साम्राज्य पूर्व में ब्रह्मपुत्र, दक्षिण में नर्मदा तथा उत्तर में कश्मीर की तलहटी तक विस्तृत था।
- प्रयाग प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि समुद्रगुप्त ने **आटविक राज्यों** के शासकों को अपना दास बना लिया था। ये आटविक राज्य उत्तर में गाजीपुर से लेकर जबलपुर तक फैले थे।
- यह अशोक मौर्य के विपरीत हिंसा व अतिक्रमण की नीति में विश्वास रखता था।
- इसके दरबारी कवि हरिषेण ने इसकी सैनिक सफलताओं का विवरण प्रयाग प्रशस्ति में लिखा है। यह अभिलेख उसी स्तम्भ पर खुदा है जिस पर अशोक का अभिलेख है।

चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य (380 ई.- 412 ई.)

- समुद्रगुप्त के पश्चात् **रामगुप्त** नामक एक दुर्बल शासक के अस्तित्व की जानकारी गुप्तवंशावली में मिलती है, तत्पश्चात् चन्द्रगुप्त द्वितीय का नाम है। चन्द्रगुप्त द्वितीय, रामगुप्त का अनुज था।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में गुप्त साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष को प्राप्त हो गया था।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने वैवाहिक सम्बन्धों और विजय दोनों प्रकार से गुप्त साम्राज्य का विस्तार किया था।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के अभिलेखों व मुद्राओं से उसके अनेक नामों व विरुदों के विषय में पता चलता है, उसे 'देवश्री', 'विक्रम', विक्रमादित्य', 'अप्रतिरथ', सिंहविक्रम', 'सिंहाचन्द्र', 'परमभागवत', 'अजित विक्रम', 'विक्रमांक', आदि विरूदों से अंलकृत कहा गया है।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन काल में उसकी प्रथम राजधानी **पाटलिपुत्र** और द्वितीय राजधानी **उज्जयिनी** थी, ये दोनों ही नगर गुप्तकालीन शिक्षा के प्रसिद्ध केन्द्र थे।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय का काल साहित्य और कला का स्वर्ग युग कहा जाता है।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबार में विद्वानों एवं कलाकारों को आश्रय प्राप्त था। उसके दरबार में नौ रत्न थे **कालिदास, धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, बैताल भट्ट, घटकर्पर, वाराहमिहिर और वररुचि**।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में **चीनी यात्री फाह्यान** (399-412 ई.) भारत यात्रा पर आया था एवं उसने भारत का वृतान्त लिखा।

कुमारगुप्त प्रथम (413 ई. - 455 ई.)

- चन्द्रगुप्त द्वितीय के पश्चात् उसका पुत्र कुमारगुप्त प्रथम गुप्त साम्राज्य का शासक बना। कुमारगुप्त की माता का नाम ध्रुवदेवी था।
- गुप्त शासकों में सर्वाधिक अभिलेख कुमारगुप्त के ही प्राप्त हुए हैं।
- कुमारगुप्त प्रथम के अभिलेखों व मुद्राओं से ज्ञात होता है कि उसने 'महेन्द्र कुमार', 'श्रीमहेन्द्र' 'श्रीमहेन्द्रसिंह', 'महेन्द्रकर्म', 'अजित महेन्द्र' और 'गुप्तकुल व्योम' आदि उपाधियां धारण की थीं। उसकी सर्वप्रथम उपाधि **'महेन्द्रादित्य'** थी।
- कुमारगुप्त प्रथम स्वयं वैष्णव धर्मानुयायी था किन्तु उसने धर्म-सहिष्णुता की नीति का पालन किया था।
- कुमारगुप्त प्रथम ने अधिकाधिक संख्या में मयूर आकृति की रजत मुद्राएं प्रचलित की थीं।
- कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल में **नालन्दा विश्वविद्यालय** की स्थापना की गई थी।

EBD_7243

स्कन्दगुप्त (455 ई.–467 ई.)

- पुष्यमित्रों के आक्रमण के दौरान ही गुप्त शासक कुमारगुप्त प्रथम की मृत्यु हो गई थी, अतः कुमारगुप्त की मृत्यु के पश्चात् उसका प्रतापी पुत्र स्कन्दगुप्त सिंहासनारूढ़ हुआ। स्कन्दगुप्त गुप्तवंश का अन्तिम प्रतापी शासक था।
- स्कन्दगुप्त ने **'देवराज'**, **'विक्रमादित्य'**, **'क्रमादित्य'** आदि उपाधियां धारण की थीं।
- विभिन्न उपाधियों के कारण ही 'आर्यमंजू–श्रीमूलकल्प' में उसे **'विविधाख्य'** (अनेक नामों वाला नरेश) कहा गया है।
- स्कन्दगुप्त ने मौर्यों द्वारा निर्मित सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार करवाया था।
- स्कन्दगुप्त वैष्णव धर्मावलम्बी था, किन्तु उसने धर्म–सहिष्णुता की नीति का पालन किया।
- स्कन्दगुप्त की मृत्यु 467 ई. में हुई थी।

गुप्तकाल की महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कृतियाँ	
महाकाव्य	**कवि**
रघुवंश, ऋतुसंहार, मेघदूतम	कालिदास
रावण वध	वत्सभट्टि
काव्य दर्शन और दशकुमारचरित	दण्डी
किरातार्जुनीयम्	भारवि
नाटक	
विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, कुमारसम्भवम्	कालिदास
मृच्छकटिकम्	शूद्रक
स्वप्नवासवदत्तम्, चारुदत्त और प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्	भास
मुद्राराक्षस और देवीचन्द्रगुप्तम्	विशाखदत्त
स्तम्भ कीर्ति लेख	
प्रयाग प्रशस्ति	हरिसेन
दर्शन	
सांख्यकारिका (सांख्य दार्शन पर आधारित), पदार्थ धर्मसंग्रह (वैशेषिक प्रशस्तिपद दर्शन पर आधारित)	ईश्वर कृष्ण आचार्य
व्यास भास (योगदर्शन पर आधरित)	आचार्य व्यास
भव्य भाष्य (नव्य दर्शन पर आधरित)	वात्स्यायन
धार्मिक कृति	
इस काल के दौरान दो महान् महाकाव्य **रामायण** और **महाभारत** को अन्तिम रूप दिया गया।	

व्याकरण	
अमरकोष	अमर सिंह
चंद्रव्याकरण	चंद्रगोमिन
काव्यादर्श	दण्डी
कथाएँ	
पंचतंत्र	विष्णु शर्मा
हितोपदेश	नारायण पंडित

बृहत्संहिता और पंचसिद्धान्तिका	वाराहमिहिर
ब्रह्मसिद्धान्तिका	ब्रह्मगुप्त
अन्य कृतियाँ	
नीति शास्त्र	कामन्दक
कामसूत्र	वात्स्यायन
काव्यालंकार	भामह
मध्यमव्यायोग, दूतवाक्य, बालचरित, प्रतिमा, अभिषेक, अविमार्क, दूतघटोत्कच, कर्णभार, उरूभड्ग, पांचरात्र	भास
भट्टी काव्य या रावण वध	भट्टी
सांख्यकारिका	ईश्वर कृष्ण
प्रमाण समुच्चय	दिङ्नाग
वसुबंधु की जीवनकथा	परमार्थ
'पदार्थ धर्म संग्रह' या 'वैशेषिक पद्धति दर्शन'	प्रशस्तपाद

प्रशासन, अर्थव्यस्था, समाज एवं संस्कृति

- **देश** सबसे बड़ी प्रशासनिक इकाई थी, जिसका शासक **गोप्ता** कहलाता था। इसके नीचे **भुक्ति** थी, जिसके शासक **उपरिक** कहलाते थे।
- भुक्ति के नीचे **विषय** नामक प्रशासनिक इकाई होती थी, जिसके प्रशासक को **विषयपति** कहा जाता था।
- **दण्डपाशिक** पुलिस विभाग का मुख्य अधिकारी होता था। पुलिस के साधारण कर्मचारी **चाट** एवं भाट कहलाते थे।
- ग्राम प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी, जिसका मुखिया **ग्रामिक** कहलाता था तथा सदस्य **महत्तर** कहलाते थे। ग्राम समूहों की इकाई को **पेठ** कहा जाता था।
- गुप्तकाल में केवल **ब्राह्मणों** को भूमि दान में दी जाती थी।
- गुप्तकाल में जिन ब्राह्मणों का गांवों पर अधिकार होता था उन्हें 'ब्रह्मदेय' कहा जाता था।
- गुप्तकालीन समाज में **अन्तर्जातीय विवाह** प्रचलित थे।
- गुप्तकाल में नृत्य एवं संगीत में निपुण तथा काम-शास्त्र में पारंगत महिलाओं को **गणिका** कहते थे।
- गुप्तकाल में **हिन्दू धर्म** की अत्यधिक उन्नति हुई। इस काल में हिन्दू धर्म की **दो प्रमुख शाखाएं** प्रचलित थीं - **वैष्णव** और **शैव**।
- गुप्तकाल में त्रिमूर्ति के अन्तर्गत ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश की पूजा आरम्भ हुई। इसमें ब्रह्मा को सृजन, विष्णु को पालन तथा महेश को संहार का प्रतीक माना गया।
- गुप्तकाल में **कापालिक** व **कालामुख** सम्प्रदाय अस्तित्व में आ चुके थे।
- गुप्तकाल में **जैन धर्म** को भी विशेष स्थान प्राप्त था। जैन धर्म की श्वेताम्बर शाखा की **दो सभाओं** का आयोजन हुआ था, **पहली सभा मथुरा** में 313 ई. में तथा दूसरी 453 ई. में **वल्लभी** में बुलाई गई थी।
- गुप्तकाल में भारत के पूर्वी देशों को **स्वर्णभूमि** कहा जाता था, इनसे अच्छे व्यापारिक सम्बन्ध थे।
- गुप्तकाल में पश्चिम में **भड़ौच** एवं पूर्व में **ताम्रलिप्ति** प्रमुख बन्दरगाह थे।
- गुप्तकाल में काम करने वाले लोगों के सामूहिक निगम को **'कुलिक'** कहा जाता था।
- गुप्तकाल में **घोड़ों का अरब** एवं **ईरान** से आयात किया जाता था।

गुप्तकालीन भूमि	
क्षेत्र	कृषि योग्य भूमि
वास्तु	वास योग्य भूमि
खिल्य	जो जोतने योग्य नहीं हो
चरागाह	पशुओं के चारा योग्य
अप्रहत	जंगली भूमि

- गुप्तकाल में निर्मित **श्रेष्ठी सार्थवाह-कुलिक निगम की 274 मुहरें** वैशाली से प्राप्त हुई हैं।
- गुप्तकाल में **कदूर, परपाल** आन्ध्र प्रदेश के बन्दरागाह थे।
- गुप्तकाल में **कावेरीपत्तनम, तोन्दर** चोल प्रदेश के बन्दरगाह थे।
- गुप्तकाल में **कोकई, सलिलपुर** पांड्य प्रदेश के बन्दरगाह थे।
- गुप्तकाल में **कोत्रयम, मुजरिस** मलाबार के बन्दरगाह थे।

गुप्तकालीन मंदिर	
मंदिर	**स्थान**
दशावतार मंदिर	देवगढ़ (झांसी, उ. प्र.)
लक्ष्मण मंदिर	सिरपुर (ईंटों से निर्मित)
विष्णु मंदिर	उदयगिरि
शिव मंदिर	खोह
विष्णु मंदिर	तिगवा (जबलपुर, मध्य प्रदेश)
शिव प्रदेश	भूमरा (नागौद, मध्य प्रदेश)
पार्वती मंदिर	नचनाकुठार, (मध्य प्रदेश)
भीतर गाँव मंदिर	भीतर गाँव (कानपुर, उ. प्र.)

- गुप्तकाल में **सिन्धु, ओरहोथ, कल्याण, मिबोर** प्रमुख बन्दरागाह थे, जिनसे व्यापार किया जाता था।
- गुप्तकाल में **शील, भट्टारिका** विदुषी महिलाएं थीं।
- गुप्त शासकों ने सर्वाधिक स्वर्ण मुद्राएँ जारी कीं, जिन्हें उनके अभिलेखों में दीनार कहा गया है।
- मंदिर कला का विकास गुप्तकाल की देन है।
- सांस्कृतिक उपलब्धियों के लिए गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का **स्वर्णयुग** कहा जाता है।
- अजन्ता की गुफा **16 और 17** गुप्त काल की है। गुफा संख्या 17 के चित्र को **चित्रशाला** कहा गया है।
- गुप्तकाल में चांदी के सिक्कों को **रूप्यका** कहा जाता था।
- कायस्थों का उल्लेख सर्वप्रथम **याज्ञवल्क्य स्मृति** में आया है। जाति के रूप में उनका प्रथम वर्णन **ओशनम्** स्मृति में हुआ है।
- पहली बार सती होने का प्रमाण 510 ई. के भानुगुप्त के एरण अभिलेख में मिलता है, जिसमें किसी भोजराज की मृत्यु पर उसकी पत्नी के सती होने का उल्लेख है।
- स्कन्दगुप्त के बाद पुरुगुप्त, कुमारगुप्त द्वितीय, बुद्धगुप्त, वैन्य गुप्त, भानुगुप्त, नरसिंह गुप्त बालादित्य, कुमारगुप्त तृतीय तथा विष्णुगुप्त शासक हुए।

गुप्तोत्तर काल

पुष्यभूति (वर्द्धन) वंश

- दिल्ली और पंजाब के भू-भाग पर स्थित श्रीकंठ नामक प्राचीन जनपद का ही एक भाग थानेश्वर था, जहां पुष्यभूति नामक व्यक्ति ने 'पुष्यभूति राजवंश' की स्थापना छठी शताब्दी ईस्वी के प्रारम्भ में की। इस राजवंश को 'वर्धन राजवंश' के नाम से भी जाना जाता है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इसको 'फीन्शे' अर्थात् 'वैश्य' कहा है, 'आर्यमंजूश्रीमूलकल्प' में भी इन्हें वैश्य कहा गया है। यद्यपि बाणभट्ट ने 'हर्षचरित' में वर्धनों को चन्द्रवंशीय' कहा है।
- **प्रभाकरवर्धन** इस वंश की स्वतन्त्रता का जन्मदाता था। इसने '**परामभट्टारक**' एवं '**महाराजाधिराज**' की उपाधि धारण की थी।
- प्रभाकरवर्धन की पुत्री राज्यश्री का विवाह कन्नौज के मौखरि नरेश **गृहवर्मा** के साथ सम्पन्न हुआ।
- प्रभाकरवर्धन के शासनकाल में हूणों ने लगभग 604 ई. में भारत पर आक्रमण किया। प्रभाकरवर्धन ने हूणों का दमन करने के लिए अपने पुत्रों राज्यवर्धन और हर्षवर्धन को एक बड़ी सेना के साथ भेजा था। उन्होंने हूणों को परास्त किया।
- हर्षचरित से ज्ञात होता है कि जब प्रभाकरवर्धन के पुत्र राज्यवर्धन और हर्षवर्धन हूणों का सामना करने के लिए गए, तभी 'कुरंगक' नामक दूत ने प्रभाकरवर्धन की बीमारी की सूचना दोनों भाइयों को दी।
- हर्षवर्धन वापस लौट आया, परन्तु पिता प्रभाकरवर्धन की मृत्यु हो गई और रानी यशोमति पति के साथ सती हो गई।
- राज्यश्री के 'संवादक' नामक दूत ने सूचित किया कि मालवा के शासक देवगुप्त ने गृहवर्मा का वध कर राज्यश्री को कैद कर लिया है।
- इस सूचना पर राज्यवर्धन सेना लेकर कन्नौज गया और उसने देवगुप्त का वध कर दिया, किन्तु गौड़ नरेश **शशांक** के षड्यंत्र से वह स्वयं मारा गया। 'कुन्तल' नामक अश्वारोही ने यह सूचना हर्षवर्धन को थानेश्वर में थी।

- राज्यवर्धन की मृत्यु के पश्चात् 606 ई. में हर्षवर्धन 16 वर्ष की उम्र में थानेश्वर के राजसिंहासन पर आसीन हुआ।

हर्षवर्धन (606 ई.-647 ई.)

- हर्षवर्धन का जन्म 591 ई. के लगभग हुआ था। वह प्रभाकरवर्धन का छोटा पुत्र था।
- बड़े भाई राज्यवर्धन की मृत्यु के बाद हर्षवर्धन थानेश्वर के राजसिंहासन पर आसीन हुआ।
- राज्यारोहण के समय हर्ष के सम्मुख दो प्रमुख तात्कालिक समस्याएं थीं- (i) गौड़ नरेश शशांक को मारकर बड़े भाई राज्यवर्धन की हत्या का बदला लेना, (ii) अपनी बहन राज्यश्री को ढूंढ़ निकालना।
- गौड़ नरेश शशांक ने हर्षवर्धन के कन्नौज आगमन की सूचना पाकर बिना युद्ध किये ही कन्नौज खाली कर दिया।
- चूंकि कन्नौज नरेश गृहवर्मा के पुत्र नहीं था, अत: कन्नौज के मंत्रियों ने हर्ष से कन्नौज के राजसिंहासन पर बैठने का आग्रह किया, किन्तु हर्ष ने अस्वीकार कर दिया।
- हर्ष ने स्वयं को 'राजपुत्र' कहा और राज्यश्री को ही कन्नौज की शासिका बनाया।
- चीनी स्रोतों से ज्ञात होता है कि हर्ष एवं राज्यश्री साथ-साथ कन्नौज के सिंहासन पर बैठते थे। हर्ष ने अपनी राजधानी थानेश्वर से कन्नौज स्थानान्तरित कर ली थी, ताकि वह राज्यश्री को प्रशासनिक कार्यों में पूरी सहायता दे सके।
- हर्षवर्धन ने कामरूप शासक भास्कर वर्मा से सन्धि करने के पश्चात् गौड़ शासक शशांक के विरुद्ध एक बड़ी सेना भेजी और उसे परास्त किया।
- दक्षिण में उसकी सेनाओं को 620 ई. में चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय ने नर्मदा के तट से पीछे खदेड़ दिया था।
- हर्षवर्धन अपने 40 वर्ष के लम्बे शासनकाल में निरन्तर युद्धों में संलग्न रहा। उसके द्वारा अन्तिम युद्ध 643 ई. में **गंजाम** में लड़ने का उल्लेख मिलता है।
- हर्षवर्धन ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी, जिसकी उत्तरी सीमाएं हिमाच्छादित पर्वतों तक दक्षिण में नर्मदा नदी तट तक, पूर्व में गंजाम तथा पश्चिम में वल्लभी तक विस्तृत थीं। उसके इस विशाल साम्राज्य की राजधानी कन्नौज थीं।
- हर्षवर्धन एक उच्चकोटि का कवि भी था। उसने संस्कृत में **नागानन्द, रत्नावली** तथा **प्रियदर्शिका** नामक नाटकों की रचना की थी।
- जिस समय हर्षवर्धन थानेश्वर के राजसिंहासन पर बैठा, उस समय राज्य की स्थिति काफी संकटपूर्ण थी, क्योंकि गौड़ नरेश शशांक द्वारा उसके भाई का वध कर दिया गया था और उसकी बहिन राज्यश्री अपने प्राण बचाने के लिए अज्ञातवास को चली गई थी।
- हर्षवर्धन ने एक बौद्ध-भिक्षु **दिवाकर मित्र** की सहायता से अपनी बहिन राज्यश्री को ढूंढ़ निकाला।
- हर्षवर्धन शिव और सूर्य की उपासना के साथ-साथ बुद्ध कर उपासना भी करता था। कालान्तर में उसका झुकाव महायान बौद्ध धर्म की ओर अधिक हो गया था।
- हर्षवर्धन ने अपने साम्राज्य में यात्रियों, दीन-दुखियों और रोगियों की सेवा-सुविधा के लिए स्थान-स्थान पर धर्मशालाएं, चिकित्सालय और कुओं आदि का प्रबन्ध कर रखा था।
- हर्षवर्धन ने अपने राजदरबार में कादम्बरी और हर्षचरित के रचयिता **बाणभट्ट** सुभाषितवलि के रचयिता **मयूर** और चीनी विद्वान **ह्वेनसांग** को आश्रय प्रदान किया था।
- हर्षवर्धन की मृत्यु 647 ई. में हुई थी। चूंकि वह नि:सन्तान था, अत: उसकी मृत्यु के साथ ही पुष्यभूति वंश का अन्त हो गया।
- हर्ष की मृत्यु के उपरान्त मगध में **आदित्य सेन** ने पुन: परवर्ती गुप्त वंश के राज्य की स्थापना की थी।

हर्ष की मंत्रिपरिषद्
भण्डि - प्रधान सचिव
अवन्ति - युद्ध एवं शांति का मंत्री
सिंहनाद - महासेनापति
कुन्तल - अश्वा सेना का मुख्य अधिकारी
स्कन्दगुप्त - हस्ति सेना का प्रमुख

उत्तर भारत (800 – 1200 ई.)

कामरूप का वर्मन वंश

- 7वीं शताब्दी में **पुष्यवर्मन** ने कामरूप में वर्मन वंश की स्थापना की। इसने अपनी राजधानी **प्रागज्योतिषपुर** नामक स्थान पर स्थापित की। इसके पश्चात् भूमि वर्मन, स्थित वर्मन और सुस्थित वर्मन शासक हुए।
- पुष्यवर्मन के वंशज भास्कर वर्मन का शासन (606-50 ई.) में था।
- भास्कर वर्मन ने गौड़ शासक नरेश शशांक के विरुद्ध हर्षवर्धन से संधि की जिसकी मृत्यु के बाद हर्षवर्धन और भास्कर वर्मन ने उसके राज्य को आपस में बांट लिया।
- भास्कर वर्मन की मृत्यु के पश्चात् कामरूप में साल स्तम्भ नाम के म्लेच्छ शासक के शासन का उल्लेख मिलता है। वह शायद मंगोल जाति का था। उसकी राजधानी ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे **हारू** नाम के किसी नगर में थी।
- साल स्तम्भ की मृत्यु के बाद ब्रह्मपाल और रत्न पाल जो उसके सम्बन्धी थे, कामरूप के शासक बने।
- 1202 ई. में कुतुबद्दीन ऐबक ने कलिंजर पर आक्रमण किया और यहां पर तुर्कों का अधिकार हो गया।

कश्मीर के राजवंश

- कल्हण की **राजतरंगिणी** (1150 ई.) में कश्मीर के प्राचीन इतिहास का वर्णन है।
- दुर्लभवर्द्धन ने 627 ई. में **कार्कोट वंश** की स्थापना की थी।
- 713 ई. में कश्मीर का शासक चन्द्रपीड़ था, जिसने अरबों के आक्रमण का सामना किया।
- **ललितादित्य मुक्तापीड़** (लगभग 724-760 ई.) कार्कोट वंश का प्रसिद्ध शासक था। उसने कम्बोजों तथा तुर्कों को पराजित किया। राजतरंगिणी में ललितादित्य मुक्तापीड़ की विजयों का विवरण है। उसने मार्तण्ड का सूर्य मन्दिर निर्मित करवाया था।
- कार्कोट वंश के बाद उत्पलवंश तथा लोहार वंश का शासन हुआ।
- उत्पल वंश का संस्थापक **अवन्तिवर्मन** था, तथा लोहार वंश का संस्थापक **संग्राम राज** था।
- अवन्तिवर्मन ने **अवन्तिनगर** बसाया तथा उसके अधिकारी सूय्य ने सिंचाई के लिए नहरें बनवाईं।
- 980 ई. में उत्पल वंश की रानी **दिद्दा** ने राज्य में शान्ति स्थापित की, किन्तु वह एक दुराचारिणी महिला थी।
- 1003 ई. में उसकी मृत्यु के बाद **संग्रामराज** शासक हुआ जिसने लोहार वंश की नींव डाली। इसकी पत्नी **सूर्यमति** ने प्रशासन में उसका साथ दिया।
- इसी वंश में **हर्ष** राजा हुआ, जिसका आश्रित कवि कल्हण था, जिसकी राजतरंगिणी का विवरण इस वंश के अन्तिम शासक जयसिंह (1128-1155 ई.) के साथ समाप्त हो जाता है।
- 1339 ई. में शाहमीर ने कश्मीर में मुस्लिम शासन की स्थापना की।

पाल वंश

- पाल वंश की स्थापना 750 ई. में **गोपाल** ने की। वास्तव में बंगाल में अराकता फैल जाने के कारण वहाँ की जनता ने उसे शासक चुना। इसकी राजधानी **मुंगेर** थी।
- गोपाल बौद्ध धर्म की अनुयायी था। उसने **ओदन्तपुरी विश्वविद्यालय** की स्थापना की।
- **धर्मपाल** (770-810 ई.) पाल वंश का शक्तिशाली शासक था। गुजराती कवि **सोड्ढल** ने उसे **उत्तरापथस्वामी** कहा है।
- धर्मपाल ने **विक्रमशिला विश्वविद्यालय** तथा **सोमपुरी** (पहाड़पुर) में विहार की स्थापना की थी। इसकी राजसभा में बौद्ध लेखक **हरिभद्र** निवास करता था।
- देवपाल ने ओदन्तपुरी के प्रसिद्ध बौद्ध मठ का निर्माण करवाया। उसने **जावा** के शैलेन्द्रवंशी शासक **बलपुत्रदेव** के अनुरोध पर नालंदा में एक बौद्ध विहार बनवाने के लिए पांच गांव दान में दिए।
- धर्मपाल और देवपाल के बाद नारायणपाल, महिपाल, नयपाल आदि शासक हुए।
- संध्याकर नन्दी के रामपालचरित के अनुसार **रामपाल** इस वंश का अंतिम शासक था।
- पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूट के मध्य हुए त्रिपक्षीय संघर्ष में पालवंश की ओर से सर्वप्रथम धर्मपाल शमिल हुआ।

सेन वंश

- पालवंश की दुर्बलता का लाभ उठाकर **सामन्त सेन** ने बंगाल (राढ़) में सेन वंश की स्थापना की। इसकी राजधानी **नादिया** (लखनौती) थी।
- बल्लाल सेन, सेन वंश का प्रबुद्ध शासक था। उसने **दानसागर** एवं **अद्भूत सागर** (खगोल विज्ञान पर) ग्रन्थ की रचना की।
- लक्ष्मणसेन के दरबार में गीतगोविन्द का लेखक **जयदेव**, पवनदूत का लेखक **धोयी** एवं ब्राह्मण सर्वस्व का रचयिता **हलायुद्ध** थे। हलायुद्ध लक्ष्मण सेन का न्यायाधीश एवं मुख्यमन्त्री था।

- लक्ष्मणसेन एक साम्राज्यवादी शासक था, जिसने कन्नौज के गहड़वाल शासक **जयचन्द** को पराजित किया।
- लक्ष्मणसेन को लेखों में **परम भागवत** की उपाधि प्रदान की गई है।
- सेन प्रथम राजवंश था, जिसने सर्वप्रथम **हिन्दी** में अभिलेख उत्कीर्ण करवाया।
- 1202 ई. में **बख्तियार खिलजी** ने लक्ष्मणसेन के शासनकाल में बंगाल पर आक्रमण किया।

उड़ीसा के पूर्वी गंग

- अनन्तवर्मा चोड्गंग (1076–1148 ई.) पूर्वी गंग वंश का सबसे प्रतापी शासक था।
- चोड्गंग ने पुरी के प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर तथा भुवनेश्वर के लिंगराज मंदिर का निर्माण करवाया।
- चोड्गंग संस्कृत तथा तेलुगू साहित्य का महान् संरक्षक था।
- पूर्वी गंग वंश के शासकों ने उड़ीसा व जाजनगर की रक्षा हेतु अथक प्रयास किए।
- उड़ीसा के सूर्यवंशी शासकों ने गजपति की उपाधि धारण की थी।
- 14वीं सदी में उड़ीसा दिल्ली सल्तनत के अधीन आ गया।

हिन्दूशाही वंश

- शाही वंश के राजा लगर्तुमान को (9वीं सदी) अपदस्थ कर मंत्री **कल्लर** ने हिंदूशाही वंश की स्थापना की।
- भीम ने अपनी पुत्री की शादी लोहार वंश (कश्मीर) के राजा सिंहराम से की जिनके यहाँ दिद्दा नाम की पुत्री पैदा हुई।
- इस वंश के पराक्रमी शासक जयपाल ने महमूद गजनवी से हारने के पश्चात् 1001 ई. में अग्नि में कूद कर आत्महत्या कर ली थी।
- जयपाल, आनन्दपाल, त्रिलोचनपाल और भीमपाल ने करीब 50 वर्ष तक गजनवी से संघर्ष किया।

राजपूत वंश

- कल्हण की राजतरंगिणी के अनुसार कुल 36 राजपूत कुल थे। चन्दबरदायी के पृथ्वीराजरासो के अनुसार आबू पर्वत पर वशिष्ठ द्वारा किए गए यज्ञ के अग्निकुण्ड से **प्रतिहार, परमार, चालुक्य** और **चौहान** की उत्पत्ति हुई।

गुर्जर-प्रतिहार

- इस वंश की स्थापना **हरिश्चन्द्र** ने की थी। **नागभट्ट प्रथम** (730–756 ई.) इस वंश का वास्तविक संस्थापक था। यह **मालवा** का शासक था।
- नागभट्ट द्वितीय को राष्ट्रकूट गोविन्द तृतीय ने हराया। **मिहिरभोज प्रथम** इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली और प्रसिद्ध शासक था।
- मिहिरभोज ने **कन्नौज** को राजधानी बनायी। वह विष्णु का भक्त था तथा **आदिवाराह** की उपाधि धारण की।
- महेन्द्रपाल प्रथम के दरबार में कवि **राजशेखर** रहते थे।
- यशपाल (1036 ई.) इस वंश का अंतिम शासक था।

चौहान (दिल्ली-अजमेर)

- तोमर शासक अनंगपाल ने 11वीं सदी में दिल्ली की स्थापना की तथा **अहिक्षत्र** को राजधानी बनाया।
- 7वीं सदी में **वासुदेव** ने सांभर अजमेर के आस-पास शाकंभरी के चौहान राज्य की स्थापना की।
- **अजयराज - II** ने अजमेर नगर की स्थापना कर अनेक महल और मंदिर बनवाए।
- इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक **अर्णोराज** का पुत्र **विग्रहराज चतुर्थ** (वीसलदेव) था (1153 - 63 ई.)। इसने **हरिकेलि** नामक संस्कृत नाटक की रचना की।
- **सोमदेव** विग्रहराज चतुर्थ के दरबारी कवि थे, जिन्होंने **ललित विग्रहराज** की रचना की।
- **पृथ्वीराज तृतीय** इस वंश का अंतिम शक्तिशाली शासक था। चन्दवरदाई इसका राजकवि था। पृथ्वीराज ने रणथम्भौर का जैन मंदिर बनवाया।
- जयानक ने **पृथ्वीराजविजय** तथा जयचन्द्र ने **हम्मीर** महाकाव्य की रचना की।
- अढ़ाई दिन का झोंपड़ा आरंभ में विग्रहराज चतुर्थ द्वारा बनवाया गया एक विद्यालय था।
- 1191 में हुए तराइन के प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज तृतीय की विजय तथा मुहम्मद गोरी की हार हुई, किन्तु तराइन के द्वितीय युद्ध में गोरी ने पृथ्वीराज को पराजित कर दिया।

गढ़वाल वंश

- गहड़वाल वंश का संस्थापक चन्द्रदेव था। इसकी राजधानी **वाराणसी** (काशी) थी।
- इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली राजा गोविन्द्र चन्द्र था।
- गोविन्द चन्द्र का मंत्री **लक्ष्मीधर** शास्त्रों का प्रकाण्ड पंडित था, जिसने **कृत्यकल्पतरु** नामक ग्रंथ लिखा था।
- पृथ्वीराज - III ने स्वंयवर से जयचन्द की पुत्री संयोगिता का अपहरण का लिया था।
- इस वंश का अंतिम शासक जयचन्द था, जिसे गोरी ने 1194 ई. के चन्दावर युद्ध में मार डाला।

सिसौदिया वंश

- इस वंश के शासक मेवाड़ (राजस्थान) पर शासन करते थे। उनकी राजधानी **चित्तौड़** थी। वे स्वयं को 'सूर्यवंशी' कहते थे तथा भगवान राम से अपना संबंध जोड़ते थे।
- **महाराणा प्रताप** इसी वंश के शासक थे।

EBD_7243

- 1518 ई. में राणा सांगा तथा इब्राहिम लोदी के मध्य **घटौली का युद्ध** हुआ। **राणा कुम्भा** ने चित्तौड़ में विजय स्तंभ का निर्माण करवाया।
- 1576 ई. में राणा प्रताप और अकबर के मध्य हल्दीघाटी का युद्ध हुआ।

परमार वंश (मालवा)

- **उपेन्द्रराज** परमार वंश का संस्थापक था। इसकी राजधानी **धारा** (प्राचीन राजधानी उज्जैन) थी।
- मुंज (974-95 ई.) के दरबार में हलायुद्ध, पद्मगुप्त, धनिक, धनंजय आदि विद्वान रहते थे। पद्मगुप्त ने **नवसहसांक चरित,** धनन्जय ने **रूपदशक** तथा धनिक ने **दशरूपलोक** की रचना की।
- **राजा भोज** (1000-1055) इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था। उसने भोपाल के दक्षिण में **भोजसर** नामक झील का निर्माण करवाया।
- भोज ने उज्जैन में एक सरस्वती मंदिर तथा एक संस्कृत विद्यालय का निर्माण करवाया। भोज ने **युक्तिकल्पतरू** की रचना की , जिसमें वास्तुशास्त्र तथा विविध वैज्ञानिक यंत्रों एवं उनके उपयोग का वर्णन है।
- नैषधीय चरित के लेखक हर्ष तथा प्रबंध चिन्तामणि के लेखक **मेरूतुंग** इसी काल के कवि थे।
- राजा भोज ने चिकित्सा, गणित, व्याकरण पर अनेक ग्रंथों की रचना की। उन्होंने चित्तौड़ में **त्रिभुवन नारायण मंदिर** का निर्माण करवाया।
- भोज ने भोजपुर नगर की स्थापना की। उसके शासन-काल में धारा नगरी विद्या एवं विद्वानों का केन्द्र थी।
- आइना -ए-अकबरी के अनुसार भोज के दरबार में लगभग 500 विद्वान रहते थे। **कविराज** भोज की उपाधि थी।
- अलाउद्दीन खिलजी के काल में 1297 में मालवा को सल्तनत (नुसरत खाँ एवं उलूग खाँ द्वारा) में मिला लिया गया।

चंदेल वंश (बुन्देलखण्ड/जेजाकभुक्ति)

- नन्नुक (831 ई.) ने इस वंश की स्थापना की। चंदलों ने **खजुराहो** को राजधानी बनाया। **यशोवर्मन** इस वंश का सबसे शक्तिशाली एवं प्रथम स्वतंत्र शासक था।
- यशोवर्मन ने कलिंजर को जीतकर **महोबा** को राजधानी बनाया। उसने कन्नौज पर आक्रमण कर एक विष्णु प्रतिमा प्राप्त की, जिसे खजुराहो के विष्णु मंदिर में स्थापित किया।
- धंगदेव ने राजधानी को **कालिंजर** से बदलकर **खजुराहो** में स्थानांतरित करवाया। इसने 999 ई. में **कंदरिया महादेव मंदिर** का निर्माण करवाया।
- धंगदेव के उत्तराधिकार गण्डदेव ने महमूद गजनवी के विरुद्ध बने संघ में सहयोग दिया।
- 1022 ई. में गजनवी के दूसरे आक्रमण के समय उससे शांति समझौता किया।
- कीर्ति वर्मा ने महोबा में **कीर्ति सागर** नामक जलाशय कर निर्माण करवाया। इसकी राजसभा में रहने वाले कृष्ण मित्र ने **प्रबोध चन्द्रोदय** की रचना की।
- परमर्दिदेव के दरबार में उसके दो विख्यात सेनानायक **आल्हा** एवं **उदल** रहते थे, जिन्होंने पृथ्वीराज चौहान के साथ वीरतापूर्वक युद्ध करते हुए वीरगाति को प्राप्त हुए।
- परमर्दिदेव ने 1202 ई. में कुतुबद्दीन ऐबक की अधीनता स्वीकार कर ली, जिनके कारण अजयदेव ने परमर्दिदेव की हत्या कर दी।

सोलंकी/चालुक्य वंश (गुजरात)

- मूलराज (942-95 ई.) ने सोलंकी वंश की स्थापना की तथा **अन्हिलवाड़** को राजधानी बनाया। यह शैव धर्म का अनुयायी था।
- भीम प्रथम के समय म. गजनवी ने सोमनाथ के मंदिर पर आक्रमण कर उसे लूटा।
- भीम प्रथम के सामंत **विमल** ने माउण्ट आबू पर **दिलवाड़ा** का जैन मंदिर बनवाया।
- जयसिंह (1094-1153) ने **सिद्धराज** की उपाधि धारण की तथा जैन आचार्य **हेमचन्द्र** को संरक्षण दिया। इसने सिद्धपुर में **रूद्रमहाकाल मंदिर** का निर्माण करवाया।
- अजयपाल के पुत्र मूलराज द्वितीय ने 1178 ई. में आबू पर्वत के नजदीक गोरी को परास्त किया।
- इसी काल में **मोढ़ेरा के सूर्य मंदिर** का निर्माण हुआ।
- भीम द्वितीय इस वंश अंतिम शासक था। इसके एक सामन्त **लवण प्रसाद** ने **बघेल वंश** की स्थापना की थी।
- 1187 में कुतुबद्दीन ऐबक ने भीम द्वितीय को पराजित किया।
- अलाउद्दीन खिलजी के काल में गुजरात में बघेल वंश का कार्य द्वितीय अंतिम हिन्दू शासक था।

कल्चुरी वंश (त्रिपुरी)

- **कोकल्ल I** ने 845 ई. में कलचुरि वंश की स्थापना की।
- गांगेयदेव विक्रमादित्य (1019-1041 ई.) ने लक्ष्मी शैली के सिक्के चलाए। राजपूत राजाओं में सर्वप्रथम उसी ने **स्वर्ण सिक्के** चलाए। वह शैव था।
- लक्ष्मीकर्ण ने **त्रिकालिंगाधिपति** उपाधि धारण की। उसने कर्णमेह नामक शैव मन्दिर बनवाया एवं कर्णावती नगर की स्थापना हुई। प्रसिद्ध कवि **राजशेखर** इसकी राजसभा में थे।
- कल्चुरी शासक युवराज ने **केयूरवर्ष** की उपाधि धारण की। इसी के दरबार में राजशेखर ने **काव्यमीमांसा** एवं **विद्धिसालभंजिका** की रचना की थी।

दक्षिण भारत (800 – 1200 ई.)

पल्लव वंश

- सिंह विष्णु (575-600 ई.) को पल्लव वंश का संस्थापक माना जाता है। इसकी राजधानी **कांची** (कांचीपुरम) थी।
- प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् भारवि सिंहविष्णु के दरबार में रहता था। उसने **किरातार्जुनियम** की रचना की थी।
- महेन्द्रवर्मन I एक सांस्कृतिक शासक था। उसने संस्कृत भाषा में **मत्तविलास प्रहसन** नामक ग्रन्थ की रचना की। उसने चित्रकला को भी प्रोत्साहित किया।
- **मत्तविलास प्रहसन** में महेन्द्रवर्मन प्रथम ने बौद्ध तथा कापालिकों की हँसी उड़ाई है।
- नरसिंहवर्मन प्रथम एक साम्राज्यवादी शासक था। उसने मामल्लपुरम तथा काँची में मन्दिरों का निर्माण करवाया। मामल्लपुरम (महाबलिपुरम) के एकाश्म मंदिर (रथ मंदिर) में **द्रौपदी रथ** सबसे छोटा और अंलकरणहीन है। उसके शासनकाल में ह्वेनसाँग काँची आया था। उसने **वातापीकोण्ड** की उपाधि धारण की।
- नरसिंह वर्मन II ने **काँची में कैलाशनाथ मन्दिर** तथा महाबलीपुरम का शोर मन्दिर बनवाया। उसके दरबार में दण्डि रहता था, जिसने **दशकुमार चरित** नामक काव्य ग्रंथ की रचना की।
- नन्दिवर्मन II ने काँची के बैकुण्ठ पेरूमल मन्दिर का निर्माण कराया।
- पल्लव वंश के प्रमुख शासक थे- महेन्द्रवर्मन प्रथम (600-630), नरसिंहवर्मन प्रथम (630-68), महेन्द्रवर्मन द्वितीय (668-70), परमेश्वर वर्मन प्रथम (670-80), नरसिंह वर्मन द्वितीय (680-720), नंदिवर्मन द्वितीय (731-795)।
- **अपराजित** (879-97) पल्लव वंश का अंतिम शासक था।

राष्टकूट वंश

- राष्टकूट वंश का संस्थापक **दन्तिदुर्ग** (752 ई.) था, जिसने नए शासन की नींव रखी और **मान्यखेत** को अपनी राजधानी बनाया। उसने हिरण्यगर्भ यज्ञ किया।
- **कृष्ण** I प्रसिद्ध राष्ट्रकूट शासक था, जिसने एलोरा में **कैलाशनाथ मन्दिर** का निर्माण करवाया।
- ध्रुव तथा गोविन्द्र III प्रसिद्ध साम्राज्यवादी राष्ट्रकूट शासक थे। ध्रुव को **धरावर्ष** भी कहा जाता है।
- अमोघवर्ष एक जैन अनुयायी था, जिसने जैन विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया। अपभ्रंश के आदि कवि **स्वयंभू** उसके दरबार में रहते थे।
- अमोघवर्ष ने **कविराज मार्ग** की रचना कन्नड़ भाषा में की। उसकी एक अन्य रचना प्रश्नोत्तर मल्लिका है। आदि पूराण के रचनाकार **जिनसेन** अमोघवर्ष के दरबार में रहते थे। इसने तुंगभद्रा नदी में जल समाधि लेकर अपना जीवन समाप्त कर लिया।
- इन्द्र III प्रसिद्ध राष्ट्रकूट शासक था, जिसके शासनकाल में अरबी यात्री **अल मसूदी** भारत आया। उसने इन्द्र III को भारत का सर्वश्रेष्ठ शासक कहा।
- कृष्ण III ने चोल शासक को पराजित कर सुदूर दक्षिण भारत पर नियंत्रण किया। इसके दरबार में कन्नड़ भाषा के कवि **पोन्न** रहते थे, जिन्होंने शांत पुराण की रचना की।
- **एलोरा** एवं **एलिफेंटा** गुहामंदिरों का निर्माण राष्ट्रकूटों के समय में ही हुआ। ऐलोरा में **34** गुफाएं हैं, जिनमें **1-12** बौद्धों, **13-29** हिन्दुओं तथा **30-34** जैनियों की गुफाएं हैं।
- राष्ट्रकूट **शैव, वैष्णव, शाक्त** और **जैन** धर्म के उपासक थे।

चालुक्य वंश (कल्याणी)

- चालुक्यों की तीन शाखाएँ थीं- कल्याणी के चालुक्य, वातापी या बादामी के चालुक्य तथा बेंगी के चालुक्य।
- कल्याणी के चालुक्यों का इतिहास तैलप II से प्रारम्भ होता है। उसने परमार नरेश मुंज तथा राष्ट्रकूट शासक खेटिक के भतीजे कर्क को पराजित किया। उसने चेदि, उड़ीसा, नेपाल और कुन्तल पर विजय प्राप्त की।
- सोमेश्वर I (1043-1068 ई.) ने राजधानी मान्यखेत से **कल्याणी** स्थानान्तरित की।
- सोमेश्वर ने चोलों से निरन्तर पराजय (चोल शासक वीर राजेन्द्र से **कोप्पम** एवं **कुडलसंगम** के युद्ध में) के कारण 1068 ई. में तुंगभ्रदा नदी में डूबकर आत्महत्या कर ली।
- विक्रमादित्य VI (1070-1126 ई.) इस वंश का महान् शासक था। उसने चालुक्य - विक्रम सम्वत् का प्रचलन किया। विक्रमांकदेवचरित का लेखक **विल्हण** एवं याज्ञवल्क्य स्मृति पर (मिताक्षरा) टीका लिखने वाले **विज्ञानेश्वर** उसके दरबार में रहते थे।
- सोमेश्वर III ने **मानसोल्लास** नामक शिल्पशास्त्र की रचना की थी।
- चालुक्य वंश (कल्याणी) के प्रमुख शासक थे - तैलप प्रथम, तैलप द्वितीय, विक्रमादित्य, जयसिंह, सोमेश्वर द्वितीय, विक्रमादित्य-VI, सोमेश्वर - III, तैलप - III।

EBD_7243

चालुक्य वंश (वातापी या बादामी)

- बादामी के चालुक्य वंश की स्थापना पुलकेशिन प्रथम (535-566) था, जिसने **वातापी** को राजधानी बनाया।
- पुल्केशिन द्वितीय इस वंश का महान शासक था। इसने **परमेश्वर, श्रीपृथ्वीवल्लभ** तथा **परम भागवत** जैसी उपाधियाँ धारण कीं। इसने 637-38 ई. में कन्नौज के शासक हर्ष को पराजित किया।
- **रविकीर्ति** के एहोल अभिलेख में पुल्केशिन – II के विजयों का वर्णन है। पुल्केशिन द्वितीय ने हर्ष को पराजित कर **परमेश्वर** और **दक्षिणा पथेश्वर** की उपाधि धारण की। इसे पल्लव शासक नरसिंह वर्मन प्रथम ने पराजित कर **वातापिकोंड** की उपाधि धारण की।
- मालवा को जीतने के बाद विनयादित्य ने **सकलोत्तरपथनाथ** की उपाधि धारण की। विक्रमादित्य प्रथम (655-681 ई.) ने **ईरान, लंका, कामेर** के राजाओं से शुल्क लिए।
- विक्रमादित्य – II के काल में अरबों ने दक्कन पर आक्रमण किया। इसका मुकाबला उसका भतीजा **पुलकेशी** ने किया। इस सफलता पर विक्रमादित्य – II ने पुलकेशी को **अवनिजनाश्रय** की उपाधि प्रदान की।
- विक्रमादित्य – II की पत्नी **लोकमहादेवी** ने पट्टदकल में **विरूपाक्षमहादेव** मंदिर का निर्माण करवाया। उसकी दूसरी पत्नी **त्रैलोक्यदेवी** ने **त्रैलोकेश्वर मंदिर** का निर्माण करवाया।
- कीर्तिवर्मन द्वितीय इस वंश का अंतिम शासक था। इसे दंतिदुर्ग ने परास्त कर राष्ट्रकूट वंश की स्थापना की।
- अजंता की गुफा चित्र में पुलकेशिन द्वितीय को **फारसी दूतमंडल** का स्वागत करते हुए दिखाया गया है।

चालुक्य वंश (वेंगी)

- पुलकेशिन द्वितीय के भाई एवं राज्यपाल विष्णुवर्द्धन ने 615 ई. में आंध्रप्रदेश में वेंगी के (पूर्वी) चालुक्य वंश की स्थापना की। इसकी राजधानी **वेंगी** थी।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक **विजयादित्य तृतीय** था तथा **पंडरंग** उसका सेनापति था।
- इस वंश के प्रमुख शासक थे – जयसिंह प्रथम, इन्द्रवर्धन, विष्णुवर्द्धन द्वितीय, जयसिंह द्वितीय, विष्णुवर्द्धन – III।

चोल वंश

- पोन्नार एवं कावेरी नदियों के पूर्वी तट पर **विजयालय** (850-87) ने चोल वंश की स्थापना की, जिसकी राजधानी **तंजौर** थी। इसने **नरकेसरी** की उपाधि धारण की।
- आदित्य प्रथम (880-907 ई.) ने **कोण्डराम** की उपाधि धारण की। यह **शिव** का उपासक था।
- परान्तक प्रथम (907-55 ई.) ने पाण्ड्य शासक राजसिंह द्वितीय को पराजित कर **मदुरैकोण्ड** की उपाधि धारण की। यह **तक्कोलम** के युद्ध में राष्ट्कूट्र एवं पश्चिम गंग की संयुक्त सेना से पराजित हुआ।
- राजराज प्रथम (985 -1014 ई.) ने भूमि की पैमाइश एवं सर्वेक्षण करवाया तथा दक्षिण भारत में स्वायत्तशासी प्रशासन की स्थापना की।
- **यह शैव धर्म** का अनुयायी था तथा इसने तंजौर में **राजराजेश्वर** मंदिर का निर्माण करवाया।
- राजराज प्रथम ने शैलेन्द्र शासक **श्रीमार विजयोतुंग वर्मन** द्वारा निर्मित **चूड़ामणि बौद्ध विहार** को आर्थिक सहायता दी।
- राजराज प्रथम ने **श्रीलंका** पर आक्रमण किया। वहाँ के राजा महेन्द्र पंचम ने भागकर दक्षिण जिला **रोहण** में शरण ली। राजराज ने **पोलोन्नरूवा** में चोल प्रदेश की राजधानी स्थापित किया उसका नाम **जगन्नाथमंगलम** रखा।
- राजेन्द्र प्रथम (1014-44 ई.) ने बंगाल और कलिंग पर विजय प्राप्त कर **गंगैकोण्ड चोल** की उपाधि धारण की। विजय की स्मृति में कावेरी तट पर **गंगैकोण्ड चोलपुरम्** नामक नयी राजधानी की स्थापना की।
- राजेन्द्र प्रथम ने सिंचाई के लिए **चोलगंगम्** नामक तालाब बनवाया।
- राजेन्द्र ने 1017 में लंका नरेश **महेन्द्र पंचम** को पराजित कर सम्पूर्ण लंका (सिंहल) पर अधिकार कर लिया तथा **अनुराधपुर** को राजधानी बनाया।
- राजेन्द्र प्रथम ने दो बार अपना दूतमंडल **चीन** भेजा। राजेन्द्र को दक्षिण भारत का नेपोलियन कहा जाता है।
- राजेन्द्र द्वितीय ने **प्रकेसरी** तथा वीर राजेन्द्र ने **राजकेसरी** की उपाधि धारण की।
- गोवा के कदम्ब शासक **जयकेस** ने चोलों एवं पश्चिमी चालुक्यों के मध्य शंति स्थापित करवायी।
- **कुलोतुंग प्रथम** (1077-1120 ई.) ने उत्तर भारतीय शासक से मैत्री संबंध स्थापित किया। इसने 1077 में 72 सदस्यों वाले प्रतिनिधिमण्डल को चीन भेजा।
- **कुलोतुंग द्वितीय** ने चिदम्बरम मंदिर में स्थित गोविन्दराज (विष्णु) की मूर्ति को समुद्र में फेंकवा दिया। इसी मूर्ति का पुनरुद्वार वैष्णव आचार्य रामानुज ने किया तथा तिरूपति मंदिर में उसकी स्थापना की।
- चोल काल में उच्च प्रशासनिक अधिकारियों को **पेरून्दरम्** तथा निम्न श्रेणी के पदाधिकारियों को

शेरून्दरम् कहा जाता था। राजा के व्यक्तिगत अंगरक्षकों को **वेडैक्कार** कहा जाता था।

- चोल साम्राज्य 6 प्रशासनिक इकाइयों में विभक्त था। प्रान्त को **मण्डलम्** कहा जाता था। मण्डलम् **कोट्टम** में, कोट्टम **नाडु** में तथा नाडु अनेक **कुर्रमों** में विभक्त थे।
- नाडु की स्थानीय सभा को **नाटूर** एवं नगर की स्थानीय सभा को **नगरतार** कहा जाता था।
- स्थानीय स्वशासन चोल प्रशासन की मुख्य विशेषता थी।
- **उर** सर्वसाधारण लोगों की समिति थी, जिसका कार्य होता था- सार्वजनिक कल्याण के लिए तालाबों और बगीचों के निर्माण हेतु गाँव की भूमि का अधिग्रहण करना।
- **सभा या महासभा** - यह मूलत: अग्रहारों और ब्राह्मण बस्तियों कर सभा थी, जिसके सदस्यों को पेरुमक्कल कहा जाता था। यह सभा वरियम नाम की समितियों के द्वारा अपने कार्य को संचालित करती थी।
- सभा की बैठक गाँव में मंदिर के निकट वृक्ष के नीचे या तालाब के किनारे होती थी।
- व्यापारियों की सभा को **नगरम** कहा जाता था।
- चोल काल में भूमिका उपज कर 1/3 भाग था।
- ब्राह्मणों को दी गई करमुक्त भूमि के **चतुर्वेदिमंगलम्** कहते थे।
- चोल सेना का सबसे संगठित अंग पदाति सेना था।
- चोलकाल में **काशु** सोने के सिक्के थे।
- ब्राह्मणों को दान दी गयी भूमि **ब्रह्मदेय** कहलाती थी।
- चोलकाल में आम वस्तुओं के आदान-प्रदान का आधार धान था।
- चोल काल (10वीं शताब्दी) का सबसे महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह **कोवरीपट्टनम्** था।
- बहुत बड़ा गाँव, जो एक इकाई के रूप में शासित किया जाता था, **तनियर** कहालाता था।
- चोलों की राजधानी कालक्रम के अनुसार इस प्रकार थी - **उरैयूर, तंजौर, गंगैकोंडचोलपुरम्** एवं **काँची**।
- चोल काल में सड़कों की देखभाल बगान समिति करती थी।
- **कंबन, औट्टक्कुट्टन** और **पुगलेंदि** को तमिल साहित्य का त्रिरत्न कहा जाता है।
- **पंप, पोन्न** एवं **रन्न कन्नड़** साहित्य के त्रिरत्न माने जाते हैं।
- पर्सी ब्राऊन ने तंजौर के बृहदेश्वर मंदिर के विमान को भारतीय वास्तुकला का निकष माना है।
- चोलकालीन नटराज प्रतिमा को चोल कला का सांस्कृतिक सार या निचोड़ कहा जाता है।
- गंगैकोण्डचोलपुरम् के **वृहदेश्वर मंदिर** का निर्माण राजेन्द्र प्रथम ने करावाया था।

कदम्ब वंश

- कदम्ब वंश का संस्थापक **मयूरशर्मन** था। मयूरशर्मन को 18 अश्वमेध यज्ञ करने का श्रेय है। इसका क्षेत्र उत्तरी कर्नाटक था।
- पुलकेशिन द्वितीय (चालुक्य) ने कदम्ब वंश को पराजित कर अपने साम्राज्य में मिला लिया। कदम्बों की राजधानी बनवासी (वैजयन्ती) थी।
- कदम्ब वंश की वंशावली तालगुण्ड स्तंभ लेख से प्राप्त होती है।

गंग वंश

- गंग वंश की स्थापना कर्नाटक में हुई थी, इसे पश्चिमी गंग कहा जाता है। गंगों की राजधानी **कोलार** थी।
- इस वंश का शासक दुविर्नीत ने छठी शताब्दी में पल्लवों से अपने राज्य को स्वतंत्र कर लिया।
- दुविर्नीत के उत्तराधिकारी श्रीहर्ष ने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की। चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय ने इस राज्य को अपने अधीन कर लिया।

यादव वंश

- देवगिरि के यादव वंश की स्थापना **भिल्लम पंचम** ने की। इसकी राजधानी **देवगिरि** थी।
- इस वंश का सबसे प्रतापी राजा सिंहण (1210-1246 ई.) था।
- इस वंश का अंतिम स्वतंत्र शासक रामचन्द्र था, जिसने अलाउद्दीन के सेनापति मलिक काफूर के सामने आत्मसमर्पण किया।

होयसल वंश

- इसकी स्थापना **विष्णुवर्द्धन** ने की। इसकी राजधनी **द्वारसमुद्र** (आधुनिक हलेविड) थी।
- विष्णुवर्द्धन ने 1117 ई. में वेल्लूर में **चेन्ना केशव मंदिर** का निर्माण करवाया।
- **वीर वल्लाल तृतीय** इस वंश का अंतिम शासक था, इसे मलिक काफूर ने हराया।

पाण्ड्य वंश

- वरगुण प्रथम (765-815 ई.) पाण्ड्य वंश का सबसे शक्तिशाली शासक था। पाण्ड्यों की राजधानी **मदुरा** थी।
- ह्वेनसांग ने पाण्ड्य राज्य को **मालकुट** कहा है।
- यह राज्य **मोतियों** के व्यापार के लिए प्रसिद्ध था। अंत में यह राज्य होयसलों के अधीन हो गया।

काकतीय वंश

- इस वंश का संस्थापक **बीमा प्रथम** था तथा राजधानी **अमकोण्ड** थी।
- **गणपति** इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक था। इसकी पुत्री **रूद्रमादेवी** ने **रूद्रदेव महाराज** का नाम ग्रहण कर 35 वर्षों तक शासन किया।
- गणपति ने अपनी राजधानी **वारंगल** में स्थानांतरित की।
- प्रतापरूद्र इस वंश का अंतिम शासक था।

मध्यकालीन भारत

भारत पर अरबों का आक्रमण

- अरबों ने सातवीं शताब्दी से ही भारत पर आक्रमण करने प्रारम्भ कर दिए थे। अरबों के भारत आक्रमण की जानकारी 9वीं सदी में **बिलादूरी** द्वारा रचित **फुतुल-अल बलदान** तथा 13वीं सदी में **अबू-बक्र-कुफी** द्वारा रचित **चचनामा** से प्राप्त होती है।
- अरबों ने भारत के प्रथम अभियान के अंतर्गत ठाणे (बम्बई), भड़ौच तथा देवल के बन्दरगाहों पर अधिकार करने का प्रयत्न किया, किन्तु उन्हें विशेष सफलता नहीं मिली। अरबों का यह अभियान 636 ई. में हुआ था।
- 643 ई. में अरबों ने सिन्ध पर अधिकार करने का प्रयत्न किया, किन्तु वे बुरी तरह परास्त हुए।
- अरबों के द्वितीय अभियान के समय सिन्ध का शासक **दाहिर** था। अरब सिन्ध पर अधिकार करने के अवसर की प्रतीक्षा में थे, जो शीघ्र ही लगभग 708 ई. में उन्हें प्राप्त हो गया।
- इराक के शासक हज्जाज ने अपने तृतीय अभियान के तहत् एक विशाल सेना अपने दामाद **मुहम्मद बिन कासिम** के नेतृत्व में 712 ई. में सिन्ध पर आक्रमण हेतु भेजी और मुहम्मद बिन कासिम ने छल-कपट द्वारा सिन्ध पर विजय प्राप्त कर ली।
- अरब आक्रमणकारी सिन्ध के आगे नहीं बढ़ सके क्योंकी कश्मीर के शासक **ललितादित्य** ने उन्हें परास्त कर उनका आगे प्रसार रोक दिया था।

महमूद गजनवी

- 932 ई. में अलप्तगीन ने गजनी में स्वतन्त्र राज्य की स्थापना की थी। अलप्तगीन की मृत्यु के पश्चात् कुछ समय तक गजनी में पिरीतगीन ने शासन किया, इसी के शासनकाल (974-977 ई.) में सर्वप्रथम भारत पर आक्रमण किया गया। प्रथम तुर्क आक्रमण के समय पंजाब में शाही वंश का शासक **जयपाल** शासन कर रहा था।
- सुबुक्तगीन, जो अलप्तगीन का गुलाम तथा दामाद था, 977 ई. में गजनी के सिंहासन पर बैठा।
- सुबुक्तगीन ने 986 ई. में पंजाब के शासक जयपाल के विरुद्ध सेना भेजी, जिसमें जयपाल सन्धि के लिए बाध्य हुआ।
- सुबुक्तगीन की मृत्यु 997 ई. में हुई। सुबुक्तगीन ने अपना उत्तराधिकारी अपने पुत्र इस्माइल को घोषित किया था, किन्तु उसके एक अन्य पुत्र महमूद ने इस्माइल को परास्त कर गजनी के राजसिंहासन पर अधिकार कर लिया।
- महमूद का जन्म 1 नवम्बर, 971 ई. को हुआ था। वह 998 ई. में गजनी के राजसिंहासन पर आसीन हुआ।
- महमूद गजनवी को बगदाद के खलीफा अलकादिर बिल्लाह ने महमूद गजनवी के पद को मान्यता प्रदान कर उसे **'यमीन-उल-दौला'** तथा **'यमीन-उल-मिल्लाह'** की उपाधियों से विभूषित किया तथा उसके वंश को **'यमीनी-वंश'** कहा गया।
- महमूद गजनवी ने 1000 ई. से 1027 ई. के मध्य भारत पर 17 बार आक्रमण किया।
- महमूद के भारत आक्रमण के समय उसके साथ दरबारी विद्वान **अलबरूनी** भी आया था, जिसने अपने ग्रन्थ **'किताब-उल-हिन्द'** में भारत सम्बन्धी विवरण लिपिबद्ध किया।
- महमूद गजनवी का भारत पर सबसे पहला हमला 1000 ई. में हुआ, जिसमें उसने कुछ सीमान्त किलों पर अपना अधिकार कर लिया था।
- गजनवी का सबसे चर्चित आक्रमण 1025 ई. में गुजरात के **सोमनाथ मंदिर** पर हुआ। मंदिर की लूट में उसे लगभग 20 लाख दीनार की संपत्ति हाथ लगी थी।
- 1027 ई. में महमूद गजनवी द्वारा जाटों व खोखरों को पराजित किया गया। यह महमूद का भारत पर अन्तिम आक्रमण था।
- अप्रैल, 1030 ई. में महमूद गजनवी की मृत्यु के उपरान्त उसका बेटा मसूद गजनी की गद्दी पर बैठा, लेकिन इसी समय से गजनी की राजनीतिक स्थिति दुर्बल होने लगी।
- भारत में गजनवी की सेना का सरदार **तिलक** नाम हिन्दू था। गजनवी ने सिक्कों के पृष्ठ भाग पर **कलिमा** का संस्कृत रूपान्तरण **'अव्यमेकं अवतार:'** अंकित करवाया। **अलबरूनी, फिरदौसी, उल्बी** तथा **फारूखी** उसके दरबारी कवि थे।

मुहम्मद गोरी

- मुहम्मद गोरी गोर का रहने वाला था। गोर का पहाड़ी जिला गजनी तथा हेरात के मध्य में स्थित है।
- 1173 ई. में गोर के सुल्तान ग्यासुद्दीन ने अपने अनुज शाहबुद्दीन मुहम्मद गोरी को गजनी का सूबेदार नियुक्त किया। मुहम्मद गोरी का प्रमुख लक्ष्य भरत में साम्राज्य स्थापित करना था।
- 1175 ई. में मुहम्मद गोरी ने सर्वप्रथम मुल्तान के करमार्थियन सम्प्रदाय के शासक को विजित किया।
- 1176 ई. में मुहम्मद गोरी ने कच्छ को विजित किया।
- 1178 ई. में मुहम्मद गोरी ने गुजरात की राजधानी **अन्हिलवाड़** पर आक्रमण किया, किन्तु इस युद्ध में **मूलराज द्वितीय** ने उसे परास्त किया। यह भारत में मुहम्मद गोरी की पहली पराजय थी।
- मुहम्मद गोरी ने 1179 ई. में **पेशावर**, 1185 ई. में **स्यालकोट** और 1186 ई. में **लाहौर** को अपने अधीन किया।
- 1189 ई. में मुहम्मद गोरी ने **सरहिन्द** पर आक्रमण करके, उस पर अधिकार किया।
- 1191 ई. में पृथ्वीराज चौहान व मुहम्मद गोरी के मध्य **'तराइन का प्रथम युद्ध'** हुआ। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद गोरी को परास्त किया।
- 1192 ई. में मुहम्मद गोरी व पृथ्वीराज चौहान के मध्य **'तराइन का द्वितीय युद्ध'** हुआ। इस युद्ध में मुहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज चौहान को परास्त किया।
- 1194 ई. में मुहम्मद गोरी ने कन्नौज के गहड़वाल वंशीय शासक **जयचन्द** को **'चन्दावर के युद्ध'** में पराजित किया।
- मुहम्मद गोरी ने 1195–96 ई. में **बयाना** तथा **ग्वालियर** पर अधिकार किया। 1205 में उसने खोखरों को पराजित किया।
- मुहम्मद गोरी की 1206 ई. में अफरीदी (करमार्थी) कबीलों द्वारा सिंधु नदी के पास **दम्यक** नामक स्थान पर नमाज पढ़ते समय हत्या कर दी गयी। अतः उसके पश्चात् उसके द्वारा विजित भारतीय प्रदेशों का शासक कुतुबुद्दीन ऐबक बना, जो पहले मुहम्मद गोरी का दास था।
- गोरी के सिक्कों पर **शिव का बैल** (नन्दी), **लक्ष्मी** की आक्रति अंकित है।

दिल्ली सल्तनत (1206–1526 ई.)

गुलाम (इल्बरी तुर्क) वंश (1206–1290 ई.)

- गुलाम वंश के सभी सुल्तानों में केवल तीन ही दास थे- **ऐबक, इल्तुतमिश** तथा **बलबन**।
- मुहम्मद गोरी ने ऐबक के गुणों, कर्तव्यनिष्ठा और स्वामिभक्ति से प्रभावित होकर उसे सैनिक टुकड़ी का नायक बनाया तथा **'अमीर-ए-आखूर'** (अस्तबल का अध्यक्ष) पद प्रदान किया।
- तराइन के द्वितीय युद्ध के पश्चात् 1192 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक, मुहम्मद गोरी के भारतीय साम्राज्य का गवर्नर बना।
- 1206 ई. में मुहम्मद गोरी की मृत्यु के पश्चात् कुतुबुद्दीन ऐबक का अनौपचारिक राज्यारोहण लाहौर में किया गया। ऐबक ने भारत के साम्राज्य को गजनी के नियन्त्रण से मुक्ति दिलाकर स्वतन्त्रता कायम की।
- कुतुबुद्दीन ऐबक दिल्ली का प्रथम तुर्क शासक था और उसी को भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक माना जाता है।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने **कुतुबमीनार** का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवाया व उसकी एक मंजिल पूरी करवाई। कुतुबमीनार का शेष भाग इल्तुतमिश ने पूरा कराया।
- कुतुबुद्दीन और इल्तुतमिश ने इसका निर्माण प्रसिद्ध सूफी संत **ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी** की स्मृति में कराया था।
- कुतुबुद्दीन की उदारता के कारण उसे **लाखबख्श** कहा जाता था।
- इसने दो मस्जिदें बनवायीं– 1. कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद (दिल्ली), 2. अढ़ाई दिन का झोपड़ा (अजमेर)।
- 1210 ई. में लाहौर में **चौगान** (पोलो) खेलते हुए घोड़े से गिर कर कुतुबुद्दीन की मृत्यु हुई थी। उसे **लाहौर** में दफनाया गया।
- ऐबक के दरबार में **हसन निजामी** तथा **फख्र-ए-मुदब्बिर** रहते थे।

- कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र आरामशाह को लाहौर में राजसिंहासन पर बैठाया गया।
- 1211 ई. में आरामशाह ने इल्तुतमिश पर आक्रमण किया, किन्तु युद्ध में आरामशाह मारा गया।
- आरामशाह की मृत्यु के पश्चात् **इल्तुतमिश** (1210-36 ई.) दिल्ली सल्तनत का सुल्तान बना।
- इल्तुतमिश कुतुबुद्दीन ऐबक का दामाद व उत्तराधिकारी था।
- उसे निश्चित रूप से तुर्कों द्वारा उत्तर भारत की विजयों का वास्तविक संगठनकर्त्ता माना जाता है।
- उसने अपने नाम के चांदी का **टंका** (175 ग्रेन) तथ तांबे के **जीतल** चलाए तथा दिल्ली को राजधानी बनाया।
- गुलाम वंश का वास्तविक प्रथम सुल्तान इल्तुतमिश था। उसके शासन काल की प्रमुख घटना चंगेजखां का आक्रमण था।
- वह **इक्ता प्रणाली एवं चहलगानी** (40 गुलामों का दल) का संस्थापक था।
- **मिनहाज सिराज** तथा **मलिक ताजुद्दीन** को उसने अपने दरबार में संरक्षण प्रदान किया।
- इल्तुतमिश ने अपनी साम्राज्यवादी नीति के तहत् रणथम्भौर (1226 ई.), मन्दौर (1227 ई.), बयाना, सांभर, नागौड़ (1230 ई.), ग्वालियर (1231 ई.), कालिंजर, नागदा (1231-32 ई.), उज्जैन (1234 ई.) और भिलसा (1235 ई.) को विजित किया।
- 1236 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।
- इल्तुतमिश ने अपने जीवनकाल में ही स्वयं अपना उत्तराधिकारी अपनी पुत्री **रजिया** को चुना, किन्तु अमीरों ने उसकी इच्छा के विरुद्ध उसके बड़े जीवित पुत्र **रुकुनुद्दीन फिरोज** को दिल्ली सल्तनत का सुल्तान बना दिया।
- **रुकुनुद्दीन** की अयोग्यता के कारण दिल्ली सल्तनत में अशान्ति व अराजकता व्याप्त हो गई। परिणामत: रजिया ने उसके विरुद्ध व्याप्त असन्तोष का लाभ उठाते हुए दिल्ली सल्तनत के सिंहासन पर अधिकार कर लिया।
- रजिया मध्यकाल की **प्रथम मुस्लिम शासिका** थी, जिसने इस्लामी परम्पराओं के विरुद्ध शासन संभाला।
- रजिया के सिंहासनारोहण की सबसे प्रमुख विशेषता यह थी कि दिल्ली की जनता ने पहली बार उत्तराधिकार के प्रश्न पर स्वयं निर्णय लिया था।
- सुल्तान के पद प्रतिष्ठा में वृद्धि हेतु रजिया ने कई उपाय किए। उसने पर्दा त्याग दिया और पुरुषों की भांति **'कुबा'** (कोट) व **'कुलाह'** (टोपी) धारण कर दरबार में आना प्रारम्भ किया।
- तुर्की गुलाम सरदारों की शक्ति को सन्तुलित करने के लिए रजिया ने एक गैर-तुर्की प्रतिस्पर्धी दल संगठित किया।
- रजिया दिल्ली सल्तनत की पहली तुर्क सुल्तान थी, जिसने अमीरों व मालिकों को अपनी आज्ञा मानने के लिए बाध्य किया।
- रजिया ने अबीसिनियाई दास **जमालुद्दीन याकूत** को **'अमीर-ए-आखूर'** के पद पर नियुक्त किया, जिससे तुर्की सरदारों में विद्रोह की स्थिति उत्पन्न हो गई।
- कालान्तर में रजिया ने **अल्तूनिया** से विवाह कर दिल्ली पर पुन: कब्जा करने का प्रयत्न किया, जो असफल रहा। अन्तत: 12 अक्टूबर, 1240 ई. को कुछ लुटेरों ने **कैथल** के पास रजिया व अल्तूनिया की हत्या कर दी।
- बहरामशाह (1240-42) इल्तुतमिश का तृतीय पुत्र था। बहरामशाह के अपने शासनकाल में रीजेण्ट (**मलिक नायब** या **नायब-ए-मुमालिकात**) का पद सृजित किया, जो वास्तविक शासक था जबकि सुल्तान नाममात्र का शासक बना रहा। **एतगीन** पहला नायब-ए-मुमलिकात था। एक सुल्तान के रूप में बहरामशाह निहायत अयोग्य व्यक्ति साबित हुआ।
- 1232 ई. में ख्वाजा जमालुद्दीन ने बलबन को दिल्ली में इल्तुतमिश को भेजा। कुरूप होने के कारण इल्तुतमिश ने प्रारम्भ में इसे भिश्ती के काम पर लगाया, किन्तु इसके होनहार लक्षण देखकर इसे **'चालीस' गुलामों के प्रसिद्ध दल** का सदस्य बना दिया।
- 1246 ई. में सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद (1242-46) द्वारा बलबन को **अमीए-ए-हाजिब** नियुक्त किया गया।
- नासिरुद्दीन महमूद द्वारा 1249 ई. में **'नायब-ए-मुमालिकात'** (सुल्तान का प्रतिनिधि) का पद प्रदान किया गया और **'उलूग खाँ'** की उपाधि से विभूषित किया गया। नासिरूद्दीन महमूद टोपी बेचकर जीवन-निर्वाह करता था।
- 1265 ई. में सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद की मृत्यु हो गई। चूंकि सुल्तान के कोई पुत्र नहीं था, अत: बलबन, ग्यासुद्दीन बलबन के नाम से दिल्ली सल्तनत के राजसिंहासन पर बैठा।

- बलबन (1266-87 ई.) ने राजसिंहासन पर बैठने के बाद सर्वप्रथम ताज की प्रतिष्ठा की पुनः स्थापना हेतु राजत्व के दैवीय सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।
- बलबन ने अपने शासन काल में **सिजदा और पाबोस प्रथा** प्रारम्भ की। वह स्वयं को **अफरासियाब** का वंशज कहता था।
- बलबन ने इल्तुतमिश द्वारा स्थापित 'चालीस दल' के सदस्यों का दमन किया।
- विख्यात कवि **अमीर खुसरो**, जिनका उपनाम **तुतिए हिन्द** था, बलबन का समकालीन था।
- मंगोलों का मुकाबला करने के लिए उसने एक सैन्य विभाग **'दीवाने अर्ज'** को पुनर्गठित किया।
- इसने अपने शत्रुओं के प्रति **'लौह और रक्त'** की नीति अपनाई।
- 1286 ई. में बलबन के साम्राज्य पर मंगोलों द्वारा आक्रमण किया गया। इस बार उनके विरुद्ध युद्ध करने में बलबन का बड़ा पुत्र मुहम्मद खां मारा गया, किन्तु साम्राज्य सुरक्षित रहा।
- बलबन को अपने पुत्र मुहम्मद खां, जो कि मंगोलों से लड़ता हुआ मारा गया था, की सूचना पाकर तीव्र आघात पहुंचा और शीघ्र ही 1287 ई. में ही उसकी मृत्यु हो गई।
- बलबन के दरबार में फारसी के प्रसिद्ध कवि **अमीर खुसरो** और **अमीर हसन** रहते थे।
- बलबन ने अपनी मृत्यु से पूर्व दिवंगत शहजादा मुहम्मद के पुत्र **कैखुसराव** को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था, किन्तु बलबन की मृत्यु के पश्चात् उसके अमीरों ने उसकी आज्ञा की अवहेलना कर, बुगरा खां के पुत्र **कैकूबाद** को राज-सिंहासन पर बैठाया, जो भोग विलासी प्रवृत्ति का था।
- कैकूबाद ने जलालुद्दीन खिलजी को **बुलन्दशहर की सुबेदारी** प्रदान की और उसे अपनी सेना का सेनापति भी नियुक्त किया। इस नियुक्ति के कारण दरबारी अमीरों में फूट पड़ गई, क्योंकि तुर्की अमीर खिलजियों को गैर-तुर्क समझते थे।
- गुलाम वंश का अंतिम शासक **शम्शुद्दीन क्यूमर्श** था।

खिलजी वंश (1290-1320)

- खिलजी शासन का संस्थापक जलालुद्दीन फिरोज खिलजी (1290-96 ई.) था। दिल्ली सल्तनत के राजसिंहासन पर आसीन होते समय उसकी आयु 70 वर्ष थी।
- वह दिल्ली सल्तनत का प्रथम शासक था, जिसका यहां की हिन्दू जनता के प्रति उदार दृष्टिकोण था। उसने **किलोखरी** को राजधानी बनाया।
- जलालुद्दीन; **भिलसा, चन्देरी** और **देवगिरि** के सफल अभियानों से अपार धन लेकर लौट रहे अपने भतीजे अलाउद्दीन से मिलने कड़ा (इलाहाबाद) गया, जहां अलाउद्दीन ने धोखे से उसकी हत्या करवा दी। तत्पश्चात् 19 जुलाई, 1296 ई. को अलाउद्दीन ने स्वयं को सुल्तान घोषित कर दिया। उसका राज्याभिषेक दिल्ली में बलबन के **लाल महल** में हुआ।
- जलालुद्दीन फिरोजशाह खिलजी ने अलाउद्दीन खिलजी को **अमीर-ए-तुजुक** पद प्रदान किया था।
- अलाउद्दीन खिलजी का जन्म 1266-67 ई. में हुआ था, उसके पिता का नाम शिहाबुद्दीन खिलजी था, जो कि जलालुद्दीन फिरोज खिलजी का भाई था। उसके बचपन का नाम **अली गुर्शास्प** था।
- उसने अपने सिक्कों पर अपना उल्लेख **सिकन्दर-ए-सानी** (द्वितीय सिकन्दर) के रूप में करवाया।
- दक्षिण भारत को विजित करने वाला वह प्रथम मुस्लिम शासक था।
- अलाउद्दीन का महान सेनापति **मलिक काफूर** गुजरात विजय के दौरान नुसरत खां द्वारा एक हजार दीनार में खरीदा गया, जिससे उसे **'हजारदीनारी'** भी कहा जाता था।
- चित्तौड़ के राणा रतन सिंह की **रानी पद्मिनी** को कहानी को आधार बनाकर 1540 ई. में मलिक मोहम्मद जायसी ने **'पद्मावत'** ग्रन्थ की रचना की।
- अलाउद्दीन के दक्षिण भारतीय अभियान का नेतृत्व सेनापति **मलिक काफूर** ने किया था।
- अलाउद्दीन ने देवगिरि के शासक रामचन्द्र को **राय रयान** की उपाधि प्रदान की। बारंगल विजय (1309-10) के समय प्रताप रूद्रदेव ने मलिक काफूर को कोहिनूर हीरा प्रदान किया।
- अलाउद्दीन के शासन काल की सबसे प्रमुख विशेषता उसकी **बाजार व्यवस्था** थी।
- 1303 ई. में चित्तौड़ विजय के पश्चात् अलाउद्दीन ने एक आदेश जारी कर खाद्य पदार्थ, चीनी और तेल से लेकर सुई तथा आयात किए गए कीमती वस्त्रों से लेकर घोड़ों, पशुओं तथा गुलामों के मूल्य निर्धारित कर दिया। इन्हें **सराय-ए-अदल** में बेचा जाता था।

- अलाउद्दीन ने **राशनिंग की व्यवस्था** भी लागू की थी।
- अलाउद्दीन के राज दरबार में **अमीर खुसरो** तथा **हसन** जैसे विद्वान रहते थे।
- अलाउद्दीन ने राजनीतिक मामलों में इस्लामी धर्म गुरुओं को धर्म से अलग किया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने 1303 में वृत्ताकार **अलाई किला** बनवाया, जिसमें सात द्वार थे, इसे **'कोशके सीरी'** के नाम से भी जाना जाता था।
- अलाउद्दीन खिलजी के पुलिस विभाग का मुख्य अधिकारी **कोतवाल** था।
- **परवाना नवीस** नामक अधिकारी वस्तुओं की परमिट जारी करता था। **मुन्ही** तथा **मुन्हीयान** सूचनादाता थे।
- **दीवान-ए-रियासत** – यह बाजार व्यवस्था पर नियन्त्रण रखता था।
- **शाहना या दण्डाधिकारी** – यह बाजार का दरोगा था।
- **मुहतसिब** – जनसाधारण के आचरण का रक्षक तथा देखभाल करने वाला था।
- **दीवान-ए-मुस्तखराज** – कर व्यवस्था से भ्रष्टाचार को समाप्त करना तथा शेष बचे कर को वसूल करना।
- अलाउद्दीन खिलजी ने 1311 ई. में कुतुबमीनार के निकट उससे दो गुने आकार की एक मीनार बनवाने का कार्य प्रारम्भ किया था, परन्तु वह उसे पूरा नहीं कर सका।
- अलाउद्दीन का शासन काल मंगोलों के भयानक आक्रमणों के लिए भी विख्यात है।
- **खाजाइनुल-फुतूह** अमीर खुसरो की, **रेहला** इब्नबतूता **की, फुतूहस्लातीन** इसामी की तथा तारीखे **फिरोजशाही** बरनी की कृति है।
- 1316 ई. में अलाउद्दीन की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी दिल्ली सल्तनत का सुल्तान बना। उसने **खलीफा** की उपाधि धारण की।
- कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी ने एक निम्न जाति के मुसलमान बने हसन को **'खुसरो खां'** की उपाधि से सम्मानित कर, उसे अपने राज्य का प्रधानमन्त्री बनाया।
- खुसरो खां के एक मित्र ने 1320 ई. में कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी की हत्या कर दी और खुसरो दिल्ली सल्तनत के राजसिंहासन पर **'नासिरुद्दीन खुसरो शाह'** की उपाधि धारण कर बैठ गया।
- नासिरुद्दीन खुसरो शाह 15 अप्रैल और 5 सितम्बर, 1320 ई. तक दिल्ली सल्तनत का सुल्तान रहा। यह दिल्ली सल्तनत के राजसिंहासन पर बैठने वाला वह **प्रथम भारतीय मुसलमान** शासक था।
- दीपालपुर के सूबेदार गाजी मलिक ने 1320 ई. में खुसरो को परास्त कर, उसका कत्ल कर दिया। तत्पश्चात् गाजी मलिक, 'ग्यासुद्दीन तुगलक' की उपाधि धारण कर दिल्ली सल्तनत के राजसिंहासनस पर आसीन हुआ।
- अमीर खुसरो का जन्म उत्तर प्रदेश के **पटियाली** में 1253 में हुआ था। वह **निजामुद्दीन औलिया** का शिष्य था। उसे **सितार** एवं **तबला** के आविष्कार तथा **कव्वाली गायन** आरंभ करने का श्रेय दिया जाता है। खुसरो बलबन से लेकर मुहम्मद तुगलक तक 8 सुल्तानों के दरबार में रहे।

तुगलक वंश (1320-1413 ई.)

- खुसरो की हत्या के पश्चात् ग्यासुद्दीन तुगलक 8 सितम्बर, 1320 ई. को ग्यासुद्दीन तुगलक **शाह गाजी** के नाम से सिंहासन पर बैठा। उसने 29 बार मंगोलों के शासन को विफल किया।
- ग्यासुद्दीन का अन्तिम सैनिक अभियान बंगाल के विद्रोह का दमन करना था। बंगाल के अभियान से वापस आते समय दिल्ली से 5-6 मील दूर स्थित अफगानपुर में पुत्र जौनाखां द्वारा निर्मित काष्ठ महल के गिर जाने से 1325 ई. में सुल्तान की मृत्यु हो गई।
- ग्यासुद्दीन **नहरों का निर्माण** करनेवाला पहला सुल्तान था। उसने दिल्ली के पास **तुगलकाबाद** नामक नगर स्थापित किया। निजामुद्दीन औलिया ने इसके बारे में कहा था– **'दिल्ली अभी दूर है।'** इसका मकबरा पंचभुजीय है जो कृत्रिम झील में अवस्थित है।
- 1325 ई. में ग्यासुद्दीन तुगलक की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र जौनाखां **'मुहम्मद बिन तुगलक'** के नाम से दिल्ली सल्तनत के राजसिंहासन पर बैठा।
- मुहम्मद बिन तुगलक का राजत्वसिद्धान्त, दैवीय सिद्धान्त की भांति था। उसका विचार था कि सुल्तान बनना ईश्वर की इच्छा है।
- मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा निर्मित कृषि विभाग का नाम **दीवान-ए-कोही** रखा गया था।
- मोरक्को निवासी **इब्नबतूता,** मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल में 1333 ई. में दिल्ली आया था।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने गंगा-यतुना दोआब की उर्वर भूमि में कर की दर 50 प्रतिशत कर दी।

दिल्ली सल्तनत की राजधानी को **दौलताबाद** स्थानान्तरण किया।

- सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन असफल सिद्ध हुआ। ये मुद्राएं **पीतल** की (फरिश्ता के अनुसार) तथा **तांबा** की (बरनी के अनुसार) बनी होती थीं, जिनकी कीमत चांदी के रुपए टंका के बराबर होती थी।
- मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में सर्वाधिक विद्रोह हुए।
- मुहम्मद-बिन-तुगलक के काल में दक्षिण भारत में **विजयनगर** एवं **बहमनी** साम्राज्य की स्थापना हुई।
- 20 मार्च, 1351 ई. में थट्टा नामक स्थान पर ज्वर से पीड़ित होने के कारण सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु हुई।
- फिरोज तुगलक ग्यासुद्दीन तुगलक के छोटे भाई रज्जब का पुत्र था।
- 20 मार्च, 1351 ई. मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु के उपरान्त 23 मार्च, 1351 ई. को राज्याभिषेक **थट्टा** में किया गया।
- फिरोजशाह तुगलक ने अशोक के दो स्तम्भों को एक **खिज्राबाद** तथा दूसरा **मेरठ** से **दिल्ली** मंगाया था।
- उसने **हिसार-फिरोजपुर, जौनपुर** एवं **फिरोजाबाद** नगरों की स्थापना की थी।
- फिरोज ने रोजगार दफ्तर स्थापित किया था, जो बेरोजगारों को कार्य दिलाता था। उसने **'दीवाने खैरात'** विभाग स्थापित कर मुस्लिम अनाथ स्त्रियों, विधवाओं को आर्थिक सहायता प्रदान करने की व्यवस्था की थी। उसने **दीवान-ए-बंदगान** (दास विभाग) की स्थापना की। उसके काल में दासों की संख्या 1 लाख 80 हजार थी।
- दिल्ली के सुल्तानों में वह प्रथम सुल्तान था, जिसने इस्लाम के कानूनों और उलेमा वर्ग को राज्य के शासन में प्रधानता दी थी।
- उसने सरकारी पदों एवं सैनिकों के पदों को वंशानुगत बना दिया। उसके प्रशासन की सबसे बड़ी उपलब्धि थी- **हांसी** तथा **सिरसा** के क्षेत्रों में पानी की कमी को दूर करने के लिए नहरों की खुदाई।
- फिरोज तुगलक की मृत्यु 1388 ई. में हो गयी और उसकी मृत्यु के साथ दिल्ली सल्तनत का विघटन एवं उत्तराधिकार का युद्ध प्रारम्भ हो गया था।
- फिरोज ने 1200 बाग लगवाए तथा 300 नगर बसाए। उसने तांबे के **अद्धा** तथा चांदी के **बिख** नामक सिक्के जारी किए।
- फिरोज ने 24 कष्टदायक करों को समाप्त कर केवल चार कर- **खराज, खुम्स, जजिया** व **जकात** ही लिए।
- फिरोज ने आत्मकथा **फतूहात-ए-फिरोजशाही** की रचना की। **जियाउद्दीन बरनी** तथा **शक्स-ए-सिराज अफीफ** को उसने संरक्षण प्रदान किया।
- सितम्बर 1388 ई. में फिरोज तुगलक की मृत्यु के उपरान्त उसके पोते फतेह खां का पुत्र तुगलक शाह, "ग्यासुद्दीन तुगलक द्वितीय" के नाम से सिंहासन पर बैठा।
- 1390 ई. में शहजादा मुहम्मद ने दिल्ली सल्तनत के राजसिंहासन पर अपना अधिकार जमाया, किन्तु मुहम्मद भी अधिक समय तक शासन नहीं कर सका। विलासिता तथा मद्यपान के कारण जनवरी 1394 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।
- मुहम्मद का उत्तराधिकारी हुमायूँ हुआ, जिसकी 8 मार्च, 1395 ई. को मृत्यु हो गई।
- हुमायूँ के पश्चात् मुहम्मद का सबसे छोटा पुत्र नासिरुद्दीन महमूद (1395 ई.-1414 ई.) दिल्ली सल्तनत के राजसिंहासन पर बैठा।
- नासिरुद्दीन महमूद के शासनकाल में ही 1398 ई. में **तैमूर** ने भारत पर आक्रमण किया।
- नासिरुद्दीन महमूद 1413 ई. तक शासन करता रहा, उसकी मृत्यु के उपरांत दिल्ली के सरदारों ने **दौलतखां लोदी** को दिल्ली का सुल्तान चुना।

सैय्यद वंश (1414-1451 ई.)

- सैय्यद वंश के संस्थापक **खिज्र खां** (1414-21 ई.) ने मंगोल आक्रमणकारी तैमूर की सहायता की थी, अत: तैमूर ने उसे **लाहौर एवं दिपालपुर का सूबेदार** नियुक्त कर दिया था। तैमूर के भारत से वापस जाने के उपरान्त खिज्र खां ने अपने को तैमूर का प्रतिनिधि घोषित करते हुए **पश्चिमोत्तर भारत** में शासन संचालित करना प्रारम्भ किया था।
- **खिज्र खां** ने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की, उसने **'रैयत-ए-आला'** की उपाधि धारण की थी। अपने सिक्कों पर तुगलक सुल्तानों का नाम उत्कीर्ण कराया था; उसने अपने शासनकाल (1414-1421 ई.) में तैमूर के पुत्र एवं उत्तराधिकारी **शाहरुख** के प्रतिनिधि के रूप में शासन करने का दिखावा करता रहा था।
- 1414 ई. में खिज्र खां ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। उसने दिल्ली पर 7 वर्ष तक शासन किया।

- **मुबारकशाह** (1421 ई.-1434 ई.) ने **शाह** की उपाधि धारण की थी, अपने नाम का **खुतबा** पढ़वाया और अपने नाम के **सिक्के** प्रचलित किए थे। सैय्यद शासकों में वह सबसे महान था। मुबारकशाह ने प्रसिद्ध इतिहासकार **यहया बिन सरहिन्दी** को संरक्षण दिया था, जिसने अपनी कृति **'तारीख-ए-मुबारकशाही'** सुल्तान को समर्पित की थी।
- इसका उत्तराधिकारी **मुहम्मदशाह** (1434 ई. -1445 ई.) था। **अलाउद्दीन आलमशाह** (1445 ई.-1451 ई.) अन्तिम सैय्यद शासक था। बहलोल लोदी ने इसे अपदस्थ कर लोदी वंश को प्रतिष्ठापित किया।

लोदी वंश (1451-1526 ई.)

- बहलोल लोदी (1451-89 ई.) लोदी वंश का संस्थापक था एवं प्रथम अफगान शासक था। उसका सम्बन्ध अफगानों की एक महत्त्वपूर्ण शाखा **'शाहूरबेल'** से था। 1451 ई. में बहलोल शाह गाजी के नाम से दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। उसने **प्रथम अफगान साम्राज्य** की स्थापना की थी।
- **सिकन्दर लोदी** (1489 ई.-1517 ई.) लोदी वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक था। 1504 ई. में उसने राजस्थान के शासकों पर नियन्त्रण रखने तथा व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा हेतु **'आगरा'** नगर की स्थापना की थी। यहां पर उसने एक किले का निर्माण कराया था जो **'बादलगढ़ का किला'** के नाम से चर्चित था।
- 1506 ई. में **आगरा** को सिकन्दर लोदी ने राजधानी बनाया। सिकन्दर लोदी ने पैमाइश हेतु **'गजे सिकन्दरी'** माप की इकाई प्रारम्भ की थी। सिकन्दर लोदी **'गुलरुखी'** के उपनाम से फारसी में कविताएं लिखता था। उसने ताजिया निकालना बंद करवा दिया।
- सिकंदर लोदी के आदेश पर संस्कृत के आयुर्वेद ग्रंथ का फारसी में अनुवाद **'फहरंगे सिकंदरी'** के नाम से हुआ। उसके काल में गायन विद्या का ग्रंथ **लज्जत-ए-सिकंदरशाही** फारसी में लिखा गया।
- **इब्राहीम लोदी** (1517 ई.-1526 ई.) ने लोहानी, फारमूली, लोदी जाति के शक्तिशाली सरदारों के दमन की नीति अपनायी। फलस्वरूप लोदी साम्राज्य के पतन का पथ-प्रशस्त हो गया। इब्राहीम लोदी का **राणा सांगा** (मेवाड़ के शासक) के साथ **घटोली का युद्ध** (1517 ई.) हुआ, जिसमें इब्राहीम लोदी की पराजय हुई।
- अप्रैल 1526 ई. में **पानीपत के प्रथम युद्ध** में बाबर के हाथों इब्राहीम लोदी की पराजय हुई। **इब्राहीम लोदी वीरगति** को प्राप्त हुआ, **लोदी वंश का अन्त** हो गया। **लोदियों के पतन के साथ ही दिल्ली सल्तनत का भी अन्त** हो गया।

प्रशासन, अर्थव्यवस्था एवं कला-संस्कृति

- महमूद गजनवी पहला शासक था, जिसने **सुल्तान** की उपाधि धारण की। **खिज्र खां** को छोड़कर दिल्ली सल्तनत के सभी शासकों ने 'सुल्तान' की उपाधि धारण की।
- मंत्रिपरिषद् को **मजलिस-ए-खलवत** कहा जाता था। **वजीर** सुल्तान का प्रधानमंत्री तथा राजस्व विभाग का प्रमुख होता था।
- **बलबन** एवं **अलाउद्दीन खिलजी** के काल में 'अमीर' का पद प्रभावहीन था।
- सल्तनत को अनेक प्रान्तों में बाँटा गया था, जिसे **इक्ता** कहा जाता था। इक्ता का शासन **वली** या **नायब** या **मुक्ति** द्वारा चलाया जाता था। **शिक** का प्रमुख शिकदार होता था।
- **आमिल** परगना का प्रमुख होता था। दोआब क्षेत्र में कुल **55 परगने** थे। 100 गांवों के शासन की देख-रेख **अमीर-ए-सदा** करता था। **ग्राम** प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी।
- स्थायी सेना के गठन का श्रेय अलाउद्दीन खिलजी को जाता है। उसने सेना में सीधी भर्ती तथा **नकद वेतन** की प्रथा चलायी।
- अलाउद्दीन ने **घोड़े को दागने** की प्रथा (सेना में) शुरू की। सुल्तान की स्थायी सेना को **खासखेल** कहा जाता था।
- सुल्तान **बार-ए-आजम** में राजकीय कार्यों को पूरा करता था।

इल्तुतमिश काल की सेनाएँ
हश्म-ए-कल्ब – केन्द्रीय सेना
सवार-ए-कल्ब – शाही घुड़सवार
शम्सी घुड़सवार – सुल्तान की व्यक्तिगत सेना
हश्म-ए-अतरफ – प्रांतीय सेना

- सल्तनत काल में प्रशासन से संबंधित प्रमुख विभाग निम्न थे–
  वजीर – प्रधानमंत्री व राजस्व विभाग का प्रमुख।

आरिज-ए-मुमलिक – सैन्य विभाग का प्रमुख अधिकारी। इसके विभाग को **दीवान-ए-अर्ज** कहा जाता था।
मुशरिफ-ए-मुमलिक – प्रान्तों एवं अन्य विभागों से प्राप्त आय एवं व्यय का लेखा-जोखा (महालेखाकार)।
मुस्तौफी-ए-मुमलिक – महालेखा परीक्षक।
मजमुआदार – उधार दिए गए धन का हिसाब-किताब रखना।
सद्र-उस-सुदूर – धर्म एवं दान विभाग का प्रमुख।
काजी-उल्-कजात – सुल्तान के बाद नयाय का सर्वोच्च अधिकारी (कानून- **शरीयत, कुरान** और **हदीस** पर आधारित)।
खजीन – कोषाध्यक्ष।
दीवान-ए-इस्तिआक – पेंशन विभाग।
दीवान-ए-बंदगान – दास विभाग।
दीवान-ए-खैरात – दान विभाग।
दीवान-ए-वक्फ – व्यय की कागजात की देखभाल।
दीवान-ए-रसालत – विदेशी संबंध की देख-रेख।
दीवान-ए-इंशा – राजकीय पत्र व्यवहार।

सेना संगठन
1 सर-ए-खेल – 10 अश्वरोही
1 सिपहसलार – 10 सर-ए-खेल
1 अमीर – 10 सिपहसलार
1 मलिक – 10 अमीर
1 खान – 10 मलिक

- सल्तनत काल में लगान निर्धारित करने की मिश्रित प्रणाली को **मुक्ताई** कहा जाता था। **बँटाई** के तीन प्रकार थे–

(i) खेत बँटाई – फसल बोने के तुरंत बाद या खड़ी फसल के समय कर निर्धारण।
(ii) लंक बँटाई – कटी हुई फसल का बँटवारा (भूसे से अनाज अलग किए बिना)।
(iii) रास बँटाई – खलिहान में अनाज से भूसा अलग करने के बाद बँटवारा।

- भूमि की नाप-जोख करने के बाद क्षेत्रफल के आधार पर लगान का निर्धारण **मसाहत** कहलाता था। इसकी शुरुआत अलाउद्दीन खिलजी ने की थी।
- अलाउद्दीन खिलजी ने इक्ता प्रथा को समाप्त किया था, किन्तु फिरोजशाह तुगलक ने इसे दुबारा शुरू किया।
- पूर्ण रूप से केन्द्र के नियंत्रण में रहने वाली भूमि **खालसा** कहलाती थी। इस भूमि से कर **अनाज** के रूप में लिया जाता था।
- **देवल** को अंतर्राष्ट्रीय बंदरगाह के रूप में मान्यता प्राप्त थी।
- बलबन द्वारा इक्ता को उत्तराधिकारियों के हस्तांतरण पर प्रतिबंध लगा दिया गया था।
- मुहम्मद तुगलक द्वारा कृषकों को तकाबी (ऋण) प्रदान किया गया।
- भारत में पहली तुर्क मस्जिद **कुव्वत-उल-इस्लाम** थी। मकबरा निर्माण शैली का जन्मदाता **इल्तुतमिश** था।
- सल्तनतकालीन प्रथम अष्टभुजाकार मकबरा फिरोज तुगलक द्वारा निर्मित **तेलंगानी का मकबरा** है।
- लोदी काल को **मकबरों का काल** कहा जाता है। सिकंदर लोदी के समय **द्विगुम्बदीय शैली** की शुरुआत हुई।
- अलाउद्दीन खिलजी द्वारा स्थापित राजकीय पुस्तकालय का अध्यक्ष अमीर खुसरो था।

अमीर खुसरो की रचनाएँ
लैला मजनू, देवलरानी व खिज्रखाँ, हस्त-बहिश्त, शीरी फरहाद, तारीखे दिल्ली, उल फरायद

- मुहम्मद तुगलक संगीत प्रेमी था। फिरोज तुगलक के शासनकाल में **रागदर्पण** का फारसी में अनुवाद किया गया।
- माण्डू की पाण्डुलिपि **नियामतनामा** पाकशास्त्र पर एक ग्रंथ है।
- सल्तनतकालीन चित्रकला का आरंभिक उल्लेख **बैहाकी** द्वारा लिखित गजनवियों के इतिहास में मिलता है।
- **तारीखे अलाई** में अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल के प्रारंभिक 15 वर्षों की घटनाओं का उल्लेख है।

सल्तनतकालीन सिक्के

शासक	सिक्के
गोरी	हेहलीवाल (सोना, चांदी, मिश्रित धातु)
इल्तुतमिश	टंका (चांदी), अद्ल (तांबा + चांदी)
बलबन	माशा (चांदी)
मुबारक शाह खिलजी	टंका-ए-अलाई (सोना)
मु. बिन तुगलक	ससगनी (चांदी), अदली (कांसा)
फिरोजशाह तुगलक	अद्धा (तांबा), बिख (चांदी)

विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य

- **हरिहर एवं बुक्का** ने विद्यारण्य सन्त से आशीर्वाद प्राप्त कर 1336 ई. में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की। ये दोनों भाई बारंगल में काकतीयों (प्रताप रूद्रदेव) के सामन्त थे। मुहम्मद तुगलक के समय इन्होंने तुंगभद्रा के दक्षिणी तट पर स्थित अनेगोण्डी के सामने विजयनगर **(विद्यानगर)** की स्थापना की थी।
- 1336 ई. में स्थापित इस साम्राज्य के प्रथम वंश का नाम पिता के नाम पर 'संगम वंश' रखा। इस साम्राज्य के चार राजवंशों ने लगभग तीन सौ वर्षों तक शासन किया था।

संगम वंश (1336–1485 ई.)

- **हरिहर प्रथम** (1336–1356 ई.) विजयनगर साम्राज्य का संस्थापक था। **हम्पी** विजयनगर की राजधानी थी।
- हरिहर प्रथम का उत्तराधिकारी उसका भाई **बुक्का प्रथम** था जो विजयनगर साम्राज्य की स्थापना के साथ ही उसका अनन्य सहयोगी रहा था। उसके काल (1356–1377 ई.) में विजयनगर साम्राज्य की अभूतपूर्व प्रगति हुई थी। उसने **वेदमार्ग प्रतिष्ठापक** की उपाधि धारण की।
- **हरिहर द्वितीय** (1377–1404 ई.) शिव के विरुपाक्ष का उपासक था, उसने बहमनी राज्य से बेलगांव और गोवा अधिकृत कर लिए थे तथा श्रीलंका के राजा से राजस्व प्राप्त किया था। इसने **महाराजाधिराज** की उपाधि धारण की।
- **देवराय प्रथम** (1404–1422 ई.) के गद्दी पर बैठते ही फिरोजशाह वहमनी ने आक्रमण कर दिया; इस आक्रमण में देवराय प्रथम की पराजय हो गई। 1410 ई. में उसने तुंगभद्रा पर बांध निर्मित कराकर विजयनगर तक नहरों का निर्माण कराया था।
- देवराय प्रथम ने पहली बार मुसलमानों को सेना में भर्ती किया।
- इसके दरबार में **हरविलास** के रचनाकार तेलुगू कवि **श्रीनाथ** रहते थे।
- **देवराय द्वितीय** (1422–1446 ई.) संगम वंश का महानतम् शासक था। उसकी प्रजा उसे **'इम्माडि देवराय'** (महान् देवराय) कहती थी। उसके काल में **ईरानी राजदूत अब्दुर्रज्जाक** ने विजयनगर की यात्रा की थी, उसने विजयनगर को विश्व का सबसे गौरवपूर्ण नगर लिखा है।
- देवराय–II की उपाधि **गजबेटकर** थी। इसने **तुर्की धनुर्धरों** को सेना में भर्ती किया।
- **मल्लिकार्जुन** को **प्रौढ़ देवराय** कहा जाता है।
- **विरुपाक्ष द्वितीय** (1465–1485 ई.) संगम वंश का अन्तिम शासक था।

सालुव वंश (1485–1505 ई.)

- विरुपाक्ष द्वितीय के कार्यकाल में व्याप्त अराजकता के दौर में उसके एक शक्तिशाली सामन्त **नरसिंह सालुव** ने 1485 ई. में राजसिंहासन पर अधिकार कर विजयनगर साम्राज्य में सालुव वंश की स्थापना की।
- 1505 ई. में वीर नरसिंह नामक महत्त्वाकांक्षी ने सालुव नरेश इम्माडि नरसिंह की हत्या करके स्वयं सिंहासन पर अधिकार कर लिया तथा विजयनगर साम्राज्य में तृतीय राजवंश (तुलुव वंश) की स्थापना की।

तुलुव वंश (1505–1570 ई.)

- वीर नरसिंह तुलुव वंश का संस्थापक था। उसने 1505 ई. से 1509 ई. तक विजयनगर साम्राज्य पर सफलतापूर्वक शासन किया। वीर नरसिंह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र **कृष्णदेव राय** सिंहासन पर बैठा।
- **कृष्णदेव राय** विजयनगर साम्राज्य का महानतम् शासक था। उसने बीदर और गुलबर्गा पर आक्रमण करके बहमनी सुल्तान महमूदशाह को बन्दीगृह से मुक्त करके बीदर की गद्दी पर बिठाया।
- **कृष्णदेवराय** के दरबार को तेलुगू के आठ महान विद्वान कवि (अष्टदिग्गज) सुशोभित करते थे। उसे **आन्ध्र भोज** (आंध्र पितामह, अभिनव भोज) भी कहा जाता है। सालुव तिम्मा उसका योग्य मंत्री एवं सेनापति था।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा **बाबरनामा** में कृष्णदेव राय को भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक बताया है।
- कृष्णदेवराय ने तेलुगू में **आमुक्तमाल्यद्,** संस्कृत में **जाम्बवती कल्याणम्** एवं **उषा परिणय** की रचना की।

➢ कृष्णदेव राय के अष्टदिग्गज कवियों में **अल्लसीन पेड्डना** महत्त्वपूर्ण कवि थे, जिन्हें **तेलुगू कविता का पितामह** कहा गया है।

➢ कृष्णदेव राय के अष्टदिग्गज कवि थे– (i) तेनाली रामकृष्ण (पाण्डुरंगमहात्म्य), (ii) धूर्जटि (कलहस्तिमहात्म्य), (iii) भट्टमूर्ति (नरसभूयालियम), (iv) नंदी तिम्मन (परिजात हरण) (v) अल्लासीन पेड्डना (स्वारोचितसंभव या मतुचरित, हरिकथा सरनसमू) (vi) भादय्यगीर मल्लन (राजशेखर चरित) (vii) पिंगली सूरन्न (राघव पाण्डवीय) (viii) अच्युलराजु रामचन्द्र (सकल कथा सार संगह)।

➢ **कृष्णदेवराय** ने हजारा मन्दिर तथा बिट्ठलस्वामी मन्दिर का निर्माण कराया था। उसके उत्तराधिकारी अच्युत देवराय (1529–1542 ई.) के शासनकाल में पुर्तगाली यात्री नूनिज ने विजयनगर की यात्रा की थी।

➢ सदाशिव (1542–1570 ई.) इस वंश (तुलुव वंश) का अन्तिम शाासक था। इसी के शासनकाल में 23 जनवरी, 1565 ई. को तालीकोटा (**रक्षसी-तंगड़ी**) का युद्ध हुआ था; इस युद्ध में विजयनगर साम्राज्य के विरुद्ध महासंघ (अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा, बीदर) विजयी हुआ; विजयनगर को निर्ममता के साथ लूट कर विध्वंस कर दिया गया था।

➢ कृष्णदेव राय ने तालाबों एवं नहरों का निर्माण करवाकर सिंचाई सुविधाओं का विस्तार किया एवं जंगली जमीन व बंजर भूमि को कृषि योग्य बनाने का प्रयास किया।

➢ **तालीकोटा (बन्नीहटी)** का युद्ध विजयनगर साम्राज्य के गौरवपूर्ण युग की समाप्ति का साक्षी बना। इस युद्ध का प्रत्यक्षदर्शी **सेवेल** था।

विजयनगर में विदेशी यात्री	
शासक	**विदेशी यात्री**
देवराय प्रथम	इतालवी यात्री निकोलोकोण्टी
देवराय द्वितीय	फारसी राजदूत अब्दुर्रज्जाक
मल्लिकार्जुन	चीनी यात्री माहुआन
कृष्णदेवराय	फादर लुई, डोमिंगो पायस, बारबोसा (पुर्तगाली)
अच्युत देवराय	नूनिज (पुर्तगाली)

आरवीडु वंश (1570–1650 ई.)

➢ तालीकोटा युद्ध के बाद (1570 ई. में) तिरुमल्ल ने तुलुव वंश के अन्तिम शासक सदाशिव को अपदस्थ करके आरवीडु वंश की स्थापना की तथा विजयनगर के स्थान पर वेनुगोण्डा (**पेणुगोण्डा**) को राजधानी बनाया था।

➢ 1586 ई. में वेंकट द्वितीय गद्दी पर बैठा; उसने **चन्द्रगिरि** को अपनी राजधानी बनाया। वह विजयनगर साम्राज्य का अन्तिम महान शासक था।

प्रशासन, अर्थव्यवस्था एवं समाज

➢ विजयनगर साम्राज्य की प्रशासनिक इकाई का क्रम था– प्रांत (मंडल) → कोट्टम या वलनाडु (जिला) → नाडू-मेलाग्राम (50 ग्राम का समूह) → ऊर (ग्राम)।

➢ विवाह-कर वर एवं वधू दोनों से लिया जाता था। विधवा से विवाह करने वाले इस कर से मुक्त थे।

➢ राजा और युवराज के बाद केन्द्र का मुख्य अधिकारी **प्रधानी** होता था जो मराठाकालीन पेशवा के समरूप था।

प्रचलित कर	
कुडिमै/कदम्माप	कृषि कर
तद्वलि	चारागाह कर
केडाक्कासु	पशु कर
दायम	चुंगी कर
कढ़ाईवरि	व्यवसाय कर

➢ शासक, अंगरक्षक के रूप में **स्त्रियों** को नियुक्त करते थे।

➢ **आयगर व्यवस्था :** यह ग्रामीण प्रशासन से जुड़ी व्यवस्था थी। इसमें स्थानीय स्वायत्त व्यवस्था की वास्तविक शक्ति **12 ग्रामीण अधिकारियों** के हाथों में थी। अधिकारियों का पद **वंशानुगत** था।

➢ **कर्णिक** नामक आयंगर के पास जमीन के क्रय-विक्रय से संबंधित समस्त दस्तावेज होते थे।

➢ **नायंकर व्यवस्था :** विजयनगर प्रशासन की सबसे महत्त्वपूर्ण व्यवस्था थी।

➢ विजयनगरकालीन **नायक** वस्तुतः भूसामंत थे, जिन्हें राजा वेतन के बदले अथवा उनकी अधीनस्थ सेना के रख-रखाव के लिए विशेष भूखंड दे देता था जो **अमरम्** कहलाता था।

विजयनगरकालीन भूमि व्यवस्था	
भूमि के प्रकार	**विवरण**
कुट्टगि भूमि	ब्राह्मणों, मंदिरों एवं भूस्वामियों द्वारा किसान को पट्टे पर दी गई भूमि।
मठापुर भूमि	धार्मिक सेवा के रूप में ब्राह्मणों, मंदिरों एवं मठों को दान स्वरूप दी गई भूमि।
उंबलि भूमि	गाँव को दी गई लगान मुक्त भूमि।
रत्तकोडगे भूमि	युद्ध में वीरता का प्रदर्शन करने वाले को
भण्डारवाद भूमि	यह राजकीय भूमि होती थी।

- राज्यपालों को प्रायः **दण्डनायक** कहा जाता था।
- विजयनगर साम्राज्य में **बाल विवाह, बहुविवाह, सती प्रथा, दहेज प्रथा, दास प्रथा** आदि प्रचलित थे।
- विजयनगर साम्राज्य में खरीदे गए दासों को **'बेसवग'** कहा जाता था।
- कानूनी स्रोत के रूप में **याज्ञवल्क्य स्मृति** तथा **पराशर स्मृति** पर **माधव की टीका** का उपयोग होता था।
- विजयनगर साम्राज्य की आय का सबसे बड़ा स्रोत **लगान** था। भूराजस्व की दर उपज का 1/6वाँ भाग था।
- वे कृषक मजदूर जो भूमि के क्रय-विक्रय के साथ ही हस्तांतरित हो जाते थे, **कूदि** कहलाते थे।
- चेट्टियों की तरह व्यापार में निपुण दस्तकार वर्ग के लोगों को **वीर पंजाल** कहा जाता था।
- उत्तर भारत से दक्षिण भारत में आकर बसे लोगों को **बड़वा** कहा जाता था।
- मंदिरों में रहने वाली स्त्रियों को **देवदासी** कहा जाता था। इनको आजीविका के लिए भूमि या नियमित वेतन दिया जाता था।

विजयनगरकालीन मुद्रा	
सिक्का	**भार**
वराह	60 ग्रेन (स्वर्ण सिक्का)
प्रताप तथा फणम्	5.5 ग्रेन (स्वर्ण सिक्का)
प्रताप या चौथाई वराह	26 ग्रेन (स्वर्ण सिक्का)
तार	चाँदी का सिक्का (फणम का 1/6)

- विजयनगर काल में टकसाल विभाग को **पैगोड़ा** कहा जाता था।
- विजयनगर की मुद्रा **पराडो** थी।
- विजयनगर का सर्वाधिक प्रसिद्ध सिक्का स्वर्ण का **'वराह'** था।

बहमनी सल्तनत

- मुहम्मद बिन तुगलक के समय में 1347 ई. में बहमनी सल्तनत की स्थापना हुई थी। बहमनी सल्तनत का संस्थापक **अलाउद्दीन हसन बहमनशाह** (1347-1358 ई.) था। उसने **गुलबर्गा** को बहमनी सल्तनत की राजधानी बनाया तथा उसका नाम **अहसानाबाद** रखा।
- **मुहम्मदशाह प्रथम** को बहमनी सल्तनत के उल्लेखनीय शासकों में स्वीकार किया जाता है, उसके समय में **बारूद का प्रयोग** (बुक्का प्रथम के विरुद्ध) पहली बार हुआ जो रक्षा-संगठन में एक नवीन क्रान्ति थी।
- **ताजुद्दीन फिरोजशाह** (1397-1422 ई.) बहमनी वंश का सर्वाधिक विद्वान सुल्तान था। उसने एशियाई विदेशियों (अफाकियों) को बहमनी सल्तनत में स्थायी रूप से बसने के लिए प्रोत्साहित किया। उसने देवराय प्रथम के साथ **सोनार की बेटी के युद्ध** में विजय प्राप्त की।
- **शिहाबुद्दीन अहमद प्रथम** (1422-1446 ई.) ने गुलबर्गा के स्थान पर **बीदर** को राजधानी बनाया। इसका नाम **मुहम्मदाबाद** रखा गया।
- **हुमायूं** बहमनी सल्तनत का क्रूर-निष्ठुर शासक था उसे 'जालिम' की उपाधि प्राप्त थी, इसे **'दक्कन का नीरो'** कहा जाता है।
- बहमनी सल्तनत के शासक **मुहम्मद तृतीय** (1463-1482 ई.) के काल में रूसी यात्री **निकितिन** ने बहमनी राज्य की यात्रा की थी, उसने उस राज्य के महत्वपूर्ण विवरण लिखे हैं।
- **शिहाबुद्दीन महमूद शाह** (1482-1518 ई.) के काल में बहमनी सल्तनत विघटित हो गई। बहमनी वंश का अन्तिम **सुल्तान कलीमुल्लाशाह** था।
- 1527 ई. में उसकी मृत्यु के बाद बहमनी सल्तनत का अन्त हो गया। उसके स्थान पर पांच नवीन राजवंशों का उदय हुआ।

बहमनी साम्राज्य का विभाजन				
राज्य	राजधानी	स्थापना वर्ष	संस्थापक	राजवंश
बरार	एलिचपुर/गाविलगढ़	1484 ई.	फतेहउल्ला इमादशाह	इमादशाही
बीजापुर	नौरसपुर	1489 ई.	यूसुफ आदिलशाह	आदिलशाही
अहमदनगर	जुन्नार/खिरकी/अहमदनगर	1490 ई.	मलिक अहमद	निजामशाही
गोलकुंडा	गोलकुंडा	1512 ई.	कुली कुतुबशाह	कुतुबशाही
बीदर	बीदर	1526 ई.	अमीर अली बरीद	बरीदशाही

केन्द्रीय प्रशासन के प्रमुख अधिकारी	
अधिकारी	कार्य
वकील-ए-सल्तनत	दिल्ली सल्तनत के नायब सुल्तान के समान था।
वजीर-ए-कुल	सभी मंत्रियों के कार्यों का निरीक्षण करने वाला।
वजीर-ए-अशरफ	विदेशी मामलों तथा दरबार संबंधी कार्यों का अधिकारी।
नाजिर	वित्त विभाग के अध्यक्ष का सहायक अधिकारी।
पेशवा	वकील का सहयोगी अधिकारी।
सदर-ए-जहाँ	न्याय, धर्म तथा दान विभाग का अध्यक्ष
कोतवाल	पुलिस विभाग का अध्यक्ष
अमीर-ए-जुमला	विभाग का अध्यक्ष

स्वतंत्र प्रान्तीय राजवंश

खानदेश

- सन् 1388 ई. में **मलिक अहमद राजा फारूकी** ने नर्मदा एवं ताप्ती नदियों के मध्य भाग में खानदेश की स्थापना की। इस राज्य की राजधानी **बुरहानपुर** एवं सैनिक मुख्यालय **असीरगढ़** था। इसके प्रमुख शासक निम्न थे: (i) नासिर खान फारूकी (1399-1438 ई.) (ii) मीरान् आदिल खान फारूकी (1438-1441 ई.) (iii) मीरान मुबारक खान फारूकी (1441-51 ई.) (iv) राजा अली खान (1576-97 ई.) (v) बहादुर खान (1597-1600 ई.)
- सन् 1601 ई. में सम्राट अकबर ने खानदेश के शासक बहादुर खान को परास्त कर अपने राज्य में इसे मिला लिया।

बंगाल

- बल्बन के पुत्र बुगरा खां ने बंगाल में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।
- बंगाल के सेन वंश को हराने वाला पहला मुस्लिम आक्रमणकारी **इख्तियारुद्दीन** मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी था। गयासुद्दीन तुगलक ने बंगाल को उत्तरी बंगाल (लखनौती) पूर्वी बंगाल (सोनार गाँव) तथा दक्षिणी बंगाल (सतगाँव) में विभाजित किया।
- सन् 1337 ई. शम्सुद्दीन के देहावासन के उपरांत सिकंदरशाह शासक बना तथा पांडुआ में **अदीना मस्जिद** का निर्माण करवाया।
- गयासुद्दीन आजमशाह (1389 ई.) अपनी न्यायप्रियता के लिए विख्यात हुआ। फारसी कवि **शिराजी** इसका दरबारी कवि था।
- सन् 1415 ई. में गणेश नामक एक ब्राह्मण जमींदार ने बंगाल की सत्ता पर अधिकार प्राप्त कर लिया। 1418 में गणेश की मृत्यु के बाद उसका पुत्र जद्सेन ने **जलाल-उद-दीन** (धर्म परिवर्तित) के नाम से 1431 ई. तक शासन किया।
- 1493 ई. में अलाउद्दीन हुसैन शाह को बंगाल का शासक बंगाल के अमीरों द्वारा बनाया गया। यह एक योग्य शासक साबित हुआ। यह हिन्दू-मूस्लिम एकता का पक्षधर था तथा दोनों को समान अवसर प्रदान किया।

- **अलाउद्दीन हुसैन शाह** को कृष्ण का अवतार माना जाता था। चैतन्य महाप्रभु इसी के शासनकाल में हुए थे।
- **मालधर** ने 'श्रीकृष्ण विजय' नामक पुस्तक की रचना इसी के काल में की।
- अलाउद्दीन का पुत्र नुसरत शाह (1519–32) कुशलतापूर्वक राज्य का संचालन किया। बंगाल में पुर्तगालियों का आगमन इसी के शासन काल में हुआ।
- नुसरत शाह का पुत्र महमद शाह सन् 1538 में शेरशाह द्वारा पराजित हुआ तथा अपनी सत्ता से हाथ धो बैठा।

उड़ीसा

- उड़ीसा को एक शक्तिशाली राज्य बनाने का श्रेय अनंत वर्मन चोड़ गंग (1076–1148 ई.) को जाता है। इसका विस्तार बंगाल के गंगा के दक्षिणी भाग से लेकर दक्षिण में गोदावरी तक था।
- उसने भुवनेश्वर में **लिंगराज मंदिर** तथा पूरी में **जगन्नाथ मंदिर** का निर्माण करवाया।
- कोणार्क के सूर्य मंदिर का निर्माण **नरसिंह प्रथम** ने करवाया था।
- उड़ीसा के सूर्यवंशी शासकों ने **गजपति** की उपाधि धारण की।

जौनपुर

- इस शहर की स्थापना चौदहवीं सदी में फिरोज तुगलक ने जौना खाँ (सुल्तान मुहम्मद) की याद में की थी। जौना खाँ के नाम के कारण इसा नाम जौनपुर पड़ा।
- सुल्तान महमद ने (1394) ने वजीर ख्वाजा जहाँ को **मलिक-उस-शर्क** (पूर्व का स्वामी) की उपाधि प्रदान की।
- **मलिक सरबर** ने तैमूर आक्रमण के कारण राजनीतिक अस्थिरता का लाभ उठाकर स्वतंत्र **शर्की वंश** की स्थापना की।
- यहाँ के शासक कला प्रेमी थे, उन्होंने मकबरों, मस्जिदों और मदरसों का निर्माण करवाया।
- यह नगर मुस्लिम संस्कृति और शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था।
- इब्राहिम शाह शर्की ने 1408 में **अटालादेवी मस्जिद** का निर्माण करवाया। इसने संझरी मस्जिद का भी निर्माण करवाया।
- इब्राहिम शाह की मृत्यु के बाद (1440 ई.), उसका पुत्र महमूद शाह सत्तासीन हुआ इसने लाल दरवाजा मस्जिद का निर्माण करवाया।
- सिकंदर लोदी ने पूर्णरूप से जौनपुर को दिल्ली सल्तनत के अधीन कर लिया।

कश्मीर

- सिम्हादेव ने सन् 1286 ई. में कश्मीर में अपनी सत्ता स्थापित की। मंगोलों के आक्रमण के भय से सिम्हादेव का पुत्र सुहदेव राजधानी **इन्द्रकोट** को छोड़ दिया इस स्थिति का लाभ उठाकर **रिंचन** नामक एक प्रभावशाली व्यक्ति ने सिंहासन पर अधिकार कर लिया।
- 1332 ई. में उदयन देव ने रिंचन को पराजित कर 1339 ई. तक कश्मीर पर शासन किया। शहमीर नामक व्यक्ति ने उदयन की विधवा रानी को कैदकर सत्ता को हथिया लिया।
- शाहमीर शम्सुद्दीन के नाम से सिंहासनारुढ़ हुआ।
- सिकंदर (1389–1413 ई.) को **कश्मीर का औरंगजेब** कहा जाता है। उसने हिंदुओं पर **जजिया कर** लगाया, मंदिरों व मूर्तियों को तोड़ा। इसने धार्मिक कट्टरता को बढ़ावा दिश। मूतिर्यों को तोड़ने के कारण इसे **बुतशिकन** कहा गया है।
- जैनुलआबदीन (1420–70) को **कश्मीर का अकबर** कहा जाता है। उसे बुदशाह या महान सुल्तान भी कहा जाता है। यह कुतुब नाम से कविताएं लिखता था, इसने **शिकायनामा** ग्रंथ की रचना की। जैनुलआबदीन ने टूटे हुए मंदिरों का पुनः निर्माण करवाया, गौ-वध को प्रतिबंधित किया, सती प्रथा पर लगे प्रतिबंध को हटा दिया, जाजिया कर को हटाया। उसने नहर खुदवाया, पुलों का निर्माण करवाया, कश्मीर से पलायित हिन्दुओं को पुनः बसाया।

मेवाड़

इसकी स्थापना **चुंद** नामक राठौड़ शासक ने की थी। इसकी राजधानी **नागदा** थी। जैतसिंह नामक एक गहलोत शासक के शासन के दौरान (1213–61) दिल्ली के शासक इल्तुतमिश ने आक्रमण करके नागदा को ध्वस्त कर दिया, परंतु सफल नहीं हो पाया। इसके बाद **चितौड़** को राजधानी बनाया गया।

अलाउद्दीन खिलजी ने रत्नसिंह को सन् 1303 ई. में पराजित करके चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया।

- राणा हमीर (1314–78) ने चित्तौड़ को पुनः अधिकार कर लिया।
- सन् 1431 में राणा कुंभा चित्तौड़ की गद्दी पर बैठा। इसने अपने एक प्रबल विरोधी मालवा के शासक को 1448 ई. में पराजित करके चित्तौड़ में एक **कीर्ति स्तंभ** की स्थापना की।

- राणा कुंभा एक सफल योद्धा के साथ-साथ कला तथा साहित्य का प्रेमी था। उसे वेद, उपनिषद्, स्मृति, मीमांसा, व्याकरण तथा राजनीति शास्त्र का अच्छा ज्ञान था।
- उसने चित्तौड़ की सुरक्षा के लिए 32 किलों का निर्माण करवाया। राणा कुंभा की हत्या 1473 ई. में उसके पुत्र ने कर दी।
- राणा संग्राम सिंह (1509-28 ई.) मेवाड़ की गद्दी पर बैठा, परंतु खानवा के युद्ध (1527 ई.) बाबर से हार गया।

मारवाड़

- यहाँ सबसे प्रभावशाली शासक मालदेव (1532-62) हुआ। इसके शासनकाल में राठौड़ शक्ति अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गई थी।

आम्बेर

- इसका नाम बाद में परिवर्तित होकर जयपुर हो गया। यहाँ कछवाहा राजवंश का शासन रहा है। इसकी स्थापना **दुलह राय** ने 10वीं सदी के उत्तरार्द्ध में की थी। इस वंश के शासक भारमल ने अकबर की सत्ता स्वीकार कर ली तथा अपने पुत्र भगवान दास व पौत्र मानसिंह को उसकी सेवा में समर्पित कर दिया।

गुजरात

- सन् 1297 में गुजरात का शासक राजा रायकर्ण अलाउद्दीन खिलजी से पराजित हो गया।
- मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा नियुक्त सूबेदार जफर खाँ ने 1401 ई. में तुगलक वंश की निर्बलता को देखते हुए स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर लिया। उसने 1407 में **सुल्तान मुजफ्फरशाह** की उपाधि धारण कर स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।
- मालवा के शासक हुशंगशाह को पराजित करके धार पर अधिकार जमा लिया।
- सन् 1411 ई. में तातार खां का पुत्र अहमशाह गद्दी प्राप्त करके मालवा, असरीगढ़ तथा राजपूताना का शासक बन गया। उसने **अहमदनगर** नामक नगर की स्थापना की।
- गुजरात का सबसे प्रभावशाली शासक महमूद शाह (1458-1511) हुआ जिसने गिरनार, जूनागढ़ तथ चम्पानेर के किलों को अपने अधीन कर लिया। उसने **बेगड़ा** की उपाधि धारण की। संस्कृत विद्वान **उदयराज** उसका दरबारी कवि था।
- गुजरात में पुर्तगालियों के प्रभाव को कम करने के लिए उनसे संघर्ष किया। महमूद शाह की मृत्यु के उपरांत उसका पुत्र खलील खां (मुजफ्फरशाह II) सिंहासन पर आसीन हुआ।
- बहादुर शाह (1526-37) सन् 1531 में मालवा को जीतकर गुजरात में मिला लिया। सन् 1535 में हुमायूँ ने बहादुरशाह को पराजित करके गुजरात से बाहर कर दिया।
- अकबर ने 1572-73 में गुजरात को अपने राज्य में मिला लिया।

मालवा

- दिलावर खां ने 1401 ई. में मालवा को स्वतंत्र घोषित किया। इसका पुत्र अलप खां, **हुसंगशाह** की उपाधि धारण कर 1405 में मालवा की शासक बना। इसने राजधानी को **धारा** से **माण्डू** स्थानातरित किया।
- मालवा में खिलजी वंश की स्थापना महमूदशाह ने की।
- हुसंगशाह ने **मांडू के किले** का निर्माण करवाया, जिसका महत्त्वपूर्ण भाग **दिल्ली-दरवाजा** है।
- सुल्तान नासिरूद्दीन शाह द्वारा **बाजबहादुर** एवं **रूपमती का महल** का निर्माण करवाया गया।
- **हिंडोला महल** (दरबार हौल) का निर्माण हुसंग शाह तथा **जहाज महल** का निर्माण मांडू में गयासुद्दीन खिलजी ने करवाया।

सूफी एवं भक्ति आन्दोलन

सूफी आंदोलन

- मुस्लिम रहस्यवादी आन्दोलन को सूफीवाद या सूफी मत के नाम से जाना जाता है। सूफी मत की उत्पत्ति **'वहदत-उल-वजूद'** से हुई, जिसका अर्थ है- 'ईश्वर एक है।'
- सूफी मत के आध्यात्मिक प्रवर्तक को **पीर** तथा शिष्य को **मुरीद** कहते हैं। प्रत्येक 'पीर' अपना एक अनुचर नामांकित करता था, जिसे **वली** कहा जाता था। सूफियों के आश्रम **खानकाह** कहलाते थे।
- सूफी मत के 12 सिलसिले में प्रमुख सिलसिले जो भारत में विद्यमान थे, वे हैं- **चिश्ती, नक्शबन्दी, सुहरावर्दी, फिरदौसी, कादिरी** इत्यादि।

चिश्ती सम्प्रदाय

- 1192 ई. में मुहम्मद गोरी के साथ **ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती** भारत आए। इन्होंने यहाँ चिश्ती परंपरा की शुरूआत की। चिश्ती परंपरा का मुख्य केन्द्र **अजमेर** था। मुईनुद्दीन चिश्ती के शिष्य ख्वाजा **कुतुबुद्दीन बख्तियार** काकी तथा उनके शिष्य **बाबा फरीद** थे।

- बाबा फरीद की रचनाएं गुरु ग्रन्थ साहिब संकलित हैं।

सुहरावर्दी सम्प्रदाय

- इसके संस्थापक शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी तथा हमीदुद्दीन नागौरी (सुल्तान-ए-तरिकीन) थे।
- यह सम्प्रदाय **सिन्ध, पंजाब** तथा **मुल्तान** तक सिमित था। बहाउद्दीन सुहरावदी का मुख्यालय **मुल्तान** था।
- भारत में इस सिलसिले के संस्थापक बहाउद्दीन जकारिया थे। सुहरावर्दी सम्प्रदाय के सन्तों ने राजकीय संरक्षण को स्वीकार किया।

नक्शबन्दी सम्प्रदाय

- इसकी स्थापना **ख्वाजा अब्दुल्ला** ने की। भारत में इसकी स्थापना ख्वाजा **बाकीबिल्लाह** द्वारा की गई।
- **शेख अहमद सरहिन्दी** इस सम्प्रदाय के प्रमुख सन्त थे, जिन्हें जहाँगीर ने कैद किया था।

अन्य सम्प्रदाय

- शेख अब्दुल्ला सत्तारी ने **सत्तारी सिलसिले** की स्थापना की। सत्तारी सिलसिले का मुख्य केन्द्र **बिहार** था।
- **कादिरी सम्प्रदाय** का संस्थापक अब्दुल कादिर गिलानी था। भारत में इस सम्प्रदाय की स्थापना का श्रेय **मुहम्मद गौस** को है। गौस तानसेन से अत्यधिक प्रभावित थे।
- शाहजहाँ का पुत्र **दारा शिकोह** कादिरी सम्प्रदाय के **मुल्ला शाह** का शिष्य था।
- **फिरदौसी सम्प्रदाय** का कार्यक्षेत्र बिहार था। इसे **शरीफुद्दीन याह्या** ने लोकप्रिय बनाया।

सूफी मत एवं उनके प्रवर्तक

सूफी मत	प्रवर्तक
चिश्ती	मुईनुद्दीन चिश्ती
सुहरावर्दी	शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी
नक्शबन्दी	ख्वाजा अब्दुल्ल/ख्वाजा बाकी बिल्लाह
कादिरी	अब्दुल कादिर गिलानी
सत्तारी	शेख अब्दुल्ला सत्तारी
फिरदौसी	बदरूद्दीन
ऋषि	शेख नूरुद्दीन
कलंदरी	नजीमूद्दीन कलंदर

सूफी सन्त एवं उनकी उपाधियाँ

सूफी सन्त	उपाधि
शेख निजामुद्दीन औलिया	महबूब ए-इलाही
सैय्यद मुहम्मद गेसूदराज	बन्दा नवाज
शेख अहमद सरहिन्दी	मुजाहिद
शेख नासिरुद्दीन महमूद	चिराग-ए-दिल्ली

भक्ति आन्दोलन

- भक्ति आन्दोलन की दो धाराएं थीं- **सगुण धारा** एवं **निगुर्ण धारा**। सगुण धारा के संत मूर्ति पूजा में तथा निर्गुण धारा के संत निराकार ईश्वर में विश्वास रखते थे।
- भक्ति आन्दोलन का आरम्भ दक्षिण भारत से हुआ। शंकराचार्य के अद्वैतवाद की प्रतिक्रिया में भक्ति सन्तों ने दार्शनिक विचारों का प्रतिपादन किया।
- भक्ति आन्दोलन के प्रसार का श्रेय 12 अलवार तथा 63 नयनार सन्तों को है। अलवार वैष्णव तथा नयनार शैव सन्त थे।
- दक्षिण भारत मे भक्ति आन्दोलन को उत्तर भारत लाने का श्रेय **रामानन्द** को 12वीं सदी में है।

रामानुजाचार्य (1060-1118 ई.)

- रामानुजाचार्य का जन्म 1017 ई. में पेरम्बुर में हुआ। इनका सम्प्रदाय **श्री सम्प्रदाय** कहलाता है।
- उन्होंने विशिष्टाद्वैत का दर्शन दिया। प्रसिद्ध वैष्णव सन्त **रामानन्द** उनके शिष्य थे।

रामानन्द (1360-1470ई.)

- रामानन्द का जन्म 1299 ई. में प्रयाग में हुआ वे राघवनन्द के शिष्य थे।
- उन्होंने भक्ति साधना को मोक्ष का मार्ग बताया।
- उनके शिष्यों में- धन्ना (जाट), सेना (नाई), कबीर (जुलाहा), रैदास (चर्मकार), पीपा (राजपूत) आदि प्रमुख थे।

वल्लभचार्य (1479-1531 ई.)

- वल्लभाचार्य का जन्म 1479 ई. में **वाराणसी** (उत्तर प्रदेश) में हुआ था।
- इन्होंने कृष्णदेव राय के समय में विजयनगर में वैष्णव सम्प्रदाय की स्थापना की एवं कृष्ण भक्ति पर बल दिया।
- इनके भक्तिमार्ग को **पुष्टिमार्ग** कहते हैं। इनके अनुयायी **अष्टछाप** नाम से विख्यात हुए।

तुलसीदास (1532-1623 ई.)

- तुलसीदास का जन्म **राजापुर** (बाँद्रा, उ. प्र.) में 1554 ई. में हुआ। वे अकबर के समकालीन थे।
- तुलसीदास ने अवधी में **रामचरितमानस** की रचना की तथा रामभक्ति को प्रसिद्धि प्रदान की।
- गीतावली, कवितावली, विनयपत्रिका इनकी प्रसिद्ध रचनाएं हैं।

कबीर (1440-1510 ई.)

- उनका जन्म 1440 ई. के लगभग वाराणसी के निकट **लहरतारा** के पास हुआ था।
- ये सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। उन्होंने जातिवाद, कर्मकाण्ड, मूर्तिपूजा इत्यादि का विरोध किया।
- कबीरदास ने निर्गुण भक्ति का प्रसार किया। उनके अनुयायी कबीरपन्थी कहलाए। उनकी वाणी **बीजक** नमाक ग्रन्थ में संकलित है।

गुरुनानक (1469-1538/39 ई.)

- गुरुनानक का जन्म पंजाब के **तलवण्डी** नामक स्थान पर 1469 ई. में हुआ था। इनका शिष्य **मरदाना** था, जो रबाब बजाता था।
- नानक ने सिख धर्म की स्थापना की। वे सूफी सन्त बाबा फरीद से प्रभावित थे। नानक की वाणी 'गुरु ग्रन्थ साहब' में संकलित है।

चैतन्य

- चैतन्य का जन्म 1486 ई. में बंगाल के **नदिया** जिले में हुआ था। इनके बचपन का नाम **निमाई पण्डित** था।
- उन्होंने **गोसाई संघ** की स्थापना की तथा **संकीर्तन प्रथा** का प्रचलन किया एवं कृष्ण भक्ति पर जोर दिया।
- चैतन्य ने **अचिंत्य भेदाभेदवाद** दर्शन का प्रतिपादन किया।

रैदास

- रैदास **रामानन्द** के शिष्य थे। उन्होंने रैदासी सम्प्रदाय की स्थापना की।
- **मीराबाई** ने रैदास को अपना गरु बनाया था।

दादू दयाल (1554-1606 ई.)

- दादू दयाल का जन्म 1554 ई. में अहमदाबाद के निकट हुआ था। ये धुनिया जाति के थे।
- उन्होंने **निपख सम्प्रदाय** की नीवं रखीं। अकबर ने धार्मिक चर्चा के लिए दादू दयाल को **फतेहपुर सीकरी** आमन्त्रित किया था।

शंकराचार्य द्वारा स्थापित मठ

पीठ	स्थान
ज्योतिष पीठ	बद्रीनाथ (उत्तराखण्ड)
गोवर्धन पीठ	पुरी (ओडिशा)
शारदा पीठ	द्वारिका (गुजरात)
शृंगेरी पीठ	मैसूर (कर्नाटक)

महाराष्ट्र के प्रमुख सन्त

- **ज्ञानदेव या ज्ञानेश्वर** महाराष्ट्र में भक्ति आन्दोलन के जनक, मराठी भाषा और साहित्य के संस्थापक थे। भगवत्गीता पर **भावार्थ-दीपिका** नामक बहुत टीका लिखी, जिसे सामान्य रूप से ज्ञानेश्वरी के नाम से जाना जाता है।
- **नामदेव** के आराध्य देव पांढरपुर के **बिठोबा** या विट्ठल (विष्णु के रूप) थे। बिठोबा या विट्ठल की उपासना को **वरकरी सम्प्रदाय** के नाम से जाना जाता है, जिसकी स्थापना नामदेव ने की थी।
- **एकनाथ** ने रामायण पर भावार्थ, रामायण नामक टीका लिखी।
- **तुकाराम (1598-1650ई.)** भक्तिपरक कविताएं लिखीं, जिन्हें **अभंग** कहा जाता है। ये अभंग भक्तिपरक काव्य के ज्योतिपुंज हैं।
- **रामदास (1608-1681 ई.)** रामदास महाराष्ट्र के महान संत कवि थे। **दासबोध** उनकी रचनाओं और उपदेशों का संकलन है। रामदास **शिवाजी** के आध्यात्मिक गुरु थे।

प्रमुख मत एवं उनके प्रवर्तक			
मत	**प्रवर्तक**	**मत**	**प्रवर्तक**
अद्वैतवाद	शंकराचार्य	भेदाभेदवाद	भास्कराचार्य
विशिष्टाद्वैतवाद	रामानुजाचार्य	शैव विशिष्टाद्वैत	श्रीकंठ
द्वैताद्वैतवाद	निम्बार्काचार्य	अचिन्त्य भेदाभेदवाद	चैतन्य महाप्रभु
शुद्धद्वैतवाद	वल्लभाचार्य	वीर शैव विशिष्टाद्वैत	श्रीपति
द्वैतवाद	मध्वाचार्य	अविभागाद्वैत	विमान भिक्षु

मुगल साम्राज्य

- पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने इब्राहिम लोदी को परास्त कर भारत में मुगल वंश की स्थापना की। वह पितृवंश की ओर से **तैमूरलंग** का पंचम वंशज तथा मातृवंश की ओर से **चंगेज खाँ** का 14वाँ वंशज था।
- मुगल वंश की स्थापना के साथ ही बाबर ने **पादशाही** पद की स्थापना की जिसके तहत् शासकों को बादशाह कहा जाता था।

बाबर (1526–1530 ई.)

- जहीरूद्दीन बाबर का जन्म 24 फरवरी, 1483 ई. को फरगना में हुआ था। उसके पिता **उमरशेख मिर्जा** फरगना के शासक थे। बाबर की माता **कुतलुगनिगार** थीं।
- बाबर 8 जून, 1494 को फरगना की गद्दी पर बैठा। 1507 में उसने **बादशाह** की उपाधि धारण की।
- बाबर के चार पुत्र थे– **हुमायूँ, कामरान, अस्करी** तथा **हिंदाल**। बाबर ने भारत पर पांच बार आक्रमण किया। पहला आक्रमण 1519 में युसूफजाइयों के विरूद्ध किया।
- युसूफजाइयों पर किए गए आक्रमण में बाबर ने **बाजौर** और **भेरा** पर अधिकार कर लिया। इसी दौरान उसने पहली बार तोप एवं बन्दूक का प्रयोग किया।
- बाबर को भारत पर आक्रमण करने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार **दौलतखां लोदी**, मेवाड़ के शासक **राणा सांगा** तथा **आलम खां** ने दिया था।

बाबर द्वारा लड़े गए (भारत में) युद्ध

युद्ध	वर्ष	पक्ष	परिणाम
पानीपत का प्रथम युद्ध	21 अप्रैल, 1526	बाबर एवं इब्राहिम लोदी	बाबर की जीत
खानवा का युद्ध	17 मार्च, 1527	बाबर एवं राणा सांगा	बाबर की जीत
चन्देरी का युद्ध	29 जनवरी, 1528	बाबर एवं मेदिनी राय	बाबर की जीत
घाघरा का युद्ध	6 मई, 1529	बाबर एवं अफगान	बाबर की जीत

- पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार **तुलुगमा युद्ध पद्धति** अपनायी। **उस्ताद अली** एवं **मुस्तफ** बाबर के प्रसिद्ध निशानेबाज (तोपची) थे।
- खानवा युद्ध में विजय के बाद बाबर ने **गाजी** की उपाधि धारण की। इस युद्ध को उसने **जेहाद** घोषित किया था।
- पानीपत युद्ध की विजय के बाद बाबर ने **काबुल** के प्रत्येक निवासी को चांदी का एक-एक सिक्का दिया। इस उदारता के लिए उसे **कलन्दर** की उपाधि दी गयी।
- बाबर ने **तुर्की** भाषा में अपनी आत्मकथा **तुजुके बाबरी** (बाबरनामा) की रचना की, जिसका फारसी अनुवाद **अब्दुल रहीम खानखाना** ने किया।
- बाबर को **मुबईयान** पद्य शैली का जन्मदाता माना जाता है। वह नक्शबंदी सूफी संत **ख्वाजा उबैदुल्ला अहरार** का अनुयायी था।
- लगभग 48 वर्ष की आयु में 27 दिसम्बर, 1530 को बाबर की मृत्यु हो गयी। उसे **आगरा के आरामबाग** में दफनाया गया तथा बाद में उसकी पूर्व इच्छानुसार **काबुल** में दफनाया गया।
- सड़कों को मापने के लिए बाबर ने **गज-ए-बाबरी** का प्रयोग प्रारंभ किया।

हुमायूँ (1530–1556 ई.)

- नसीरूद्दीन हुमायूँ 29 दिसम्बर, 1530 को 23 वर्ष की अवस्था में आगरा में सिंहासन पर बैठा। इससे पूर्व वह **बदख्शां** का सूबेदार था।
- अपने पिता की आज्ञानुसार हूमायूँ ने अपने भाई कामरान को **काबुल** तथा **कंधार**, अस्करी को **संभल** तथा हिन्दाल को **अलवर** और **मेवाड़** की जागीरें दीं। अपने चचेरे भाई सुलेमान को **बदख्शां** प्रदेश दिया।
- हुमायूँ ने 1533 ई. में **दीनपनाह** नामक नगर की स्थापना की।
- बक्सर के निकट **चौसा का युद्ध** 25 जून, 1539 को हुमायूँ और शेरखां के बीच हुआ, जिसमें शेरखां विजयी रहा। इस युद्ध के बाद शेरखां ने **शेरशाह** उपाधि धारण की।
- 17 मई, 1540 को हुमायूँ और शेरशाह के मध्य **कन्नौज** (बिलग्राम) का युद्ध हुआ, जिसमें हुमायूँ पराजित हुआ तथा शेरशाह ने **दिल्ली** और **आगरा** पर अधिकार कर लिया।

- बिलग्राम युद्ध के बाद हुमायूँ ने 15 वर्षों तक निर्वासित जीवन व्यतीत किया। निर्वासन के दौरान उसने अमरकोट के राजा **राणा वीरसाल** के यहाँ तथा इसके बाद ईरान के शाह के यहाँ शरण ली।
- निर्वासन के दौरान हिन्दाल के आध्यात्मिक गुरु **मीर अली अकबर जामी** की पुत्री **हमीदा बानू बेगम** से 29 अगस्त, 1541 को हुमायूँ ने निकाह कर लिया, जिससे अकबर का जन्म हुआ।
- 1555 में ईरान के **शाह** और **बैरम खां** की मदद से हुमायूँ ने पंजाब के शूरी शासक सिकन्दर को पराजित कर पुन: दिल्ली पर अधिकार कर लिया।
- हुमायूँ ज्योतिष में विश्वास करता था, इसलिए वह सप्ताह के सभी दिन अलग-अलग रंग के कपड़े पहनता था।
- 1 जनवरी, 1556 करे दीनपनाह भवन के पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरकर हुमायूँ की मृत्यु हो गयी।
- **हाजी बेगम** ने दिल्ली के हुमायूँ का मकबरा बनवाया। हुमायूँ की सौतेली बहन **गुलबदन बेगम** ने **हुमायूँनामा** की रचना की।

मुगल-अफगान युद्ध			
वर्ष	**युद्ध**	**पक्ष**	**परिणाम**
1531	दोहरिया का युद्ध	हुमायूँ एवं महमूद लोदी	हुमायूँ विजयी
1539	चौसा का यद्ध	हुमायूँ एवं शेरशाह	शेरशाह विजयी
1540	कन्नौज (बिलग्राम) का युद्ध	हुमायूँ एवं शेरशाह	शेरशाह विजयी
1555	सरहिन्द का युद्ध	बैरम खाँ एवं सिकन्दर सूरी	बैरम खां विजयी

शेरशाह (1540-1545 ई.)

- शेरशाह ने सूर साम्राज्य की स्थापना की। उसका जन्म 1472 ई. में **बजवाड़ा** में हुआ था। उसके बचपन का नाम **फरीद** था। उसके पिता **हसन खां** सासाराम के जमींदार थे।
- एक शेर को मारने के कारण उसकी बहादुरी से प्रसन्न होकर बिहार के अफगान शासक **बहार खां लोहानी** ने उसे **शेरखां** की उपाधि प्रदान की।
- 1540 में बिलाम के युद्ध के पश्चात् शेरशाह दिल्ली की गद्दी पर बैठा। उसने सिंध से बंगाल तक ग्रांड ट्रंक रोड का निर्माण करवाया।
- शेरशाह ने **रोहतासगढ़** किला तथा **किला-ए-कुहना** (दिल्ली) नामक मस्जिद का निर्माण करवाया।
- शेरशाह ने भूमि की माप के लिए 32 अंगुल का **गज-ए-सिकंदरी** का प्रयोग किया।

शेरशाह के प्रमुख युद्ध	
काल	**युद्ध**
1541 ई.	गक्खरों के विरुद्ध
1542 ई.	मालवा पर आक्रमण
1543 ई.	रायसीन पर आक्रमण
1544 ई.	मालदेव के विरुद्ध
1545 ई.	कालिंजर अभियान

- उसने **178 ग्रेन** का चांदी का **रुपया** तथा **350 ग्रेन** का **तांबे** का **दाम** चलवाया।
- शेरशाह के समय पैदावार का **एक-तिहाई** लगान के रूप में लिया जाता था। उसने **कबूलियत** एवं **पट्टा प्रथा** की शुरुआत की। उसने **डाक-प्रथा** प्रारंभ किया।
- शेरशाह ने बंगाल को 19 सरकारों में बाँटा तथा वहाँ अमीर-ए-बंगाल असैन्य अधिकारी नियुक्त किया।

शेरशाह का प्रशासन	
पद	**कार्य**
दीवान-ए-वजारात	आय-व्यय प्रबंधक
दीवान-ए-आरिज	सेना का प्रबंधक
दीवान-ए-रसालत	विदेश मंत्रालय
दीवान-ए-इंशा	शाही घोषणापत्र/संदेशों का रिकॉर्डकर्ता
दीवान-ए-काजी	मुख्य न्यायाधीश
दीवान-ए-बरीद	डाक/गुप्तचर व्यवस्था

- **अब्बास खां शेरवानी** शेरशाह का इतिहासकार था, जिसने **तारीख-ए-शेरशाही** की रचना की। इसके शासन काल में ही **जायसी** ने **पद्मावत** की रचना की।
- 22 मई, 1545 ई. को **उक्का** नामक आग्नेयास्त्र चलाते समय शेरशाह घायल हो गया और उसकी

मृत्यु हो गयी। यह घटना कलिंजर के किले को जीतने (1545) के दौरान हुई। उस समय कलिंजर का शासक **कीरत सिंह** था।

- शेरशाह का मकबरा **सासाराम** में झील के बीच निर्मित किया गया है।
- 1541 में शेरशाह ने पाटलिपुत्र को **पटना** के नाम से पुनः स्थापित किया।
- इस्लामशाह (1545-53) तथा आदिलशाह (1553-55) शेरशाह के उत्तराधिकारी थे।

अकबर (1556-1605 ई.)

- 15 अक्टूबर, 1542 ई. को अकबर का जन्म अमरकोट में राणा वीरसाल के महल में हुआ था। 14 फरवरी, 1556 को पंजाब के **कलनौर** में उसका राज्याभिषेक हुआ।
- जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाही गाजी के नाम से राजसिंहासन पर बैठा। 1556-1560 तक **बैरम खाँ** अकबर का संरक्षक रहा।
- अकबर तथा हेमू के मध्य 5 नवम्बर, 1556 को पानीपत का द्वितीय युद्ध हुआ, जिसमें अकबर विजयी रहा।
- 1560-62 तक अकबर हरम दल के प्रभाव में रहा। 1560 में अकबर ने बैरम खाँ को मक्का यात्रा का आदेश दिया। मक्का जाते समय **पाटन** में **मुबारक खाँ** ने बैरम खाँ की हत्या कर दी।
- 18 जून, 1576 ई. को मेवाड़ के शासक महाराणा प्रताप और अकबर के मध्य **हल्दीघाटी** का युद्ध हुआ, जिसमें अकबर विजयी रहा। इस युद्ध में मुगल सेना का नेतृत्व **मान सिंह** एवं **आसफ खाँ** ने किया।
- 19 फरवरी, 1597 को 57 वर्ष की उम्र में महाराणा प्रताप की मृत्यु हो गयी।
- अकबर के समय में उजबेगों, मिजाओं तथा युसूफजाइयों का विद्रोह हुआ।
- गुजरात अभियान के दौरान अकबर पहली बार पुर्तगालियों से मिला तथा पहली बार **समुद्र** देखा।
- अकबर ने 1571 में आगरा से 36 किमी दूर **फतेहपुर सीकरी** की स्थापना की तथा उसमें बुलन्द दरवाजा बनवाया।

अकबर द्वारा जीते गए प्रदेश

वर्ष	शासक	प्रदेश	मुगल सेनापति
1561 ई.	बाजबहादुर	मालवा	आधम खाँ, पीर मुहम्मद
1562 ई.	अफगान शासक	चुनार	अब्दुल्ला खाँ
1564 ई.	बीरनारायण, दुर्गावती	गोंडवाना	आसफ खाँ
1562 ई.	भारमल	आमेर	स्वेच्छा से अधीनता स्वीकारी
1562 ई.	जयमल	मेड़ता	सरफुद्दीन
1568 ई.	उदय सिंह	मेवाड़	अकबर
1569 ई.	सुरजनहाड़ा	रणथम्भौर	भगवान दास एवं अकबर
1569 ई.	रामचन्द्र	कालिंजर	मजनू खाँ काकशाह
1570 ई.	राव चन्द्रसेन	मारवाड़	स्वेच्छा से अधीनता स्वीकारी
1570 ई.	रावल हरिराय	जैसलमेर	स्वेच्छा से अधीनता स्वीकारी
1570 ई.	कल्याणमल	बीकानेर	स्वेच्छा से अधीनता स्वीकारी
1571 ई.	मुजफ्फर खां-III	गुजरात	खाने आजम एवं अकबर
1574-76 ई.	दाऊद खाँ	बिहार एवं बंगाल	मुनीम खाँ
1576 ई.	राणा प्रताप	हल्दीघाटी	मानसिंह एवं आसफ खाँ
1581 ई.	हकीम मिर्जा	काबुल	मानसिंह एवं अकबर
1586 ई.	यूसुफ खाँ, याकूब खाँ	कश्मीर	भगवान दास एवं कासिम खाँ
1591 ई.	निसार खाँ	उड़ीसा	मान सिंह

1591 ई.	अली खाँ	खानदेश	स्वेच्छा से अधीनता स्वीकारी
1591 ई.	जानीबेग	सिन्ध	अब्दुर्रहीम खानखाना
1595 ई.	पन्नी अफगान	बलूचिस्तान	मीर मासूम
1595 ई.	मुजफ्फर हुसैन	कन्धार	सुबेदार शाहबेग
1600 ई.	बहादुर शाह, चाँद बीबी	अहमदनगर	शहजादा मुराद एवं अब्दुर्रहीम खानाखाना
1601 ई.	मीर बहादुर	असीरगढ़	अकबर (यह अकबर का अंतिम अभियान था)

- बुलन्द दरवाजा का निर्माण **गुजरात विजय** के उपलक्ष्य में बनवाया गया।

हेमू
हेमू बिहार और जौनपुर के शासक आदिलशाह का प्रधानमंत्री था। **रेवाड़ी** के इस व्यापारी ने आदिलशाह के लिए 24 युद्ध किए, जिसमें 22 में वह विजयी रहा। आदिलशाह ने उसे **विक्रमादित्य** की उपाधि दी। वह भारतीय इतिहास का **14वाँ** विक्रमादित्य था। **शाह कुली महरम** (मुगल सेनाधिकारी) ने पानीपत के द्वितीय युद्ध के दौरान घायल होने के पश्चात् गिरफ्तार किया तथा **कानूनगो** के अनुसार **बैरमखाँ** ने उसकी गर्दन काट डाली।

- अकबर ने फतेहपुर सीकरी में धार्मिक परिचर्चाओं के लिए **इबादतखाने** तथा सभी धर्मों के उत्तम सिद्धांतों को जानने के लिए **दीन-ए-इलाही** (तौहीद-ए-इलाही) नामक नए धर्म की स्थापना की।
- **बीरबल** दीन-ए-इलाही को स्वीकार करने वाला प्रथम एवं अंतिम हिन्दू था।
- **अकबर** ही दीन-ए-इलाही का प्रधान पुरोहित था।
- जैन आचार्य **हरिविजय** सूरि को अकबर ने **जगतगुरु** की उपाधि प्रदान की।
- **तानसेन** अकबर के दरबार के प्रसिद्ध संगीतकार तथा **अब्दुस्समद** प्रसिद्ध चित्रकार थे। **दसवंत** एवं **बसावन** उसके दरबार के प्रसिद्ध चित्रकार थे। **बाजबहादुर, बैजू बावरा** तथा **रामदास** अकबर काल के प्रमुख गायक थे।
- **अबुज फजल** ने **अकबरनामा** (आइन-ए-अकबरी) की रचना की। अबुल फजल के बड़े भाई **फैजी** अकबर के **राजकवि** थे।
- **मनसबदारी प्रथा** अकबर के प्रशासन की प्रमुख विशेषता थी। **दहशाला** व्यवस्था (1580) को लागू करने के लिए **किरोड़ी** की नियुक्ति की गयी। दहशाला व्यवस्था को **टोडरमल** ने लागू किया।

अकबर के दरबार के नौ रत्न
1. बीरबल
2. अबुलफजल
3. टोडरमल
4. भगवान दास
5. तानसेन
6. मानसिंह
7. अब्दुर्रहीम खानखाना
8. मुल्ला दो प्याजा
9. हकीम हुक्काम

- स्थापत्यकला के क्षेत्र में अकबर की महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं– दिल्ली में हुमायूँ का मकबरा, आगरा का लालकिला, फतेहपुर सिकरी में शाहीमहल, दीवाने खास, पंचमहल, बुलंद दरवाजा, जोधाबाई का महल, इबादत खाना, इलाहाबाद का किला और लाहौर का किला।

अकबर के महत्त्वपूर्ण कार्य	
1562	दासप्रथा का अन्त
1562	हरमदल में मुक्ति
1563	तीर्थयात्रा कर समाप्त
1564	जजिया-कर समाप्त
1571	फतेहपुर सिकरी की स्थापना, राजधानी का आगरा से फतेहपुर सिकरी स्थानान्तरण
1575	जागीरदारी प्रथा का अंत
1575	इबादतखाने की स्थापना
1578	इबादतखाने में सभी धर्मों के लोगों को प्रवेश की अनुमति
1579	महजर की घोषणा
1582	दीन-ए-इलाही की स्थापना
1583	इलाही संवत् की शुरुआत

- बीरबल के बचपन का नाम **महेश दास** था।
- संगीत सम्राट तानसेन का जन्म ग्वालियर में हुआ था। इनकी प्रमुख कृतियाँ थीं– मियाँ की टोड़ी, मियाँ का मल्हार, मियाँ का सारंग इत्यादि।
- **कण्ठाभरण वाणीविलास** की उपाधि अकबर ने तानसेन को प्रदान की थी।
- अकबर ने आमेर के राजा भारमल के पुत्र **भगवान दास** को **अमीर-उल-उमरा** की उपाधि दी। बीरबल को **कविप्रिय** तथा नरहरि को **महापात्र** की उपाधि दी।
- दक्षिण से आगरा की ओर जा रहे अबुल फजल की हत्या 1602 में **सलीम (जहाँगीर)** के निर्देश पर **वीर सिंह बुन्देला** ने कर दी। युसूफजाइयों के विद्रोह को दबाने के दौरान **बीरबल** की हत्या हो गयी।
- **फारसी** मुगलों की राजभाषा थी। अकबर ने **अनुवाद विभाग** की स्थापना फैजी की अध्यक्षता की थी।
- महाभारत का फारसी में अनुवाद **बदायूँनी, नकीब खाँ** एवं **अब्दुल कादिर** ने **रज्मनामा** के नाम से किया।
- **मौलाना हुसैन फैज** ने **यार-ए-दानिश** नाम से पंचतंत्र का फारसी में अनुवाद किया। अकबर ने चित्रकार अब्दुससमद को **शीरीकलम** तथा मुहम्मद हुसैन को **जरी कलम** की उपाधि दी।
- **शेख सलीम चिश्ती** अकबर के समकालीन थे, जिनके आशीर्वाद से जहाँगीर का जन्म हुआ था।
- 1605 ई. में अकबर की मृत्यु हो गयी तथा उसे आगरा के निकट **सिकन्दरा** में दफनाया गया। जहाँगीर द्वारा अकबर के मकबरे का निर्माण करवाया गया।

इबादतखाने में आमंत्रित धर्माचार्य
हिन्दू धर्म – देवी एवं पुरुषोत्तम
जैन धर्म – हरिविजय सूरि, जिनचन्द्र सूरि
पारसी – दस्तूर मेहरजी राणा
ईसाई – एक्वाबीवा एवं मॉन्सेराट

जहाँगीर (1605-1627 ई.)

- सलीम (जहाँगीर) अकबर का उत्तराधिकारी था, जो 3 नवम्बर, 1605 को नुरूद्दीन मुहम्मद जहाँगीर बादशाही गाजी की उपाधि धारण कर राजसिंहासन पर बैठा।
- उसका जन्म 30 अगस्त, 1569 ई. को हुआ। शेख सलीम चिश्ती के नाम पर उसका नाम सलीम रखा गया।
- सिंहासन पर बैठते ही जहाँगीर के बड़े पुत्र खुसरो ने 1606 में विद्रोह कर दिया। जहाँगीर की सेना ने जालंधर के निकट **भैरावल** में खुसरो को हराकर बंदी बनाकर अन्धा कर दिया गया।
- खुसरो की सहायता करने के कारण सिखों के पांचवें गुरु अर्जुनदेव फांसी की सजा दी गयी।
- जहाँगीर को न्याय की जंजीर के लिए याद किया जाता है। यह जंजीर **आगरा किला के शाहबुर्ज** से यमुना तट पर स्थित पत्थर के खम्भे से लगायी गयी थी।
- अहमदनगर के वजीर मलिक अम्बर के विरुद्ध सफलता से खुश होकर जहाँगीर ने **खुर्रम** को **शाहजहाँ** की उपाधि प्रदान की।
- 1622 में कंधार मुगलों के हाथ से निकल गया। कंधार पर शाह अब्बास ने अधिकार कर लिया।
- जहाँगीर द्वारा शुरू की गयी **तुजुक-ए-जहाँगीरी** को **मौतमिद खाँ** ने पूरा किया। यह जहाँगीर की आत्मकथा है।
- 1611 में जहाँगीर ने शेर अफगान (अली कुली खाँ) की विधवा **मेहरून्निसा** से विवाह किया जो बाद में **नूरजहाँ** के नाम से प्रसिद्ध हुई। वह ईरान के निवासी **मिर्जा गयास बेग** की पुत्री थी।
- नूरजहाँ की माँ **अस्मत बेगम** ने गुलाब से इत्र निकालने की विधि खोजी।

जहाँगीर के 12 आदेश
1. तमगा/तटकर (मीर बहरी) जैसे करों का अंत।
2. शराब तथा नशीले पदार्थों के उत्पादन तथा बिक्री पर प्रतिबंध।
3. अपराधियों के अमानुषिक दंड पर पाबंदी।
4. अमीरों के मध्य वैवाहिक संबंधों से पूर्व बादशाह की अनुमति अनिवार्य।
5. किसी व्यापारी का गट्ठर उसकी अनुमति के बगैर न खोलने का आदेश।
6. मृत अमीरों की संपत्ति उसके उत्तराधिकारियों को देने का आदेश।
7. राजकीय अधिकारियों को उस संपत्ति की देखभाल करने का आदेश, जिसका कोई दावेदार नहीं हो।
8. राजकीय मार्ग के क्षेत्र को आबाद करने का आदेश।
9. रविवार तथा बृहस्पतिवार को पशुवध पर प्रतिबंध।
10. राज्य के खर्चे से बड़े नगरों में चिकित्सालय खोले जाने का आदेश।
11. जेल में बंद सभी कैदियों की मुक्ति के आदेश।
12. राजमार्गों की सुरक्षा का दायित्व स्थानीय जागीरदारों को।

- **लाडली बेगम** शेर अफगान एवं मेहरुन्निसा की पुत्री थी, जिसका विवाह जहाँगीर के पुत्र **शहरयार** के साथ हुआ।
- जहाँगीर ने 1620 में कांगड़ा पर विजय प्राप्त की तथा 1626 में महावत खाँ के विद्रोह को दबाया।
- जहाँगीर ने **ग्यासबेग** को शाही दीवान बनाया तथा **इतमाद-उद्-द्दौला** की उपाधि दी।
- इसके शासनकाल में **हॉकिन्स** के नेतृत्व में अंग्रेज मिशन (1608-11) मुगल दरबार में आया। जहाँगीर ने उसे 400 का मनसब प्रदान किया, किन्तु व्यापार करने की अनुमति नहीं मिली।
- **टॉमस रो** के नेतृत्व में दूसरा अंग्रेज मिशन आया (1615-18), जो व्यापार की अनुमति प्राप्त करने में सफल रहा।
- जहाँगीर के काल में 1613 में अंग्रेजों ने **सूरत** में प्रथम व्यापारिक केन्द्र की स्थापना की।
- 1627 में जहाँगीर की **भीमवार** में मृत्यु हो गयी। नूरजहाँ ने लाहौर के निकट **शाहदरा** में जहाँगीर के मकबरे का निर्माण करवाया।
- जहाँगीर के काल में चित्रकला अपने चरमोत्कर्ष पर था। जहाँगीर ने **अका रिजा** के नेतृत्व में **आगरा** में एक **चित्रणशाला** की स्थापना की।
- अकारिजा, अबुल हसन, मु. नासिर, उस्ताद मंसूर, विशनदास, मनोहर, गोवर्धन, फारूख बेग इत्यादि जहाँगीर के प्रमुख चित्रकार थे। मंसूर को **नादिर-उल-उस्र** तथा अबुल हसन को **नादिर-उल्-जमा** की उपाधि दी।
- इतमाद-उद्-द्दौला का मकबरा 1626 में नूर जहाँ ने बनवाया। यह पहली इमारत है, जिसपर **पित्राद्यूरा** (जड़ाऊ काम) का प्रयोग किया गया।
- खुसरो, परवेज, खुर्रम, शहरयार तथा जहाँदार; जहाँगीर के पाँच पुत्र थे।

शाहजहाँ (1627-1657 ई.)

- शाहजहाँ जोधपुर के शासक उदय सिंह की पुत्री जगत गोसाई (जोधाबाई) का पुत्र था। इसका जन्म 5 फरवरी, 1592 ई. को लाहौर में हुआ था। इसके बचपन का नाम **खुर्रम** था।
- इसका विवाह नूरजहाँ के भाई आसफ खाँ की पुत्री **अर्जुमन्दबानो बेगम** से हुआ, जो मुमताज महल के नाम से प्रसिद्ध हुई। शाहजहाँ ने उसे **मलिका-ए-जमानी** की उपाधि प्रदान की। 7 जून, 1631 को मुमताज की प्रसव-पीड़ा के कारण मृत्यु हो गयी।
- शाहजहाँ ने आसफ खाँ की सहायता से सिंहासन पर अधिकार कर लिया। शाहजहाँ ने आसफ खां को **वजीर** बनाया तथा महावत खाँ को **खानखाना** की उपाधि दी।
- शाहजहाँ ने दिल्ली में यमुना के निकट **शाहजहाँनाबाद** नगर की स्थापना की और आगरा से राजधानी को यहाँ स्थानांतरित किया।
- शाहजहाँनाबाद में उसने सुरक्षा दुर्ग का निर्माण कराया, जिसे **लाल किला** या **किला-ए-मुबारक** के नाम से जाना जाता है।
- उसने किले में **दीवान-ए-आम** व **दीवान-ए-खास** का निर्माण करवाया। उसने स्वयं अपना व अपनी बेगम मुमताज महल का मकबर आगरा में बनवाया जो **ताजमहल** के नाम से प्रसिद्ध है। शाहजहाँ का शासनकाल स्थापत्यकला का स्वर्ण युग माना जाता है।
- ताजमहल के वास्तुविद् **उस्ताद ईशा खाँ** एवं **उस्ताद अहमद लाहौरी** थे। इसके निर्माण में प्रयुक्त होने वाला संगमरमर **मकराना** (राजस्थान) से लाया गया था।
- ताजमहल के निर्माण में 20 वर्ष का समय लगा। इसका निर्माण कार्य 1632 ई. में आरम्भ हुआ था।
- शाहजहाँ ने आगरा में **मोती मस्जिद** तथा दिल्ली में **जामा मस्जिद** का निर्माण करवाया। **मीर जुमला** ने शाहजहाँ को कोहिनूर हीरा भेंट किया था।
- लाल किले में स्थित मोती मस्जिद का निर्माण औरंगजेब ने करवाया था।
- शाहजहाँ ने इलाही संवत् के स्थान पर **हिजरी संवत्** चलाया। उसने **सिजदा** एवं **पायबोस** की प्रथा समाप्त कर **चहार-तस्लीम** प्रथा शुरू की।
- **फ्रांसिस बर्नियर** (चिकित्सक) एवं फ्रांसीसी **ट्रैवर्नियर** (जवाहरात एवं मोतियों का जानकार) इसी के समय भारत आए थे।
- **शाहजहाँ** ने संगीतज्ञ **लाल खाँ** को **गुण समन्दर** की उपाधि दी थी।
- मयूर सिंहासन का निर्माण शाहजहाँ ने करवाया था। इसका मुख्य कलाकार **बे बादल खाँ** था।
- शाहजहाँ के दरबार में **कवीन्द्राचार्य** तथा **जगन्नाथ पण्डित** संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् थे। कवि जगन्नाथ पण्डित ने **रसगंगाधर** तथा **गंगालहरी** की रचना की।
- **मुहम्मद फकीर** एवं **मीर हासिम** शाहजहाँ के प्रमुख चित्रकार थे।

EBD_7243

- शाहजहाँ के पुत्र दारा शिकोह, शुजा, औरंगजेब तथा मुराद थे। दारा शिकोह एक विद्वान था। उसने उपनिषदों का फारसी में अनुवाद **सिर्र-ए-अकबर** के नाम से किया। शाहजहाँ ने दारा को **शाह बुलंद इकबाल** की उपाधि प्रदान की।
- शाहजहाँ के बीमार होने पर उसके पुत्रों में उत्तराधिकार के लिए संघर्ष आरम्भ हुआ।

उत्तराधिकार के युद्ध			
क्र. सं.	**युद्ध**	**काल**	**परिणाम**
1.	बहादुरगढ़ की लड़ाई	14 फरवरी, 1658 ई.	शाहशुजा पराजित होकर बंगाल चला गया।
2.	धरमत की लड़ाई	15 अप्रैल, 1658 ई.	जसवंत सिंह की पराजय एवं औरंगजेब विजयी।
3.	सामूगढ़ की लड़ाई	8 जून, 1658 ई.	दारा की पराजय एवं औरंगजेब विजयी।
4.	खजवा की लड़ाई	दिसंबर, 1658 ई.	शाहशुजा पराजित होकर अराकान पहाड़ी की ओर चला गया जहाँ अराकानियों ने उसकी हत्या कर दी।
5.	देवराई की लड़ाई	मार्च, 1659 ई.	दारा की पराजय व औरंगजेब विजयी।

- 8 वर्षों तक कैद रहने के पश्चात् 1666 ई. में शाहजहाँ की मृत्यु हो गयी। उसे मुमताज के मकबरे के पास दफना दिया गया।

औरंगजेब (1658-1707 ई.)

- औरंगजेब का जन्म 3 नवम्बर, 1618 को **उज्जैन** के **दोहद** नामक स्थान पर हुआ था। सिंहासन पर बैठने से पहले यह दक्कन का गवर्नर था।
- औरंगजेब आलमगीर के नाम से सिंहासन पर बैठा। उसने दो बार अपना राज्याभिषेक करवाया था। **पीर मुहम्मद** औरंगजेब के गुरु थे।
- 18 मई, 1637 को औरंगजेब का विवाह फारस राजघराने की **दिलरास बानो बेगम** (राबिया) से हुआ।
- सम्राट बनने के उपरान्त औरंगजेब ने जनता के आर्थिक कष्टों के निवारण हेतु **राहदारी** (आन्तरिक पारगमन शुल्क) और **पानदारी** (व्यापारिक चुंगियों) आदि करों को समापत कर दिया।
- उसने उलेमा वर्ग की सलाह के अनुसार इस्लामी ढंग से शासन किया। वह सुन्नी धर्म को मानता था। उसे **जिन्दा पीर** कहा जाता था।
- उसने **नौरोज उत्सव** तथा **झरोखा दर्शन** (जो अकबर ने शुरू किया था) समाप्त कर दिया।
- उसने राज्य की गैर-मुस्लिम जनता पर 1679 ई. में पुन: **जजिया** लगा दिया।
- औरंगजेब ने हिन्दू त्योहारों को सार्वजनिक रूप से मनाए जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया।
- उसने अपने शासन के 12वें वर्ष **झरोखा दर्शन** और **तुलादान** की प्रथा बंद करवा दी। 1669 में **मुहर्रम** मनाना बंद करवा दिया।
- उसने राज्य में सार्वजनिक रूप से नृत्य तथा संगीत पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया, यद्यपि व्यक्तिगत जीवन में वह खुद एक कुशल **वीणा वादक** था।
- औरंगजेब के समय में मुगल साम्राज्य क्षेत्रफल की दृष्टि से चरमोत्कर्ष पर था। उसके काल में सूबों की संख्या 20 थी।
- उसने 1686 ई. में **बीजापुर** तथा 1687 ई. में **गोलकुण्डा** को जीतकर मुगल साम्राज्य में मिला लिया।
- औरंगजेब के शासनकाल में मुगल सेना में सर्वाधिक हिन्दू सेनापति थे तथा हिन्दू मनसबदारों की संख्या 337 (सर्वाधिक) थी।
- उसने सार्वजनिक सदाचार के लिए **मुहतसिब** नियुक्त किये।
- औरंगजबे के पुत्र अकबर द्वितीय ने दुर्गादास के बहकावे में आकर अपने पिता के खिलाफ विद्राह किया।
- इस्लाम स्वीकार नहीं करने के कारण औरंगजेब ने 1675 में सिखों के 9वें गुरु **तेगबहादुर** की हत्या करवा दी।
- औरंगजेब ने अपनी बेगम के आग्रह पर ताजमहल की प्रतिकृति का निर्माण किया, जिसे **बीबी का मकबरा** या **द्वितीय ताजमहल** (1679 ई.) के नाम से जाना जाता है। यह **औरंगाबाद** में स्थित है।
- औरंगजेब की मृत्यु 3 मार्च, 1707 ई. को अहमदनगर में हुई। इसे दौलताबाद में स्थित **फकीर बुरहानुद्दीन** की कब्र के अहाते में दफनाया गया।

औरंगजेब के समय के प्रमुख विद्रोह			
क्र. सं.	**विद्रोह**	**काल**	**नेता**
1.	जॉट विद्रोह	1667–88 ई.	गोकुल, राजाराम, चूरामण
2.	अफगान विद्रोह	1667–72 ई.	भागू, अकमल खाँ
3.	सतनामी विद्रोह	1672 ई.	सतनामी अनुयायी
4.	बुंदेला विद्रोह	1661–1707 ई.	चम्पतराय, जुझार सिंह, छत्रसाल
5.	राजपूतों का विद्रोह	1679–1709 ई.	दुर्गादास राठौर
6.	सिक्ख विद्रोह	1675–मृत्यु तक	गुरु तेग बहादुर, गुरु गोविन्द एवं बंदा बहादुर

मुगल प्रशासन एवं अर्थव्यवस्था

- सम्राट के बाद शासन के कार्यों को संचालित करने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण अधिकारी **वकील** होता था, जिसके कर्त्तव्यों को अकबर ने **दीवान, मीरबख्शी, सद्र-उस-सद्र** एवं **मीर-ए-सामां** में विभाजित कर दिया।
- वजीर राज्य का **प्रधानमंत्री** होता था। मंत्रिपरिषद् को **विजारत** कहा जाता था।
- बाबर के शासनकाल में **वजीर** पद काफी महत्त्वपूर्ण था।
- **मीर बख्शी** सैन्य विभाग का प्रमुख होता था। **सद्र-उस-सुदूर** सम्राट को धार्मिक विषयों में परामर्श देता था।
- लगानमुक्त भूमि **मदद-ए-माश** का निरीक्षण **सद्र** करता था।
- **मीर समां** सम्राट के घरेलू विभागों का प्रधान होता था।
- मुगल सेना 4 भागों में बँटी हुई थी– **1. पैदल सेना, 2. घुड़सवार, 3. तोपखाना, 4. हस्ति सेना।**
- अकबर के समय प्रधानमंत्री को **'वकील'** और वित्तमंत्री को **'वजीर'** कहा जाता था।
- **बयूतात**– शाही महल की देख-रेख करने वाला अधिकारी होता था।
- टकसाल का अधिकारी **'दरोगा'** कहलाता था। हस्ति सेना हेतु **पीलवान** नामक अलग विभाग गठित किया गया था।
- **मनसबदारी प्रथा** मुगलकालीन सैन्य व्यवस्था का आधार था। इस प्रथा को सम्राट अकबर द्वारा शुरू किया गया था।
- मनसब शब्द **मनसबदार की प्रतिष्ठा** का सूचक था। अकबर की मनसबदारी व्यवस्था मंगोल नेता चंगेज खाँ की **'दशमलव प्रणाली'** पर आधारित थी।
- 10 से 500 तक मनसब प्राप्त करने वाले **मनसबदार**, 500 से 2500 तक मनसब प्राप्त करने वाले **अमीर** एवं 2500 से ऊपर तक मनसब प्राप्त करने वाले **अमीर-ए-आजम** कहलाते थे।
- जात से व्यक्ति के **वेतन** एवं **प्रतिष्ठा** ज्ञात होता था, **सवार पद** से घुड़सवार दस्तों की संख्या ज्ञात होती थी।
- जहाँगीर ने सवार पद में **दो-अस्पा** एवं **सिंह-अस्पा** की व्यवस्था की। **महातब खाँ** सर्वप्रथम इस पद पर नियुक्त हुआ।
- मुगल तोपखाने का प्रमुख अधिकारी **मीर-ए-आतिश** कहलाता था।
- 1573 ई. में अकबर द्वारा गठित जल सेना का अधिकारी **'मीर-ए-बहर'** कहलाता था।
- प्रशासन की दृष्टि से मुगल साम्राज्य का बँटवारा सूबों में, सूबों का सरकार में, सरकार का परगना या महाल में, महाल का जिला या दस्तूर में और दस्तूरों का ग्राम में विभाजन किया गया था।
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई **ग्राम** थी, जिसे **मावदा** या **डीह** कहते थे। मावदा के अन्तर्गत छोटी-छोटी बस्तियाँ **नागला** कहलाती थीं।
- अकबर ने 1560 ई. में भू-राजस्व की नई प्रणालियाँ–टोडरमल की जब्ती प्रणाली, करोड़ी व्यवस्था, दहसाला प्रणाली, बंटाई तथा नस्क (कनकूत) आदि चलायीं।
- शेरशाह द्वारा भूराजस्व हेतु अपनायी जाने वाली पद्धति **राई** का उपयोग अकबर ने भी किया था।
- अकबर के द्वारा **करोड़ी** नामक अधिकारी की नियुक्ति 1573 ई. में की गयी। इसे अपने क्षेत्र से एक करोड़ दाम वसूल करना होता था।
- 1580 ई. में अकबर ने वास्तविक उत्पादन, स्थानीय कीमत, उत्पादकता आदि के आधार पर **'दहसाला प्रणाली'** प्रचलित की।
- 1570–71 ई. में टोडरमल ने खालसा भूमि पर भू-राजस्व की नवीन प्रणाली **जब्ती** प्रारंभ की। इसमें कर निर्धारण की दो श्रेणी थीं– **1. तखशीस** एवं **2. तहसौल**।
- औरंगजेब ने अपने शासनकाल में **नस्क प्रणाली** को अपनाया और भू-राजस्व की राशि को उपज का आधा कर दिया।
- नकदी फसलों को **'जींस-ए-आला'** कहा जाता था।

प्रशासनिक आधार पर भूमि का वर्गीकरण
खालसा भूमि : प्रत्यक्ष रूप से बादशाह के नियंत्रण में होती थी।
जागीर भूमि : तनख्वाह के बदले दी जाने वाली भूमि कहलाती थी।
सयूरगल/मदद-ए-माश : अनुदान में दी गई लगानहीन भूमि। इस प्रकार की भूमि **मिल्क** कहलाती थी।
उत्पादकता के आधार पर भूमि का वर्गीकरण
पोलज भूमि : सबसे अधिक उपजाऊ व प्रतिवर्ष खेती होने वाली भूमि थी।
परती भूमि : पोलज से कम उपजाऊ व एक फसल पश्चात् बोई जाने वाली भूमि थी।
चाचर भूमि : एक फसल बाद 3-4 वर्षों के लिए खाली भूमि।
बंजर भूमि : प्रायः खाली भूमि, कभी-कभी कृषिकार्य।

- मुगल काल में कृषक तीन वर्गों में बँटे हुए थे–
  (i) **खुदकाश्त :** ये किसान उसी गाँव की भूमि पर खेती करते थे, जहाँ के वे निवासी थे।
  (ii) **पाही काश्त :** ये दूसरे गाँव जाकर कृषि कार्य करते थे।
  (iii) **मुजारियन :** खुदकाश्त कृषकों से भूमि किराए पर लेकर कृषि कार्य करने वाले।
- अकबर ने दिल्ली में एक शाही-टकसाल का निर्माण कराया था, जिसका अध्यक्ष **अब्दुस्समद** को बनाया गया था।
- मुगल काल में टकसाल के अधिकारी को **दरोगा** कहा जाता था।
- अकबर ने असीरगढ़ विजय की स्मृति में अपने सिक्के पर **बाज की आकृति** अंकित करायी थी।
- जहाँगीर के कुछ सिक्कों पर उसे हाथ में शराब का प्याला लिए हुए दिखाया गया है।
- अकबर के सिक्कों पर **राम-सीता** की आकृति तथा **सूर्य, चन्द्रमा** की महिमा भी मिलती हैं।

मुगलकालीन मुद्रा

नाम	धातु	कीमत	शासक
अशर्फी, मुहर, शहँशाह	सोना	169 ग्रेन	अकबर
विसात	सोना	शहँशाह का 1/5 भाग	अकबर
चुगल	सोना	शहँशाह का 1/50	अकबर
हूण/पैगोडा	सोना	–	विजयनगर शासक
रुपया	चाँदी	178 ग्रेन	शेरशाह
शाहरुख	चाँदी	–	बाबर द्वारा काबुल में
बाबरी	चाँदी	–	बाबर द्वारा कंधार में
जलाली	चाँदी	–	अकबर
आना	चाँदी	रुपये का 1/4 भाग	शाहजहाँ
निसार	चाँदी	रुपये का 16वां भाग	–
दाम	तांबा	रुपये का 40वां भाग	शेरशाह
जीतल	तांबा	दाम का 25वां भाग	–

मुगलकालीन साहित्य

रचना	रचनाकार
हुमायूँनामा	गुलबदन बेगम
मुन्तखब-उत-तवारिख	बदायूँनी
तारीख-ए-अलफी	मुल्ला दाऊद
तबाकत-ए-अकबरी	निजामुद्दीन अहमद
इकबालनामा-ए-जहाँगीरी	मौतमिद खाँ
पादशाहनामा	अब्दुल हमीद लाहौरी, मुहम्मद वारिस
पादशाहनामा	मो. अमीन कजवीनी
मज्म-उल-बहरीन	दारा शिकोह
मुन्तखब-उल-लुबाब	खाफी खान
आलमगीरनामा	मुहम्मद काजिम
फुतुहात-ए-आलमगिरी	ईश्वरदास नागर
नुस्खा-ए-दिलकुशा	भीमसेन कायस्थ

मुगल शासकों के मकबरे	
शासक	**मकबरा**
बाबर	काबुल
हुमायूँ	दिल्ली
अकबर	सिकन्दरा (आगरा)
जहाँगीर	शाहदरा (लाहौर)
शाहजहाँ	आगरा
औरंगजेब	औरंगाबाद (दौलताबाद)

मराठा साम्राज्य

शिवाजी (1627-1680 ई.)

- मराठा साम्राज्य के संस्थापक शिवाजी का जन्म 20 अप्रैल, 1627 ई. को पूना के निकट **शिवनेर** के दुर्ग में हुआ था। शिवाजी के पिता **शाहजी भोंसले** बीजापुर राज्य की सेवा में नियुक्त थे, शिवाजी की माता **जीजाबाई** यादव परिवार की राजकुमारी थीं।
- शिवाजी के आध्यात्मिक गुरु **समर्थ स्वामी रामदास** थे, किन्तु प्रारंभिक गुरु **दादाजी कोण्डदेव** थे। शिवाजी का विवाह 1640 में **साईबाई निम्बालकर** से हुआ।
- शिवाजी ने 19 वर्ष की आयु में 1646 ई. में कुछ मवाली लोगों का एक दल बनाकर पूना के निकट स्थित **तोरण के दुर्ग** पर अधिकार कर लिया था।
- शिवाजी ने 1646 ई. में ही बीजापुर के सुल्तान से रायगढ़, चाकन तथा 1647 ई. में बारामती, इन्द्रपुर, सिंहगढ़ तथा पुरंदर का दुर्ग भी छीन लिया था।
- शिवाजी ने 1656 ई. में कोंकण में कल्याण और जावली का दुर्ग भी अधिकृत कर लिया था।
- 1656 ई. में ही शिवाजी ने अपनी राजधानी **रायगढ़** बनाई।
- शिवाजी के मन्त्रिमण्डल को **अष्टप्रधान** कहा जाता था। अष्ट प्रधान में पेशवा का पद सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं सम्मान का होता था।

शिवाजी के अष्टप्रधान
1. **पेशवा** (प्रधानमन्त्री) - राज्य का प्रशासन एवं अर्थव्यवस्था की देख-रेख।
2. **सर-ए-नौबत** (सेनापति)- सैन्य प्रधान
3. **अमात्य** (राजस्व मन्त्री)- आय-व्यय का लेखा-जोखा।
4. **वाकयानवीस**- सूचना, गुप्तचर एवं सन्धि-विग्रह के विभागों का अध्यक्ष।
5. **चिटनिस**- राजकीय पत्रों को पढ़कर उसकी भाषा-शैली को देखना।
6. **सुमन्त**- विदेश मन्त्री
7. **पण्डित राव**- धार्मिक कार्यों के लिए तिथि का निर्धारण
8. **न्यायाधीश**- न्याय विभाग का प्रधान।

- 5 जून, 1764 को शिवाजी ने **रायगढ़** में वाराणसी (काशी) के प्रसिद्ध विद्वान **गंगाभट्ट** द्वारा अपना राज्याभिषेक करवाया तथा **छत्रपति, हैंदव धर्मोद्धारक, गौब्राह्मण प्रतिपालक** की उपाधि धारण की।
- शिवाजी की सेना तीन महत्त्वपूर्ण भागों में विभक्त थी : 1. **पागा सेना** - नियमित घुड़सवार सैनिक 2. **सिलहदार** - अस्थायी घुड़सवार सैनिक 3. **पैदल** - पैदल सेना।
- शिवाजी की कर-व्यवस्था **मलिक अम्बर** की कर-व्यवस्था पर आधारित थी। शिवाजी ने रस्सी द्वारा माप की व्यवस्था के स्थान पर **काठी** एवं **मानक छड़ी** के प्रयोग को आरम्भ किया।
- शिवाजी के समय कुछ उपज का **33%** भाग राजस्व के रूप में वसूला जाता था, जो बढ़कर **40%** हो गया था।
- **चौथ** एवं **सरदेशमुखी** नामक कर शिवाजी के द्वारा लगाया गया। **चौथ–** किसी एक क्षेत्र पर आक्रमण न करने के बदले दी जाने वाली रकम को कहा गया है। **सरदेशमुखी–** इसका हक का दावा करके शिवाजी स्वयं को सर्वश्रेष्ठ देशमुख प्रस्तुत करना चाहते थे।
- शिवाजी की पैदल सेना में सबसे नीचे की श्रेणी का अधिकारी **'हवलदार'** था।
- शिवाजी की सैन्य व्यवस्था में सैनिकों को नकद वेतन देने की प्रथा थी।
- शिवाजी की भूमि व्यवस्था **नोरोजी पंत** की थी। मराठों का केन्द्रीय कार्यालय **हुजूर-दफ्तर** कहलाता था।
- 1657 ई. में शाहजहां के शासनकाल में शिवाजी का मुकाबला पहली बार मुगलों से हुआ, जब दक्षिण के सूबेदार औरंगजेब ने बीजापुर पर आक्रमण किया और बीजापुर ने मुगलों के विरुद्ध शिवाजी से सहायता मांगी।
- औरंगजेब ने 1665 ई. में आमेर के राजा जयसिंह को शिवाजी को नियंत्रित करने को भेजा।

- राजा जयसिंह ने शिवाजी के अधिकांश शत्रुओं को अपनी ओर मिलाकर शिवाजी के किलों पर अधिकार कर लिया। अंतत: शिवाजी को जून 1665 ई. में राजा जयसिंह के साथ संधि करनी पड़ी, जो **'पुरंदर की संधि'** के नाम से जानी जाती है।
- इस संधि के अनुसार शिवाजी ने अपने कुछ 35 दुर्गों में से 23 दुर्ग मुगलों को सौंप दिए और शिवाजी के बड़े पुत्र **शम्भाजी** को मुगल दरबार में **पांच हजारी मनसबदार** बनाया गया।
- कूटनीति के तहत् राजा जयसिंह द्वारा शिवाजी को **आगरा** स्थित मुगल दरबार में उपस्थित होने के लिए भी आश्वस्त किया गया, राजा जयसिंह ने उनसे कहा कि उन्हें दक्षिण के मुगल सूबों का सूबेदार बना दिया जायेगा।
- शिवाजी, मई 1666 ई. में मुगल दरबार में उपस्थिति हुए, जहां उनके साथ तृतीय श्रेणी के मनसबदारों की भांति व्यवहार किया गया और उन्हें **जयपुर भवन** में नजरबन्द कर दिया गया, लेकिन नवम्बर 1666 ई. में ही वे अपने पुत्र शम्भाजी के साथ मुगलों की कैद से भाग निकले।
- अंतत: विवश होकर 1668 ई. में औरंगजेब ने शिवाजी के साथ सन्धि कर ली और शिवाजी को **राजा की उपाधि** एवं **बराबर की जागीर** प्रदान की।
- 1674 ई. में शिवाजी ने **रायगढ़** के दुर्ग में महाराष्ट्र के स्वतंत्र शासक के रूप में अपना राज्याभिषेक भी कराया और 'छत्रपति' की उपाधि धारण की।
- 1677 ई. के कर्नाटक अभियान के दौरान शिवाजी ने जिंजी, मदुरई, वेल्लूर आदि तथा कर्नाटक एवं तमिलनाडु के लगभग 100 दुर्गों को जीत लिया था।
- 12 अप्रैल, 1680 ई. को शिवाजी की मृत्यु हो गई।

शिवाजी के उत्तराधिकारी

- शिवाजी का उत्तराधिकारी शम्भाजी थे। शम्भाजी ने उज्जैन के हिन्दी एवं संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान **कवि कलश** को अपना सलाहकार नियुक्त किया।
- 21 मार्च, 1689 ई. को मुगल सेनापति **मर्खरब खाँ** ने संगमेश्वर में छिपे हुए शम्भाजी एवं कवि कलश को गिरफ्तार कर लिया और उसकी हत्या कर दी।
- शम्भाजी के बाद 1689 ई. में **राजा राम** को नए छत्रपति के रूप में राज्याभिषेक किया गया।
- राजा राम ने अपनी दूसरी राजधानी **सतारा** को बनाया। राजाराम मुगलों से संघर्ष करता हुआ 1700 ई. में मारा गया।
- राजाराम की मृत्यु के बाद उसकी विधवा पत्नी **ताराबाई** अपने 4 वर्षीय पुत्र **शिवाजी-II** का राज्याभिषेक करवाकर मराठा साम्राज्य की वास्तविक संरक्षिका बन गई।
- 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद शम्भाजी के पुत्र **साहू** (जो औरंगजेब के कब्जे में था) वापस महाराष्ट्र आया।
- साहू एवं ताराबाई के बीच 1707 ई. में खेड़ा का युद्ध हुआ, जिसमें साहू विजयी हुआ।
- साहू ने 22 जनवरी, 1708 ई. को सतारा में अपना राज्याभिषेक करवाया तथा एक नया पद **सेनाकर्ते** (बालाजी विश्वनाथ के अधीन) बनाया।

शिवाजी के उत्तराधिकारी-मराठा छत्रपति		
1.	शम्भाजी	1680 ई.–1689 ई.
2.	राजाराम	1689 ई.–1700 ई.
3.	शिवाजी द्वितीय	1700 ई.–1707 ई.
4.	शाहू	1707 ई.–1749 ई.
5.	राजाराम द्वितीय	1749 ई.–1777 ई.
6.	शाहू द्वितीय	1777 ई.–1808 ई.
7.	प्रताप सिंह	1808 ई.–1839 ई.
8.	शाहजी अप्पा	1839 ई.–1848 ई.

पेशवा काल

- साहू के नेतृत्व में नवीन मराठा साम्राज्यवाद के प्रवर्त्तक **पेशवा** थे, जो साहू के पैत्तृक प्रधानमंत्री थे।
- 1713 ई. में साहू ने **बालाजी विश्वनाथ** को पेशवा बनाया। साहू ने इनकी मदद से **खेड़ा के युद्ध** में ताराबाई को पराजित किया। इनकी मृत्यु 1720 ई. में हुई। इसके बाद पेशवा बाजीराव प्रथम हुए।
- **पेशवा बाजीराव प्रथम** (1720–1740 ई.) ने मुगल साम्राज्य की कमजोर हो रही स्थिति का फायदा उठाने के लिए साहू को उत्साहित करते हुए कहा कि आओ, हम इस पुराने वृक्ष के खोखले तने पर प्रहार करें, शाखाएँ तो स्वयं गिर जाएगी, हमारे प्रयत्नों से मराठा पताका **कृष्णा नदी से अटक तक** फहराने लगेगी। उत्तर में साहू ने कहा– निश्चित रूप से ही आप इसे हिमालय के पार गाड़ देंगे, नि:सन्देह आप योग्य पिता के योग्य पुत्र हैं।

- **पालखेड़ा का युद्ध** 7 मार्च, 1728 ई. को बाजीराव प्रथम एवं निजामुलमुल्क के बीच हुआ, जिसमें निजाम की हार हुई। निजाम के साथ **मुंशी शिवगाँव** की संधि हुई।
- दिल्ली पर आक्रमण करने वाला प्रथम पेशवा **बाजीराव प्रथम** था, जिसने 29 मार्च, 1737 ई. को दिल्ली पर आक्रमण किया। उस समय मुगल बादशाह मुहम्मदशाह दिल्ली छोड़ने के लिए तैयार हो गया था।
- बाजीराव प्रथम का मस्तानी नामक महिला से संबंध होने के कारण चर्चित था। 1740 ई. में बाजीराव प्रथम की मृत्यु हो गयी।
- बाजीराव प्रथम की मृत्यु के बाद **बालाजी बाजीराव** (1740–1761 ई.) 1740 ई. में पेशवा बना।
- 1750 ई. में **संगोला संधि** के बाद पेशवा के हाथ में सारे अधिकार सुरक्षित हो गए। इसने **मालवा** में मुगलों का नयाब सूबेदार बनना स्वीकार किया।
- बालाजी बाजीराव को **नाना साहब** के नाम से भी जाना जाता था।
- झलकी की संधि हैदराबाद के निजाम एवं बालाजी बाजीराव के मध्य हुई।
- बालाजी बाजीराव के समय में ही **पानीपत का तृतीय युद्ध** (14 जनवरी, 1761 ई.) हुआ, जिसमें मराठों की हार हुई। इस हार के सदमे के कारण 1761 में बालाजी की मृत्यु हो गयी।
- यह युद्ध मराठा सरदार **सदाशिव राव भाऊ** व **विश्वासराव** तथा अहमदशाह अब्दाली के मध्य हुआ था।
- **माधवराव नारायण प्रथम** 1761 ई. में पेशवा बना। इसने मराठों की खोयी हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया।
- माधवराव ने ईस्ट इंडिया कंपनी की पेंशन पर रह रहे मुगल बादशाह शाह आलम–II को पुनः दिल्ली की गद्दी पर बैठाया। मुगल बादशाह अब मराठों का पेंशनभोगी बन गया।
- **पेशवा नारायण राव** (1772–73) की हत्या उसके चाचा **रघुनाथ राव** के द्वारा कर दी गई।
- पेशवा माधवराव नारायण–II की अल्पायु के कारण मराठा राज्य की देख–रेख बारहभाई सभा नाम की 12 सदस्यों की एक परिषद् करती थी। इस परिषद् के दो महत्त्वपूर्ण सदस्य थे– **महादजी सिंधिया** एवं **नाना फड़नवीस**।
- अंतिम पेशवा राघोवा का पुत्र बाजीराव–II था, जो अंग्रेजों की सहायता से पेशवा बना था। मराठों के पतन में सर्वाधिक योगदान इसी का था। यह सहायक संधि स्वीकार करने वाला प्रथम मराठा सरदार था।
- पेशवा बाजीराव–II ने **कोरेगाँव** एवं **अष्टी** के युद्ध में हारने के बाद फरवरी 1818 ई. में मेल्कम के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया। अंग्रेजों ने पेशवा के पद को समाप्त कर बाजीराव–II को कानपुर के निकट बिठूर में पेंशन पर जीने के लिए भेज दिया, जहाँ 1853 ई. में इसकी मृत्यु हो गयी।
- बाजीराव द्वितीय की मृत्यु के बाद **नानासाहब** (1818–1857 ई.) ने ब्रिटिश गवर्नर जनरल डलहौजी को पेंशन एवं पदवी हेतु अर्जी दी। अर्जी नामंजूर होने पर नानासाहब ने नाराज होकर 1857 की क्रांति में भाग लिया।

अंग्रेज एवं मराठों के बीच प्रमुख संधियाँ	
वर्ष	**संधियाँ**
प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध 1775-82 ई.	
1775 ई.	सूरत की संधि
1776 ई.	पुरन्दर की संधि
1779 ई.	बड़गाँव की संधि
1782 ई.	सालाबाई की संधि
द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध 1803-05 ई.	
1802 ई.	बसीन की संधि
1803 ई.	देवगाँव की संधि
1803 ई.	सुर्जी अर्जुनगाँव की संधि
1804 ई.	राजापुर घाट की संधि
तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध 1816-18 ई.	
1816 ई.	नागपुर की संधि
1817 ई.	ग्वालियर की संधि
1817 ई.	पूना की संधि
1818 ई.	मंदसौर की संधि

आधुनिक भारत

मुगलों का पतन

- औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् उसके तीनों पुत्रों **मुअज्जम, आजम** तथा **कामबख्श** के मध्य उत्तराधिकार का युद्ध हुआ।
- उत्तराधिकार के इस युद्ध में **गुरुगोविन्द सिंह** ने **बहादुरशाह प्रथम** का साथ दिया।
- **मुअज्जम** (1707-1712 ई.) बहादुरशाह प्रथम की उपाधि के साथ मुगल शासक बना। इसे **शाहआलम प्रथम** भी कहा जाता है।
- **जहाँदारशाह** (1712-13 ई.) ने जयसिंह को **मिर्जा राजा सबाई** की उपाधि दी तथा **मालवा** का गवर्नर बना दिया और अजीत सिंह को **महाराज** की उपाधि दी तथा **गुजरात** का गवर्नर बना दिया।
- **जुल्फिकार खाँ**, जहाँदारशाह का प्रधानमंत्री था। जहाँदारशाह **लाल कुँवर** नामक स्त्री के प्रभाव में था।
- **फर्रूखसियर** (1713-19 ई.) **सैय्यद बन्धुओं** की सहायता से दिल्ली की गद्दी पर बैठा। वह अजीमुश्शान का पुत्र था।
- सैय्यद बन्धुओं में अब्दुला खाँ को **वजीर** तथा हुसैन अली खाँ को **प्रधान सेनापति** (फर्रूखसियरपर द्वारा) बनाया गया। सैय्यद बन्धु को **किंग मेकर** के रूप में जाने जाते थे। 12 गांव बसाने के कारण उन्हें **वाराह** के नाम से भी जाना जाता था।
- हुसैन अली ने फर्रूखसियर के बाद क्रमशः **रफी-उद्-दरजात** तथा **रफी-उद्-दौला** को दिल्ली की गद्दी पर बैठाया, जो बीमारी से मर गए। इसके बाद जहाँगीर शाह के 18 वर्षीय पुत्र रौशन अख्तर को **मुहम्मद शाह** के नाम से शासक बनाया गया।
- अक्टूबर 1720 ई. में **हैदरबेग** (तूरानी सैनिक) ने हुसैन अली खाँ की हत्या कर दी।
- मुहम्मदशाह (1719-48 ई.) ने **निजामुलमुल्क** को अपना वजीर बनाया। मुहम्मदशाह ने सआदत खाँ को **बुरहान-उल-मुल्क** की उपाधि प्रदान की।
- 24 फरवरी, 1739 को **नादिरशाह** तथा मुगल सेना के बीच करनाल में हुए युद्ध में नादिरशाह ने जीत हासिल की और दिल्ली पर अधिकार कर लूट और कत्लेआम का आदेश दिया।
- नादिरशाह लगभग 70 करोड़ रुपए की धनराशि तथा शाहजहाँ का बनवाया हुए **तख्त-ए-ताऊस** (मयूर सिंहासन) और कोहिनूर हीरा लेकर वापस गया।
- इस प्रकार **मुहम्मदशाह** तख्त-ए-ताऊस पर बैठनेवाला अंतिम मुगल शासक था।
- **शाह आलम द्वितीय** (1759-1806 ई.) के शासनकाल में अंग्रेजों ने दिल्ली पर अधिकार कर लिया। 1806 में गुलाम कादिर खाँ ने शाहआलम द्वितीय की हत्या करवा दी।
- अकबर द्वितीय (1806-1837 ई.) अंग्रेजों के संरक्षण में मुगल शासक बना। अंग्रेजों के संरक्षण में शासक बननेवाला यह पहला मुगल था। इसने राजा राममोहन राय को **'राजा'** की उपाधि दी।
- **बहादुर शाह द्वितीय** (1837 - 1857 ई.) अंतिम मुगल शासक था। यह **जफर** नाम से कविताएं लिखता था। 1857 की क्रांति में भाग लेने के कारण अंग्रेजों ने इसे बंदी बनाकर **रंगून** भेज दिया। इस प्रकार मुगल साम्राज्य समाप्त हो गया।
- बहादुरशाह प्रथम को **शाहे बेखबर**, जहाँदारशाह को **लम्पट मूर्ख,** फर्रूखसियर को **घृणित कायर** तथा मुहम्मदशाह को **रंगीला** उपनाम से भी जाना जाता था।

उत्तरकालीन मुगल सम्राट	
बहादुरशाह-I	1707-1712 ई.
जहाँदारशाह	1712-1713 ई.
फर्रूखसियर	1713-1719 ई.
मुहम्मदशाह	1719-1748 ई.
अहमद शाह	1748-1754 ई.
अलमगीर-II	1754-1759 ई.
शाहआलम-II	1759-1806 ई.
अकबर-II	1806-1837 ई.
बहादुरशाह जाफर	1837-1857 ई.

प्रान्तीय स्वायत्त राज्य

अवध

- मराठा राज्यों के बीच में होने के कारण इसे **बफर स्टेट** कहा जाता था।
- अवध की स्वतंत्रता की घोषणा 1722 ई. में **सआदत खां बुरहान मुल्क** ने की। यह अवध का पहला नवाब था।
- सआदत खां के बाद उसका भतीजा तथा दामाद **सफदरजंग** (अबुल मंसूर खां) अवध का नवाब बना। सन् 1744 ई. में मुहम्मदशाह ने इसे अपना वजीर नियुक्त किया।
- सन् 1753 ई. में अहमदशाह ने सफदरजंग को वजीर के पद से बर्खास्त कर दिया; 1754 ई. में अवध में इसकी मृत्यु हो गई। सफदरजंग की मृत्यु के बाद उसका पुत्र शुजाउद्दौला उत्तराधिकारी बना। इसने सन् 1759 ई. में अलीगौहार (मुगल बादशाह शाहआलम द्वितीय) को लखनऊ में शरण दी।
- पानीपत के तृतीय युद्ध में शुजाउद्दौला ने अहमदशाह अब्दाली का साथ दिया। इसने अंग्रेज गवर्नर वारेन हेस्टिंग्स से 1773 ई. में **बनारस की संधि** की।
- सन् 1775 ई. में अवध के नवाब आसफुद्दौला ने फैजाबाद की जगह लखनऊ को राजधानी बनाया। वारेन हस्टिंग्स ने आसफुद्दौला से **फैजाबाद की संधि** की।
- सन् 1784 ई. में आसफुद्दौला ने **लखनऊ में इमामबाड़े** का निर्माण कराया।
- अवध का अन्तिम नवाब **वाजिद अलीशाह** (1847-1856 ई.) था। इसी के शासनकाल में अवध पर कुशासन का आरोप लगाकर सन् 1856 ई. में ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया।

हैदराबाद

- हैदराबाद में स्वतंत्र आसफजाही वंश की स्थापना, मुहम्मदशाह द्वारा दक्कन में नियुक्त सूबेदार **चिनकिलिच खां** (निजामुलमुल्क) ने 1724 ई. में की।
- चिनकिलिच खां द्वारा 1724 ई. में स्वतंत्र हैदराबाद राज्य की स्थापना के बाद मुगल बादशाह मुहम्मदशाह ने उसे **'आसफजाह'** की उपाधि प्रदान की।
- **शकूरखेड़ा के युद्ध** (1724 ई.) में चिनकिलिच खां ने मुगल सूबेदार मुबारिज खां को पराजित किया था। सन् 1748 ई. में चिनकिलिच की मृत्यु हो गयी।
- हिन्दुओं के प्रति चिनकिलिच खां उदार था। इसने एक हिन्दू **पूरनचन्द** को अपना दीवान नियुक्त किया था।

कर्नाटक

- स्वतंत्र कर्नाटक राज्य का संस्थापक सादतुल्ला खां को माना जाता है। इसने **आरकाट** को अपनी राजधानी बनाया।
- कर्नाटक का प्रयोग अंग्रेज और फ्रांसीसियों ने भारतीय युद्धों के मैदान के रूप में किया।
- वेलेजली ने मैसूर शासक टीपू सुल्तान के साथ गुप्त और षड्यंत्रात्मक पत्राचार करने का आरोप लगाकर कर्नाटक के नवाब मुहम्मद अली तथा उसका उत्तराधिकारी ओमदुत उलउमेर से राजगद्दी का अधिकार छीन लिया।

राजपूत

- अठारहवीं शताब्दी के सबसे श्रेष्ठ राजपूत शासक **सवाई राजा मिर्जा जयसिंह** थे।
- जयसिंह एक विख्यात राजनेता, कानून निर्माता और समाज सुधारक थे, किन्तु सबसे अधिक विज्ञान प्रेमी थे।
- इन्होंने विज्ञान और कला के केन्द्र के रूप में सन् 1722 ई. में **जयपुर** शहर की स्थापना की।
- सवाई राजा जयसिंह कुशल शासक होने के साथ-साथ महान **विधिवेत्ता, खगोलशास्त्री, नगर नियोजक** एवं **वैज्ञानिक** थे।
- जयसिंह ने **मथुरा, उज्जैन, जयपुर** और **दिल्ली** में आधुनिक उपकरणों से युक्त वेधशालाओं का निर्माण कराया।
- जयसिंह ने **जिजमुहम्मदशाही** नाम से सारणियों का एक ऐसा सेट तैयार करवाया, जिसमें खगोलशास्त्र सम्बन्धी पर्यवेक्षण में मदद मिलती थी।

भरतपुर

- भरतपुर में स्वतंत्र जाट राज्य की स्थापना **चूड़ामन** तथा **बदनसिंह** ने किया था। चूड़ामन की मृत्यु के पश्चात् **बदनसिंह** राजा बना। इसने दीग, कुम्बेर, वेद तथा भरतपुर में चार दुर्गों की स्थापना करवायी।
- अगला जाट शासक **सूरजमल** (1756-1763 ई.) बना। इसे जाट जाति का **प्लेटो (अफलातून)** कहा जाता है।

EBD_7243

स्वायत्त राज्यों के संस्थापकः एक दृष्टि में		
राज्य	**संस्थापक**	**समय**
हैदराबाद	निजामुलमुल्क	1724 ई.
अवध	सआदत खां बुरहानमुल्क	1722-24 ई.
भरतपुर	चूड़ामन, बदनसिंह	18वीं शताब्दी
कर्नाटक	सादुतुल्ला खां	18वीं शताब्दी
बंगाल	मुर्शीदकुली खां	1719-20 ई.
रुहेल एवं बंगशपठान	मुहम्मद खां बंगश	18वीं शताब्दी
जयपुर	जयसिंह	18वीं शताब्दी
मैसूर	हैदरअली	18वीं शताब्दी

रुहेलखण्ड

- स्वतंत्र रुहलेखण्ड की स्थापना **वीर दाऊद एवं अलीमुहम्मद खां** ने किया। उत्तर प्रदेश में फर्रुखाबाद के आस-पास बंगश पठानों ने सन् 1714 ई. में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की, जिसे **मुहम्मद खां बंगश** ने अपना नेतृत्व प्रदान किया।

मैसूर

- तालीकोटा के युद्ध के बाद विजयनगर साम्राज्य का अन्त हो गया। उसके बाद स्वतंत्र राज्यों का जन्म हुआ, उनमें मैसूर एक प्रमुख राज्य था।
- मैसूर पर वाड्यार वंश का शासन था, इस वंश के अन्तिम शासक **चिक्का कृष्णराज द्वितीय** था, लेकिन राज्य की वास्तविक सत्ता **देवराज** और **नंजराज** के हाथों में थी।
- सन् 1755 ई. में हैदरअली **डिंडीगुल** का फौजदार बना। इसी समय मैसूर की राजधानी श्री रंगपट्टनम पर मराठों के आक्रमण का भय व्याप्त हो गया। परिणामतः हैदरअली ने राजनीति में हस्तक्षेप कर नंजराज और देवराज के राजनीति से संन्यास लेने पर विवश कर दिया। हैदरअली ने फ्रांसीसियों की सहायता से 1755 ई. में डिंडीगुल में **आधुनिक शास्त्रगार** की स्थापना की।
- 1761 ई. तक हैदरअली के पास मैसूर की समस्त शक्ति केन्द्रित हो गई। डिंडीगुल में हैदरअली ने फ्रांसीसियों के सहयोग से सन् 1755 ई. में एक शस्त्रागार की स्थापना की।

टीपू सुल्तान (1782-1799 ई.)

- सन् 1782 ई. में हैदरअली की मृत्यु के बाद उसका पुत्र टीपू मैसूर की गद्दी पर बैठा। टीपू एक पढ़ा-लिखा योग्य शासक था। इसे **अरबी, फारसी, उर्दू** एवं **कन्नड़** भाषाओं का ज्ञान था।
- इसने अपने नवीन प्रयोगों के अन्तर्गत नई मुद्रा, नई माप- तौल की इकाई तथा नवीन संवत् का प्रचलन करवाया।
- टीपू ने अपने पिता हैदरअली के विपरीत खुलेआम **'सुल्तान'** की उपाधि धारण की तथा 1787 ई. में अपने नाम के सिक्के चलवाये।
- टीपू सुल्तान द्वारा जारी सिक्कों पर **हिन्दू देवी-देवताओं के चित्र** तथा **हिन्दू सम्वत् की आकृतियां** अंकित थीं। इसने वर्षों तथा महीनों के नाम में अरबी भाषा का प्रयोग करवाया।
- टीपू सुल्तान ने **शृंगेरी** के जगद्गुरु शंकराचार्य के सम्मान में मन्दिरों के पुनर्निर्माण हेतु धन दान किया।
- फ्रांसीसी क्रान्ति से प्रभावित टीपू ने श्रीरंगपट्टनम में **'जैकोबिन क्लब'** की स्थापना की और स्वयं उसका सदस्य बना एवं खुद को नागरिक टीपू कहने लगा। उसने श्रीरंगपट्टनम में फ्रांस-मैसूर मैत्री का प्रतीक **स्वतंत्रता-वृक्ष** लगवाया।
- अंग्रेजी नौसेना से मुकाबले के उद्देश्य से टीपू ने 1796 ई. में एक नौसेना बोर्ड का गठन किया तथा **मंगलौर, मोलीदाबाद, दाजिदाबाद** में पोत निर्माण घाट बनवाया। इसने अपनी सेना में फ्रांसीसी नौसेना के एक **लेफ्टिनेंट रियो** को नियुक्त किया था।

आंग्ल-मैसूर युद्धः एक दृष्टि में			
आंग्ल-मैसूर युद्ध	**समय**	**गवर्नर जनरल**	**टिप्पणी**
प्रथम	1767-69 ई.	वारेन हेस्टिंग्स	मद्रास की संधि
द्वितीय	1780-84 ई.	वारेन हेस्टिंग्स	मंगलौर की संधि
तृतीय	1782-99 ई.	कार्नवालिस	श्रीरंगपट्टनम की संधि
चतुर्थ	1799 ई	वेलेजली	टीपू की मृत्यु

पंजाब (सिखों का अभ्युदय)

- गुरु गोविन्द की मृत्यु के पश्चात् गुरु की परम्परा समाप्त हो गई। उनके शिष्य **बंदाबहादुर** ने सिक्खों का नेतृत्व संभाला। बंदाबहादुर के बचपन का नाम **लक्ष्मण देव** था। इनका जन्म 1670 ई. में पूंछ जिला के रजौली गांव में हुआ था।
- बंदाबहादुर के वैराग्य धारण करने के कारण इन्हें **माधवदास** बैरागी भी कहा गया। बंदाबहादुर को उनके शिष्य **सच्चा पादशाह** अथवा **सच्चा सम्राट** कहते थे। बंदा बहादुर ने गुरु गोविंद सिंह के नाम के सिक्के चलवाए।
- सन् 1716 ई. में मुगल बादशाह **फर्रुखसियर** द्वारा बंदाबहादुर का उसके पुत्र समेत हत्या कर दी गई।
- सन् 1753 ई. में **दल खालसा** ने आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए **राखी प्रथा** की शुरुआत की।
- इन मिसलों में से **भंगी मिसल** अधिक शक्तिशाली था।
- आधुनिक पंजाब के निर्माण का श्रेय **सुकरचकिया मिसल** को दिया जाता है। सुकरचकिया मिसल के प्रमुख **माहासिंह** के पुत्र **रणजीत सिंह** थे। रणजीत सिंह का जन्म 2 नवम्बर 1780 को हुआ था।

रणजीत सिंह और पंजाब (1792-1839 ई.)

- सन् 1799 ई. से 1805 ई. के बीच रणजीत सिंह ने भंगी मिसल के अधिकार से लाहौर अमृतसर को छीन कर **लाहौर** को अपनी राजधानी बनाया।
- काबुल के शासक **जमनशाह** (अब्दाली का पुत्र) ने रणजीत सिंह को उसकी महत्त्वपूर्ण सैन्य सेवाओं के लिए 1798 ई. में राजा की उपाधि प्रदान की और लाहौर की सूबेदारी सौंपी।
- 1808 ई. में रणजीत सिंह ने सतलुज नदी को पारकर **फरीदकोट, मुलेर कोटला** और **अम्बाला** पर कब्जा कर लिया।
- उत्तर-पश्चिम में अपने राज्य का विस्तार करते हुए रणजीत सिंह ने 1818 ई. में **सुल्तान,** 1819 ई. में **कश्मीर** तथा 1823 ई. में **पेशावर** पर अधिकार कर लिया।
- रणजीत सिंह को अफगान शासक शाहशुजा से ही वह प्रसिद्ध **कोहिनूर हीरा** प्राप्त हुआ जिसे **नादिरशाह** लाल किले से लूटकर ले गया था।
- रणजीत सिंह की सेना को **फौज-ए-खास** कहा गया था। तोपखाने के मुखिया को **इलाही बख्श** कहा जाता था।
- रणजीत सिंह के सर्वाधिक विश्वसनीय मंत्री **हरिसिंह नलवा** (वित्त मंत्री) तथा **फकीर अजीजुद्दीन** (विदेश मंत्री), **भगवानदास** अर्थमंत्री थे।
- 27 जून, 1839 ई. को रणजीत सिंह की पक्षाघात के कारण मृत्यु हो गई।

सिक्ख गुरु

- गुरुनानक (1469-1539 ई.) ने सिक्ख सम्प्रदाय की स्थापना की। उनका जन्म 1469 ई. को तलवंडी (पाकिस्तान) में हुआ।
- गुरु नानक ने गुरु का लंगर निःशुल्क सह भागी भोजनालय स्थापित किए।
- गुरु नानक ने **संगत** (धर्मशाला) और **पंगत** (लंगर) स्थापित किए।
- 1539 ई. में करतारपुर में गुरु नानक की मृत्यु हो गई।
- **गुरु अंगद** (1539-52 ई.) सिक्खों के दूसरे गुरु थे। गुरु अंगद ने **'गुरुमुखी लिपि'** का आरंभ करवाया। उन्होंने लंगर व्यवस्था को स्थायी रूप प्रदान किया।
- गरु अमरदास (1552-74 ई.) सिक्खों के तीसरे गुरु थे। उन्होंने हिन्दुओं से अलग विवाह पद्धति लवन को प्रचलित किया।
- अकबर ने गुरु अमरदास से गोविन्दवाल जाकर भेंट की और गुरु-पुत्री **बीबी भानी** को कई गाँव दान में दिए। अमरदास ने **22 गद्दियों** की स्थापना की और प्रत्येक पर एक महन्त की नियुक्ति की।
- गुरु रामदास (1574 - 81 ई.) सिक्खों के चौथे गुरु हुए।

- गुरु रामदास ने अमृतसर नामक जलाशय खुदवाया और अमुतसर नगर की स्थापना की।
- गुरु अर्जुन देव (1581-1605 ई.) सिक्खों के पाँचवें गुरु हुए। इन्होंने गुरु पद को पैतृक बनाया। उन्होंने सिक्खों के धार्मिक ग्रंथ **'आदिग्रंथ-गुरु ग्रंथ साहिब'** की रचना की।
- गुरु अर्जुन ने अमृतसर जलाशय के मध्य में **हरमन्दर साहब** का निर्माण करवाया।
- गुरु हरगोविन्द (1606-1645 ई.) सिक्खों के 6ठे गुरु हुए। उन्होंने सिक्खों को सैन्य बल में बदल दिया तथा अकाल-तख्त का निर्माण करवाया।
- गुरु हरराय (1645-61 ई.) सिक्खों के 7वें गुरु थे। उन्होंने शाहजहाँ के पुत्र दाराशिकोह को आशीर्वाद दिया था।
- गुरु हरकिशन (1661-64 ई.) सिक्खों के 8वें गुरु हुए। इनकी मृत्यु चेचक से हो गयी। इन्हें दिल्ली जाकर गुरुपद के बारे में औरंगजेब को समझाना पड़ा था।
- गुरु तेगबहादुर (1664-75 ई.) सिक्खों के 9वें गुरु थे। इन्हें इस्लाम स्वीकार नहीं करने के कारण औरंगजेब ने शीशगंज (दिल्ली) में गुरुद्वारा के निकट उनकी हत्या करवा दी।
- गुरु गोविन्द सिंह 1675-1708 ई. सिक्खों के 10वें एवं अंन्तिम गुरु हुए। इनका जन्म 1666 ई. में पटना में हुआ था।
- गुरु गोविन्द सिंह ने अपने को सच्चा पादशाह कहा। इन्होंने सिक्खों के लिए **5 'ककार'** अर्थात् केश, कंघा, कृपाण, कच्छा और कड़ा रखने की अनुमति दी और नाम के अन्त में 'सिंह' शब्द जोड़ने के लिए कहा।
- गुरु गोविन्द सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना 1699 ई. में करवाई।
- गुरु गोविन्द सिंह ने पाहुल प्रणाली की शुरुआत की।
- गुरुगोविन्द सिंह ने सिक्खों के धार्मिक ग्रंथ आदिग्रंथ को वर्तमान रूप दिया और कहा कि अब 'गुरुवाणी' सिक्ख सम्प्रदाय के गुरु का कार्य करेगी।
- सन् 1708 ई. में नादेड़ नामक स्थान पर गुल खाँ नामक पठान ने गुरुगोविन्द सिंह की हत्या कर दी।
- बन्दा बहादुर ने सरहिन्द के मुगल फौजदार वजीर खाँ की हत्या कर दी।
- मुगल बादशाह फर्रुखसियर के आदेश पर 1716 ई. में बन्दा बहादुर को गुरुदासपुर के **नागंल** में हत्या कर दी गई। बन्दा की मृत्यु के बाद सिक्ख कई छोटे-छोटे टुकड़ों में बँट गए थे।
- नवाब कपूर सिंह 1748 ई. की पहल पर सभी सिक्ख टुकड़ियों को दल खालसा में विलय हो गया। 1753 में खालसा दल ने आर्थिक स्थिति सुधारने हेतु **राखी प्रथा** की शुरुआत की।
- जस्सा सिंह आहलूवालिया ने दल खालसा का नेतृत्व किया, जिसे बाद में बारह दलों में विभाजित किया गया। इसे मिसल के नाम से जाना गया। मिसल अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ 'समान' होता है।

सिक्ख मिसल	
मिसल	**नेता/संस्थापक**
अहलूवालिया मिसल	जस्सा सिंह
सुकरचकिया मिसल	चरत सिंह
सिंहपुरिया मिसल	नवाब कपूर सिंह
भंगी मिसल	छज्जा सिंह
फुलकिया मिसल	संधू जाट चौधरी
रामगढ़िया मिसल	जस्सा सिंह रामगढ़िया
कन्हैया मिसल	जयसिंह
शहीदी मिसल	बाबा दीप सिंह
नकी मिसल	हीरा सिंह
बुले वालिया मिसल	गुलाब सिंह
निशानवालिया मिसल	सरदार संगत सिंह
करोड़ खिंधिया मिसल	भगेल सिंह

बंगाल

- औरंगजेब की मृत्यु के बाद फर्रुखसियर द्वारा मुर्शीद को 1717 ई. में बंगाल, बिहार और उड़ीसा की सूबेदारी सौंपी गई।
- मुर्शीदकुली खां ने सन् 1704 ई. में बंगाल की राजधानी को ढाका से हटाकर **मुर्शिदाबाद** हस्तांतरित कर दिया।
- मुर्शीदकुली खां बंगाल में नई भू-राजस्व व्यवस्था के अन्तर्गत किसानों को तकावी **ऋण** प्रदान किया तथा बंगाल में इजारेदारी प्रथा को बढ़ावा दिया।
- 1739 ई. में **अलीवर्दी खां** हुआ, जो बंगाल का अन्तिम शक्तिशाली नवाब सिद्ध हुआ। सन् 1756 ई. में **जलाशोथ** की बीमारी से अलीवर्दी खां की मृत्यु हो गई।
- अलीवर्दी खां की मृत्यु के बाद उसका नाती सिराजुद्दौला बंगाल का नवाब बना।
- **1757 ई. में प्लासी के युद्ध** में अंग्रेजों ने क्लाइव के नेतृत्व में सिराजुद्दौला को पराजित किया तथा

वह मारा गया। **ब्लैकहोल** की घटना सिराजुद्दौला के शासनकाल में ही घटी थी। प्लासी युद्ध के बाद **मीर जाफर** तथा **मीर कासिम** बंगाल का नवाब बना।

- नवाब तथा अंग्रेजी कम्पनी में संघर्ष तेज होने पर मीर कासिम ने मुर्शिदाबाद के बदले **मुंगेर** को अपनी राजधानी बनाया।
- **1764 ई. में बक्सर का युद्ध** हुआ, जिसमें मीर कासिम, अवध के नवाब शुजाउद्दौला तथा शाहआलम द्वितीय (मुगल सम्राट) की संयुक्त सेना अंग्रेजों से पराजित हुई तथा इलाहाबाद की सन्धि (1765 ई.) के साथ बंगाल पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी का प्रभुत्व स्थापित हुआ।
- **क्लाइव** बंगाल का पहला गवर्नर बना। क्लाइव ने बंगाल में द्वैध शासन स्थापित किया।
- इलाहाबाद की दूसरी सन्धि अवध के नवाब शुजाउद्दौला और क्लाइव के बीच हुई। इसके तहत् अवध का राज्य नवाब को वापस मिल गया, जबकि कम्पनी को ₹50 लाख तथा चुनार का दुर्ग अवध से प्राप्त हुए।

भारत में यूरोपियों का आगमन

- यूरोपीय कम्पनियों का भारत में प्रवेश निम्नांकित क्रम में हुआ– पुर्तगाली, डच, अंग्रेज और फ्रांसीसी।

पुर्तगाली

- पुर्तगाली नाविक वास्कोडिगामा ने 1498 में भारत की खोज की थी।
- **फ्रांसिस्को-डी-अल्मीडा** भारत में पहला पुर्तगाली गवर्नर था, जो 1505 ई. से 1509 ई. तक भारत में रहा।
- **अल्फ्रांसो-डी-अल्बुकर्क** भारत में पुर्तगाली साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक था, वह 1509 ई. से 1515 ई. तक भारत में रहा। उसने 1510 ई. में गोवा पर अधिकार कर उसे प्रमुख पुर्तगाली व्यापारिक केन्द्र बनाया।
- 1538 ई. में **'ग्रेसिया-डी-नुनोन्हा'** नया पुर्तगाली गवर्नर बना, जिसने सीलोन (श्रीलंका) के अधिकांश भागों पर अधिकार किया। नए पुर्तगाली गवर्नर **अल्फांसो** व **डिसूजा** (1542-1545 ई.) के साथ प्रसिद्ध जेसुइट **सन्त फ्रांसिस्को जेवियर** भारत आए।
- पुर्तगालियों के भारत आगमन से भारत में **तम्बाकू की खेती, जहाज निर्माण** एवं **प्रिंटिग प्रेस** का सूत्रपात हुआ। 1556 ई. में पुर्तगालियों ने भारत में प्रथम प्रिंटिग प्रेस स्थापित किया।

डच

- 1596 ई. में **कॉरनेलिस-डी-हस्तमान**, केप ऑफ गुड होप होते हुए सुमात्रा तथा बण्टाम पहुंचने वाला प्रथम डच नागरिक था।
- 20 मार्च, 1602 ई. को भारत में व्यापार के लिए प्रथम डच कम्पनी 'यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कम्पनी' का प्रादुर्भाव हुआ। इस कम्पनी को डच संसद द्वारा 21 वर्षों तक के लिए भारत और पूर्व के देशों के साथ व्यापार करने, आक्रमण और विजय करने के सम्बन्ध में अधिकार पत्र दिया गया।
- डचों ने भारत में **कोरोमण्डल तट, बिहार, उत्तर प्रदेश, गुजरात तथा बंगाल** में कारखाने स्थापित किए।
- सत्रहवीं शताब्दी में भारत में मसाले के व्यापार पर डचों का एकाधिकार था। डचों द्वारा भारत से **नील**, **शोरा** एवं **सूती** वस्त्र का निर्यात किया जाता था।
- बंगाल से डच मुख्यत: सूती वस्त्र, रेशम, शोरा और अफीम आदि का निर्यात करते थे।

अंग्रेज

- 1599 ई. **जॉन मिल्डेनहाल** (ब्रिटिश यात्री) थल मार्ग से भारत आया था।
- 1599 ई. में इंग्लैण्ड में एक 'मर्चेण्ट एडवेंचर्स' नामक दल ने **अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी** (दि गवर्नर एण्ड कम्पनी ऑफ मर्चेण्ट्स ऑफ ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इण्डीज) की स्थापना की थी। दिसम्बर 1600 ई. में 'ईस्ट इंडिया कम्पनी' की स्थापना हुई, जिसे ब्रिटिश महारानी एलिजाबेथ प्रथम ने 15 वर्षों के लिए पूर्वी व्यापार का एकाधिकार प्रदान किया।
- 1608 ई. में इंग्लैड के राजा जेम्स प्रथम के दूत के रूप में **कैप्टन हॉकिन्स**, मुगल सम्राट जहांगीर से मिलने आगरा पहुंचा।
- सम्राट जहांगीर ने हॉकिन्स से प्रसन्न होकर उसे 400 का मनसब और जागीर प्रदान की थी।
- 1613 ई. में जहांगीर ने एक फरमान द्वारा अंग्रेजों को **सूरत** में स्थायी रूप से कोठी खोलने की अनुमति प्रदान की।

EBD_7243

- मुगल सम्राट जहांगीर से व्यापारिक सन्धि करने के उद्देश्य से इंग्लैंड के सम्राट जेम्स प्रथम का एक दूत **'सर टॉमस रो'** 1615 ई. में जहांगीर के दरबार में आया।
- अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी ने अपना पहला कारखाना 1611 ई. में **मसूलीपट्टम** और **पेटापुली** में स्थापित किया।
- 1633 ई. में पूर्वी तट पर अंग्रेजों ने अपना पहला कारखाना **बालासोर** और **हरिहरपुरा** में स्थापित किया था।
- 1698-99 ई. में बंगाल के सूबेदार अजीमुश्शान की स्वीकृति से कम्पनी को 1,200 रुपए के भुगतान देने पर **सुतानाटी, गोविन्दपुर** और **कालिकाता** की जमींदारी प्राप्त हुई।
- **कालिकाता, गोविन्दपुर** और **सुतानाटी** को मिलाकर आधुनिक नगर कलकत्ता की स्थापना **जॉब चॉरनॉक** ने की थी।
- कालान्तर में कलकत्ता में ही **फोर्ट विलियम** का निर्माण हुआ। 1700 ई. में स्थापित फोर्ट विलियम का प्रथम गवर्नर **सर चार्ल्स आयर** बना।
- 1715 ई. में मुगल सम्राट फर्रुखसियर के दरबार में एक अंग्रेजी प्रतिनिधिमण्डल आया। इस प्रतिनिधिमण्डल में शामिल शल्य चिकित्सक **हैमिल्टन** ने फर्रुखसियर की एक दर्दनाक बीमारी को ठीक किया था, जिससे प्रसन्न होकर मुगल सम्राट ने **1717 ई.** में तीन फरमान जारी करके कम्पनी को अनेक महत्त्वपूर्ण अधिकार दे दिए।
- इसके तहत् अग्रेजों को तीन हजार वार्षिक कर के अतिरिक्त और कुछ भी न देकर बंगाल में व्यापार करने के अधिकार की पुष्टि की गई। उन्हें किराये पर कलकत्ता के आसपास की अतिरिक्त भूमि लेने की अनुमति मिल गई।
- इसके अतिरिक्त बम्बई में कम्पनी द्वारा ढाले गये सिक्कों को सम्पूर्ण मुगल राज्य में पहली बार चलाने की अनुमति भी दे दी गई।
- 1717 ई. के मुगल सम्राट के फरमान को **'कम्पनी का मैग्नाकार्टा'** कहा जाता है।

फ्रांसीसी

- फ्रांसीसी सम्राट लुई चौदहवें के मंत्री कॉलबर्ट द्वारा 1664 ई. में 'फ्रेंच ईस्ट इंडिया कम्पनी' की स्थापना की गई थी। इसे **'कम्पेन देस इण्डेस ओरियण्टलेस'** कहा जाता था।
- 1668 ई. में **फ्रेंसिस कैरो** के नेतृत्व में इस कम्पनी ने **सूरत** में अपना प्रथम व्यापारिक कारखाना स्थापित किया।
- 1669 ई. में मर्कारा ने गोलकुण्डा के सुल्तान की स्वीकृति से **मसूलीपट्टम** में दूसरी फ्रेंच फैक्टरी स्थापति की।
- 1673 ई. में कम्पनी के निदेशक फ्रेसिंस मार्टिन ने बलिकोण्डापुर के सूबेदार शेरखां लोदी से **पर्दुचुरी** नामक एक गांव प्राप्त किया, जिसे कालान्तर में पाण्डिचेरी नाम से प्रसिद्धि मिली।
- 1692 ई. में बंगाल में शाइस्ता खां (बंगाल का मुगल सूबेदार) की अनुमति से फ्रेंच कम्पनी ने **चन्द्रनगर** की स्थापना की।
- 1731 ई. में चन्द्रनगर के प्रमुख फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले की नियुक्ति से भारत में फ्रांसीसी प्रभावी बने।

डेनिस

- डेनमार्क की ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना 1616 ई. में हुई थी। इस कम्पनी ने 1620 ई. में **त्रैंकोबार** (तमिलनाडु) और 1676 ई. में **सेरामपुर** (बंगाल) में अपनी व्यापारिक कोठियां स्थापित की थीं।
- **सेरामपुर डेनों** का प्रमुख व्यापारिक केन्द्र था। 1845 ई. में डेनों ने अपनी भारतीय वाणिज्यिक कम्पनी को अग्रेजों को बेच दिया।

गवर्नर, गवर्नर जनरल एवं वायसराय तथा उनके कार्यकाल की घटनाएँ

- **रॉबर्ट क्लाइव (प्रथम शासन)** (1757-60): बिहार में शोरे के व्यापार का एकाधिकार, शाह आलम की पराजय।
- **रॉबर्ट क्लाइव (दूसरा शासन)** (1765-67): अवध नवाब से सन्धि, नागरिक सुधार, बंगाल में द्वैध शासन प्रणाली।
- **वारेन हेस्टिंग्स** (1772-85): 1772 में बंगाल से द्वैध शासन प्रणाली की समाप्ति, प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध (1775-82), द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1780-84), **कलकत्ता में एक उच्चतम न्यायालय की स्थापना** (1774), पिट्स का भारत अधिनियम (1784), दीवानी और फौजदारी अदालतों की शुरुआत, विलियम जोन्स की सहायता से एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना (1784), कलकत्ता मदरसा की स्थापना (1781)।

- **लॉर्ड कार्नवालिस** (1786-93): तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1790-92); कलकत्ता, मुर्शिदाबाद, ढाका तथा पटना में 4 प्रान्तीय न्यायालयों की स्थापना; जिला जज के नए पद की शुरुआत, थाने की शुरुआत, पुलिस विभाग की पद्धति की शुरुआत, बंगाल में स्थायी भूमिकर प्रणाली की शुरुआत भारतीय सिविल सेवा के जनक।
- **सर जॉन शोर** (1793-98) : स्थायी बन्दोबस्त लागू करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका, 1793 का चार्टर एक्ट पारित, अहस्तक्षेप की नीति।
- **लॉर्ड वेलेजली** (1798-1805): सहायक सन्धि प्रणाली द्वारा भारत में अंग्रेजी साम्राज्य का विस्तार। चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध (1799), द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध (1803-1804), फोर्ट विलियम कॉलेज की **कलकत्ता** में स्थापना, मद्रास प्रेसीडेन्सी का गठन।
- **लॉर्ड मिन्टो प्रथम** (1807-13): 1813 का चार्टर एक्ट, ट्रावनकोर के विद्रोह का अन्त, अमृतसर की सन्धि (1809)।
- **लॉर्ड हेस्टिंग्स** (1813-23) : प्रथम आंग्ल-नेपाल युद्ध (1814-16), तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1817-18), पिण्डारियों का दमन (1817-18), भारतीयों को उच्च पदों पर नियुक्त करने वाला पहला गवर्नर।
- **लॉर्ड एमहार्स्ट** (1823-28) : प्रथम आंग्ल बर्मा युद्ध (1824-26)।
- **लॉर्ड विलियम बेंटिक** (1828-33 एवं 1833-35) : सती प्रथा समाप्त (1982), शिशु बालिका की हत्या पर प्रतिबंध, अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम, चार्टर एक्ट पारित (1833), भारत का प्रथम गवर्नर जनरल, कलकत्ता में मेडिकल कॉलेज की स्थापना (1835), अंग्रेजी) को भारत की सरकारी भाषा बनाना, सरकारी सेवाओं में भेदभावपूर्ण नीति को समाप्त करने की घोषणा।
- **सर चार्ल्स मेटकाफ** (1835-36): प्रेस से प्रतिबन्ध हटा।
- **लॉर्ड ऑकलैड** (1836-42): प्रथम आंग्ल युद्ध (1839-42), कलकत्ता से दिल्ली तक ग्राण्ड ट्रंक रोड की मरम्मत।
- **लॉर्ड एलनबरो** (1842-44) - प्रथम अफगान युद्ध की समाप्ति, सिन्ध की अंग्रेजी राज्य में विलय।
- **लॉर्ड हार्डिंग प्रथम** (1844-48): प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध (1848-49), लाहौर की संधि, बालिका शिशु-हत्या तथा नरबलि प्रथा का निषेध।
- **लॉर्ड डलहौजी** (1848-56) : द्वितीय आंग्ल सिख युद्ध (1848-49), पंजाब का अंग्रेजी राज्य में विलय (1849), द्वितीय आंग्ल-बर्मा युद्ध (1850), प्रसिद्ध व्यपगत के सिद्धान्त का प्रतिपादन, **भारतीय सिविल सेवा के लिए प्रतियोगिता परीक्षा की शरुआत (1853)**, लोक निर्माण विभाग की स्थापना, शिमला ग्रीष्मकालीन राजधानी बना, तोपखाने का मुख्यालय कलकत्ता से मेरठ लाया गया, गोरख रेजीमेन्ट की स्थापना, रुड़की में प्रथम इन्जीनियरिंग कॉलेज की स्थापना, **प्रथम रेलवे लाइन बम्बई से थाने** के बीच खुली (1853), **डाक-तार प्रणाली की शुरुआत** (1854)। भारत में पहली बार डाक टिकटों का प्रचलन।
- **वायसराय लॉर्ड कैनिंग** (1856-56 एवं 1858-62): **अन्तिम गवर्नर जनरल तथा भारत का प्रथम वायसराय**। 1857, का विद्रोह, 1856 का विधवा पुनर्विवाह अधिनियम; 1858 का अधिनियम, महारानी विक्टोरिया भारत की साम्राज्ञी घोषित; **बम्बई, मद्रास** तथा **कलकत्ता** में विश्वविद्यालयों की स्थापना, 1861 का भारत परिषद् अधिनियम; **कलकत्ता, बम्बई** और **मद्रास** में हाईकोर्ट की स्थापना।
- **लॉर्ड एल्गिन प्रथम** (1862-63): वहाबी आन्दोलन का अन्त।
- **सर जॉन लारेन्स** (1864-68): प्रसिद्ध **'अहस्तक्षेप नीति'**, भूटान के साथ युद्ध (1865), यूरोप के साथ समुद्री टेलीग्राफ सर्म्पक का आरम्भ।
- **लॉर्ड मेयो** (1869-72): भारत में **पहली बार जनगणना कार्य** (1871), अजमेर में मेयो कॉलेज की स्थापना, वित्तीय विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया की शुरुआत, स्टैटिस्टिकल सर्वे ऑफ इण्डिया की स्थापना, प्राइमरी पाठशालाओं की स्थापना, सिंचाई के साधनों में वृद्धि की, 1872 में कृषि विभाग की स्थापना।
- **लॉर्ड नार्थब्रुक** (1872-76) : स्वेज नहर की शुरुआत, पंजाब का कूका आंदोलन।
- **लॉर्ड लिटन प्रथम** (1876-80) : अकाल आयोग का गठन, दिल्ली में भव्य दरबार का आयोजन एवं महारानी विक्टोरिया को **'कैसर-ए-हिन्द'** की उपाधि (1877), प्रसिद्ध वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट के तहत् भारतीय प्रेसों पर अनेक पाबन्दियां, सिविल सेवा परीक्षा में सम्मिलित होने वाले भारतीयों

EBD_7243

की आयु 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष की गयी, द्वितीय आंग्ल-अफगान युद्ध, **वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट लागू** (पाय्रनियर अखबार में वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट का समर्थन।

- **लॉर्ड रिपन** (1880-84): प्रथम कारखाना अधिनियम (1881), भारत में नियमित जनगणना (दशकीय) कार्य (1881), देशी भाषा समाचार पत्र अधिनियम रद्द (1882), केन्द्र की वित्त-व्यवस्था का विभाजन (1882), स्कूली शिक्षा हेतु हंटर आयोग की नियुक्ति (1882), स्थानीय स्वशासन की शुरुआत (1882), प्रसिद्ध इलबर्ट बिल विवाद।
- **लॉर्ड डफरिन** (1884-88): भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885), तृतीय आंग्ल-बर्मा युद्ध में ऊपरी बर्मा पर कब्जा।
- **लॉर्ड लेंसडाउन** (1888-94): दूसरा फैक्ट्री एक्ट (1891), भारत परिषद् अधिनियम (1892) पारित, लड़कियों के विवाह को न्यूनतम आयु 10 वर्ष से बढ़ाकर 12 वर्ष।
- **लॉर्ड एल्गिन द्वितीय** (1894-99): लायल कमीशन के नाम से अकाल आयोग का गठन।
- **लॉर्ड कर्जन** (1894-99 एवं 1904-05) : कृषि विभाग की स्थापना (1991), सर टॉमस रैले की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय आयोग की स्थापना, सर एण्टनो मैकडॉनल की अध्यक्षता में अकाल आयोग का गठन (1900), सर डब्लू. फ्रेजर की अध्यक्षता में पुलिस आयोग का गठन (1902), मोनक्रीफ की अध्यक्षता में सिंचाई आयोग की नियुक्ति (1901), केन्द्रीय जांच विभाग की स्थापना, वाणिज्य विभाग एवं उद्योग विभाग की स्थापना, विश्वविद्यालय अधिनियम (1904), भारतीय लोकसेवा मण्डल का गठन (1905), प्राचीन स्मारक अधिनियम (1904), बंगाल विभाजन (1905)। स्वदेशी आन्दोलन आरम्भ।
- **लॉर्ड मिन्टो द्वितीय** (1905-10): मुस्लिम लीग का गठन (1906), आंग्ल- रूसी मित्रता (1907), कांग्रेस का सूरत में विभाजन (1907), मार्ले मिन्टो सुधार पारित।
- **लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय** (1910-16): सम्राट जार्ज पंचम के सम्मान में दिल्ली में अभिषेक दरबार (1911 ई.), राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानान्तरित (1912), बंगाल विभाजन का निराकरण, प्रथम विश्वयुद्ध की शुरुआत (1914), मदन मोहन मालवीय द्वारा हिन्दू महासभा की स्थापना (1915), बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना (1916), गांधीजी का भारत आगमन (1915)।
- **लॉर्ड चेम्सफोर्ड** (1916-21): दो होमरूल दलों की स्थापना, गांधीजी का चम्पारण सत्याग्रह (1917), रॉलेट एक्ट (1919), शिक्षा पर सैडलर आयोग की स्थापना (1917), मान्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार या भारत शासन अधिनियम पारित (1919), पुणे में महिला विश्वविद्यालय की स्थापना (1916), जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड (13 अप्रैल, 1919)।
- **लॉर्ड रीडिंग** (1921-26): प्रिन्स ऑफ वेल्स का भारत आगमन (1921), चौरी-चौरा काण्ड (1922), मोपला विद्रोह (1921), असहयोग आन्दोलन का स्थगन, रॉलेट एक्ट का निराकरण, इंग्लैण्ड और भारत में एक साथ आई.सी.एस. परीक्षाओं का आयोजन, काकोरी ट्रेन डकैती, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना, गांधीजी को छः वर्षो की सजा, दिसम्बर 1922 में देशबन्धु चितरंजन दास की अध्यक्षता में 'कांग्रेस-खिलाफत स्वराज्य पार्टी' की स्थापना।
- **लॉर्ड इरविन** (1926-31): साइमन कमीशन भारत आया (1928), कांग्रेस का लाहौर सत्र एवं पूर्ण स्वराज्य का संकल्प (1929), नेहरू रिपोर्ट की प्रस्तुति (1928), कांग्रेस द्वारा सविनय अवज्ञा आन्दोलन की शुरुआत (1930), लन्दन में प्रथम गोलमेज सम्मेलन सम्पन्न, गांधी-इरविन समझौता (1931), सविनय अवज्ञा आन्दोलन का स्थगन, बटलर कमीशन की नियुक्ति।
- **लॉर्ड वेलिंटन** (1931-36): द्वितीय गोलमेज सम्मेलन असफल (1931), गांधीजी द्वारा सविनय अवज्ञा आन्दोलन का पुनः आरम्भ, कांग्रेस के प्रतिनिधित्व के बिना तृतीय गोलमेज सम्मेलन (1932), रैमसे मैक्डोनाल्ड द्वारा साम्प्रदायिक निर्णय की घोषणा (1932), गांधी और अम्बेडकर के बीच पूना समझौता (1932), 1935 का भारत सरकार अधिनियम पारित, कांग्रेस समाजवादी पार्टी की स्थापना (1934)।
- **लॉर्ड लिनलिथगो** (1936-43): 7 प्रान्तों में कांग्रेस सरकार (1937), सुभाष चन्द्र बोस द्वारा फॉरवर्ड ब्लॉक का गठन (1939), लाहौर संकल्प (23 मार्च, 1940) में जिन्ना द्वारा 'द्वि-राष्ट्र सिद्धान्त प्रस्तुत' लिनलिथगो द्वारा अगस्त प्रस्ताव (1940), 8 अगस्त, 1942 को कांग्रेस द्वारा 'भारत

छोड़ो' संकल्प पारित, क्रिप्स मिशन भारत आया।

- **लॉर्ड वेवेल** (1943-47): सी. राजगोपालचारी द्वारा सी.आर. सूत्र प्रस्तुत, कैबिनेट मिशन का भारत आगमन व प्रस्ताव की घोषणा (1946), कांग्रेस द्वारा कैबिनेट मिशन योजना अस्वीकार, नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस द्वारा अन्तरिम सरकार का गठन (1946), संविधान सभा की प्रथम बैठक।
- **लॉर्ड माउन्टबेटन** (1947-48): अन्तिम ब्रिटिश वायसराय, **'जून थर्ड प्लान'** के तहत् भारत विभाजन की घोषणा, एटली द्वारा ब्रिटेन के 'हाउस ऑफ कॉमन्स' में भारत की स्वतन्त्रता का विधेयक प्रस्तुत, देश का विभाजन, भारत स्वतंत्र। माउण्टबेटन अन्तिम ब्रिटिश वायसराय एवं स्वतन्त्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल।
- **चक्रवर्ती राजगोपालाचारी** (1948-50): स्वतंत्र भारत के प्रथम एवं अन्तिम भारतीय गवर्नर जनरल।

प्रमुख कृषक आन्दोलन

1855-56 का संथाल विद्रोह:

- संथाल लोग सिंहभूमि, बड़ा भूमि, हजारीबाग, मिदनापुर, बांकुड़ा तथा वीरभूमि प्रदेश में रहते थे।
- 1793 की स्थाई भूमि कर व्यवस्था के अनुसार इनकी पैतृक भूमि जमींदारों की हो गई। बंगाल व उत्तर भारत में साहूकारों ने यहाँ सूदखोरी प्रारम्भ कर दी।
- पुलिस तथा सरकारी कर्मचारियों के अत्याचारों के विरुद्ध इन्होंने **सीद्धू व कान्हू** के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया तथा अपनी सरकार स्थापित करने की घोषणा की।
- सेना ने कार्यवाही की तथा फरवरी, 1856 ई. में नेताओं को बंदी बनाकर विद्रोह को दबा दिया गया।

बंगाल में नील कृषकों की हड़ताल

- 1858 से 1860 तक चला यह आंदोलन अंग्रेज भूमिपतियों के विरुद्ध किया गया।
- कम्पनी के कुछ अवकाश प्राप्त अधिकारी बंगाल तथा बिहार के जमींदारों से भूमि प्राप्त कर नील की खेती करवाते थे।
- वे किसानों पर अत्याचार करते थे व मनमानी शर्तों पर खेती करने के लिए बाध्य करते थे।
- अप्रैल, 1860 में पाबना और नादिया जिलों के समस्त कृषकों ने भारतीय इतिहास की प्रथम कृषक हड़ताल की।
- यह हड़ताल जैसोर, खुलना, राजशाही, ढाका, मालदा, दीनाजपुर आदि में फैल गई।
- 1860 में विवश होकर अंग्रेजों ने एक नील आयोग नियुक्त किया।
- 1859 ई. में नील विद्रोह का वर्णन दीनबंधु मित्र ने अपने नाटक 'नील दर्पण' में किया।
- 1875 में दक्कन में मराठी किसानों ने मारवाड़ी तथा गुजराती साहूकारों के विरुद्ध विद्रोह किया। ये साहूकार ऋणों में हेराफरी करके किसानों का शोषण करते थे।
- 1879 में कृषक राहत अधिनियम बनाया गया।

चम्पारण सत्याग्रह

- उत्तर भारत में चम्पारन जिले के यूरोपीय नील उत्पादक बिहार के नील कृषकों का शोषण करते थे।
- गांधीजी ने 1917 में बाबू राजेन्द्र प्रसाद की सहायता से कृषकों को अहिंसात्मक असहयोग करने की प्रेरणा दी और सत्याग्रह किया। जिससे बिहार सरकार ने क्रुद्ध होकर गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया।
- जांच समिति रिपोर्ट के बाद चम्पारन कृषक अधिनियम पारित किया गया।

खेड़ा (केरा) आन्दोलन

- यह आंदोलन मुख्यत: बम्बई सरकार के विरुद्ध था। 1918 में सूखे के कारण फसलें नष्ट हो गईं, जिससे कृषक कर देने में असमर्थ थे।
- सरकार बिना किसी छूट के भू-कर पूरा वसूलना चाहती थी। फलस्वरूप किसानों ने गांधी जी के नेतृत्व में सत्याग्रह किया, जो जून 1918 तक चलता रहा। अन्त में सरकार को मांगें माननी पड़ीं।

किसानों सभाओं का गठन

- 1928 में आध्रं प्रान्तीय सभा तथा 1936 में लखनऊ में अखिल भारतीय किसान सभा का गठन हुआ। जिसके प्रथम अध्यक्ष स्वामी सहजानंद सरस्वती थे।

अन्य कृषक आन्दोलन

- बंगाल का तेभाग आन्दोलन, हैदराबाद, दक्कन का तेलंगाना आन्दोलन, पश्चिमी भारत में वर्ली विद्रोह आदि।

18 वीं शताब्दी में हुए जन-आन्दोलन

अंग्रेजी शासन के दौरान हुए महत्त्वपूर्ण विद्रोह			
आन्दोलन/विद्रोह	**प्रभावित क्षेत्र**	**सम्बन्धित नेता/नेतृत्व**	**विद्रोह का वर्ष**
संन्यासी विद्रोह	बिहार, बंगाल	केना सरकार, दिरजीनारायण	1763-1800 ई.
फकी विद्रोह	बंगाल	मजनुशाह एवं चिराग अली	1776-77 ई.
चुआर विद्रोह	बाकुड़ा (बंगाल)	दुर्जन सिंह	1798 ई.
पॉलीगरो का विद्रोह	तमिलनाडु	वीर पी. काट्टावाग्मान	1799-01 ई.
वेलुथम्पी विद्रोह	ट्रावनकोर	वेलुथम्पी	1808-09 ई.
भील विद्रोह	पश्चिमी घाट	सेवाराम	1825-31 ई.
रामोसी विद्रोह	पश्चिमी घाट	चितर सिंह	1822-29 ई.
पागलपन्थी विद्रोह	असोम	टीपू	1825-27 ई.
अहोम विद्रोह	असोम	गोमधर कुँवर	1828 ई.
वहाबी आन्दोलन	बिहार, उत्तर प्रदेश	सैयद अहमद टीटूमीर	1831 ई.
कोल आन्दोलन	छोटा नागपुर (झारखण्ड)	नारायण राव	1831-32 ई.
खासी विद्रोह	असोम	तीरथ सिंह	1833 ई.
फैराजी आन्दोलन	बंगाल	शरीयतुल्ला	1839 ई.
संथाल विद्रोह	बंगाल, बिहार	सिद्धू-कान्हू	1855-57 ई.
मुण्डा विद्रोह	बिहार	बिरसा मुण्डा	1899-1900 ई.
पाइक विद्रोह	उड़ीसा	बख्शी जंगबन्धु	1817-1825 ई.
नील आन्दोलन	बंगाल	दिगम्बर	1859-60 ई.
पाबना विद्रोह	पाबना (बंगाल)	ईशानचन्द्र राय एवं शम्भुपाल	1873-76 ई.
दक्कन विद्रोह	महाराष्ट्र	-	1874-75 ई.
मोपला विद्रोह	मालाबार (केरल)	अली मुदालियार	1920-22 ई.
कूका आन्दोलन	पंजाब	भगत जवाहरमल	-
रम्पा विद्रोह	आन्ध्र प्रदेश	सीताराम राजू	1879-1922 ई.
तानाभगत आन्दोलन	बिहार	जतरा भगत	1914 ई.
तेभागा आन्दोलने	बंगाल	कम्पाराम सिंह एवं भवन सिंह	1946 ई.
तेलंगाना आन्दोलन	आन्ध्र प्रदेश	-	1946 ई.

19 वीं सदी में धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आंदोलन

राजाराम मोहन राय एवं ब्रह्म समाज

- ये ऐसे प्रथम शिक्षित व्यक्ति थे, जिन्होंने सामाजिक कुरीतियों के विरोध में आवाज उठायी।
- इन्हें आधुनिक भारत का जन्मदाता कहा जाता है।
- इन्होंने जाति प्रथा, सती प्रथा, मूर्ति पूजा आदि का विरोध किया।
- 1816 ई. में कलकत्ता में पाश्चात्य शिक्षा के लिए उन्होंने **हिन्दू कॉलेज** की स्थापना की।
- अंग्रेजी, यूनानी और हिन्दी की पढ़ाई से राम मोहन राय आधुनिक विचारों की ओर आकर्षित हुए। इन्होंने उपनिषदों का अंग्रेजी में रूपान्तरण किया।

- ये भारत में पत्रकारिता के जन्मदाता कहे जाते हैं।
- 1828 ई. में इन्होंने **ब्रह्म समाज** की स्थापना की। इसका उद्देश्य शाश्वत, सर्वाधार, अपरिवर्त्य ईश्वर की पूजा थी जो सारे विश्व का कर्त्ता और रक्षक है।
- 1833 ई. में ब्रिस्टल (इंग्लैण्ड) में इनकी मृत्यु हो गयी।
- इस संस्था को 1842 ई. में **महर्षि देवेन्द्र नाथ टैगोर** ने नव जीवन प्रदान किया। केशव चन्द्रसेन ने इसे लोकप्रिय बनाया।
- 1867 में केशव चन्द्रसेन ने **आदि ब्रह्म समाज** की स्थापना की।

प्रार्थना समाज

- 1867 ई. में केशव चन्द्र सेन की प्रेरणा से बम्बई में एक प्रार्थना समाज की स्थापना की गयी।
- इसके प्रमुख नेता **महादेव गोविन्द रानाडे** तथा **एन. जी. चन्द्रावरकर** थे।
- इसी समाज द्वारा स्थापित दलित जाति मण्डल तथा दक्कन शिक्षा सभा ने प्रशंसनीय कार्य किया।

आर्य समाज (1875)

- इसके संस्थापक स्वामी दयानन्द थे।
- यह आन्दोलन पाश्चात्य प्रभावों की प्रतिक्रियास्वरूप उदित हुआ था।
- स्वामी दयानन्द के गुरु स्वामी विरजानन्द थे। स्वामी दयानन्द तथा उनके गुरु दोनों ही शुद्ध वैदिक परम्परा में विश्वास करते थे।
- उन्होंने **'पुनः वेदों की ओर चलो'** तथा **'हिन्दुओं के लिए भारत'** नारा दिया।
- स्वामी दयानन्द का वास्तविक नाम **मूलशंकर** था।
- इनका जन्म 1824 में गुजरात की मौरवी रियासत के निवासी एक ब्राह्मण कुल में हुआ।
- इन्होंने 1863 ई. में झूठे धर्मों की खण्डिनी पताका लहराई।
- 1875 ई. में प्राचीन वैदिक धर्म की पुन: स्थापना के लिए इन्होंने बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की।
- सितम्बर, 1897 ई. में शिकागो के धार्मिक सम्मेलन में भाग लेकर इन्होंने वेदों पर भाष्य भी लिखे।
- स्वामी जी धार्मिक क्षेत्र में मूर्तिपूजा, बहुदेवतावाद, अवतारवाद, पशुबलि, श्राद्ध और झूठे कर्मकाण्ड तथा अन्धविश्वासों को स्वीकार नहीं करते थे। सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने छुआ-छूत, जातिप्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया।
- ये पहले समाज सुधारक थे, जिन्होंने शूद्र तथा स्त्री को वेद पढ़ने तथा ऊँची शिक्षा प्राप्त करने, यज्ञोपवीत धारण करने तथा अन्य सभी ऊँची जाति तथा पुरुषों के बराबर अधिकार के लिए आन्दोलन किया।
- इनके अनुयायियों ने शिक्षा के प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इन्होंने **'सत्यार्थ प्रकाश'** (हिन्दी) नामक पुस्तक लिखी, जिसे आर्य समाज की बाइबिल कहा जाता है।
- इनके अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि आन्दोलन प्रारम्भ किया।
- स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना (हरिद्वार) 1902 ई. में की।

रामकृष्ण मिशन

- स्वामी विवेकानन्द ने अपने गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस की स्मृति में 1896 ई. में रामकृष्ण मिशन की स्थापना बंगाल के बेलूर में की।
- इनका पहला नाम नरेन्द्र नाथा दत्त था। स्वामी विवेकानन्द एक कर्मयोगी और वेदान्ती थे।
- 1893 ई. में शिकागो में धर्मों की संसद में भाग लेकर इन्होंने पाश्चात्य जगत को भारतीय संस्कृति व दर्शन से अवगत कराया।
- इन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि वे ऐसे धर्म में विश्वास नहीं करते जो किसी विधवा के आंसू नहीं पोंछ सकता अथवा किसी अनाथ को रोटी नहीं दे सकता।

रहनुमाई मजदायान सभा

- पारसियों में धर्म सुधार के लिए 1851 ई. में रहनुमाई माजदायान सभा की स्थापना बम्बई में नौरोजी फरदोनजी, दादाभाई नौरोजी, एम.एस. बेंगाली और अन्य लोगों ने की।

सिक्खों में सुधार

- उन्नीसवीं सदी के अन्त में अमृतसर में **खालसा कॉलेज** की स्थापना से यह आंदोलन आरम्भ हुआ।
- ये सुधार 1920 ई. में पंजाब में अकाली आन्दोलन से और तेज हो गए।
- इनका मुख्य उद्देश्य गुरुद्वारों के प्रबन्ध को स्वच्छ बनाना था।
- अकालियों ने 1922 ई. में नया सिख एक्ट बनाने को विवश किया।
- इस एक्ट की सहायता से, लेकिन बहुधा सीधी कार्यवाही द्वारा सिक्खों ने भ्रष्ट महंतों को गुरुद्वारों से बाहर निकाल दिया।

EBD_7243

अहमदिया आन्दोलन

- 19वीं शताब्दी का यह एक प्रसिद्ध मुस्लिम आन्दोलन था।
- इसके प्रवर्तक मिर्जा गुलाम अहमद (1839-1908) थे।
- यह आन्दोलन पंजाब के गुरुदासपुर जिले के अन्तर्गत कादियां नगर से हुआ।
- मिर्जा साहब ने अपने सिद्धान्तों को अपनी पुस्तक **बराहीन-ए-अहमदिया**, जो 1880 में प्रकाशित हुई, में व्याख्यायित किया।
- 1891 ई. में मिर्जा साहब ने स्वयं को मसीह-उल-ऊद अथवा वह मसीहा कहा, जिसका वर्णन मुस्लिम धर्म पुस्तकों में है और 1904 ई. में अपने आपको कृष्ण का अवतार कहना आरम्भ कर दिया।
- इस आन्दोलन में भी मुसलमानों ने समाज सेवा और विद्या प्रसार में बहुत प्रशंसनीय कार्य किया।
- मुसलमानों में सुधार करने के क्षेत्र में सर सैयद अहमद खां तथा मौलवी चिराग दिल्ली का महत्त्वपूर्ण योगदान है।
- चिराग दिल्ली में ईस्ट इंडिया कंपनी ने नौकरी की तथा अपने सहधर्मियों को कम्पनी प्रशासन में समुचित स्थान ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया।
- वे बहुविवाह विरोधी थे तथा मुस्लिम स्त्रियों की स्थिति में सुधार लाने का सतत् प्रयास करते रहे।

सर सैयद अहमद

- सैयद अहमद 1838 में कंपनी की नौकरी में आए तथा 1857 तक स्वामिभक्त बने रहे।
- 1857 के बाद उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य और मुसलमानों के बीच बेहतर संबंध बनाने का प्रयास किया।
- विदेश से लौटने के बाद इन्होंने मुस्लिम समाज की कुरीतियां त्याग कर पाश्चात्य शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया।
- 1875 ई. में इन्होंने अलीगढ़ में एंग्लो-मुस्लिम स्कूल की स्थापना की जो बाद में (1921 ई.) अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय (AMU) के रूप में विख्यात हुआ।
- 1911 में श्री नारायण राव मल्हार जोशी ने बम्बई में सामाजिक समस्याओं पर विचार के लिए सोशल सर्विस लीग (1910) की स्थापना की।

थियोसोफिकल सोसायटी

- एक रूसी महिला, मैडम एच.पी. ब्लावटस्की (1831-91) तथा एक अमेरिकन सैनिक अफसर कर्नल एच.एस. आल्कॉट ने 1875 में संयुक्त राज्य अमेरिका में थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना की।
- वे 1875 में भारत आए और मद्रास के निकट 1886 ई. में **आड्यार** में इसके मुख्य केन्द्र की स्थापना की।
- ऐनी बेसेंट ने 1886 ई. में इस सोसायटी में प्रवेश किया और चार साल बाद वे भारत में बस गयीं।
- इस सोसायटी का उद्देश्य प्राचीन हिन्दुवाद को पुन: स्थापित करना तथा पुराने विधि विधानों की तार्किक व्याख्या करना था।
- ऐनी बेसेंट ने बनारस में सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल की स्थापना की, जो बाद में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (BHU) के रूप में विकसित हुआ।

प्रमुख समाजसुधार

अधिनियम	वर्ष	गवर्नर जनरल	विषय
शिशुवध प्रतिबंध	1798-1805 ई.	वेलेजली	शिशु हत्या पर प्रतिबंध
सती प्रथा प्रतिबंध	1829 ई.	लॉर्ड विलियम बैंटिक	सती प्रथा पर पूर्ण प्रतिबंध
दास प्रथा पर प्रतिबंध	1843 ई.	एलनबरो	1833 के चार्टर अधिनियम द्वारा 1843 में दास्ता को प्रतिबंधित कर दिया गया।
हिन्दू विधवा पुनर्विवाह	1856 ई.	लॉर्ड केनिंग	विधवा विवाह की अनुमति
नैटिव मैरिज एक्ट	1872 ई.	लॉर्ड नार्थ ब्रुक	अन्तर्जातीय विवाह
ऐज ऑफ कंसेप्ट एक्ट	1891 ई.	लैंस डाउन	लड़की के लिए विवाह की आयु 12 वर्ष निर्धारित
शारदा एक्ट	1930 ई.	इरविन	विवाह के लिए लड़की की न्यूनतम आयु 14 वर्ष एवं लड़कों की न्यूनतम आयु 18 वर्ष निर्धारित

आत्म-सम्मान आन्दोलन

- यह तमिलनाडु में चलाया गया। इसके नेता **ई. वी. रामास्वामी नायकर** थे।

सत्यशोधक समाज

- इसकी स्थापना **'ज्योतिबा फुले'** ने महाराष्ट्र में की। फुले ने मानव के अधिकारों पर एवं जाति प्रथा के उन्मूलन पर जोर दिया।
- 1851 में पूना में अछूतों के एक स्कूल की स्थापना की गई।
- मद्रास के कारीगर जातियों ने सरकारी नौकरियों से ब्राह्मणों का एकाधिकार समाप्त करने की मांग की और राजस्व बोर्ड को एक आवेदन दिया, जिसमें बिना किसी भेद-भाव के सभी सरकारी ओहदों पर भर्ती करने का आवेदन किया।
- उन्होंने 1917 ई. में अब्राह्मणों के हितों के प्रसार के लिए **जस्टिस** (न्याय) नामक एक समाचार पत्र प्रारम्भ किया।
- 1932 में गांधीजी ने अखिल भारतीय हरिजन संघ की स्थापना की।
- बिहार में जगजीवन राम ने दलितों पर आधारित एक कृषि मजदूर संगठन की स्थापना की।
- आन्ध्र में कम्मा तथा रेड्डी दो ब्राह्मण जातियों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर ब्राह्मणों में तरक्की की।
- डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने **'स्वतंत्र मजदूर पार्टी'** की स्थापना द्वारा दलित किसानों और मजदूरों को संघर्ष के लिए प्रेरित किया।

भारतीय शिक्षा का विकास

- सर विलियम जोंस ने 1778 ई. में **एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल** की स्थापना की। इसका उद्देश्य भारतीय इतिहास और संस्कृति का अध्ययन करना था।
- वारेन् हेस्टिंग्स ने 1781 ई. में **अरबी** एवं **फारसी** भाषा के अध्ययन के लिए **कलकत्ता मदरसा** की स्थापना की।
- 1791 ई. में **जोनाथन डंकन** के प्रयासों से **बनारस** में एक **संस्कृत विद्यालय** की स्थापना हुई, जिसका उद्देश्य हिन्दी कानून एवं दर्शन की शिक्षा देना था।
- लॉर्ड वेलेजली ने 1800 ई. में कंपनी के असैनिक अधिकारियों के लिए **कलकत्ता** में **फोर्ट विलियम कॉलेज** की स्थापना की।
- 1817 ई. में राजा राममोहन रॉय, डेविड हेयर तथा हाईड ईस्ट ने मिलकर **कलकत्ता** में हिन्दू कॉलेज की स्थापना की।
- **आंग्ल प्राच्य विवाद–** 10 सदस्यों की लोक शिक्षा की एक समिति में एक दल अंग्रेजी शिक्षा का समर्थक था, जिसका नेता **मैकाले** था। दूसरा दल प्राच्य शिक्षा का समर्थक था, जिसका नेता **एच.टी. प्रिन्सेप** था।

शिक्षा आयोग/समितियाँ		
आयोग/समिति	**गठन वर्ष एवं अध्यक्ष**	**विषय/सुझाव**
विश्वविद्यालय अधिनियम	1904 टॉमस रैले	विश्वविद्यालय शिक्षा, गवर्नर को विश्वविद्यालय की क्षेत्रीय सीमाएँ निर्धारण का अधिकार
सैडलर आयोग	1917-19 एम. ई. सैडलर	कलकत्ता विश्वविद्यालय की शिक्षा समस्या
हर्टोग समिति	1929 फिलिप हर्टोग	प्राथमिक शिक्षा का राष्ट्रीय महत्त्व
वर्धा योजना	1937 महात्मा गांधी	हस्त उत्पादक कार्य
सार्जेण्ट योजना	1944 केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड	11 वर्ष तक के बच्चों हेतु निःशुल्क एवं अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा
राधाकृष्ण आयोग	1948-49 डॉ. राधाकृष्ण	शिक्षा को समवर्ती सूची में डालना, 1953 में विवि अनुदान आयोग की स्थापना
कोठारी आयोग	1964 दौलत सिंह कोठारी	शिक्षा के लचीलेपन पर जोर
यशपाल समिति	1992 डॉ. यशपाल	बच्चों की पुस्तकों के बोझ को कम करना

- अंग्रेजी शिक्षा के समर्थक के अनुसार शिक्षा उच्च वर्ग से निम्नवर्ग को छन-छनकर प्राप्त होती रहेगी। यह **शिक्षा का निस्पंदन सिद्धांत** (Filtration Theory) था।
- **चार्ल्स ग्राण्ट** को आधुनिक शिक्षा का जनक माना जाता है।
- 1854 ई. के **चार्ल्सवुड डिस्पैच** (शिक्षा का मैग्नाकार्टा) के तहत् **कलकत्ता, मद्रास** और **बम्बई** में तीन विश्वविद्यालय स्थापित किए गए।
- **प्राथमिक** एवं **माध्यमिक** शिक्षा के लिए 1882 में **हंटर** आयोग की स्थापना की गयी। इसके अनुसार प्राथमिक शिक्षा स्थानीय भाषा में दी जानी चाहिए।

ब्रिटिश शासन का आर्थिक प्रभाव

- औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में भारत के सभी आर्थिक संसाधनों पर अंग्रेजों का एकाधिकार स्थापित हो गया। ब्रिटिश शासन ने भू-स्वामित्व के नए स्वरूप व भू-राजस्व के नए तरीके से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बहुत ही नुकसान पहुँचाया। अंग्रेजों ने निम्न तीन पद्धतियों से भू-राजस्व की वसूली को क्रियान्वित किया-

(i) **स्थायी बन्दोबस्त :** इस पद्धति को **कार्नवालिस** (1793) द्वारा लागू किया गया था, जिसका प्रभाव क्षेत्र बंगाल, बिहार, उड़ीसा, पूर्वी उ. प्र तथा उत्तरी कर्नाटक में विस्तृत था। इसमें जमींदार किसानों से प्राप्त भू-राजस्व को 10-11वाँ अपने पास रखता था तथा शेष कंपनी को देता था। इसमें किसानों का बहुत शोषण होता था।

(ii) **रैयतवाड़ी व्यवस्था : टॉमस मुनरो** तथा **कैप्टन रीड** ने इस पद्धति को अपनाया। सबसे पहले इसे तमिलनाडु के बारामहल जिले में लागू किया गया। फिर मद्रास, बम्बई का कुछ भाग, पूर्वी बंगाल, असम तथा कुर्ग के कुछ भाग को शामिल किया गया। इसमें किसान ही वास्तविक भू-स्वामी होता था तथा उपज का 33-50% भाग लगान के रूप में देना पड़ता था।

(iii) **महालवाड़ी व्यवस्था :** इसे 1822 में लागू किया गया। इसका प्रभाव क्षेत्र दक्षिण के कुछ जिले, संयुक्त प्रांत, आगरा, अवध, मध्य प्रांत तथा पंजाब के कुछ हिस्से में विस्तृत था। इस व्यवस्था में लगान एक किसान के स्थान पर पूरे गाँव के आधार पर ली जाती थी। इसे **हाल्ट मैकेंजी** द्वारा लागू किया गया था।

भारतीय हस्त शिल्प का पतन

- इंग्लैंड में 18वीं शताब्दी में हुई औद्योगिक क्रांति ने भारतीय कुटीर उद्योगों को काफी नुकसान पहुँचाया।
- अंग्रेजों ने निम्न तरीके से भारतीय हस्तशिल्प व अन्य उद्योगों को पतनोन्मुख किया-

(i) भारतीयों द्वारा निर्मित वस्तुओं पर आयात करने पर भारी कर लगाना।

(ii) भारत के कच्चे माल को कम कीमत पर इंग्लैंड को निर्यात करना।

(iii) कर मुक्त व्यापार प्रणाली को भारत पर थोपना।

(iv) भारत में उद्योग लगाने हेतु विदेशी उद्योगपतियों को ज्यादा सुविधाएँ देना।

(v) अंग्रेजों के निर्देशानुसार भारतीय शिल्पियों को उत्पादन हेतु बाध्य करना।

भारत में आधुनिक उद्योगों का प्रादुर्भाव

- अंग्रेजों ने भारत में आर्थिक शोषण की भावना से सड़कें, रेलवे, डाकतार, बंदरगाहों का निर्माण, सिंचाई योजनाएँ तथा बैंक आदि का विकास किया।
- सूती वस्त्र उद्योग की शुरुआत 1850 ई. के बाद हुआ। स्वदेशी आंदोलनों के प्रभाव के कारण इस उद्योग ने काफी प्रगति की।
- भारतीय उद्योगपति **जमशेदजी टाटा** ने 1907 ई. में लौह-इस्पात कम्पनी की स्थापना की।
- इस कम्पनी द्वारा कच्चे लोहे का उत्पादन 1911 ई. में तथा 1913 ई. में इस्पात निर्माण की शुरुआत की।

1857 की क्रांति

- डलहौजी की हड़प नीति, वेलेजली की सहायक संधि, ईसाई धर्म प्रचार के कारण भारतीयों में असंतोष, आर्थिक शोषण, पदोन्नति में भेद-भाव 1857 की क्रांति के प्रमुख कारण थे।

- **चर्बी लगे कारतूसों का प्रयोग** इस क्रांति का तात्कालिक कारण था।
- 29 मार्च, 1857 को मंगलपाण्डे ने **बैरकपुर** छावनी में विद्रोह किया। वे **34वीं नेटिव इंफैन्ट्री** के सैनिक थे। इन्होंने **लेफ्टिनेंट वाग** की हत्या कर दी तथा **मेजर सार्जेंट ह्यूस्टन** पर गोली चला दी। मंगलपाण्डे को 8 अप्रैल, 1857 को फांसी दे दी गयी।
- 10 मई, 1857 को मेरठ की पैदल टुकड़ी **20NI** ने क्रांति की शुरुआत की।
- विद्रोहियों ने 11 मई, 1857 को दिल्ली पर अधिकार कर लिया तथा **बख्त खाँ** के सहयोग से **बहादुरशाह द्वितीय** को अपना नेता घोषित किया।
- झांसी की पराजय के बाद **तात्या टोपे** (रामचन्द्र पाण्डुरंग) नेपाल चले गए, किन्तु एक जमींदार मित्र के विश्वासघात के कारण पकड़े गए तथा 18 अप्रैल, 1859 को उन्हें फांसी दे दी गयी।
- रानी झांसी अंग्रेज जनरल ह्यूरोज से लड़ते हुए 17 जून, 1858 को वीरगति को प्राप्त हो गयीं।
- मौलवी अहमदुल्लाह ने अंग्रेजों के विरुद्ध जेहाद का नारा दिया।
- बिहार में **शाहाबाद, पटना, गया** विद्रोह के केन्द्र थे। बिहार में विद्रोह का नेतृत्व **जगदीशपुर** (आरा) के **कुँवर सिंह** ने किया।

1857 से सम्बन्धित पुस्तक एवं लेखक

पुस्तक	लेखक
फर्स्ट वार ऑफ इंडियन इंडिपेन्डेन्स	वी.डी. सावरकर
द ग्रेट रिबेलियन	अशोक मेहता
सिपाय म्युटिनी एण्ड द रिवोल्ट ऑफ 1857	आर.सी. मजूमदार
एटीन फिफ्टी सेवन	एस.एस. सेन
हिस्ट्री ऑफ इंडियन म्युटिनी	टी.आर. होम्स

1857 का विप्लव : एक दृष्टि में

केन्द्र	विद्रोही नेता	विद्रोह का समय	विद्रोह के दमनकर्त्ता	समर्पण का दिन
दिल्ली	बहादुरशाह, जफरबख्त	11 मई, 1857	निकलसन व हडसन	20 सितम्बर, 1857
कानपुर	नानासाहब, तात्याटोपे	5 जून, 1857	कॉलिन कैम्पबेल	दिसम्बर, 1857
लखनऊ	बेगम हजरत महल, विरजिस कादिर	4 जून, 1857	कैम्पबेल	मार्च, 1858
झांसी	रानी लक्ष्मीबाई	4 जून, 1857	जनरल ह्यूरोज	17 जून, 1858
जगदीशपुर	कुँवर सिंह	12 जून, 1857	मेजर विलियम टेलर	दिसम्बर, 1858
फैजाबाद	मौलवी अहमदुल्ला	जून, 1857	जनरल रेनार्ड	5 जून, 1858
बरेली	खान बहादुर	जून, 1857	बिंसेट आयर	1858

- नेतृत्व की कमी, संगठन एवं एकता का अभाव इस विद्रोह की असफलता का प्रमुख कारण थे।

1857 की क्रांति पर प्रमुख विचार

- **सर जॉन सीले (John Seeley):** एक संस्थापित सरकार के विरुद्ध भारतीय सेना का विद्रोह।
- **एल. ई. आर. रीज (L. E. R. Rees):** 'धार्मिक युद्ध' (धर्मान्धों का ईसाईयों के विरुद्ध युद्ध)।
- **जे. जी. मेडले (J. G. Medley):** 'जातियों का युद्ध'।
- **टी. आर. होम्ज (T. R. Holmes):** 'बर्बरता तथा सभ्यता के बीच युद्ध'।
- **सर जेम्स आउट्रम (Sir James Outram):** 'हिन्दू मुस्लिम षड्यंत्र'।
- **बेन्जामिन डिजरैली (Benjamin Disraeli):** 'राष्ट्रीय विद्रोह'।
- **बी. डी. सावरकर (V. D. Sawarklar):** 'सुनियोजित स्वतंत्रता संग्राम'।
- **आर. सी. मजूमदार (R. C. Majumdar):** 'सैन्य विद्रोह' (स्वतन्त्रता संग्राम नहीं था)।
- **डॉ. एस. एन. सेन (S. N. Sen):** 'स्वतंत्रता संग्राम'।

EBD_7243

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885 ई.)

- 28 दिसम्बर, 1885 ई. को एक ब्रिटिश सेवानिवृत्त अधिकारी **ए. ओ. ह्यूम** द्वारा इण्डियन नेशनल यूनियन का गठन हुआ। **दादा भाई नौरोजी** ने इसका नाम **'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस'** दिया।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पहली बैठक (अधिवेशन) 28-31 दिसम्बर 1885 में बम्बई में **गोकुल दास तेजपाल महाविद्यालय** में हुई।
- पहले इस अधिवेशन को **पुणे** में बुलाने की योजना थी, किन्तु वहाँ प्लेग फैल जाने के कारण इसे बम्बई में आयोजित करना पड़ा।
- कांग्रेस के पहले अधिवेशन में कुल **72** सदस्यों ने हिस्सा लिया। इसके पहले अध्यक्ष **व्योमेश चन्द्र बनर्जी** (डब्ल्यू.सी.बनर्जी) थे।
- 1885-1905 तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में उदारवादियों का आधिपत्य रहा। उदारवादी नेताओं में दादाभाई नौरोजी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, फिरोजशाह मेहता, गोपालकृष्ण गोखले जस्टिस रानाडे इत्यादि प्रमुख थे।
- उदारवादी नेताओं ने संवैधानिक तरीकों से भारत में सुधारों की मांग की।
- गरमपंथी (उग्र विचार के नेता) स्वराज की मांग को मुद्दा बनाना चाहते थे। बाल गंगाधर तिलक, विपिनचन्द्र पाल, लाला लाजपत राय प्रमुख गरमपंथी नेता थे।
- भारत में उग्रवाद के उदय का श्रेय बाल गंगाधर तिलक को दिया जाता है।

कांग्रेस से पूर्व महत्त्वपूर्ण राजनीतिक संगठन

राजनीतिक संगठन	वर्ष एवं स्थान	संस्थापक
बंग भाषा प्रकाशन सभा	1836 (बंगाल)	राजा राममोहन राय
लैण्ड होल्डर्स सोसायटी	1838 (कलकत्ता)	द्वारकानाथ टैगोर
ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी	1839 (लंदन)	विलियम एडम
बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसायटी	1843 (कलकत्ता)	जार्ज थॉमसन, प्यारी चंद्र मित्र
ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन	1851 (कलकत्ता)	राधाकांत देव, देवेन्द्रनाथ टैगोर
ईस्ट इंडिया एसोसिएशन	1866 (लंदन)	दादाभाई नौरोजी
पूना सार्वजनिक सभा	1870 (पूना)	महादेव गोविंद रानाडे, जी. वी. जोशी
इंडिया लीग	1875 (कलकत्ता)	शिशिर कुमार घोष
इंडियन एसोसिएशन	1876 (कलकत्ता)	सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, आनंद मोहन बोस
मद्रास महाजन सभा	1884 (मद्रास)	वी. राघवचारी, वी. सुब्रह्मण्यम अय्यर, पी. आनंद चार्लू
बॉम्बे प्रसीडेंसी एसोसिएशन	1885 (बम्बई)	फिरोजशाह मेहता, बद्रूद्दीन तैयबजी, के.टी. तैलंग।

- भारत में क्रांतिकारी गतिविधियों की शुरुआत 1897 में महाराष्ट्र से मानी जाती है।
- भारत में **आर्य बान्धव समिति** नामक क्रांतिकारी संस्था तिलक की प्रेरणा से स्थापित की गई थी।
- तिलक द्वारा 1893 में **गणपति त्यौहार** तथा 1895 ई. में **शिवाजी उत्सव** की घोषणा की गई।
- 1897 ई. में चापेकर बंधुओं द्वारा पूना में दो अधिकारियों **रैण्ड** तथा **एमहर्स्ट** की हत्या कर दी गई।
- वी. डी. सावरकर द्वारा 1904 में नासिक में स्थापित **मित्रमेला** नामक संस्था ने ही **अभिनय भारत** के रूप में प्रसिद्धि पाई।
- 1905 ई. में श्याजी कृष्ण वर्मा ने लंदन में **भारत स्वशासन समिति** का गठन किया, जिसे प्राय: **इण्डिया हाउस** की संज्ञा दी जाती थी। वी. डी. सावरकर, हरदयाल और मदनलाल ढींगरा इस क्रांतिकारी संगठन के सदस्य बन गये।
- 1909 ई. में मदनलाल ढींगरा ने कर्नल विलियम **कर्जन वाइली** की जो इण्डिया ऑफिस में राजनीतिक सलाहकार था, गोली मार कर हत्या कर दी।
- 1907 ई. के सूरत अधिवेशन में दोनों वर्गों में टकराव हो गया।

- नरम दल के रास बिहारी घोस चुनाव जीत गए। उग्रवादी तिलक पराजित हुए। उन्हें कांग्रेस से निष्कासित भी कर दिया गया।
- 1908 में उन्हें 6 वर्ष की जेल हो गई। विपिनचन्द्र पाल ने अवकाश ले लिया। उन्हें कांग्रेस से निष्कासित भी कर दिया गया।
- अरविंद घोष पांडिचेरी और लाला लाजपतराय अमरीका चले गए। जब तिलक जेल से छूट कर आए तो उग्रवादियों की पुन: गतिविधियाँ शुरू हो गई।
- 1916 ई. में उग्रवादी कांग्रेस में पुन: प्रवेश कर गए और उनका प्रभुत्व बढ़ता ही गया।

भारतीय क्रांतिकारी संगठन			
संगठन	**स्थापना वर्ष**	**संस्थापक**	**स्थान**
हिन्दू धर्म संघ	19वीं शताब्दी के अंत में	चापकर बंधु	महाराष्ट्र
मित्र मेला	1899	वी. डी. सावरकर, गणेश सावरकर	महाराष्ट्र
अनुशीलन समिति	1902	वरींद्र कुमार घोष, जतींद्र नाथ बनर्जी, प्रबोध मित्र, पुलिनदास, सतीश चन्द्र बोस, प्रमथनाथ मित्र	बंगाल
अभिनव भारत सामज	1904	वी. डी. सावरकर	महाराष्ट्र
भारत माता सोसायटी	1904	जे. एम. चटर्जी	पंजाब
भारत माता समिति	1908	नीलकंठ ब्रह्मचारी, वंची अय्यर	मद्रास
स्वदेश बांधव समिति	1905	–	बारिसाल
युगांतर	1906	बरींद्र घोष, भूपेंद्र नाथ दत्त	बंगाल
हिंदुस्तान रिपिब्लिकन एसोसिएशन	1924	शचींद्रनाथ सान्याल, रामप्रसाद बिस्मिल योगेश चटर्जी	उत्तर प्रदेश
हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन	1928	चंद्रशेखर आजाद	दिल्ली
इंडियन रिपब्लिकन आर्मी	1930	सूर्यसेन	बंगाल
विदेशों में संचालित संगठन			
इंडिया होम रूल सोसाइटी	1904	श्याम जी कृष्ण वर्मा	इंग्लैण्ड
भारतीय स्वतंत्रता लीग	1907	द्वारका नाथ दास	अमेरिका
हिंद एसोसिएशन ऑफ अमेरिका	1913	सोहन सिंह भाकना	अमेरिका
गदर पार्टी (युगांतर आश्रम)	1914	लाला हरदयाल, रामचंद्र, बरकतुल्ला	अमेरिका
इंडियन इंडिपेडेन्स लीग	1914	लाला हरदयाल, वीरेन्द्र नाथ चट्टोपाध्याय	जर्मनी
इंडियन इंडिपेडेन्स लीग और स्वतंत्र सरकार	1915	राजा महेंद्र प्रताप	अफगानिस्तान
इंडियन इंडिपेंडेन्स लीग	1942	रास बिहारी बोस	जापान
आजाद हिंद फौज	1942	रास बिहारी बोस	जापान
हिंद संघ	1913	सोहन सिंह भाकना	अमेरिका

EBD_7243

बंगाल विभाजन (1905 ई.)

- बंगाल में राष्ट्रीय चेतना को नष्ट करने के उद्देश्य से 20 जुलाई, 1905 ई. को लॉर्ड कर्जन ने बंगाल विभाजन की घोषणा की, जो 16 अक्टूबर 1905 से प्रभावी हुआ।
- इस विभाजन के विरोध में कांग्रेस द्वारा 7 अगस्त, 1905 को कलकत्ता के टाउन हॉल में स्वदेशी आंदोलन की घोषणा के बाद बहिष्कार प्रस्ताव पारित किया गया।
- उस दिन (16 अक्टूबर) पूरे बंगाल में शोक दिवस के रूप में मनाया गया। रविन्द्र नाथ टैगोर ने सम्पूर्ण बंगाल में इस दिन को **राखी दिवस** के रूप में मनाया गया।
- स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन को **तिलक, लाजपत राय, अरबिन्द घोष** ने पूरे देश में प्रसारित किया। इसका प्रसार पंजाब, बम्बई, आन्ध्र तथा मद्रास में भी हुआ।
- बंगाल विभाजन के बाद से युगांतर, संध्या जैसे कई समाचार-पत्र राष्ट्रवाद का समर्थन करने लगे।
- 1908 (अप्रैल) में **खुदीराम बोस** तथा **प्रफ्फुल चाकी** ने **किंग्सफोर्ड** (मुजफ्फरपुर के जज) को मारने की कोशिश की।
- बहिष्कार आंदोलन में विदेशी वस्त्रों के साथ-साथ स्कूलों, अदालतों, सरहारी नौकरियों, उपाधियों आदि का भी बहिष्कार किया गया।

स्वदेशी एवं स्वराज
1905 के बनारस अधिवेशन में गोपाल कृष्ण गोखले की अध्यक्षता में कांग्रेस ने **स्वदेशी** तथा 1906 के कलकत्ता अधिवेशन में दादा भाई नौरोजी की अध्यक्षता में कांग्रेस ने **स्वराज** की मांग की।

मुस्लिम लीग की स्थापना (1906 ई.)

- वर्ष 1906 में **आगाखाँ** एवं **सलीमुल्ला खां** के नेतृत्व में **ढाका** में मुस्लिम लीग की स्थापना की गयी। इसका उद्देश्य मुसलमानों के राजनीतिक अधिकारों की रक्षा करना और ब्रिटिश सरकार के प्रति मुसलमानों की निष्ठा में वृद्धि करना था।
- मुस्लिम लीग के प्रथम अध्यक्ष **बाकर-उल-मुल्क मुश्ताक हुसैन** थे। **नवाब सलीमुल्ला** लीग के संस्थापक अध्यक्ष थे।

सूरत अधिवेशन (कांग्रेस में विभाजन)- 1907 ई.

- बंगभंग के पश्चात् गोखले ने लंदन जाकर ब्रिटिश सरकार के समक्ष बंगाल विभाजन रद्द करने की प्रार्थना की। जब उनकी प्रार्थना पर ब्रिटिश सरकार द्वारा कोई ध्यान नहीं दिया गया, तब एक नवीन उग्र विचारधारा का जन्म हुआ।
- लाला लाजपतराय, विपिनचंद्र पाल, बालगंगाधर तिलक इस विचारधारा के प्रमुख समर्थक तथा उदारवादी नीतियों के विरोधी थे।
- 1907 के सूरत अधिवेशन में मतभेद और स्पष्ट हो गए अब कांग्रेस दो दल- नरमदल और उग्र दल में विभाजित हो गई। विभाजन का तात्कालिक कारण अध्यक्षों के चुनाव का मुद्दा था।
- अंग्रेजी सरकार ने मार्लेमिण्टो सुधारों द्वारा उदारवादियों को अपने पक्ष में करने का प्रयास किया।

मार्ले मिण्टो सुधार (1909)

- भारत सचिव मार्ले ने लॉर्ड-मिण्टो से बातचीत करके 1909 ई. में एक सुधार अधिनियम पारित करवाया, जो मार्ले-मिण्टो सुधार के नाम से जाना जाता है।
- इस एक्ट के द्वारा केन्द्रीय व प्रांतीय सभाओं की सदस्य संख्या तथा उनके अधिकारों में कुछ वृद्धि की गई।
- हिन्दू-मुसलमानों के लिए अलग-अलग निर्वाचन क्षेत्रों की व्यवस्था की गई।
- केवल अलीगढ़ विचारधारा के मुसलमान पृथक् निर्वाचन क्षेत्र सुविधा से प्रसन्न हुए। मार्ले-मिण्टो सुधार अधिनियम के उदारवादी नेताओं में भी निराशा फैल गई।

राजद्रोह सभा अधिनियम (1911)

- मार्ले मिण्टो सुधार अधिनियम से उग्रवादी सर्वाधिक असंतुष्ट हो गए। अंग्रेजी सरकार के खिलाफ क्रांतिकारी गतिविधियाँ और तेज हो गईं।
- इन गतिविधियों के दमन हेतु ब्रिटिश सरकार ने 1911 ई. में राजद्रोह सभा अधिनियम पारित किया।
- लाला लाजपतराय, अजीतसिंह व अनेक क्रांतिकारी नेताओं को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

दिल्ली दरबार (1911)

- लार्ड हार्डिंग ने 1911 ई. में दिल्ली में एक भव्य दरबार का आयोजन किया। इस दरबार में इंगलैंड से सम्राट **जॉर्ज पंचम** तथा **महारानी मैरी** को बुलाया गया।
- दरबार में बंगाल विभाजन के रद्द हो की घोषणा की गई साथ ही यह भी घोषित किया गया कि अब भारत की राजधानी कलकत्ता के स्थान पर दिल्ली होगी।

- बांग्ला भाषा क्षेत्र को एक प्रांत बना दिया गया तथा एक अन्य घोषणा से **बिहार** व **उड़ीसा** के नाम से एक नवीन प्रांत बनाया गया।

गदर दल का गठन (1913)

- 1 नवम्बर, 1913 ई. को संयुक्त राज्य अमेरिका स्थित **सान फ्रांसिस्को** नगर में पंजाब के महान क्रांतिकारी नेता **लाला हरदयाल** ने **रामचन्द्र** तथा **बरकतुल्ला** के सहयोग से गदर दल का गठन किया।
- अन्य देशों में भी इसकी शाखाएं खाली गईं। रास बिहारी बोस, राजा महेन्द्रप्रताप, अब्दुल रहमान तथा कामा आदि इस दल के प्रमुख सदस्य थे।
- प्रथम विश्व युद्ध आरंभ होने पर लाला हरदयाल जर्मनी चले गए। यहाँ बर्लिन में उन्होंने **भारतीय स्वतंत्रता समिति** का गठन किया।

लखनऊ पैक्ट (1916)

- बाल्कान युद्ध के पश्चात् लीग अंग्रेजों से रूष्ट थी। अत: 1913 के अधिवेशन में मुस्लिम लीग ने अपने लखनऊ अधिवेशन में स्वराज प्राप्त करने का प्रस्ताव पारित किया।
- इस प्रकार बदलती हुई परिस्थितियाँ तथा हिन्दू-मुस्लिम नेताओं के सहयोग से 1916 में लखनऊ में कांग्रेस व लीग के मध्य एक समझौता हुआ, जो लखनऊ पैक्ट के नाम से जाना जाता है।
- इसी अधिवेशन में दोनों संस्थाओं में मेल करने के उद्देश्य से कांग्रेस व लीग ने एक संयुक्त समिति बनाकर एक योजना तैयार की। इस योजना को **कांग्रेस-लीग योजना** कहा जाता है।
- इस समझौते में मुस्लिम लीग की साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व की माँग को मान लिया गया, जिसके बाद अत्यंत ही घातक परिणाम निकले।
- इसी अधिवेशन में तिलक को आमंत्रित कर उग्रवादियों को कांग्रेस में शामिल कर लिया गया।

होमरूल आंदोलन (1916)

- 1914 ई. में जेल से रिहा होने के पश्चात् बाल गंगाधर तिलक ने उग्रवादियों को संगठित करना प्रारंभ किया।
- 1916 ई. में उन्होंने श्रीमती ऐनी बेसेन्ट के साथ मिलकर स्वशासन की प्राप्ति हेतु होमरूल आंदोलन चलाया।
- श्रीमती ऐनी बेसेन्ट की प्रेरणा से 28 अप्रैल, 1916 ई. को **पूना** में प्रथम होमरूल लीग की स्थापना की।
- सितम्बर, 1916 में श्रीमती ऐनी बेसेन्ट ने मद्रास में होमरूल लीग की स्थापना की।
- तिलक ने अपने **'मराठा'** तथा **'केसरी'** व ऐनी बेसेन्ट ने अपने **'कॉमन वील'** तथा **'न्यू इण्डिया'** समाचार पत्रों के माध्यम से गृह शासन की जोरदार माँग का प्रचार किया व शीघ्र ही यह आंदोलन समस्त भारत में फैल गया।
- 1917 ई. में अंग्रेजी सरकार ने विद्यार्थियों को इस आंदोलन से दूर रहने की चेतावनी दी। श्रीमती ऐनी बेसेन्ट को गिरफ्तार कर लिया गया।
- उनकी गिरफ्तारी का विरोध करने के लिए तिलक सत्याग्रह शुरू ही करने जा रहे थे कि ऐनी बेसेन्ट को सरकार ने रिहा कर दिया।
- 20 अगस्त, 1917 को ब्रिटिश संसद में भारत सचिव द्वारा यह घोषणा की गई कि भारत को उत्तरदायी शासन दिया जाएगा, परिणामस्वरूप यह आंदोलन समाप्त हो गया।

रॉलेट एक्ट (1919 ई.)

- भारत में क्रांतिकारी गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए ब्रिटिश सरकार ने न्यायाधीश रॉलेट की अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की।
- फरवरी 1919 में रॉलेट ने दो विधेयक प्रस्तावित किए, जो पारित होने के पश्चात् रॉलट एक्ट के नाम से प्रसिद्ध हुए।
- भारतीय नेताओं द्वारा इस कानून का विरोध किया गया, किन्तु सरकार ने 21 मार्च, 1919 ई. को इसे लागू कर दिया।
- इस एक्ट के अनुसार किसी भी व्यक्ति को संदेह मात्र होने पर उसे गिरफ्तार किया जा सकता था अथवा गुप्त मुकदमा चलाकर अपराधी को दण्डित किया जा सकता था।
- इस एक्ट को भारतीयों ने काले कानून की संज्ञा दी। संपूर्ण भारत में इस एक्ट के विरुद्ध प्रदर्शन हुआ।

जलियाँवाला हत्याकाण्ड (1919)

- रॉलेट के विरोध करने पर पंजाब के लोकप्रिय नेता **सैफुद्दीन किचलू** और **सत्यपाल** को गिरफ्तार कर लिया गया।
- महात्मा गाँधी की गिरफ्तारी से जनता में और अधिक उत्तेजना फैल गई।
- 10 अप्रैल, 1919 को अमृतसर का शासन सैनिक अधिकारियों को सौंप दिया गया। 13 अप्रैल बैसाखी के दिन अमृतसर के जलियाँवाला बाग में भारतीयों द्वारा एक आम सभा का आयोजन किया गया।

- जब सभा चल रही थी, तब अंग्रेज **जनरल ओ डायर** ने उसे गैर कानूनी घोषित कर भीड़ पर बिना चेतावनी दिए गोली चला दी, जिसमें लगभग 400 व्यक्ति मारे गए तथा दो हजार के आसपास घायल हुए।
- भारतीय इतिहास में यह घटना जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के नाम से प्रख्यात है। इस घटना से अंग्रेज और भारतीयों के बीच वैमनस्यता और बढ़ गई। इस घटना का संपूर्ण भारत पर असर पड़ा।

महात्मा गांधी का भारत आगमन 1915 ई.

- स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन के इस चरण में गांधीजी का सक्रिय राजनीति में प्रवेश हुआ। इस दौरान उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ अनेक आंदोलन किए।
- इससे पूर्व 1894 ई. तक गांधीजी अफ्रीका में रहे। वहाँ उन्होंने भारतीय भेदभाव के विरुद्ध सफल सत्याग्रह आंदोलन चलाया।
- 1915 में भारत आकर गांधीजी भारतीय राजनीति में प्रवष्टि हुए।
- 1916 ई. में अहमदाबाद के समीप **साबरमती आश्रम** की स्थापना की।
- 1917 में बिहार स्थित चंपारण में किसान आंदोलन का नेतृत्व किया।
- 1918 में खेड़ा में **कर नहीं** (No Taxation) आंदोलन चलाया तथा अहमदाबाद में **मिल मजदूरों** की लड़ाई लड़ी।
- प्रारंभ में गांधीजी भारत में संवैधानिक सुधारों के हिमायती थे, इसीलिए उन्होंने तिलक एवं एनी बेसेन्ट द्वारा चलाए गए होमरूल लीग आंदोलन में भाग नहीं लिया।
- 1919 के अमृतसर अधिवेशन के बाद गांधीजी ने अंग्रेजी शासक के खिलाफ खुलकर आवाज उठाई और भारतीय राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लिया। आंदोलन के इस चरण में अनेक घटनाएँ घटित हुईं।

खिलाफत आंदोलन (1919-1922)

- ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ने भारतीय मुसलमानों को उनके धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप न करने का वचन दिया था। टर्की में "खलीफा" के पद को समाप्त करने पर मुसलमानों द्वारा विरोध किया गया।
- प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद ब्रिटिश सरकार ने तुर्की साम्राज्य का विघटन करने का निश्चय किया, जिसके कारण भारत में खिलाफत आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और 17 अक्टूबर, 1919 ई. को अखिल भारतीय स्तर पर खिलाफत दिवस मनाया गया और आंदोलन प्रारंभ हो गया।
- **मौलाना मोहम्मद अली** और **शौकत अली** ने खिलाफत कमेटी का गठन कर अग्रेजों के खिलाफ खिलाफत आंदोलन प्रारंभ कर दिया।
- इस आंदोलन का समर्थन कांग्रेस द्वारा किया गया, क्योंकि महात्मा गांधी के विचार से अंग्रेजों के खिलाफ हिंदू और मुसलमानों के एक होने का यह स्वर्णिम अवसर था।
- जब मुस्तफा कमाल पाशा के नेतृत्व में टर्की में खलीफा की सत्ता समाप्त कर दी गई तो 1922 में यह आंदोलन स्वत: ही समाप्त हो गया।

असयोग आंदोलन (1920-1922)

- गांधीजी को रॉलेट एक्ट एवं मांटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार में बड़ा आघात लगा मुसलमानों ने भी खिलाफत कमेटी का गठन कर खिलाफत आंदोलन शुरू किया।
- इस आंदोलन में उन्हें कांग्रेस का सहयोग मिला। हिन्दू और मुसलमान पुन: एक हुए।
- इसी दौरान गांधीजी ने अंग्रेजों के खिलाफ असयोग आंदोलन चलाने का निश्चय किया।
- सितम्बर, 1920 में कलकत्ता में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन बुलाया गया। इस अधिवेशन में गांधीजी ने असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव रखा। **देशबंधु चितरंजन दास** एवं **मदनमोहन मालवीय** ने इस प्रस्ताव पारित हो गया।
- गांधीजी एवं अली बंधुओं ने समस्त भारत का भ्रमण कर आंदोलन का वातावरण तैयार कर लिया। दिसंबर, 1920 ई. के कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में इस प्रस्ताव की पुष्टि कर दी गई।
- आंदोलनकारियों ने सरकारी उपाधियों को त्याग दिया। वकीलों ने अदालतों का बहिष्कार किया। विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय त्याग दिए गए। विदेशी वस्त्रों का परित्याग कर जगह-जगह होली जलाई गई। देशी वस्त्रों को अपनाया गया।
- 1921 ई. में अहमदाबाद में हुए कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में आंदोलन को और अधिक तेज करने का निर्णय लिया गया।
- गांधीजी ने पत्र द्वारा वायसराय लॉर्ड रीडिंग को सूचित किया कि यदि सरकार ने अपना रवैया न बदला तो शीघ्र ही कर न देने का आंदोलन चलाया जाएगा।
- गांधीजी ने कर न देने का आंदोलन चलाने के लिए ब्रिटिश सरकार को एक सप्ताह का समय दिया था। यह समय अभी पूरा भी नहीं हुआ था कि 5 फरवरी 1922 ई. को उत्तर प्रदेश

स्थित **गोरखपुर जिले** के **चौरी-चौरा** ग्राम में विरोधस्वरूप पुलिस द्वारा एक जुलूस को रोकने का प्रयास किया, जिससे जनता और पुलिस में मुठभेड़ हो गई। पुलिस भागकर थाने में छिप गई। अब उत्तेजित भीड़ ने थाने को घेर कर उसमें आग लगा दी।

- जनता की इस हिंसात्मक कार्यवाही में एक थानेदार व 21 सिपाही जल गए और उनकी मृत्यु हो गयी।
- गांधीजी ने 12 फरवरी को बारदोली में कांग्रेस कार्य समिति की एक बैठक बुलाई, जिसमें चौरी-चौरा काण्ड के कारण सामूहिक सत्याग्रह व असहयोग आंदोलन स्थगित करने का प्रस्ताव पारित कराया।
- प्रस्ताव में रचनात्मक कार्यक्रमों पर जोर दिया गया। इस प्रकार गांधीजी का असहयोग आंदोलन स्थगित हो गया।

स्वराज्य दल की स्थापना (1923)

- असहयोग आंदोलन के स्थगन से स्वराज्य प्राप्ति की मंजिल दूर हो गई थी।
- जनता के मार्ग निर्देशन के लिए किसी नए कार्यक्रम की आवश्यकता थी। अत: जेल से छूटने के बाद चितरंजनदास ने कौंसिल प्रवेश का प्रचार किया।
- 1922 ई. में गया में हुए कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में डॉ. अंसारी वं राजगोपालाचारी से दिसम्बर 1922 में मतभेद होने के कारण चितरंजन दास ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया तथा इलाहाबाद में मोतीलाल नेहरू एवं चितरंजन दास ने मार्च, 1923 में **स्वराज्य पार्टी** स्थापना की और पार्टी के कार्यक्रमों का प्रचार करने के लिए देश का तूफानी दौर किया।
- 1923 के चुनाव में इस पार्टी ने भाग लिया और सफलता प्राप्त की तथा विधान सभा में सम्मिलित होकर सरकार के समक्ष परेशानियाँ उत्पन्न कीं।

साइमन कमीशन का बहिष्कार (1927)

- 1919 के अधिनियम में यह बात कही गई थी कि भारत में संवैधानिक सुधार हेतु प्रति दस वर्ष बाद एक कमीशन की नियुक्ति की जाएगी, जो प्रशासनिक सुधार की जाँच कर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा।
- इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु ब्रिटिश संसद ने एक वकील **सर जान साइमन** की अध्यक्षता में सात सदस्यीय दल भारत भेजा।
- इस कमीशन का एक भी सदस्य भारतीय नहीं था। भारत में साइमन कमीशन का जगह-जगह पर काले झण्डे दिखाकर विरोध प्रदर्शित किया गया।
- साइमन वापस जाओ के नारे लगाए गए। **लाहौर में लाला लाजपतराय** के नेतृत्व में विरोध किया गया। जब वे जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे, तो अंग्रेजों द्वारा जुलूस पर लाठी प्रहार किया गया। इस लाठी प्रहार में लाला लाजपतराय गंभीर रूप से घायल हुए और उनकी मृत्यु हो गई। इस पुलिस कार्यवाही का नेतृत्व **साण्डर्स** कर रहा था।
- यद्यपि साइमन कमीशन की बातों की तीखी आलोचना हुई तथा सर शिवस्वामी अय्यर द्वारा इसे रद्दी की टोकरी में फेंकने लायक बताया गया, किन्तु फिर भी इस कमीशन की अनेक बातों को 1935 ई. के अधिनियम में अपना लिया गया।

बारदोली सत्याग्रह

- गुजरात स्थित वारदोली के किसानों को जब जमींदारों द्वारा अधिक लगान वसूल कर उत्पीड़ित किया गया तो लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल ने सन् 1928 ई. में किसानों को संगठित कर सत्याग्रह किया।

लाहौर अधिवेशन और पूर्ण स्वतंत्रता की मांग (1929)

- 1929 में हुए लाहौर के कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता पंडित जवाहरलाल नेहरू ने की। चूंकि ब्रिटिश सरकार ने नेहरू रिपोर्ट को अस्वीकृत कर दिया था। अत: लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव स्वीकार किया गया।
- 31 दिसम्बर, 1929 की रात्रि के 12 बजे कांग्रेस ने भारत का तिरंगा झण्डा फहराया और कांग्रेस कमेटी को अधिकार दिया कि वह उपयुक्त अवसर पर सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ कर दे।
- यह भी तय किया गया कि प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को स्वाधीनता दिवस मनाया जाए। यही कारण है कि 26 जनवरी का दिन भारतीय इतिहास में विशेष महत्त्व का माना जाता है। आगे चलकर भारत का नवनिर्मित संविधान भी 26 जनवरी को ही लागू किया गया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930)

- गांधीजी ने ब्रिटिश सरकार द्वारा निर्धारित लगान, मद्य-निषेध, नमक कर, सैनिक व्यय संबंधी नीतियों के विरुद्ध सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ किया।

EBD_7243

- 12 मार्च, 1930 को गांधीजी अपने चुने हुए **78** साथियों के साथ ब्रिटिश सरकार की अवज्ञा करने के लिए गुजरात प्रदेश के समुद्र तट पर **डांडी** नामक स्थान की ओर नमक कानून तोड़ने के लिए चल पड़े।
- साबरमती आश्रम से डांडी समुद्र तट की 241 मील की यात्रा पैदल चलकर 24 दिनों में तय की गई। इस यात्रा में **सरदार पटेल** भी गांधीजी के साथ थे।
- 5 अप्रैल, 1930 को गांधीजी डांडी पहुँच गए और 6 अप्रैल को प्रातः प्रार्थना के बाद गांधीजी ने नमक कानून तोड़ा।
- सुभाष चन्द्र बोस ने गांधीजी की डांडी यात्रा को नेपोलियन के पेरिस मार्च और मुसोलिनी के रोम मार्च के समान बताया।
- 5 मई, 1930 को गांधीजी को गिरफ्तार करने के बाद करबंदी को भी उपर्युक्त कार्यक्रम में शामिल कर लिया गया।

प्रथम गोलमेज-सम्मेलन (1930)

- भारत की संवैधानिक समस्या को सुलझाने के लिए लंदन में 12 नवम्बर, 1930 को प्रधानमंत्री मैकडोनाल्ड की अध्यक्षता में प्रथम गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया गया।
- इसमें भाग लेने वाले कुछ 89 प्रतिनिधियों में से 16 प्रतिनिधि ब्रिटिश थे।
- संसद ने भी यह अनुभव किया कि बिना कांग्रेस के किसी निर्णय पर नहीं पहुँचा जा सकता, अतः ब्रिटिश सरकार ने वायसराय इरविन को आदेश दिया कि वे गांधीजी से समझौता करें।
- 5 मार्च, 1931 को गांधी व इरविन के बीच एक समझौता हुआ, जो **गांधी इरविन समझौता** के नाम से जाना जाता है।

इस समझौते में इरविन द्वारा स्वीकार की जाने वाली बातें थीं-

- केवल उन्हीं राजनैतिक बंदियों को जेल में रखा जाए जिन पर हिंसक आरोप है। शेष बंदियों को रिहा कर दिया जाए।
- भारतीय समुद्र के किनारे नमक बना सकते हैं।
- शराब एवं विदेशी कपड़ों की दुकान पर भारतीय धरना दे सकते हैं।
- जिन सरकारी कर्मचारियों ने अपनी नौकरी से त्यागपत्र दिया है। उन्हें पद पर बहाल करने में सरकार उदारता दिखाएगी।

इस समझौते में कांग्रेस की ओर से महात्मा गांधीजी द्वारा स्वीकार की जाने वाले बातें थीं-

- सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित कर दिया जाएगा।
- लंदन में आयोजित होने वाले द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस भाग लेगी।
- कांग्रेस ब्रिटिश सामान का बहिष्कार नहीं करेगी।
- गांधीजी पुलिस द्वारा की गई ज्यादतियों के बारे में जांच की मांग नहीं करेंगे।

द्वितीय गोलमेज-सम्मेलन (1931)

- गांधी-इरविन समझौते के पश्चात् जब लंदन में 7 सितम्बर, 1931 को द्वितीय गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया गया तो कांग्रेस की ओर से गांधीजी इस सम्मेलन में पहुंचे।
- वहाँ डॉ. भीमराव अम्बेडकर एवं जिन्ना आदि ने ब्रिटिश सरकार के इशारे पर स्वराज्य के स्थान पर अपनी-अपनी जातियों के लिए सुविधाओं की मांग की। इससे गांधीजी को बहुत दुख पहुंचा और वे खाली हाथ लौट आए।

सविनय अवज्ञा आंदोलन पुनः प्रारंभ

- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन से लौटकर गांधीजी ने पुनः सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ कर दिया।
- यह आंदोलन 1934 तक चलता रहा। अप्रैल 1934 में जनता के कम होते हुए उत्साह को देखकर यह आंदोलन स्थगित कर दिया गया।

तृतीय गोलमेज-सम्मेलन (1932)

- 1932 में लंदन में तीसरा एवं अंतिम गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया गया।
- तीनों गोलमेज सम्मेलनों की सिफारिशों के आधार पर ब्रिटिश सरकार के श्वेत पत्र प्रकाशित किया।
- ब्रिटिश संसद की प्रवर समिति की रिपोर्ट व कुछ संशोधनों के पश्चात् संसद ने 1935 का भारत शासन अधिनियम पारित किया, जो आंशिक संशोधन के पश्चात् भारत में नवीन संविधान लागू होने से पूर्व तक लागू रहा।

कम्युनल अवार्ड-पूना पैक्ट (1932 ई.)

- 16 अगस्त, 1932 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री **रैम्जे मैकडोनाल्ड** ने साम्प्रदायिक पंचाट (कम्यूनल अवार्ड) की घोषणा की।
- इसके विरुद्ध गांधीजी ने 20 सितम्बर, 1932 को **यरवदा जेल** में ही आमरण अनशन शुरू कर दिया, किन्तु 26 सितंबर, 1932 को **मदन मोहन**

मालवीय, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, पुरुषोत्तम दास टंडन तथा **सी. राजगोपालाचारी** के प्रयासों से महात्मा गांधी एवं डॉ. अम्बेडकर के मध्य **पूना समझौता** (पूना पैक्ट) हुआ।

- इस समझौते के अंतर्गत अम्बेडकर ने हरिजनों के पृथक् प्रतिनिधित्व की मांग को वापस ले लिया तथा संयुक्त निर्वाचन के सिद्धान्त को स्वीकार किया।
- हरिजनों के लिए सुरक्षित 75 स्थानों को बढ़ाकर 148 कर दिया गया और केन्द्रीय विधानमण्डल में 18 प्रतिशत सीट आरक्षित की गयी।

क्रांतिकारी राष्ट्रवादी आन्दोलन

- 1922 में असहयोग आंदोलन की समाप्ति की घोषणा के पश्चात् उत्साही युवकों ने क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लिया तथा कांग्रेसी राष्ट्रवादी आंदोलन के समानान्तर क्रांतिकारी आंदोलन चला।
- **चन्द्रशेखर आजाद** की अध्यक्षता में अक्टूबर 1924 में कानपुर में **हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन** की स्थापना हुई। **रामप्रसाद बिस्मिल, शचीन्द्र नाथ सान्याल, अशफाक उल्ला खां** और **रोशन सिंह** इसके मुख्य कार्यकर्ता थे।
- इस संस्था के सदस्यों ने 9 अगस्त, 1925 को लखनऊ के निकट काकोरी में सरकारी खजाने को ले जाती हुई 8 डाउन रेलगाड़ी को लूटा।
- काकोरी काण्ड के आरोप में **रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, रोशनलाल** तथा **राजेन्द्र लाहिड़ी** को फांसी दी गई।
- 1928 में चन्द्रशेखर आजाद तथा भगत सिंह के नेतृत्व में **हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन** की स्थापना दिल्ली में की गई।
- साइमन कमीशन के विरोध के दौरान लाला लाजपत राय पर लाठी चार्ज करने वाले पुलिस अधिकारी **साण्डर्स** की लाहौर में 17 दिसम्बर, 1928 को **भगत सिंह, राजगुरु** तथा **चन्द्रशेखर आजाद** ने हत्या कर दी।
- **भगत सिंह** तथा **बटुकेश्वर दत्त** ने 8 अप्रैल, 1929 को केन्द्रीय असेम्बली में बम फेंका।
- 27 फरवरी, 1931 को चन्द्रशेखर आजाद इलाहाबाद के **अल्फ्रेड पार्क** में एक पुलिस मुठभेड़ में शहीद हुए।
- 23 मार्च, 1931 को भगत सिंह, सुखदेव ओर राजगुरु को लाहौर जेल में फांसी दे दी गई।
- बंगाल में **सूर्यसेन** ने **इण्डियन रिपब्लिकन आर्मी** का गठन किया। यह संस्था **चटगाँव** में क्रियाशील थी।
- **शचीन्द्र नाथ सान्याल** ने **'बंदी जीवन'** तथा भगत सिंह ने **'मै नास्तिक क्यों हूँ'** नामक पुस्तक लिखी।

प्रान्तीय विधानमण्डल (1937 ई.)

- 1937 ई. में प्रान्तीय विधानमण्डलों के चुनाव हुए, जिसमें कांग्रेस ने 8 प्रान्तों में सरकार का गठन किया।
- 1939 ई. में कांग्रेस मन्त्रिपरिषदों ने द्वितीय विश्वयुद्ध में भारत को शामिल करने के विरोध में इस्तीफा दिया। देश में आपातकाल लगाया गया।
- 15 नवम्बर, 1939 को प्रान्तीय मन्त्रिमण्डल के इस्तीफे के बाद मुस्लिम लीग ने 22 दिसम्बर, 1939 को **मुक्ति दिवस** के रूप में मनाया।
- 1939 ई. में सुभाषचन्द्र बोस ने कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्याग-पत्र देकर **फॉरवर्ड ब्लॉक** नामक संगठन की स्थापना की।
- गांधीजी ने 17 अक्टूबर, 1940 को व्यक्तिगत सत्याग्रह आरम्भ किया। **विनोबा भावे** पहले सत्याग्रही थे। **जवाहरलाल नेहरू** दूसरे सत्याग्रही थे।

1937 के चुनाव के पश्चात् विभिन्न प्रान्तों में बनी सरकार

प्रान्त	दल	नेतृत्व (प्रधानमन्त्री)
बंगाल	कृषक प्रजा पार्टी, मुस्लिग लीग	ए. के. फजलुल हक
पंजाब	युनियनिस्ट पार्टी, मुस्लिम लीग	सिकन्दर हयात खां
सिन्ध	सिन्ध यूनाइटेड पार्टी	गुलाम हुसैन हिदायतुल्ला अल्लाबख्श
बिहार	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	श्रीकृष्ण सिंह
संयुक्त प्रान्त	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	गोविन्द बल्लभ पन्त
बम्बई	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	बी. जी. खेर (बाल गंगाधर खेर)
केन्द्रीय प्रान्त	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	नारायण भास्कर खरे
उत्तर-पश्चिमी प्रान्त	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	डॉ. खान साहब

असम	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	गोपीनाथ बारदोलोई (सादुल्लाह के इस्तीफे बाद)
मद्रास	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	सी. राजगोपालाचारी
उड़ीसा	भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	हरे कृष्ण मेहता

अगस्त प्रस्ताव (1940 ई.)

- 1930 ई में द्वितीय विश्व युद्ध प्रारंभ होने पर कांग्रेस ने युद्ध के समर्थन के बदले भारत को स्ततंत्र राष्ट्र घोषित करने का सरकार के पास प्रस्ताव रखा।
- वायसराय लिनलिथगो द्वारा 8 अगस्त, 1940 को अगस्त प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस प्रस्ताव में डोमिनियन स्टेट, युद्ध के बाद एक प्रतिनिधिमूलक संविधान निर्मात्री सभा का गठन, वायसराय की कार्यकारिणी में अतिशीघ्र भारतीय सदस्यों की संख्या में वृद्धि इत्यादि बातें शामिल थीं।

पृथक् पाकिस्तान की मांग (1940 ई.)

- प्रसिद्ध शायर **इकबाल** ने मुसलमानों के लिए पृथक् राष्ट्र का सुझाव सर्वप्रथम (1930 ई. में) लीग के इलाहाबाद अधिवेशन में दिया था।
- **'पाकिस्तान'** नाम इंग्लैण्ड के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में पढ़नेवाले **चौधरी रहमत अली** द्वारा दिया गया।
- **मोहम्मद अली जिन्ना** ने 23 मार्च, 1940 को लीग के लाहौर अधिवेशन में पाकिस्तान की मांग की, किन्तु इस प्रस्ताव में 'पाकिस्तान' शब्द का उल्लेख नहीं था।
- पृथक् पाकिस्तान की मांग को पहली बार मान्यता 1942 ई. के क्रिप्स प्रस्तावों में सन्निहित थी।

प्रमुख क्रान्तिकारी घटनाएं			
वर्ष	**घटना**	**स्थान**	**क्रान्तिकारी**
1897 ई.	कमिश्नर रैंड व एयर्स्ट हत्याकाण्ड	पुणे	चापेकर बंधु
1908 ई.	किंग्सफोर्ड की हत्या का प्रयास (अलीपुर षड्यन्त्र काण्ड)	मुजफ्फरपुर	खुदीराम बोस व प्रफुल्ल चाकी
1909 ई.	जैक्सन हत्याकाण्ड	नासिक	अनन्त कन्हेरे
1909 ई.	कर्नल वाइली हत्याकाण्ड	लन्दन	मदनलाल धींगरा
1912 ई.	वायसराय हार्डिंग की हत्या का प्रयास (दिल्ली बमकाण्ड)	दिल्ली	रासबिहारी बोस व बसन्त कुमार
1927 ई.	काकोरी काण्ड	काकोरी	बिस्मिल व अशफाक उल्ला
1928 ई.	साण्डर्स हत्याकाण्ड	लाहौर	सरदार भगतसिंह
1930 ई.	शस्त्रागार डकैती काण्ड	चटगांव	सूर्यसेन
1940 ई.	जनरल डायर हत्याकाण्ड	लन्दन	ऊधमसिंह

क्रिप्स मिशन (1942 ई.)

- क्रिप्स मिशन 1942 ई. में भारत आया। ब्रिटिश सरकार ने कांग्रेस के साथ राजनीतिक एवं वैधानिक गतिरोध को दूर करने तथा द्वितीय विश्व युद्ध में इंग्लैण्ड के पक्ष में भारत का समर्थन हासिल करने के लिए **स्टैफर्ड क्रिप्स** के नेतृत्व में यह मिशन भारत भेजा।
- इस मिशन के प्रस्ताव में युद्ध के उपरान्त भारत को डोमिनियन स्टेटस देने की बात स्वीकार की गयी थी।
- महात्मा गांधी ने क्रिप्स मिशन को **उत्तरांकित तिथि का चेक** (पोस्टडेटेड चेक) कहा।
- 11 अप्रैल, 1942 ई. को ब्रिटिश सरकार ने क्रिप्स मिशन वापस ले लिया।

भारत छोड़ो आन्दोलन (1942 ई.)

- अगस्त प्रस्ताव और क्रिप्स मिशन की असफलता के पश्चात् 'भारत छोड़ो आंदोलन' की शुरुआत की गयी।

- 8 अगस्त, 1942 ई. को बम्बई के **ग्वालिया टैंक मैदान** में कांग्रेस का अधिवेशन आयोजित हुआ। इस अधिवेशन में भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव पारित हुआ तथा महात्मा गांधी ने **करो या मरो** का नारा दिया।
- 9 अगस्त, 1942 को कांग्रेस के सभी बड़े नेता गिरफ्तार कर लिए गए। गांधीजी को **पूना** के **आगाखां महल** में रखा गया तथा कांग्रेस कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों को **अहमदनगर** के दुर्ग में रखा गया।
- इस आंदोलन का नेतृत्व **जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया** और **अरुणा आसफ अली** ने भूमिगत रहकरर प्रदान किया। **उषा मेहता** ने कांग्रेस रेडियो के प्रसारण का कार्य संभाला।
- गांधीजी ने जेल से छूटने के बाद रचनात्मक कार्यों को शुरू कर पुनः सक्रिय हुए। सरकार ने संघर्ष की संभावना से भयभीत होकर **'वेवेल योजना'** प्रस्तुत की।
- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान **बलिया, तामलुक** और **सतारा** में समानान्तर सरकारें बन गयीं।
- बलिया की समानान्तर सरकार का नेतृत्व **चितू पाण्डेय** ने संभाला। जिलाधिकारी के सभी अधिकार छीन लिए गए तथा जेल में बन्द कांग्रेसी नेताओं को रिहा कर दिया गया।
- बलिया की सरकार एक सप्ताह तथा तामलुक (मिदनापुर) की सरकार दिसम्बर 1942 से सितंबर 1944 तक रही।
- सतारा की समानान्तर सरकार अगस्त 1943 से मई 1946 तक (सबसे लम्बी अवधि तक) रही। इसका नेतृत्व **क्रांति सिन्हा, नाना पाटिल, वाई. वी. चह्वाण** ने किया था।

आजाद हिन्द फौज का गठन (1943 ई.)

- आजाद हिन्द फौज की स्थापना का विचार सर्वप्रथम **कैप्टन मोहन सिंह** के मन में आया तथा उन्होंने इसके प्रथम डिवीजिन का गठन 1 सितम्बर, 1942 को किया, किन्तु यह असफल रहा।
- **रासबिहारी बोस** ने आजाद हिन्द फौज का सफलतापूर्वक गठन किया।
- अक्टूबर 1943 ई. में सुभाष चन्द्र बोस को आजाद हिन्द फौज का सर्वोच्च सेनापति बनाया गया। इसके तीन ब्रिगेडों के नाम **सुभाष ब्रिगेड, गांधी ब्रिगेड** और **नेहरू ब्रिगेड** थे। **लक्ष्मीबाई रेजीमेंट** महिलाओं का ब्रिगेड था।
- **पी. के. सहगल, कर्नल गुरदयाल सिंह ढिल्लन** तथा **मेजर शाहनवाज खां** पर राजद्रोह के आरोप में दिल्ली के लाल किला में मुकद्दमा चलाया गया।
- **भूला भाई देसाई** के नेतृत्व में **जवाहरलाल नेहरू, तेजप्रताप सप्रू** तथा **के. एन. काटजू** ने आजाद हिन्द फौज के उक्त अधिकारियों की तरफ से पैरवी की। वायसराय ने इनकी सजा माफ कर दी।

वेवेल योजना (1945 ई.)

- 4 जून, 1945 को वेवेल योजना का प्रस्ताव रखा गया। इस योजना में अन्य तथ्यों के अलावा यह कहा गया कि वायसराय की कार्यकारिणी परिषद् में वायसराय और प्रधान सेनापति को छोड़कर शेष सभी भारतीय सदस्य होंगे।
- युद्ध के उपरान्त भारत को स्वयं संविधान बनाने की जिम्मेदारी दी जानी थी।

शिमला सम्मेलन (1945 ई.)

- वेवेल योजना पर विचार-विमर्श करने हेतु 25 जून, 1945 को शिमला में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- इस सम्मेलन में महात्मा गांधी, मु. जिन्ना, कांग्रेस अध्यक्ष मौलाना अब्दुल कलाम आजाद तथा तारासिंह ने भाग लिया।
- सम्मेलन अत्यंत ही सौहार्दपूर्ण वातावरण में प्रारंभ हुआ, किन्तु साम्प्रदायिक मतभेद एवं जिन्ना की हठधर्मी के कारण कोई निर्णय नहीं लिया जा सका।
- जिन्ना की जिद थी कि मुस्लिम लीग ही एकमात्र मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करेगी।
- उधर कांग्रेस का यह तर्क था कि वह एक अखिल भारतीय संस्था है। इसलिए उसे भी कार्यकारिणी परिषद् में मुसलमानों को नियुक्त करने का अधिकार है। इस प्रकार आपसी सामंजस्य स्थापित न होने के कारण यह सम्मेलन असफल हो गया।

वायुसेना और नौसेना विद्रोह (1945 ई.)

- कराची में 20 फरवरी, 1946 ई. वायुसेना के कुछ सैनिकों ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध हड़ताल कर दी। बम्बई, लाहौर, दिल्ली में भी यह शीघ्र ही फैल गयी। इसमें लगभग 5,200 सैनिकों ने भाग लिया। इनकी प्रमुख माँग थी कि भारतीय और अंग्रेज सैनिकों में बराबरी का व्यवहार किया जाय।

- नौसेना विद्रोह 19 फरवरी, 1946 ई. को मुम्बई में **आई. एन. एस. तलवार** नामक जहाज के नौसैनिकों के द्वारा किया गया। 5,000 सैनिकों ने आजाद हिन्द फौज के बिल्ले लगये। इन्होंने भी बराबरी की मांग की।

कैबिनेट मिशन (1946 ई.)

- 24 मार्च, 1946 को भारतीयों को सत्ता हस्तांतरित करने के संबंध में कैबिनेट मिशन भारत आया।
- इस मिशन के अध्यक्ष **लॉर्ड पैंथिक लारेन्स** थे।
- इसके अतिरिक्त **स्टैफर्ड क्रिप्स** तथा **ए. वी. अलेक्जेण्डर** दो अन्य सदस्य थे।
- इस मिशन ने संविधान सभा तथा अंतरिम सरकार के गठन के संबंध में मुस्लिम लीग तथा कांग्रेसी से बातचीत की, किन्तु दोनों ही अपनी जिद पर अड़े थे।
- मुस्लिम लीग तो पाकिस्तान की मांग पर अटल थी, जबकि कांग्रेस विभाजन के लिए तैयार न थी।
- इस मिशन ने लीग तथा कांग्रेस बीच समझौता करने का प्रयास किया, किन्तु सफलता नहीं मिली।
- 12 मई, 1946 को यह सम्मेलन असफल घोषित किया गया।

एटली की घोषणा (1947 ई.)

- प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस के पश्चात् समस्त भारत में साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे।
- स्थिति इतनी भयंकर हो गई थी कि ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने 20 फरवरी, 1947 को घोषणा कर दी कि ब्रिटिश सरकार जून, 1948 से पहले ही भारतीयों का पूर्ण सत्ता हस्तांतरित कर देगी।

माउण्टबेटन योजना और स्वतंत्रता की प्राप्ति (1947 ई.)

- ब्रिटिश प्रधानमंत्री **एटली** ने 20 फरवरी, 1947 ई. को **जून 1948** तक भारत को स्वतंत्र करने की घोषणा की।
- इसके लिए लॉर्ड माउण्टबेटन को भारत का वायसराय बनाकर 22 मार्च, 1947 को भारत भेजा गया।
- माउण्टबेटन ने 3 जून, 1947 को भारत विभाजन संबंधी प्रस्ताव रखा, जिसे **माउण्टबेटन प्लान** (योजना) कहा जाता है।
- 4 जुलाई, 1947 को उक्त प्लान पर आधारित भारतीय स्वतंत्रता विधेयक ब्रिटिश संसद में पेश किया गया जो 18 जुलाई, 1947 ई. को पारित हुआ। विधेयक के अनुसार भारत और पाकिस्तान दो स्वतंत्र राष्ट्रों की घोषणा की गयी।
- उल्लेखनीय है कि **मौलाना अबुल कलाम आजाद** और **पुरुषोत्तम दास टंडन** ने माउण्टबेटन प्लान को अस्वीकार कर दिया था।

प्रमुख समाचार-पत्र

समाचार पत्र	संस्थापक/सम्पादक	भाषा	प्रकाशन स्थान	वर्ष
अमृत बाजार पत्रिका	मोतीलाल घोष	बंगला	कलकत्ता	1868 ई.
सोम प्रकाश	ईश्वरचन्द्र विद्यासागर	बंगला	कलकत्ता	1859 ई.
बंगवासी	जोगिन्दरनाथ बोस	बंगला	कलकत्ता	1881 ई.
केसरी	बाल गंगाधर तिलक	मराठी	बम्बई	1881 ई.
हिन्दू	एम. जी. रानाडे	अंग्रेजी	बम्बई	1881 ई.
नेटिव ओपीनियन	वी. एन. मांडलिक	अंग्रेजी	बम्बई	1864 ई.
भारत मित्र	बालमुकुन्द गुप्त	हिन्दी	–	–
हिन्दुस्तान	मदन मोहन मालवीय	हिन्दी	–	–
बम्बई दर्पण	बाल शास्त्री	मराठी	बम्बई	1832 ई.
कविवचन सुधा	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	हिन्दी	उत्तर प्रदेश	1867 ई.
हरिश्चन्द्र मैगजीन	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	हिन्दी	उत्तर प्रदेश	1872 ई.
हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड	सच्चिदानन्द सिन्हा	अंग्रेजी	–	1899 ई.
ज्ञान प्रदायिनी	नवीन चन्द्र राय	हिन्दी	–	1866 ई.

हिन्दी प्रदीप	बालकृष्ण भट्ट	हिन्दी	उत्तर प्रदेश	1877 ई.
इंडियन रिव्यू	जी. ए. नटेशन	अंग्रेजी	मद्रास	–
मॉडर्न रिव्यू	रामानन्द चटर्जी	अंग्रेजी	कलकत्ता	–
कॉमन विल	एनी बेसेंट	अंग्रेजी	–	1914 ई.
न्यू इंडिया	एनी बेसेंट	अंग्रेजी	मद्रास	1915 ई.
यंग इंडिया	महात्मा गाँधी	अंग्रेजी	अहमदाबाद	8 अक्टूबर, 1919 ई.
नव जीवन	महात्मा गाँधी	हिन्दी, गुजराती	अहमदाबाद	7 अक्टूबर, 1919 ई.
हरिजन	महात्मा गाँधी	हिन्दी, गुजराती	पूना	11 फरवरी, 1933 ई.
इनडिपेंडेंस	मोतीलाल नेहरू	अंग्रेजी	–	1919 ई.
आज	शिवप्रसाद गुप्त	हिन्दी	–	–
हिन्दुस्तान टाइम्स	के. एम. पणिक्कर	अंग्रेजी	दिल्ली	1920 ई.
नेशनल हेराल्ड	जवाहरलाल नेहरू	अंग्रेजी	दिल्ली	अगस्त, 1938 ई.
उदन्त मार्तण्ड	जुगल किशोर	हिन्दी (प्रथम)	कानपुर	1826 ई.
द ट्रिब्यून	सर दयाल सिंह मजीठिया	अंग्रेजी	चण्डीगढ़	1877 ई.
अल हिलाल	अबुल कलाम आजाद	उर्दू	कलकत्ता	1912 ई.
कामरेड	मौलाना मुहम्मद अली	अंग्रेजी	–	–

ब्रिटिशकालीन आयोग एवं समितियां

क्रम	वायसराय	आयोग/समितियाँ	स्थापना वर्ष	अध्यक्ष	स्थापना का उद्देश्य
1.	लॉर्ड लिटन	दुर्भिक्ष आयोग	1880 ई.	रिचर्ड स्ट्रेची	दुर्भिक्ष से पीड़ितों को राहत दिलाने के लिए सिद्धांतों का निर्माण करना।
2.	लॉर्ड रिपन	हण्टर आयोग	1882 ई.	वि. हण्टर	शिक्षा में हुए विकास का अध्ययन करना।
3.	लॉर्ड एल्गिन	दुर्भिक्ष आयोग	1897 ई.	जेम्स लियाल	1880 के दुर्भिक्ष आयोग की रिपोर्ट का अध्ययन करने के लिए और अपना सुझाव देने के लिए।
4.	लॉर्ड कर्जन	दुर्भिक्ष आयोग	1900 ई.	एंटोनी मैक्डोनल	स्ट्रेची आयोग द्वारा सुझाए गए सिद्धांतों पर अपने सुझाव देने के लिए।
5.	लॉर्ड कर्जन	सिंचाई आयोग	1901 ई.	सर वोलियन	सिंचाई व्यवस्था पर व्यय करने की योजनाएं स्कॉट मान्क्रीफ बनाने के लिए।
6.	लॉर्ड कर्जन	फ्रेजर आयोग	1902 ई.	फ्रेजर	देश में पुलिस प्रशासन की कार्य पद्धति की जाँच करना।

7.	लॉर्ड कर्जन	विश्वविद्यालय आयोग	1904 ई.	थॉमस रेले	भारतीय विश्वविद्यालय की कार्यविधि और उनका दिशा का निरीक्षण करना और विश्वविद्यालयों के संविधान एवं शिक्षण स्तर को ऊँचा उठाने के लिए सुझाव देना।
8.	लॉर्ड चेम्सफोर्ड	कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग	1917 ई.	माइकल सैडलर	कलकत्ता विश्वविद्यालय की कार्यप्रणाली (सैडलर आयोग) और उसके दोषों की जांच करना।
9.	लॉर्ड रीडिंग	भारतीय सेण्डहर्स्ट समिति	1925 ई.	एण्ड्रयू स्कीन	भारतीय सेना का भारतीयकरण करने सम्बन्धी अपने सुझाव देने के लिए।
10.	लॉर्ड इरविन	बटलर समिति	1927 ई.	हरकोर्ट बटलर	देसी राज्यों और ब्रिटिश भारत सरकार के सम्बन्धों की जाँच करना और उनके बीच शान्तिपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना के लिए सुझाव देना।
11.	लॉर्ड इर्विन	साइमन आयोग	1927 ई.	सर जॉन साइमन	1919 के सुधारों की समीक्षा करने के लिए।
12.	लॉर्ड इर्विन	भारतीय वैधानिक आयोग	1929 ई.	फिलिप हार्टोग	शिक्षा की स्थिति पर अपनी रिपोर्ट देने और उसके विकास के लिए सुझाव देने के लिए।
13.	लॉर्ड इरविन	व्हाइटले आयोग	1929 ई.	जे. एच. व्हाइटले	उद्योगों एवं बागानों में श्रमिकों की स्थिति का अध्ययन करना और रिपोर्ट प्रस्तुत करना।
14.	लॉर्ड वेवल	सार्जेन्ट योजना	1944 ई.	जॉन सार्जेन्ट	भारत में शिक्षा का कम-से-कम 40 वर्ष के लिए ऐसा स्तर बनाना, जैसा इंग्लैंड में बनाया जा चुका है।

कांग्रेस अधिवेशन (1885–1950 ई.)

अधिवेशन	वर्ष	स्थान	अध्यक्ष	विशेष बातें
पहला	1885	बम्बई	व्योमेश चन्द्र बनर्जी	प्रथम अध्यक्ष/72 प्रतिनिधि उपस्थित थे
दूसरा	1886	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी	
तीसरा	1887	मद्रास	बदरुद्दीन तैय्यबजी	प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष
चौथा	1888	इलाहाबाद	जार्ज यूल	प्रथम अंग्रेज अध्यक्ष

पाँचवां	1889	बम्बई	विलियम वेडर बर्न	
छठा	1890	कलकत्ता	फिरोजशाह मेहता	
7वां	1891	नागपुर	पी. आनन्द चार्लू	
8वां	1892	इलाहाबाद	व्योमेश चन्द्र बनर्जी	
9वां	1893	लाहौर	दादाभाई नौरोजी	
10वां	1894	मद्रास	अल्फ्रेड वेब	
11वां	1895	पूना	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी	
12वां	1896	कलकत्ता	रहीमतुल्ला सयानी	
13वां	1897	अमरावती	सी. शंकरन नायर	
14वां	1898	मद्रास	आनंद मोहन बोस	
15वां	1899	लखनऊ	रमेश चन्द्र दत्त	
16वां	1900	लाहौर	एन. वी. चन्द्रावरकर	
17वां	1901	कलकत्ता	दिनशा इदुलजी वाचा	
18वां	1902	अहमदाबाद	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी	
19वां	1903	मद्रास	लालमोहन घोष	
20वां	1904	बम्बई	सर हेनरी काटन	
21वां	1905	बनारस	गोपाल कृष्ण गोखले	बंगाल विभाजन की निंदा
22वां	1906	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी	'स्वराज्य' की पहली बार उल्लेख
23वां	1907	सूरत	डॉ. रासबिहारी घोष	कांग्रेस का प्रथम विभाजन
24वां	1908	मद्रास	डॉ. रासबिहारी घोष	कांग्रेस के लिए एक संविधान
25वां	1909	लाहौर	पं. मदनमोहन मालवीय	
26वां	1910	इलाहाबाद	विलियम वेडरवर्न	
27वां	1911	कलकत्ता	पं. बिशन नारायण दत्त	
28वां	1912	बाँकीपुर	आर. एन. माधोलकर	
29वां	1913	कराची	नवाब सैय्यद मो. बहादुर	
30वां	1914	मद्रास	भूपेन्द्र नाथ बसु	
31वां	1915	बम्बई	सत्येन्द्र प्रसन्न सिन्हा	
32वां	1916	लखनऊ	अम्बिकाचरण मजुमदार	नरम और गरम दल में समझौता, कांग्रेस और मुस्लिम लीग में लखनऊ समझौता
33वां विशेष*	1917 1918	कलकत्ता बम्बई	श्रीमती ऐनी बेसेण्ट हसन इमाम	प्रथम महिला अध्यक्ष (विदेशी)
34वां	1918	दिल्ली	पं. मदन मोहन मालवीय	नरम दल वालों का (एस. एन. बनर्जी) त्यागपत्र

35वां विशेष*	1919 1920	अमृतसर कलकत्ता	पं. मोती लाल नेहरू लाला लाजपत राय	 गाँधीजी ने असहयोग प्रस्ताव रखा
36वां	1920	नागपुर	सी. विजयाराघवाचारियर	
37वां	1921	अहमदाबाद	हाकिम अजमल खां	
38वां विशेष*	1922 1923	गया दिल्ली	देश बंधु चितरंजन दास मौलाना अबुल कलाम आजाद	स्वराज पार्टी का गठन सबसे कम उम्र के अध्यक्ष
39वां	1923	काकीनाड़ा	मौलाना मोहम्मद अली	
40वां	1924	बेलगांव	महात्मा गांधी	
41वां	1925	कानपुर	श्रीमती सरोजनी नायडु	प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष
42वां	1926	गोवाहाटी	एस. श्रीनिवास अयंगर	कांग्रेस कार्यकर्ता के लिए खादी पहनना अनिवार्य
43वां	1927	मद्रास	डॉ. एम. ए. अंसारी	जवाहर लाल नेहरू के आग्रह पर पहली बार 'स्वतंत्रता प्रस्ताव' पारित
44वां	1928	कलकत्ता	पं. मोती लाल नेहरू	प्रथम अखिल भारतीय युवा कांग्रेस, नेहरू रिपोर्ट पेश
45वां	1929-1930	लाहौर	पं. जवाहर लाल नेहरू	'पूर्ण स्वराज्य' प्रस्ताव
46वां	1931 1932	कराची दिल्ली	सरदार वल्लभभाई पटेल अमृत रणछोड़दास	मूल अधिकारों तथा राष्ट्रीय आर्थिक नीति प्रस्ताव अवैध अधिवेशन
47वां	1933	कलकत्ता	श्रीमती नेल्लीसेनगुप्ता	
48वां	1934-1935	बम्बई	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन
49वां	1936	लखनऊ	पं. जवाहरलाल नेहरू	
50वां	1937	फैजपुर	पं. जवाहरलाल नेहरू	
51वां	1938	हरिपुरा	सुभाष चन्द्र बोस	
52वां	1939	त्रिपुरा	सुभाष चन्द्र बोस	बोस का त्यागपत्र, राजेन्द्र प्रसाद अध्यक्ष बने, बोस द्वारा 'फॉरवर्ड ब्लॉक' का गठन
53वां	1940-1945	रामगढ़	मौलाना अबुल कलाम आजाद	व्यक्तिगत सत्याग्रह का प्रस्ताव
54वां	1946 1947	मेरठ	आचार्य जे. बी. कृपलानी राजेन्द्र प्रसाद	
55वां	1948	जयपुर	बी. पट्टाभिसीतारमैया	
56वां	1950	नासिक	पुरुषोत्तम दास टंडन	

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नारे

वन्दे मातरम्	बंकिमचन्द्र चटर्जी
जन-गण-मन अधिनायक जय हे	रवीन्द्र नाथ ठाकुर
स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है	बाल गंगाधर तिलक
सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है	राम प्रसाद बिस्मिल
सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा	इकबाल
तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा	सुभाषचन्द्र बोस
साइमन कमीशन वापस जाओ	लाला लाजपत राय
मेरे सिर पर लाठी का एक-एक प्रहार, अंग्रेजी शासन के ताबूत की कीज साबित होगा	लाला लाजपत राय
मुसलमान मूर्ख थे, जो उन्होंने सुरक्षा की मांग की और हिन्दू उनसे भी मूर्ख थे, जो उन्होंने उस मांग को ठुकरा दिया	अबुल कलाम आजाद
इन्कलाब जिन्दाबाद	भगत सिंह
दिल्ली चलो	सुभाष चन्द्र बोस
करो या मरो	महात्मा गाँधी
जय हिन्द	सुभाष चन्द्र बोस
पूर्ण स्वराज्य	जवाहर लाल नेहरू
हिन्दी, हिन्दू, हिन्दोस्तान	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
वेदों की ओर लौटो	दयानन्द सरस्वती
आराम हराम है	जवाहर लाल नेहरू
हे राम	महात्मा गांधी
भारत छोड़ो	महात्मा गांधी
जय जवान, जय किसान	लाल बहादुर शास्त्री (1965 के पाकिस्तान युद्ध के समय)
कर मत दो	सरदार वल्लभ भाई पटेल
सम्पूर्ण क्रांति	जयप्रकाश नारायण

प्रमुख उपाधियाँ

उपाधि	प्राप्तकर्ता	प्रदानकर्ता
गुरुदेव	रवीन्द्रनाथ टैगोर	महात्मा गाँधी
महात्मा	महात्मा गाँधी	रवीन्द्रनाथ टैगोर
नेताजी	सुभाष चन्द्र बोस	एडोल्फ हिटलर
सरदार	वल्लभ भाई पटेल	बारदोली की महिलाएँ
देशरत्न	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	महात्मा गाँधी

राष्ट्रपिता	महात्मा गाँधी	सुभाष चन्द्र बोस
कायदे आजम	मोहम्मद अली जिन्ना	महात्मा गाँधी
देश नायक	सुभाष चन्द्र बोस	रवीन्द्रनाथ टैगोर
विवेकानन्द	स्वामी विवेकानन्द	महाराजा खेतड़ी
राजा	राजा राममोहन राय	अकबर द्वितीय

विश्व इतिहास

मिस्र की सभ्यता

- यह प्राचीन सभ्यताओं में अतिविकसित थी, जिसका प्रारंभ 3400 ई. पू. में हुआ। इस सभ्यता का मुख्य केन्द्र **नील नदी घाटी** था, जिसकी उपजाऊ भूमि ने सभ्यता के विकास में योगदान दिया।
- मिस्र के राजा को **फराओ** कहा जाता था तथा उसे सूर्य का पुत्र और ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता था।
- राजा को मरणोपरान्त पिरामिड में सुरक्षित रखा जाता था। शव को सुरक्षित रखने के लिए रासायनिक द्रव्य का प्रयोग किया जाता था।
- **कैलेण्डर, सूर्यघड़ी** और **जल घड़ी** का प्रथम प्रयोग इसी सभ्यता में हुआ।

मेसोपोटामिया की सभ्यता

- यह सभ्यता **दजला** और **फरात** नदियों के मध्य क्षेत्र में विकसित हुई।
- इस क्षेत्र में वस्तुत: तीन सभ्यताओं का विकास हुआ– **सुमेरिया, बेबीलोनिया** और **असीरिया** की सभ्यता। इन तीनों के सम्मिलित रूप को मेसोपोटामिया की सभ्यता कहा जाता है।
- भूमि उपजाऊ होने के कारण कृषि उन्नत अवस्था में थी। दूर देशों से व्यापार होता था।
- समाज तीन वर्गों में बँटा था–
  (i) पुरोहित एवं सामंत (ii) मध्यम वर्ग में व्यापारी (iii) निम्न वर्ग में कृषक।
- इस सभ्यता में **कीलाक्षर लिपि** का विकास हुआ, जिसे तेज नोंक वाली वस्तु से मिट्टी की पट्टियों पर लिखा जाता था।
- इस सभ्यता ने खगोल, ज्योतिष में काफी उन्नति की। पांचांग का आविष्कार यहीं हुआ।

चीन की सभ्यता

- इस सभ्यता का विकास ह्वांग्हो नदी घाटी में हुआ, जो चीन के उत्तरी क्षेत्र में अवस्थित है। यह अत्यन्त उपजाऊ क्षेत्र है। इस नदी को **'पीली नदी'** भी कहा जाता है, इस कारण इस सभ्यता को भी 'पीली नदी घाटी सभ्यता' कहा जाता है।
- भूकम्प का पता लगाने के लिए **सीस्मोग्राफ; कागज और छपाई** का आविष्कार चीन की ही देन है।
- हल्के रेशम वस्त्रों का निर्माण सर्वप्रथम इसी सभ्यता में हुआ।

यूनान की सभ्यता

- प्राचीन यूनानी सभ्यता की जननी क्रीट सभ्यता को माना जाता है।
- 1200 ई. पूर्व में आर्यों की डोरियन शाखा ने यूनान में प्रवेश कर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया।
- इस सभ्यता को **'हेलनिक सभ्यता'** भी कहा जाता है।
- यह सभ्यता कई छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त हो गयी, जिनमें **स्पार्टा** और **एथेंस** अधिक प्रभावशाली थे।

रोम की सभ्यता

- इस सभ्यता का विकास यूनानी सभ्यता के ह्रास के बाद हुआ। रोम इस सभ्यता का केन्द्र था।
- ऑगस्टस (31-14 ई. पू.) रोमन सभ्यता का स्वर्ण काल माना जाता है।
- इटली में उन्नत सभ्यता विकसित करने का श्रेय **एट्रस्कन** नामक अनार्य जाति को जाता है।
- **जुलियस सीजर** की गणना विश्व के सर्वश्रेष्ठ सेनापतियों में की जाती है।

पुनर्जागरण

- **पुनर्जागरण** का प्रारंभ इटली के **फ्लोरेंस नगर** से माना जाता है।
- इटली के महान कवि **दाँते** (1260-1321 ई.) को पुनर्जागरण का अग्रदूत माना जाता है। इनका जन्म फ्लोरेन्स नगर में हुआ था।
- दाँते के बाद पुनर्जागरण की भावना का प्रश्रय देनेवाला दूसरा व्यक्ति **पेट्रॉक** (1304-1367) था।
- पेट्रॉक को **मानववाद** का संस्थापक माना जाता है। वह **इटली** का निवासी था।
- इटालियन गद्य का जनक कहानीकार **बोकेशियो** (सन् 1313-1375 ई.) को माना जाता है।
- आधुनिक विश्व का प्रथम राजनीतिक चिन्तक फ्लोरेंस निवासी **मैकियावेली** (1469-1567 ई.) को माना जाता है।
- **मैकियावेली की प्रसिद्ध पुस्तक है: द प्रिन्स** जो राज्य का एक नवीन चित्र प्रस्तुत करती है।
- पुनर्जागरण की भावना की पूर्ण अभिव्यक्ति इटली के तीन कलाकारों की कृतियों में मिलती है। ये कलाकार थे- **लियोनार्दो द विंची, माइकेल एंजलो** और **राफेल**।
- लियोनार्दो द विंची एक बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति था। वह चित्रकार, मूर्तिकार, इंजीनियर, वैज्ञानिक, दार्शनिक, कवि और गायक था।
- लियोनार्दो द विंची 'द लास्ट सपर' और 'मोनालिसा' नामक अमर चित्रों के रचायिता होने के कारण प्रसिद्ध है।
- माइकल एंजलो भी एक अद्‌भुत मूर्तिकार एवं चित्रकार था।
- **द लास्ट जजमेटट** एवं **द फाल ऑफ मैन** माइकल एंजलो की कृतियाँ हैं।
- राफेल भी इटली का एक चित्रकार था, इसकी सर्वश्रेष्ठ कृति जीसस क्राइस्ट की माता **मेडोना** का चित्र है।
- पुनर्जागरण काल में चित्रकला का जनक **जियाटो** को माना जाता है।
- **मार्टिन लूथर** ने जर्मन भाषा में बाइबिल का अनुवाद प्रस्तुत किया है।
- **'रोमियो एण्ड जुलियट'** शेक्सपीयर (इंगलैंड) की अमर कृति है।
- **पृथ्वी सौरमंडल का केन्द्र है**, इसका खंडन सर्वप्रथम पोलैंड निवासी **कॉपरनिकस** ने किया।
- न्यूटन (1642-1726 ई.) ने **गुरुत्वाकर्षण के नियम** का पता लगाया।
- धर्म-सुधार की शुरुआत 16वीं सदी में हुई।
- धर्म-सुधार आन्दोलन का प्रवर्तक **मार्टिन लूथर** था, जो जर्मनी का रहने वाला था। इसने बाइबिल का अनुवाद जर्मन भाषा में किया।
- धर्म-सुधार आन्दोलन की शुरुआत इंगलैंड में हुई।
- अमरीका की **खोज क्रिस्टोफर कोलम्बस** ने की थी।
- अमेरिगो बेस्पुसी (इटली) के नाम पर अमेरिका का नाम अमेरिका पड़ा।
- समुद्री मार्ग से सम्पूर्ण विश्व का चक्कर लगानेवाला प्रथम व्यक्ति **मैगलन** था।

अमेरिका का स्वतंत्रता-संग्राम

- अमेरिका में ब्रिटिश औपनिवेशिक साम्राज्य की नींव **जेम्स प्रथम** के शासनकाल में डाली गयी।
- **रेड इंडियन** अमेरिका के मूल निवासी थे।
- अमेरिका को पूर्ण स्वतंत्रता 4 जुलाई, 1776 ई. को मिली।
- अमेरिका स्वतंत्रता-संग्राम का नायक **जॉर्ज वाशिंगटन** थे, जो बाद में अमेरिका का प्रथम राष्ट्रपति बने।
- अमेरिका स्वतंत्रता-संग्राम का तत्कालिक कारण **'बोस्टन की चाय पार्टी'** थी, जो 16 दिसम्बर,

1733 ई. को हुई थी। इसी घटना से अमेरिका का स्वतंत्रता-संग्राम प्रारंभ हुआ। इस घटना का नायक **सैम्युल एडम्स** था।

- संसार में सर्वप्रथम **लिखित संविधान** संयुक्त राज्य अमेरिका में 1789 ई. में लागू हुआ।
- अमेरिका विश्व का पहला देश था, जिसने मनुष्यों की समानता तथा उसके मौलिक अधिकारों की घोषणा की।
- अमेरिका में दासों के आयात को 1808 ई. में अवैध घोषित किया गया।
- अब्राहम लिंकन अमेरिका के राष्ट्रपति 1860 ई. में हुए।
- अमेरिका में गृह-युद्ध की शुरुआत 12 अप्रैल, 1861 ई. में दक्षिण एवं उत्तरी राज्यों के बीच हुई दक्षिणी राज्य दासता के समर्थक एवं उत्तरी राज्य उसके विरोधी थे।
- अमेरिकी गृह-युद्ध की शुरुआत दक्षिणी कैरोलिना राज्य से हुई। इसी युद्ध के फलस्वरूप ही दासप्रथा का अंत हुआ।
- 1 जनवरी, 1863 ई. को अब्राहम लिंकन ने दास-प्रथा का उन्मूलन किया।
- अब्राहम लिंकन की हत्या **जॉन विल्कीज बूथ नामक व्यक्ति ने 4 मार्च, 1865 ई. को कर दी।**

फ्रांस की राज्यक्रांति

- फ्रांस की राज्यक्रांति 1789 ई. में लूई सोलहवाँ के शासनकाल में हुई। इस समय फ्रांस में सामन्ती व्यवस्था थी।
- 14 जुलाई, 1789 ई. को क्रांतिकारियों ने बास्तील के कारागृह के फाटक को तोड़कर बंदियों को मुक्त कर दिया। तब से 14 जुलाई को फ्रांस में 'राष्ट्रीय दिवस' के रूप में मनाया जाता है।
- समानता, स्वतंत्रता और बन्धुत्व का नारा फ्रांस की राज्यक्रांति की देन है।
- लूई सोलहवाँ 1774 ई. में फ्रांस की गद्दी पर बैठा।
- फ्रांसीसी क्रांति में वाल्टेयर, मॉटेस्क्यू एवं रूसो ने सर्वाधिक योगदान किया।
- 'सौ चूहों की अपेक्षा एक सिंह का शासन उत्तम है' यह उक्ति वाल्टेयर की है।
- माप-तौल की दशमलव प्रणाली फ्रांस की देन है।
- नेपोलियन का जन्म 15 अगस्त, 1769 ई. को **कोर्सिका द्वीप** की राजधानी अजासियो में हुआ था।
- नेपोलियन 1799 ई. में प्रथम कॉन्सल बना और 1802 ई. में जीवनभर के लिए कॉन्सल बना।
- 1804 ई. में नेपोलियन फ्रांस का सम्राट बना।
- आधुनिक फ्रांस का निर्माता नेपोलियन को माना जाता है।
- नेपोलियन ने ही सर्वप्रथम इंगलैंड को 'बनियों का देश' कहा था।
- ट्राल्फगर का युद्ध 21 अक्टूबर, 1805 ई. में इंग्लैंड एवं नेपोलियन के बीच हुआ।
- यूरोप के राष्ट्रों ने मिलकर 1813 ई. में नेपोलियन को **लिपजिग** नामक स्थान पर हरा दिया और उसे बन्दी बनाकर एल्बा के टापू पर भेज दिया गया; परन्तु वह एल्बा से भाग निकला और पुन: फ्रांस का सम्राट बना।
- अन्तत: मित्रराष्ट्रों की सेना ने नेपोलियन को 18 जून, 1815 ई. को वाटरलू के युद्ध में पराजित कर बन्दी बना लिया और उसे सेंट हेलना द्वीप पर भेज दिया। वहाँ 1821 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी। नेपोलियन **लिब्बल कारपोरल** के नाम से जाना जाता है।
- नेपोलियन के पतन का कारण था, उसका रूस पर आक्रमण करना।
- विएना काँग्रेस समझौता के तहत् यूरोप के राष्ट्रों ने 1815 ई. में फ्रांस के प्रभुत्व को समाप्त किया।

इटली का एकीकरण

- 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में इटली में 13 राज्य थे।
- इटली के एकीकरण का जनक **जोसेफ मेजिनी** को माना जाता है।
- इटली के एकीकरण में सबसे बड़ा बाधक **आस्ट्रिया** था।
- इटली के एकीकरण का श्रेय **मेजिनी, काऊण्ट कावूर** और **गैरीबाल्डी** को दिया जाता है।
- 'यंग इटली' की स्थापना 1831 ई. में **जोसेफ मेजिनी** ने की।

- इटली के एकीकरण की शुरुआत लोम्बार्डी और सार्डिनिया राज्यों के मेल से हुई।
- इटली राष्ट्र का जन्म 2 अप्रैल, 1860 ई. को माना जाता है।
- 1871 ई. में **रोम** के संयुक्त इटली का राजधानी घोषित किया गया।
- इटली का एकीकरण 1871 ई. में **काऊण्ट कावूर** ने किया।

जर्मनी का एकीकरण

- जर्मनी का एकीकरण बिस्मार्क ने किया। बिस्मार्क प्रशा के शासक **विलियम प्रथम** का प्रधानमंत्री था।
- जर्मनी का सबसे शक्तिशाली राज्य **प्रशा** था।
- विलियम को जर्मन संघ के सम्राट का ताज 8 फरवरी, 1871 ई. में पहनाया गया।
- बिस्मार्क को सबसे अधिक भय **फ्रांस** से था।
- जर्मनी राष्ट्रीय सभा को डायट के नाम से जाना जाता था, यह **फ्रेंकफर्ट** में होती थी।
- 1815 ई. से 1850 ई. के बीच जर्मन साम्राज्य पर आस्ट्रिया का आधिपत्य था। आस्ट्रिया का चान्सलर **मेटरनिख** था।
- एकीकृत जर्मन राष्ट्र के निर्माण में **राके**, **बोमर**, **लसर** इत्यादि दार्शनिकों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- 23 सितम्बर, 1862 ई. को **बिस्मार्क** प्रशा का चांसलर बना।
- फ्रांस एवं प्रशा के बीच सेडान का युद्ध 15 जुलाई, 1870 ई. को हुआ।
- नेपोलियन तृतीय ने प्रशा के आगे 1 सितम्बर, 1870 को आत्मसमर्पण किया।
- बिस्मार्क ने जर्मनी के सम्राट विलियम प्रथम का राज्याभिषेक वर्साय के राजमहल में किया।
- फ्रेंकफर्ट की संधि 10 मई, 1871 ई. को फ्रांस और प्रशा के बीच हुई।
- सूडान के युद्ध के बाद **जर्मनी का एकीकरण** संभव हो सका।

रूसी क्रांति

- समाजवाद शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम **राबर्ट ओवेन** ने किया था। वह वेल्स का रहनेवाला था।
- आदर्शवादी समाजवाद का प्रवक्ता **राबर्ट ओवेन** को माना जाता है।
- वैज्ञानिक समाजवाद का संस्थापक **कार्ल मार्क्स** था। कार्ल मार्क्स **जर्मनी** का निवासी था।
- कार्ल मार्क्स ने **दास कैपिटल** और **कम्यूनिस्ट मेनीफेस्टो** नामक पुस्तक लिखी है।
- 'दुनिया के मजदूरों एक हो' का नारा **कार्ल मार्क्स** ने दिया।
- रूस के शासक को **'जार'** कहा जाता था। यह जारशाही व्यवस्था मार्च, 1917 ई. में समाप्त हुई।
- रूस का अंतिम जार शासक **जार निकोलस द्वितीय** था।
- 1917 ई. में हुई रूसी क्रांति का तात्कालिक कारण प्रथम विश्व में युद्ध में रूस की पराजय थी।
- 7 नवम्बर, 1917 ई. की **वोल्शेविक क्रांति** का नेता लेनिन था।
- रूसी साम्यवाद का जनक **प्लेखानोव** को माना जाता है।
- सोशल डेमोक्रेटिक दल की स्थापना 1903 ई. में रूस में हुई।
- यह दल दो गुटों में विभाजित था- **वोल्शेविक** और **मेन्शेविक**।
- वोल्शेविक का अर्थ 'बहुसंख्यक' एवं मेन्शेविक का अर्थ 'अल्पसंख्यक' होता है।
- वोल्शेविक दल का नेता **लेनिन** था।
- आधुनिक रूस का निर्माता **स्टालिन** को माना जाता है।
- औद्योगिक क्रांति की शुरुआत **इंगलैंड** में हुई, क्योंकि इंगलैंड के पास उपनिवेशों के कच्चे माल और पूँजी की अधिकता थी।
- इंगलैंड में औद्योगिक क्रांति की शुरुआत सूती कपड़ा उद्योग से हुई।
- 1761 ई. में ब्रिंडले नामक इंजीनियर ने **मैनचेस्टर से वर्सले** तक नहर बनायी।
- 1814 ई. में जॉर्ज स्टीफेंसन ने रेल द्वारा खानों से बन्दरगाहों तक कोयला ले जाने के लिए भाप-इंजन का प्रयोग किया।
- औद्योगिक क्रांति की दौड़ में **जर्मनी** इंगलैंड का प्रतिद्वन्द्वी था।

इंगलैंड की क्रांति

- इंगलैंड में **गौरवपूर्ण क्रांति** 1688 ई. में हुई। उस समय इंगलैंड का शासक जेम्स द्वितीय था।
- **सौ वर्षीय युद्ध** इंगलैंड एवं फ्रांस के बीच हुआ था।
- इंगलैंड के सामन्तों ने राजा जॉन को सन् 1215 ई. में एक अधिकार-पत्र पर हस्ताक्षर करने को मजबूर किया। इस अधिकार-पत्र को **मैग्नाकार्टा** कहा जाता है। यह सर्वसाधारण के अधिकारों को घोषणा-पत्र था।
- इंगलैंड के राजा **चार्ल्स प्रथम** को फाँसी की सजा दी गयी।

प्रथम विश्वयुद्ध

- प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत 28 जुलाई, 1914 ई. को हुई। यह चार वर्षों तक चला। इसमें 37 देशों ने भाग लिया।
- प्रथम विश्वयुद्ध में सम्पूर्ण विश्व दो खेमों में बँट गया- **मित्रराष्ट्र एवं धुरी राष्ट्र**।
- धुरी राष्ट्रों का नेतृत्व जर्मनी ने किया। इसमें शामिल अन्य देश थे- आस्ट्रिया, हंगरी और इटली आदि।
- मित्रराष्ट्रों में इंगलैंड, जापान, संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस एवं फ्रांस शामिल थे।
- आस्ट्रिया, जर्मनी एवं इटली के बीच त्रिगुट का निर्माण 1882 ई. में हुआ।
- प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान जर्मनी ने रूस पर आक्रमण 1 अगस्त, 1914 ई. को एवं फ्रांस पर आक्रमण 3 अगस्त, 1914 ई. को किया।
- 8 अगस्त, 1914 को इंगलैंड प्रथम विश्व युद्ध में शामिल हुआ।
- 26 अप्रैल, 1915 ई. को इटली मित्रराष्ट्रों की ओर से प्रथम विश्व युद्ध में शामिल हुआ।
- अमेरिका 6 अप्रैल, 1917 ई. को प्रथम विश्वयुद्ध में शामिल हुआ।
- प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति 11 नवम्बर, 1918 को हुई।
- 18 जून, 1919 ई. को पेरिस शांति सम्मेलन हुआ, जिसमें 27 देश भाग ले रहे थे; मगर शांति-संधियों की शर्तें केवल तीन देश- ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका तय कर रहे थे।
- पेरिस शांति सम्मेलन में शांति-संधियों की शर्तें निर्धारित करने में जिन राष्ट्राध्यक्षों ने मुख्य भूमिका निभाई, वे थे- अमेरिकी राष्ट्रपति **वुडरो विल्सन**, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री **लायड जार्ज** और फ्रांस के प्रधानमंत्री जॉर्ज **क्लेमेसो**।
- वर्साय की संधि 28 जून, 1919 ई. को जर्मनी के साथ हुई।

चीनी क्रांति

- 1911ई. में हुई चीनी क्रांति का नायक **सनयात सेन** था।
- 1905 ई. में सनायात सेन ने तुंग-मेंग दल की स्थापना की, जिसका उद्देश्य चीन में मंचू वंश के शासन को समाप्त करना था।
- 1911 ई. की क्रांति के बाद चीन में **गणतंत्र शासन-पद्धति** की स्थापना हुई।
- 1912 ई. में सनयात सेन ने कुओमिनतांग पार्टी की स्थापना की। इस पार्टी के पुनर्गठन के लिए सेन ने माइकेल बोरोदिन को आमंत्रित किया।
- डॉ. सनयात सेन को चीन का **राष्ट्रपिता** कहा जाता है।
- चीन में गृह-युद्ध 1928 ई. में शुरू हुआ।
- 1925 ई. को हूनान के विशाल किसान आन्दोलन का नेतृत्व माओत्से तुंग ने किया।
- माओत्से तुंग का जन्म 1893 ई. में हुनान में हुआ था।
- माआत्से तुग के नेतृत्व में 1 अक्टूबर, 1949 ई. जनवादी गणराज्य की स्थापना चीन में की गई।
- चीन को कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना 1921 ई. में हुई।

तुर्की

- तुर्की को **'यूरोप का मरीज'** कहा जाता है।
- आधुनिक तुर्की का निर्माता **मुस्तफा कमाल पाशा** को माना जाता है। इसे **'अतातुर्क'** (तुर्की का पिता) के उपनाम से भी जाना जाता है।
- **मुस्तफा कमाल पाशा द्वारा किए गए महत्त्वपूर्ण कार्य निम्न हैं:**

(i) 1932 ई. में तुर्की भाषा परिषद् की स्थापना।
(ii) 1933 ई. में तुर्की में प्रथम पंचवर्षीय योजना का लागू होना।
(iii) 1924 ई. में तुर्की को धर्मनिरपेक्ष राज्य की घोषणा।
(iv) इस्ताम्बुल में एक मेडिकल कॉलेज की स्थापना।
(v) ग्रिगोरियन कैलेंडर का प्रचलन (26 दिसम्बर, 1925 ई. से लागू)।

इटली में फासिस्टों का उदय

- फासिज्म का उदय सर्वप्रथम इटली में हुआ। इसका जन्मदाता **मुसोलिनी** को माना जाता है।
- फासीवादी राष्ट्रवाद का समर्थन करते थे।
- मुसोलिनी ने अक्टूबर 1922 ई. में रोम पर और 1935 ई. में अबीसीनिया पर आक्रमण किया।
- जापान एवं जर्मनी के साथ मुसेलिनी ने **रोम-बर्लिन-टोकियो** धुरी का निर्माण 1936 ई. में किया।
- मुसोलिनी ने 10 जून, 1939 ई. को द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान मित्रराष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की। इटली में फासीवाद का अन्त 28 अप्रैल, 1945 ई. को माना जाता है।

जर्मनी में नाजीवाद का उदय

- जर्मनी में नाजी दल का उत्थान **हिटलर** के नेतृत्व में हुआ।
- हिटलर का जन्म 20 अप्रैल, 1889 ई. को वॉन में हुआ था।
- 1920 ई. में हिटलर ने **नेशनल सोशलिस्ट पार्टी** या नाजी दल की स्थापना की।
- हिटलर की आत्मकथा का नाम **My Kemf** (**मेरा संघर्ष**) है।
- हिटलर ने 30 अप्रैल, 1945 ई. को आत्महत्या की।

जापानी साम्राज्यवाद

- जापान के साम्राज्यवाद को सबसे पहला शिकार **चीन** हुआ।
- 1863 ई. में एक अमेरिकी नाविक **पेरी** ने बल-प्रयोग कर जापान का द्वारा अमेरिकी व्यापार के लिए खोला।
- जापान उमें आधुनिकीकरण की प्रक्रिया की शुरुआत **मूतसुहीतों** ने की।
- 1872 ई. में जापान में सैनिक सेवा अनिवार्य कर दी गई।
- जापान-रूस युद्ध की समाप्ति 5 सितम्बर 1905 को **पाट्र्समाऊथ की संधि** के द्वारा हुई।
- 20 मार्च, 1933 ई. को जापान ने राष्ट्रसंघ की सदस्यता त्याग दी।
- **पीत आतंक** से जापान को संबोधित किया जाता था।
- अमेरिका ने जापान पर पहला अणु बम 6 अगस्त, 1945 ई. को हिरोशिमा पर गिराया था।
- द्वितीय विश्वयुद्ध में 10 सितम्बर, 1945 ई. को जापान ने आत्मसमर्पण किया।
- **हिरोशिमा** और **नागासाकी** पर अणु बम गिराए जाने के कारण जापान ने द्वितीय विश्वयुद्ध में आत्मसमर्पण किया था।

द्वितीय विश्वयुद्ध

- द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत 1 सितम्बर, 1939 ई. को हुई। यह 6 वर्षो तक लड़ा गया। इसका अन्त 2 सितम्बर, 1945 ई. को हुआ। इसमें 61 देशों ने भाग लिया।
- द्वितीय विश्वयुद्ध का तात्कालिक कारण **जर्मनी का पोलैंड पर आक्रमण** था।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जर्मन **जनरल रोम्मेल** का नाम **डेजर्ट फॉक्स** रखा गया था।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के समय इंगलैंड का प्रधानमंत्री **विंस्टन चर्चिल** एवं अमेरिका का राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रुजवेल्ट था।
- द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मनी की पराजय का श्रेय रूस को दिया जाता है।
- अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में द्वितीय विश्वयुद्ध का सबसे बड़ा योगदान **संयुक्त राष्ट्रसंघ** की स्थापना है।